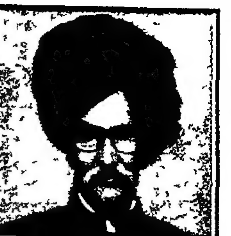
रिषभवीर रत्न


श्री लच्छीरामश्रीमती हजाबाई सुखलेचा - देवगढ़ मदारिया


श्री सोहनलाल श्रीमती जेठीबाई सिपानी बेंगलोर - उदयरामसर

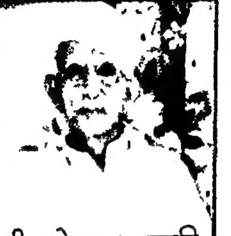

श्री शान्तिलाल श्रीमती विमलादेवी साड बेंगलोर - देशनोक


श्री चदनमल धोका बेंगलोर-गोढाजी गाव


श्रीमती विमलादेवी श्री कमल सिपानी बेगलोर - उदयरामसर


श्री देवराज श्रीमती मदनकवर खिवेसरा बेंगलोर - ब्यावर


श्री सुजानमल श्रीमती गुणमाला कनार्वट बेंगलोर - इंदौर


श्री गणेशमल बम्बकी बेंगलोर - लसानी


श्री गौतम श्रीमती इदुबाई गन्ना उदयपुर - ताल


श्री राजेशकुमार श्रीमती मीनादेवी बोहरा बेंगलोर - पीपलीयाकलां


श्री महावीरचद श्रीमती भारतीदेवी ऑचलिया बेंगलोर - देवगढ


श्री आर के सिपानी बेंगलोर-उदयरामसर


श्री मनोहरलाल श्रीमती उर्मिलाबाई पोखरना उदयपुर-देवगढ मदारिया


श्री सम्पतलाल श्रीमती रेखाबाई पोखरना देवगढ मदारिया

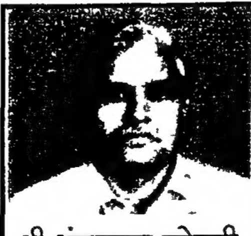

श्री तेजराज श्रीमती कुसुमदेवी मालानी बेंगलोर - मोखलसर


श्री शान्तिलाल दलाल बेंगलोर-ईसरमंड

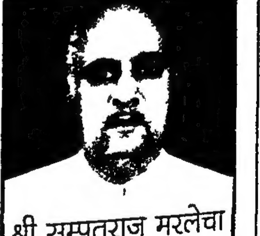


श्री रतनलाल श्रीमती शकुतलादेवी हिरण - बेंगलोर-सतारा


श्री मोहनलाल चोपडा बेंगलोर-गोदाजी गांव


श्री भंवरलाल कोठारी टी.नरसीपुर-बेमाली


श्री यशवत बोथरा बेंगलोर-जयपुर


श्री सम्पतराज मरलेचा बेंगलोर

श्री घेवरचंद ल - देवगढ

श्री पारसमल डागा बेंगलोर-कोटड़ा


श्री प्रकाशचद ओस्तवाल बेंगलोर


श्री रतनलाल राका चैन्नई-सारोठ


श्री पारसमल लोढा बेंगलोर-कोटड़ा

अ सि आ ऊ सा नमः

अमर रिषभवीर

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक



सोहनलाल सिपानी अभिनन्दन ग्रंथ

-: प्रधान संपादक :-

देवीलाल सुखलेचा

-: प्रबन्धक :-

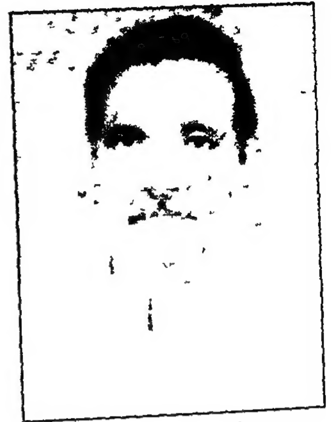
पवन सुखलेचा

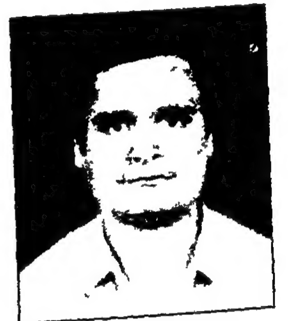

श्री नवरत्नमल-श्रीमती सुशीलाबाई नदावत, बेंगलोर-धरीयावद


डॉ उत्तमचद कटारिया बेंगलोर-राणावास


श्री भंवरलाल बाठिया बेंगलोर


श्री मीठालाल-श्रीमती मांगीबाई बम्बकी, बेंगलोर-लसानी


देवीलाल सुखलेचा


पवन सुखलेचा


एम. मजू जैन

अमर रिषभवीर

हिन्दी साप्ताहिक पत्र

न 241/1, 2रा मैन रोड, रामचद्रपुरम्, बेगलोर - 560 021

फोन 080 - 2313 3224 ऑ, 23122457 नि

फेक्स : 080 - 23123114

द्वारा प्रकाशित

सोहनलाल अभिनंदन ग्रंथ

प्रधान सम्पादक :-

देवीलाल सुखलेचा

सम्पादक -

पवन सुखलेचा

एम. मंजू जैन

सहसम्पादक :-

लालचंद छिंगावत

मूल्य : 101/= रुपये मात्र

मुद्रक :-

अरिहंत कम्प्यूटर्स

पवन प्रिन्ट्स

न. 241/1, 2रा मैन रोड़, रामचद्रपुरम्, बेगलोर - 560 021.

फोन : 080 - 2313 3224 फेक्स : 23123114

मोबाईल 94483 72457

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

द्वारा

दानवीर भामाशाह, धर्म प्रेमी, समता आराधक, कर्तव्यनिष्ठ, सजग प्रहरी,
दूरदर्शी, चिन्तनशील, उदारमना सुश्रावक

श्री सोहनलालजी सिपानी

को वर्ष २००३-२००४ का

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार समारोह में

प्रेरक सान्निध्य :

वीतरागमना दीक्षार्थी मुमुक्षु भाई - बहिनें

अध्यक्षता :

श्री सुन्दरसिंहजी भण्डारी पूर्व राज्यपाल

प्रमुख अतिथि :

श्री गुलाबचन्दजी कटारिया सार्वजनिक निर्माण मंत्री, राज. सरकार

झीलों की नगरी उदयपुर में

मंगलवार, दि. 3 - 2 - 2004, रात्रि 8.30 बजे

स्थल : **पंचायती नोहरा**

से सम्मानित करने पर हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई

- अमर रिषभवीर परिवार

- सुश्री पिंकी जारोली - मंगलवाड चौराहा (राज.)
- डेम्पलकुमारी कोठारी - चिकारडा (राज.)
- सुश्री अनिताकुमारी धींग - चिकारड़ा (राज.)
- सुश्री संगीताकुमारी बरडिया - गंगाशहर (राज.)
- सुश्री मंजू भूरा - देशनोक (राज.)
- सुश्री लता सुराणा - पथार कांदी (असम)

३-२-२००४, रात्रि ८.३० बजे, पंचायती नोहरा में अभिनंदन समारोह की अध्यक्षता श्री सुन्दरसिंहजी भण्डारी पूर्व राज्यपाल ने की। प्रमुख अतिथि श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, सार्वजनिक निर्माण मंत्री, राज. सरकार थे।

सोहनलाल सिपानी अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, ने १५ मुमुक्षुओ के सान्निध्य में उदयपुर में करीबन ११,००० की जनमेदनी के सम्मुख किया। बेंगलोर संघ के भी करीबन १५० श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे।

दीक्षा और आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार समारोह पर बोंगलोर निवासी श्री सम्पतराजजी कटारिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के अर्थ सौजन्य से श्री साधुमार्गी जैन समता यात्रा उदयपुर में उपस्थित हुआ।

इससे पूर्व करीबन ९० श्रावक-श्राविकाओं का एक संघ, श्री उदयलालजी पारसमलजी दक हुंसुर के सौजन्य से चातुर्मासार्थ विराजित आचार्य भगवंत एवम् संत-सतीवृन्द के दर्शनार्थ तथा आचार्य नानेश समता पुरस्कार समारोह पर इन्दौर में उपस्थित हुआ। दोनों संघों के संयोजक देवीलालजी सुखलेचा, अध्यक्ष - समता युवा संघ, बेंगलोर रहे।

भव्य और ऐतिहासिक दीक्षा के अवसर पर व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, आगमज्ञ, आचार्य श्री रामलालजी म. करीब १७५ साधु-साध्वियों की शिष्य मंडली के साथ बिराजे।

इसी शुभ दिन मुमुक्षु आत्माओं का अभिनन्दन समारोह रखा। जिनकी दीक्षा दि. ४-२-२००४ को सम्पन्न हुई हैं।

इसी अवसर पर समता विभूति आचार्य श्री नानेश साधना-स्वाध्याय केन्द्र का लोकार्पण हुआ। यह वे अनन्त पुण्य के क्षण है जहाँ पर प्रथम बार साधु-साध्वी के सम्मेलन से पूरा वातावरण धर्ममय बना, क्योकि यहाँ १५ दीक्षाओं के कारण समवसरण जैसी रचना हुई व चतुर्विध संघ उपस्थित हुआ।

वास्तव में आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का चयन उनके समतामय जीवन की एक महान् उपलब्धि है।

श्री सिपानीजी ने जीवन मे समता को जीया है, समता के साथ आप रहते है, समता को अपनाया है। जीवन के प्रत्येक कार्य में आप समताभाव को ही धारण करते हैं।

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के अभिनंदन समारोह का आयोजन २३-९-२००३ को इन्दौर में भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरूसिंहजी शेखावत तथा मध्य प्रदेश के तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री श्री दिग्विजयसिहजी के सान्निध्य में तथा सोहनलाल सिपानी अभिनन्दन ग्रंथ का विमोचन भी इसी आयोजन में महामहिम उपराष्ट्रपतिजी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न होना था, पर राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री निर्मलकुमारजी जैन के आकस्मिक निधन से, राजकीय शोक के कारण कार्यक्रम सम्पन्न नहीं हो सका।

इस आयोजन को ऐतिहासिक और भव्य बनाने मे श्री साधुमार्गी जैन संघ इन्दौर ने पूरी तैयारी की थी। देश के विभिन्न प्रांतों से विशिष्ट अतिथि, अ. भा. साधुमार्गी जैन सघ के समस्त पदाधिकारीगण, सदस्य एवं श्रावक-श्राविकाएं इस प्रसंग पर उपस्थित थे।

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्राप्ति पर आपश्री को हार्दिक बधाई के साथ आप जैसे जिन शासन के अनमोल मोती के लिए आपके जीवन की वीर प्रभु से दीर्घायु की कामना करता हूँ और भावना भाता हूँ कि आप जीवन की श्रेष्ठ ऊँचाइयो को छूते हुए अपनी आत्म साधना मे समता के साथ आगे बढते रहे। सोहनलाल सिपानी अभिनन्दन ग्रन्थ आप सभी के लिए उपयोगी बनें।

परम आराध्य आचार्य भगवंत एवं साधु-साध्वीवृन्द के संयमी शरीर की सुखसाता पूछता हुआ, मंगलकामनाएं चाहता हुआ चरण कमलों में वन्दन, वीतराग पथ पर आगे बढने वाले के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ,

– देवीलाल सुखलेचा

अणुक्रमणिका

दीक्षा, तपस्या, संथारा रिकार्ड खण्ड-४

प्रभात स्वर खण्ड-५

अभिनंदन खण्ड-६

व्यक्तित्व व कृतित्व खण्ड-७

प्रवचन वाणी खण्ड-८

आचार्य गौरव गाथा खण्ड-८

शुभ संदेश खण्ड-९

विज्ञापन

ART PAPER Multi Colour

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं ।
-भगवान महावीर स्वामी

समता दर्शन से ही विश्व कल्याण सम्भव है । -आचार्य नानेश

हार्दिक क्षमा याचना सहित

जय जिनेन्द्र !



परम पूज्य पिताश्री भैरुंदानजी सिपानी



परम पूज्य माताजी धन्नीदेवीजी सिपानी



श्री सोहनलालजी सिपानी और श्रीमती जेठीदेवी सिपानी

पारिवारीक जन



भ्राता श्री गोकुलचंदजी सिपानी भ्रातावधु श्रीमती वसंतीदेवी सिपानी



बहनोईजी श्रीमान् जतनलालजी लूणिया बहन श्रीमती मोहिनीदेवी लूणिया



भ्राता श्री आर. के. सिपानीजी भ्रातावधु श्रीमती सूरजदेवी सिपानी



वहनोईजी श्रीमान् भंवरलालजी दस्साणी वहन श्रीमती छगनदेवी दस्साणी

सोहनलालजी सिपानी के पुत्र एवं पुत्र वधुएं



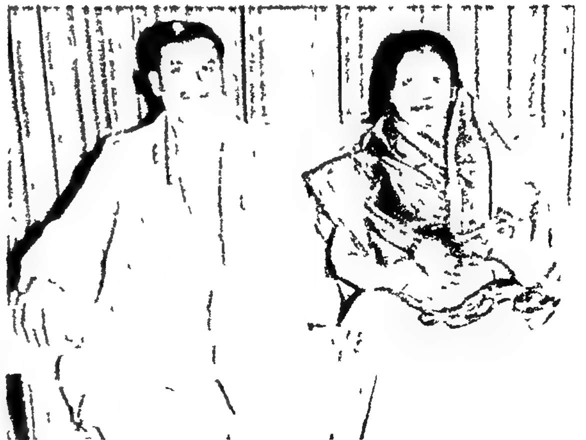
पुत्र श्री सुंदरलालजी सिपानी
पुत्रवधु श्रीमती शांतादेवी सिपानी



पुत्र श्री राजकुमारजी सिपानी
पुत्रवधु श्रीमती कंचनदेवी सिपानी



पुत्र श्री कमलजी सिपानी
पुत्रवधु श्रीमती विमलादेवी सिपानी



पुत्र श्री विमलचंदजी सिपानी
पुत्रवधु श्रीमती कुमुददेवी सिपानी

श्री सोहनलालजी सिपानी के पुत्रों का परिवार

श्री सुन्दरलालजी सिपानी अपने परिवार के साथ



श्री राजकुमारजी सिपानी अपने परिवार के साथ







श्री कमलजी सिपानी अपने परिवार के साथ



श्री विमलजी सिपानी अपने परिवार के साथ

श्री सोहनलालजी एवं श्रीमती जेठीदेवी सिपानी अपने पौत्र व प्रपौत्र के साथ







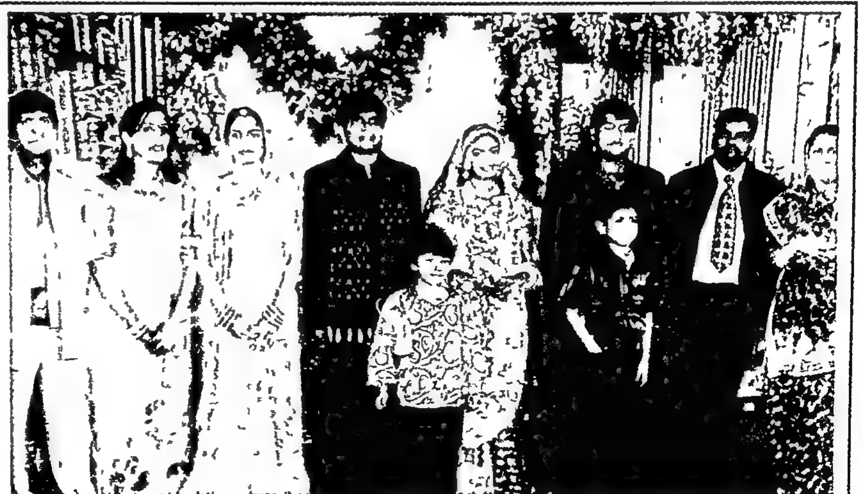


प्रपौत्र श्रेणिक एवं राहुल के जन्मोत्सव पर श्री सोहनलालजी एवं श्रीमती जेठीदेवी सिपानी को स्वर्ण-सीढी पर चढाते समय का दृश्य

अपने पौत्र पुनीत के साथ श्री सोहनलालजी एवं श्रीमती जेठीदेवी सिपानी



प्रपौत्र राहुल के साथ श्री सोहनलालजी सिपानी



श्री सोहनलालजी सिपानी के जमाई श्री प्रकाशचंदजी वेताला एवं पुत्री श्रीमती सरला बेताला अपने परिवार के साथ

समता मनीषी श्री मोहनलालजी सिपानी



आर वाई ए के अध्यक्ष श्री कमलचदजी सिपानी के सान्निध्य मे कारगील मे शहीद हुए परिवार को तीन पहिया साईकल वितरण करने के समय श्री रमेशचदजी नाहर, श्री राजकुमारजी सिपानी एव श्री जयचदलालजी डागा

चिकमगलूर मे श्रीमती धन्नीदेवी सिपानी नेत्रालय ब्लॉक के उद्घाटन के अवसर पर श्री राजकुमारजी सिपानी, श्री आर के सिपानीजी, श्री गोकुलचदजी सिपानी, श्री सुदरलालजी सिपानी, श्री कमलजी सिपानी, श्री विमलजी सिपानी आदि

ओसवाल परिषद् द्वारा प्रदत्त समाज भूषण का गौरवमय प्रशस्ति-पत्र







ओसवाल परिषद् (पंजी)
बेंगलोर

समाज भूषण श्री सोहनलालजी सिपानी

ओसवाल परिषद् उदारमना उद्यमी श्री सोहनलालजी सिपानी को शिक्षा, चिकित्सा व जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के क्षेत्रों में उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट योगदान के लिए 'समाज-भूषण' के सम्मान से सम्मानित करती है।

श्री सोहनलालजी सिपानी चिकित्सालय, शिक्षण और धार्मिक संस्थाओं को सदैव सक्रिय रूप से सहयोग देते रहते हैं। आप सम्प्रति श्री साधुमार्गी जैन संघ, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-बेंगलोर तथा शिक्षा-दीक्षा सुरेन्द्रकुमार सांड सोसाइटी-बीकानेर केअध्यक्ष हैं। आप अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ-बीकानेर के ट्रस्टी भी है।

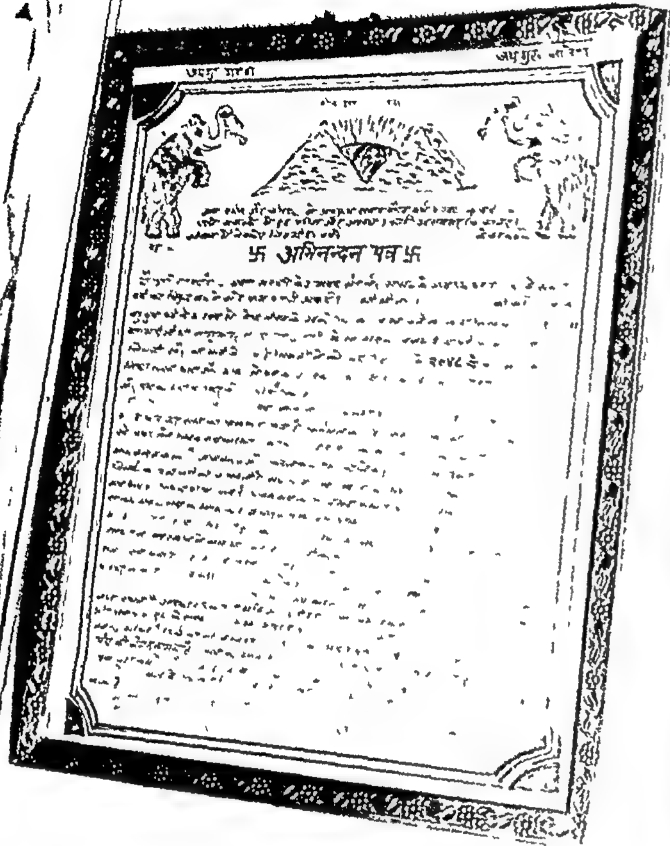
ओसवाल परिषद् श्री सोहनलालजी सिपानी को रविवार, 3 फरवरी 2002 को चौड़य्या मेमोरियल हॉल, बेंगलोर में आयोजित सम्मान समारोह में 'समाज-भूषण' से सम्मानित करके अपने आपको अत्यन्त गौरवान्वित महसूस करती है।

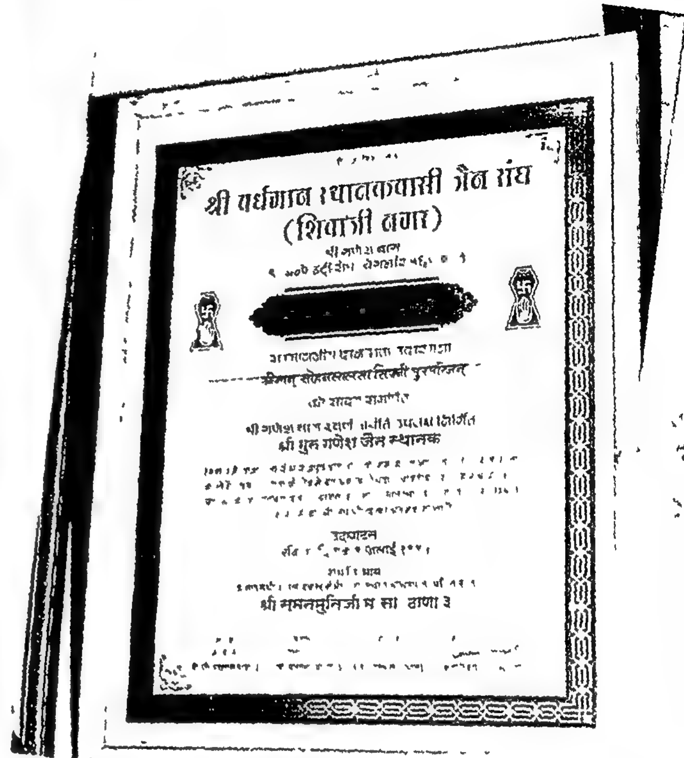
केसरीमल बुरड़
चेयरमेन-सम्मान समिति



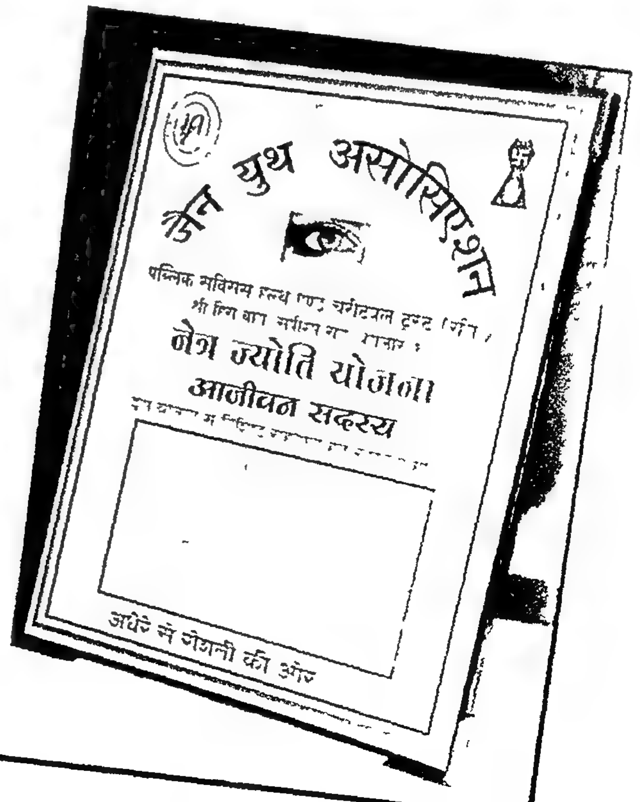
रायचन्द खटेड़
अध्यक्ष-ओसवाल परिषद

श्री सोहनलालजी सिपानी को विभिन्न संघों द्वारा प्रदत्त अभिनन्दन पत्र







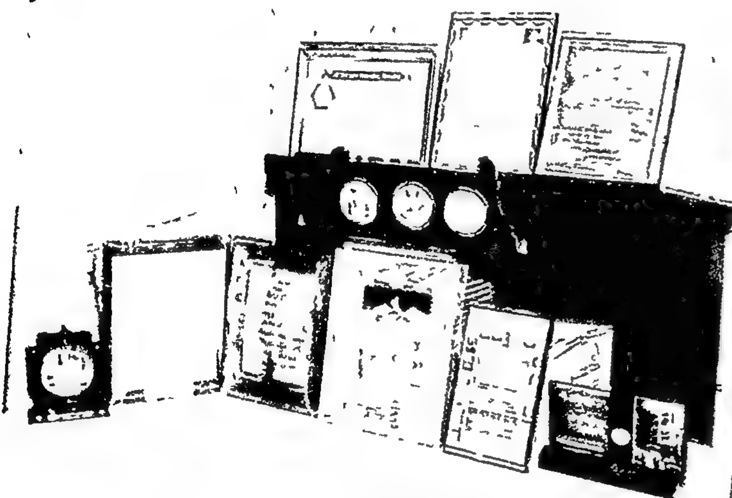




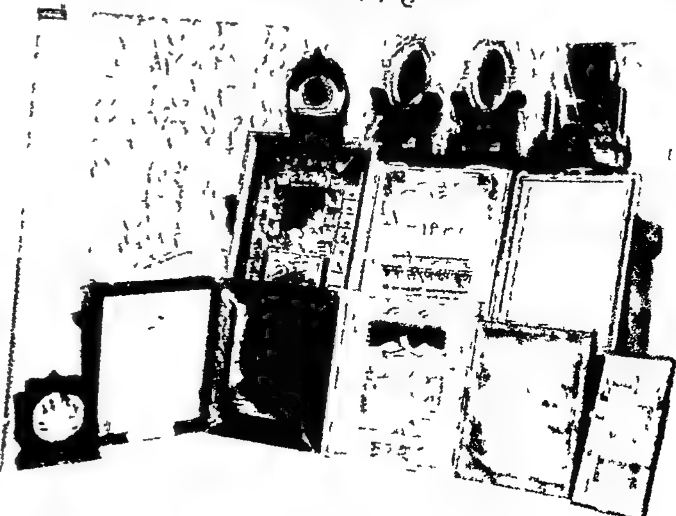
सिपानी भवन में सिपानी ग्रंथालय



सिपानी भवन







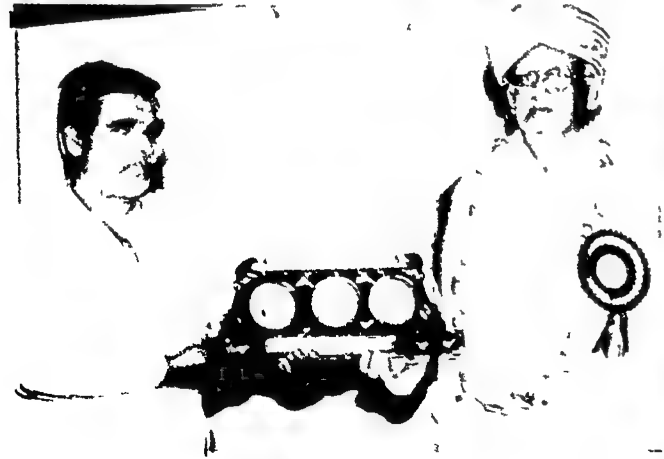
श्री सोहनलालजी सिपानी को प्राप्त हुए अभिनंदन पत्र एवं प्रतिक चिन्ह



नानेशनगर (दाता)
मे
आचार्य श्री नानेश समता
विद्यालय के शुभावसर पर
श्री सोहनलालजी सिपानी
का स्वागत करती हुई
पाठशाला की बालिकाए



कारगिल युद्ध मे शहीद हुए
कर्नाटक प्रात के परिवार
जनो को
अमर रिषभवीर
द्वारा आयोजित
ऐ वतन तेरे लिए
के अवसर पर
शहीद परिवार को
चेक प्रदान करते हुए
मुख्य अतिथी
श्री सोहनलालजी सिपानी



राजस्थान समाज कर्नाटक (रजि) के रजत जयति वर्ष पर
समारोह के मुख्य अतिथी श्री सिपानीजी को समाज के मत्री
श्री देवीलालजी सुखलेचा प्रतिक चिह्न भेंट करते हुए



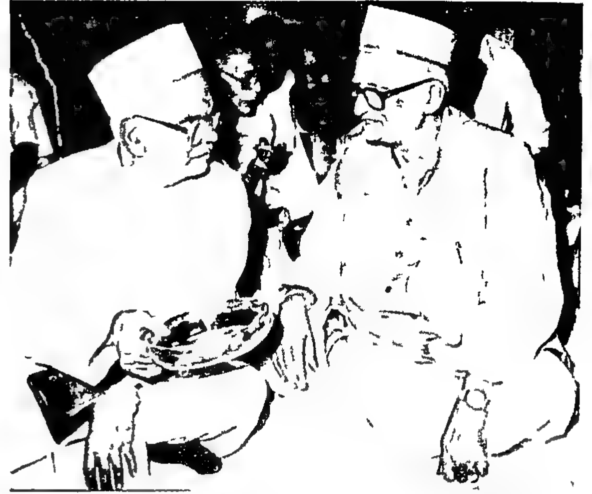
श्री सोहनलालजी सिपानी को **समाज भूषण** सम्मान स्वरुप स्मृति चिह्न प्रदान करते हुए कर्नाटक राज्य के गृह मंत्री श्री मल्लीकारजुन खारगे, साथ मे ओसवाल परिषद के अध्यक्ष श्री रायचंदजी खाटेड



श्री विमलचंदजी सिपानी श्री कमलचंदजी सिपानी राजस्थान के राज्यपाल श्री अंशुमनसिंहजी को एक लाख रुपये का चेक अ... राजस्थान राहत कोष प्रदान करते हुए श्री राजकुमारजी सिपानी व श्री सुंदरलालजी सिपानी साथ में श्री देवीलालजी सुखलेचा (अध्यक्ष, अ.भा. जैन पत्रकार महासंघ, बेंगलोर) व श्री गौतमचंदजी ओस्तवाल (महामंत्री, अ.भा जैन पत्रकार महासंघ, बेंगलोर)



श्री सोहनलालजी सिपानी एव श्री गोरधनसिंहजी रामपुरिया, बीकानेर



श्री बालचदजी सेठिया के साथ श्री सोहनलालजी सिपानी



श्री बालचदजी सेठिया,
श्री किशनलालजी बेताला
(काका),
श्री सोहनलालजी सिपानी,
श्री घुड़मलजी डागा
आदि के साथ



श्री शान्तिलालजी साण्ड,
श्री सोहनलालजी सिपानी,
श्री मानमलजी सुराणा,
श्री रतनचदजी नाहर,
श्री रमेशजी नाहर एव आदि

गुरू नाना जय महावीर जय गुरू रा

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति, बीकानेर



की ओर से धर्मनिष्ठ, सरलमना, सुश्राविका

श्रीमती जेठी देवी सिपानी

बेंगलोर को सादर समर्पित

अभिनंदन - पत्र

महाभाग्यशाली :-

आपको आचार्य श्री नानेश व युवाचार्य श्री रामेश की परंपरा के अन्य उपासक, धर्मप्रेमी, सघनिष्ठ सुश्रावक स्व श्री चादमल जी सा डागा गगाशहर (बीकानेर) की सुपुत्री तथा स्व सेठ सा श्री भेरूदान जी सिपानी, उदयरामसर (बीकानेर) की पुत्रवधु बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आप धर्मनिष्ठ, उदारमना, संघ प्रेमी, गुरूभक्ति से ओत-प्रोत श्रीमान सोहनलाल जी सा सिपानी की सहधर्मिणी हैं। दोनो ही परिवारो से आपको देव, गुरू, धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा विरासत मे प्राप्त हुई। धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्कारो से जुडे चार पुत्रो व एक पुत्री सहित भरा पूरा परिवार पुण्यवानी से प्राप्त होता है। अत आप महाभाग्यवान है।

स्वाध्याय - साधना की प्रेरक :-

एक कुशल गृहिणी का निर्वहन करने के साथ आप अपने कुटुम्ब, स्वधर्मी भाई बहिनो को धर्म-ध्यान, स्वाध्याय, प्रार्थना की प्रेरणा देकर उन्हे मार्ग पर अग्रसर करती रहती है। बैगलोर (कोरमंगला) मे प्रत्येक रविवार को आपके परिवार द्वारा प्रात प्रार्थना-सभा का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है, जिसमे सभी स्वधर्मी भाई-बहिन पधार कर धर्मलाभ लेते है, यह आपकी प्रेरणा का ही प्रतिपल है।

गुरूभक्त, उदारमला, समाज-देवभवी :-

आप व आपका परिवार गुरू भक्ति, श्रद्धा मे पूर्ण समर्पित करते हुए, धार्मिक-सामाजिक उत्थान, सघ/समिति के सहयोग साहित्य प्रकाशन व लोकोपकारी कार्यो मे उदारतापूर्वक तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करते है। आप सदैव संत-सतियो के दर्शनार्थ एव सेवार्थ सदा सक्रिय रहती है। आपकी उदारता व सेवा-भावना अनुकरणीय और प्रशसनीय है।

सरलता, विनम्रता, सादगी की प्रतिमूर्ति :-

अतुल धन सपदा होने के बावजूद आप सरलता, विनम्रता और सौम्यता के प्रतिमूर्ति है। आपका आत्मीय व्यवहार तथा सम्मोहक व्यक्तित्व सभी को अपनी ओर सहज आकर्षित करता है।

ऐसी आदर्श, सेवाभावी, उदारमना, श्रद्धेया, सुश्राविका जो अपने परिवार को धार्मिक, सामाजिक लोकोपकार सेवा कार्यो मे सहयोगी बनने की प्रेरणा प्रदान करती हैं, का अभिनदन करते हुए हम अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं आपकी विशुद्ध भावनाओ में निरंतर अभिवृद्धि होती रहे, इन्हीं शुभकमनाओं के साथ।

सादर/साभार/सविनय

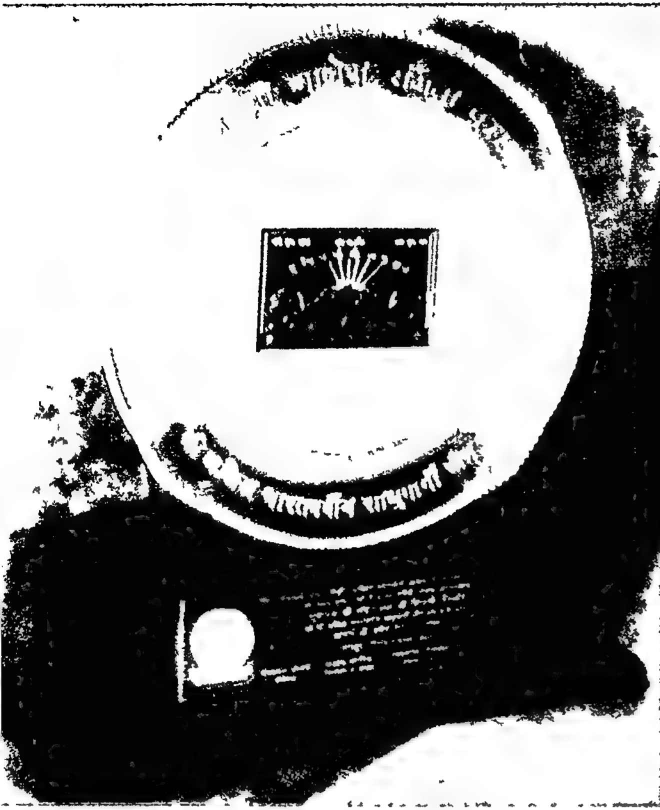
हम है आपकी

श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

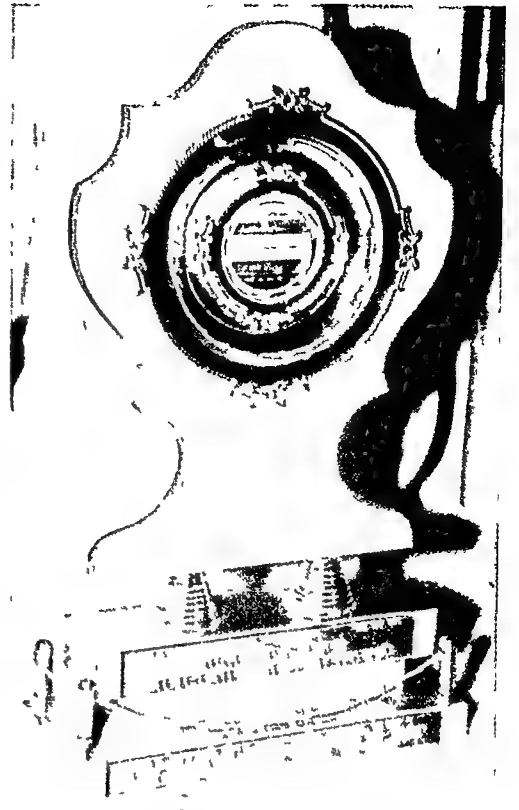
की सदस्यगण

२२ सितंबर, १९९८

उदयपुर (राजस्थान)



श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा
श्री सोहनलालजी सिपानी को प्रदत्त
आचार्य नानेश समता पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिह्न



श्री वर्धमान साधुमार्गी स्था जैन सघ, उदयपुर
द्वारा समता मनीषी श्री सोहनलालजी सिपानी को
प्रदत्त स्मृति चिह्न



श्री सोहनलालजी
सिपानी
मुमुक्षु भाई- वहनो के
साथ विराजमान और
साथ मे है
समता - स्मृति चिह्न

जय नानेश   जय महावीर   [illegible]

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

से सम्मानित

मुमुक्षु जीवन साधक समता मनीषि

लूणकरणसर (बीकानेर) एवं बैंगलोर निवासी

सुश्रावक श्रीयुत सोहनलाल जी सिपानी

को आपके

[illegible] गुण संपन्न जीवन,

[illegible] सम्यक् आचरण

[illegible] के प्रति सर्वभावेन समर्पण

[illegible] व [illegible] के लिए

[illegible] व [illegible] द्वारा [illegible] हेतु

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ,

द्वारा प्रदत्त पत्र



श्री सोहनलालजी सिपानी को वैरागी भाई - बहनें आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्रदान करते हुए साथ में है राजस्थान सरकार के लोक निर्माण मंत्री और संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्री मदनलालजी कटारिया



श्री अ. भा साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री उमरावसिंहजी ओस्तवाल द्वारा राष्ट्रीय मंत्री श्री मदनलालजी कटारिया श्री सोहनलालजी सिपानी को एक लाख का चैक प्रदान करते हुए साथ में है संघ के संगठन मंत्री श्री महेषजी नाहटा





श्री सोहनलालजी सिपानी वैरागी भाई - बहनों के साथ, राजस्थान सरकार के लोक निर्माण मंत्री श्री गुलाबचंदजी कटारिया अपनी शुभकामनाएं प्रदान करते हुए



श्री सोहनलाल जी सिपानी को पूर्व राज्यपाल श्री सुन्दरसिंहजी भंडारी और उदयपुर संघ के अध्यक्ष श्री हरनाथसिंहजी मोदी स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए



द्वय-समता मनीषी त्यागमूर्ति गुमानमलजी चौरड़िया और श्री सोहनलालजी सिपानी के साथ है संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सम्पतराजजी कटारिया, कैलनजी [illegible] और संयोजक श्री मोहनलालजी चौरड़



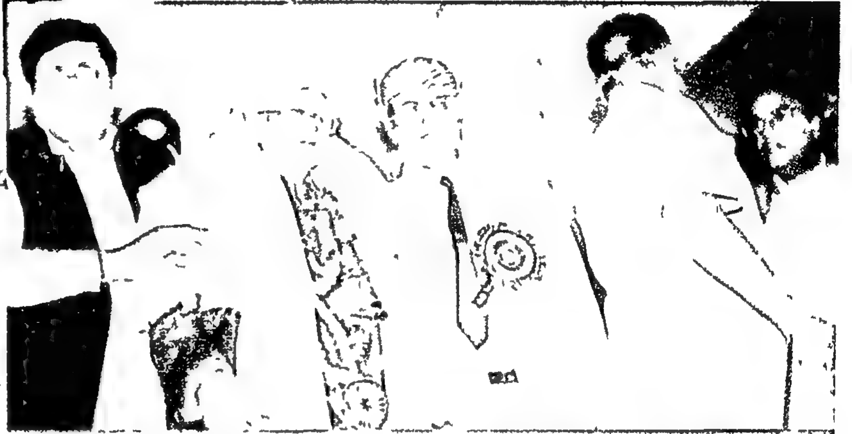
ोहनलाल सिपानी अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन करते हुए राजस्थान सरकार के लोक निर्माण मंत्री श्री गुलाबचंदजी कटारिया और संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री उमरावसिंहजी ओस्तवाल साथ में हैं, श्री सोहनलाल जी सिपानी और ग्रंथ के सम्पादक श्री देवीलाल सुखलेचा



श्री सोहनलालजी सिपानी को सोहनलाल सिपानी अभिनंदन ग्रंथ की प्र भेंट करते हुए राजस्थान सरकार के लोक निर्माण मंत्री श्री गुलाबचंदजी कटारिया और संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री उमरावसिंहजी ओस्तवाल सा में हैं, मुमुक्षु भाई-बहनें



श्री सोहनलालजी सिपानी को अभिनदन पत्र भेट करते हुए राजस्थान सरकार के लोक निर्माण मत्री श्री गुलाबचदजी कटारिया



अ भा साधुमार्गी जैन संघ के पदाधिकारियो के साथ सोहनलालजी सिपानी
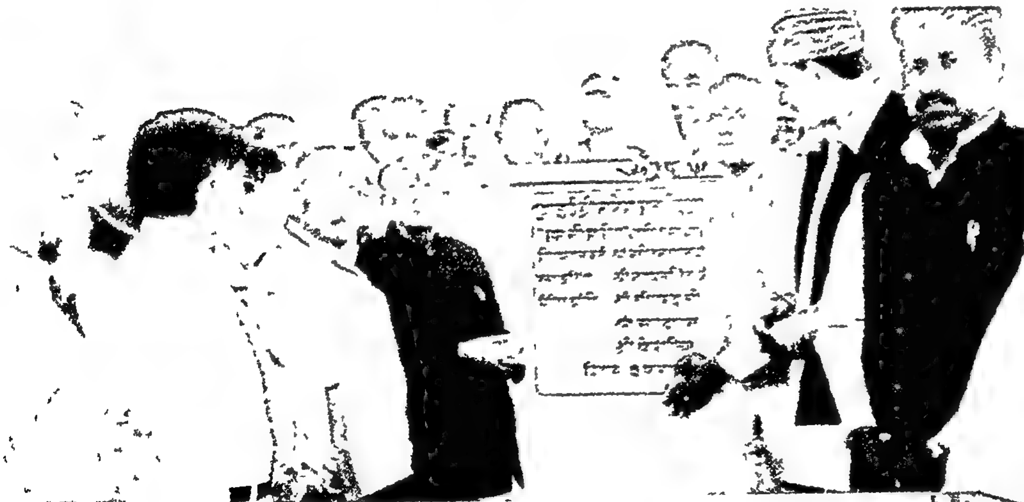


समता मनीषी श्री सोहनलालजी सिपानी अपने परिवारजनों के साथ पुत्र श्री विमलजी सिपानी, भाई श्री आर के सिपानीजी, पुत्र श्री राजकुमारजी सिपानी, श्री सोहनलालजी सिपानी, पुत्र श्री कमलजी सिपानी, जमाई श्री प्रकाशजी वेताला और पुत्र श्री सुदरलालजी सिपानी (खडे हुए), मच पर विराजमान सभी वीतराग पत्र पर आगे बढने वाले मुमुक्षु भाई-वहन



श्री सिपानीजी प्रसन्न मुद्रा में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए



जयपुर में अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर श्री सोहनलाल सिपानी को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजमलजी चोरडिया स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

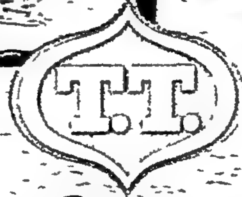


दाता गाँव में आचार्य श्री नानेश महाविद्यलय के एम सी ए. विंग के शिलान्यासकर्ता श्री सोहनलालजी सिपानी, मुख्य अतिथि श्री नरपतसिंहजी, विशिष्ट अतिथि श्री श्रीचंदजी, श्री सरदारमलजी कांकरिया, श्री केशरीचंदजी एवं सिपाजी परिजन



आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट, दाता के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंच पर विराजमान अतिथियों के साथ श्री सोहनलालजी सिपानी





T T LIMITED
879, Master Prithvi Nath Marg, Opp. Ajmal Khan Park, Karol Bagh, New Delhi-110005
Ph.: (0091)-11-3536317, Fax : (0091)-11-3632283
E-Mail: ttltd@eth.net / ttlimited@bol.net.in Website http://www.ttgarments.com

जय महावीर 卐 जय गुरु नाना 卐 जय गुरु राम 卐 जय महावीर 卐 जय गुरु नाना 卐 जय गुरु राम

Jai Guru Nana Jai Mahaveer Jai Guru Ram





पूज्य पिताजी
स्व. सेठ श्री रोड़मलजी सांका

पूज्य माताजी
स्व. श्रीमति कंचन बाई

आपका स्नेहयुक्त आशीर्वाद हमारे परिवार पर हमेशा रहे ।

रतनलाल - सन्तोष बाई
मुकेश कुमार - दीपा बाई
राकेश कुमार - रीषभ कुमार सांका
(सारोठ - वाला)



R.R.PLASTICS

All kinds of PLASTIC RAW MATERIALS



64, K.H.Road,
Korrukkupet, CHENNAI - 600 021.



25920505 / 0606 / 0707
(R) 25963030 / 25956973
Mobile : 35920505 / 0606 / 0707

जय महावीर 卐 जय गुरु नाना 卐 जय गुरु राम 卐 जय महावीर 卐 जय गुरु नाना 卐 जय गुरु राम

.ज गुरु नानेश ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम

देव गुरु धर्म के प्रति समर्पित, जैन समाज के गौरव,

दानवीर, श्रावक रत्न, परम् श्रद्धेय



श्री सोहनलालजी सा. सिपानी

को राष्ट्रीय पुरस्कार

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

से अलंकृत करने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं-

उमरावसिंह ओस्तवाल

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

आशा ओस्तवाल

कुलदीप ओस्तवाल

OSTWAL GROUP OF COMPANY

A/1, Shantiganga Apt., Bhayandar (East), **MUMBAI**
Tel. : 2804 2412, 2804 2468, 2804 5707,
Resi. : 2816 2831, 2817 4846, Cell : 9821118005

साधुमार्गी जैन संघ अमर रहें

ज्ञान

दर्शन

मंगलकारी नवकारमंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच णमोक्कारो,

सव्व पाव प्पणासणो ।

मंगलाणं च सव्वेसिं,

पढमं हवइ मंगलं ॥

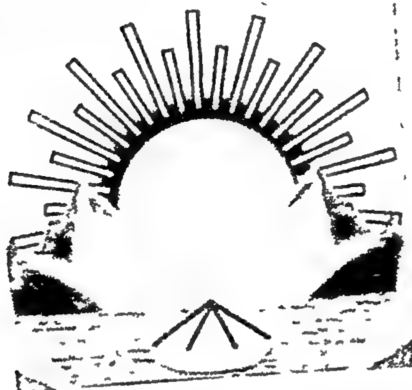
चारित्र

तप

॥ श्री महावीराय नमः ॥ ॥ जय रामेश ॥

आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र

महाराणा प्रताप नगर, उदयपुर (राज.)



संघनिष्ठ सेवाभावी

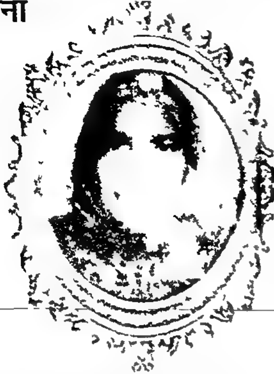
श्रीमान् **सोहनलालजी सिपानी**, बेंगलोर

जन-जन की आस्था के केन्द्र, समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, परम ...ज्य **आचार्य श्री १००८ श्री नानालालजी म.सा.** के समीक्षण ध्यान एवं समता ...र्शन की ज्योति को जन-जन तक पहुँचाने हेतु श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, ...बीकानेर द्वारा निर्मित **आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र** की स्थापना में आपका ...सराहनीय योगदान रहा है।

आपके विशेष सहयोग हेतु श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ आपको ध्यान केन्द्र के **संस्थापक सदस्य** के रुप में मनोनीत करते हुए गौरवान्वित है।

रिद्धकरण सिपानी	उमरावसिंह ओस्तवाल	मदनलाल कटारिया
संयोजक	अध्यक्ष	महामंत्री
आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ	श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ
	बीकानेर	बीकानेर

जय गुरू नाना | श्री महावीराय नमः | जय गुरु राम



हार्दिक श्रद्धांजली



स्व. श्रीमती उगमबाई नन्दावत
(धर्मपत्नी श्री मिट्ठालाल नदावत)
स्वर्गवास सवत् 2056
जेठवद 30 ता 15-5-99



स्व. श्रीमती सरिता पीतलिया
(सुपौत्री मिट्ठालाल नदावत)
(सुपुत्री करणसिह नदावत)
स्वर्गवास ता 13-6-2001

सुन्दर सुरभीत जीवनी आपकी, परिवार नहीं भुला पायेगे
आपका स्वर-व्यवहार, सदा नित, स्मृति पटल मे आयेंगे।
अर्पित है आपको, विनम्र हृदय से भावांजली
स्वीकार करे हे पुण्य आत्मा! हम सबकी यह श्रद्धांजली।।

श्रद्धावनतः

मिट्ठालाल नन्दावत
नवरतनमल-सुशीलाबाई, करणसिह-प्रेमलता, श्यामसुन्दर-गुणमाला,
रमेशचन्द्र-रेखा, विनोदकुमार-कल्पना नन्दावत
ललिता-निर्मलकुमारजी मोगरा, गुणमाला-इद्रमलजी पामेचा,
आशा-धर्मेशजी कोठारी, वदना-राजेशजी सोनी
कमलेश-आशा, दिनेश-सुमित्रा, कुलदीप-जयश्री, सुनील-अनुष्का, अनील-रचना,
मनीष, मनोज, प्रतीक, सपना, दिपाली, पूजा, आशीष, अक्षय, अनिरूध, आदित्य अन्जली, दिव्या, निकीता
एव समस्त नन्दावत परिवार, धरियावद (राज)

शुभकामना संदेश

खण्ड-१

भँवरलाल कोठारी

राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय गौवश रक्षण सवर्धन परिषद
पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान गौ सेवा आयोग
ट्रस्टी उपाध्यक्ष. राजस्थान गौ सेवा सघ
पूर्व मत्री, अ भा साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर
सयोजक, आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार समिति

कार्यालय रानी बाजार, बीकानेर-३३४ ००१
दूरभाष २२००७४९
निवास ओसवाल कोठारी मोहल्ला
बीकानेर-३३४ ००५ (राज)
दूरभाष २५२१४२७, २५४३२७७

क्रमाक

दिनाक १४-०१-०४

सम्माननीय श्रीयुत् देवीलालजी सुखलेचा,
सादर जय जिनेन्द्र ।

आपसे दूरभाष पर बात हुई । समता मनीषी सम्माननीय सोहनलालजी को शक्ति-भक्ति-वीतरागी तप पूतो की तेजस्विनि मेवाड़ की धर्म धरा पर वीतरागमना आत्म लक्ष्मी भव्य मुमुक्षुजनो के पावन सान्निध्य मे दि ३ फरवरी २००४ को गरिमामय आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से महिमा मडित किया जावेगा।

सरलमना सवेदनशील सोहनलाल सा ने वीतराग पथानुगामी चरित्र आत्माओ से दक्षिण भारत के दुर्गम मार्गो पर पद विहार करते हुए विचरण करने के समय मूक-भाव से अनवरत सेवा करने का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है।

बेगलोर के कोरमगला क्षेत्र मे सार्वजनिक मगल कार्यो के लिए लोकार्पित उनके सिपानी भवन मे प्रति रविवार को प्रात· ८ से ९ बजे तक उस अचल के आबाल वृद्ध सभी परिवारो के भाई-बहिन एकत्रित समवेत रूप से एक साथ सामायिक, स्वाध्याय, भजन, कीर्तन, वन्दन, उपासना का भावपूर्ण अनुकरणीय अनुष्ठान वर्षो से लगातार कर रहे है। बालको, युवको, बुर्जुगो मे पारस्परिक सौहार्द्र से धार्मिक - आध्यात्मिक संस्कार जागरण का यह एक अनुठा कार्यक्रम है। श्रद्धेय सिपानीजी इसकी धूरी हैं ।

यही आधार है जिस पर हजारो वर्ष पुरानी हमारी शाश्वत -सनातन प्रकृति मूलक सस्कृति और वीतरागता के आध्यात्मिक सस्कार आज भी मजबूती से टिके हुए है। सस्कृति और सस्कारो की बेजोड़ थाती को आज भी जीवत रखने वाले सेवानिष्ट समता मनीषी श्री सिपानी जी वस्तुत आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित किये जाने वाले उपयुक्त मनीषी है । वे भावी पीढ़ी के सदा प्रेरणा स्त्रोत रहेगे ।

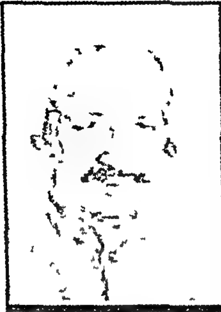
समता पुरस्कार समारोह के भव्य प्रसग पर आप अमर ऋषभ वीर द्वारा सोहनलाल सिपानी अभिनन्दन ग्रथ प्रकाशित करने जा रहे है । एतदर्थ साधुवाद ।

अभिनन्दन ग्रथ सर्वमगलकारी बने, मगल कामना है।

शुभेच्छु
भंवरलाल कोठारी

॥ श्री महावीराय नम ॥

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय गुरु राम ॥



मनोहरलाल जैन

एम कॉम , एल एल बी , साहित्य रत्न (अर्थशास्त्र)

पो पिपलिया मण्डी, जिला मन्दसौर (म प्र)

Ph 07424 (Code), 241161 (S) 241120 (R)

सदस्य -
जिला योजना समिति
जिला पचायत, मन्दसोर

सरक्षक -
जैन समता युवा सघ
पिपलिया मण्डी (म प्र)

सयोजक -
अ भा धर्मपाल प्रचार
प्रसार समिति
बीकानेर (राज)

जिला सदस्य -
भा ज पा , जि मन्दसोर

जिला सदस्य
भारत सरकार
दूरसंचार उपभोक्ता
सलाहकार समिति
जिला-मन्दसौर

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रीमान् सुखलेचा जी
अमर रिषभ वीर
बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

बधाई संदेश

विशेष आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए श्री सोहनलालजी सिपानी का चयन किया गया है । इस पर आप द्वारा प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ में मेरी बधाई स्वीकार करावें।

समता मनीषी, उदारमना, शासननिष्ठ, श्री सोहनलालजी सिपानी प्रकृति से सरल, मिलनसार, सत्यनिष्ठ व्यवहार कुशल और चिंतनशील सुश्रावक हैं।

करीदन ७५ वर्ष की आयु होने पर भी आपके चेहरे पर चमक-दमक है। सामाजिक और धार्मिक अनेक संस्थाओं में आपका योगदान अनुकरणीय है।

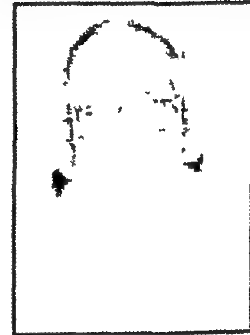
अतः आपको इस महान पुरस्कार के लिए हार्दिक मंगल बधाई प्रेषित करता हूँ।

मनोहरलाल जैन

॥ श्री महावीराय नमः ॥

सम्पादकजी, अमर रिषभवीर, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

हार्दिक बधाई



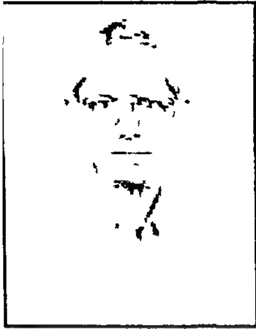
सम्माननीय श्री सोहनलालजी सिपानी अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन अमर रिषभवीर पत्रिका द्वारा किया जा रहा है यह परम हर्ष का विषय है।

श्री अ भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर ने श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का चयन आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार वर्ष २००३-२००४ के लिए किया है।

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी जैन समाज के एक अग्रणीय विरले एवं वरिष्ठ उदारमना श्रावक है। आपकी धर्म के प्रति श्रद्धा और निष्ठा हम सभी के लिए प्रेरणादायी बने। आपके आदर्श समतामय जीवन पर संघ और समाज को गौरव है, नाज है। ऐसे समतामनीषी व्यक्तित्व को बधाई।

आदरणीय श्रीयुत सोहनलालजी सिपानी सा का हार्दिक अभिनन्दन एवं आरोग्यमय शतायु जीवन की मंगल कामना प्रेषित है।

-: आपका शुभेच्छुक :-
पंकज शाह
पीपलिया मंडी (राज.)







Kanhaiya Lall Bhura
KARNI TRADING CORPORATION
Meena Kumari Choupathi, N N Road Post & Dist Coochbehar - 736 101 (West Bengal)
Phone (O) 03528 - 228114, Res 224303, Mobile No 94340 - 24222
Fax 03528 - 225726 E-mail k l bhura2002@yahoo co in
Cabinet Secretary, Lions Clubs International 322F

Ref No 6021/03-04 *Date 31-12-2003*

अपनत्व संदेश

श्रीयुत देवीलालजी सुखलेचा
शाखा सयोजक, बेगलोर

योग्य व्यक्ति का योग्य चयन !

आचार्य श्री नानेश स्मृति समता पुरस्कार आदरणीय श्री सोहनलालजी सिपानी को दि ३ फरवरी २००४ को उदयपुर मे प्रदान किया जायेगा एवम् तदुपलक्ष मे उनके व्यक्तित्व एवम् कृतित्व पर एक ग्रन्थ का प्रकाशन अमर रिषभ वीर हिन्दी साप्ताहिक पत्र के द्वारा होगा । समाचार फोन पर सुनकर अति प्रसन्नता एवम् प्रमोद भाव जागृत हुए।

मै समझता हूँ उनके कषाय रहित, त्यागमय, आदर्शमय एवम् समता से ओत-प्रोत जीवन का यथोचित मूल्याकन है ।

दानवीर, सघ शिरोमणि ऐसे व्यक्तित्व का जो भी सस्था बहुमान करेगी । वह स्वय ही अपने आपको धन्य और गौरवान्वित महसूस करेगी।

मेरा उनसे वर्षो से आत्मीय एवम् निकट का सम्बन्ध है । एक बार उनके बगले मे रहने का प्रसग भी बना है । उनके सात्विक जीवन मे अत्यन्त करीब से झाकने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ था।

मै जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे मनीषी के ऊपर उनकी व आचार्य भगवन् रामेश की असीम अनुकम्पा व कृपा निरतर प्रवाहमान रहे । वे सुस्वास्थ्य के साथ दीर्घायु बनकर सघ, समाज और राष्ट्र की सेवा करते रहे ।

वि स २०५२ मे आश्विन शुक्ला द्वितीया को बीकानेर मे जब श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ ने उनका बहुमान किया था तब उनका परिचय उस साधारण सभा मे कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । उसी की पुनरावृत्ति भावो के द्वारा आज फिर कर रहा हूँ ।

सविनय
कन्हैयालाल भूरा
वीर सघ धर्म प्रचारक एवम्
राष्ट्रीय सयोजक-व्यसन मुक्ति सस्कार जागरण समिति

॥ श्री महावीराय नमः ॥

सम्पादक अमर रिषभवीर
बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

हार्दिक मंगल कामनाएं

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप द्वारा हमारे सालाजी श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी पर अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन करने जा रहे हैं इसके लिए आपको बहुत-२ धन्यवाद।

आदरणीय श्री सोहनलालजी सिपानी जैन समाज के एक ऐसे उज्जवल नक्षत्र हैं। श्रीमान् सोहनलालजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में हमेशा एक रुपता देखने में आई हैं।

ऐसे समतानिष्ठ, समता मनीषी, समतामय जीवन जीने वाले व्यक्तित्व को मेरी ओर से और मेरे परिवार की ओर से नमन।

विश्व शांति के मसीहा, समता विभूति आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री नानालालजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्रारम्भ किया गया हैं।

ऐसे समता साधक आगम पुरुष, आचार्य श्री नानालालजी म.सा. एवं आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. को कोटि-कोटि वंदन व नमन।

समता पुरस्कार से चयनीत श्रीयुत सोहनलालजी सिपानी सा. एवं आपके परिवार का हार्दिक अभिनन्दन एवं आरोग्यमय जीवन की मंगल कामना।

भंवरलाल कम्माणी

[illegible]

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

सम्पादक अमर रिषभवीर
(हिन्दी साप्ताहिक) बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

शुभ संदेश..........

मुझे और मेरे परिवार को यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप द्वारा हमारे आदरणीय श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी पर अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन करने जा रहे है इसके लिए आप साधुवाद के पात्र है।

आदरणीय श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी जैन समाज के एक उदारमना उज्ज्वल नक्षत्र हैं। श्रीमान् सोहनलालजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में एक रुपता के दर्शन होते है।

ऐसे उदारमना, सरलमना, समतानिष्ठ, समता मनीषी, समतामय जीवन जीने वाले व्यक्तित्व को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

समीक्षण ध्यानयोगी, धर्मपाल प्रतिबोधक, समता विभूति आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री नानालालजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्रारम्भ किया गया हैं, जो सदियों तक समता का पाठ पढ़ाएगा।

हम सब समता पुरस्कार से सम्मानित श्रीयुत सोहनलालजी सिपानी सा. का हार्दिक अभिनन्दन एवं आरोग्यमय शतायु जीवन की मंगल कामना करते हैं।

जतनलाल लूणिया
कोलकत्ता

श्री सुरेन्द्रकुमार सांड शिक्षा सोसायटी (रजिस्टर्ड)

सदर बाजार
पो. : नोखा, जिला : बीकानेर (राज.)-३३४८०३

क्रमाक दि 7-1-2004

श्रीमान् देवीलालजी सा सुखलेचा
बेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

आप बेगलोर से श्री सुरेन्द्रकुमार साड शिक्षा सोसायटी के अध्यक्ष, समाज सेवी उदारमना, दानदाता, शिक्षा प्रेमी, दृढधर्मी श्रीमान् सोहनलालजी सा सिपानी जिनको उदयपुर मे दि ३ फरवरी, २००४ को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के द्वारा प्रायोजित समता पुरस्कार प्रदान करने के आयोजन पर सोहनलाल सिपानी अभिनन्दन ग्रथ प्रकाशित कर रहे है, एतदर्थ मेरी हार्दिक बधाई एवम् शुभकामनाए स्वीकारे। आपका यह पुनीत कार्य श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी की कीर्ति मे चार चाद लगावेगा।

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी ने समता सिद्धांत को आत्मसात कर सबको साथ लेकर जिस प्रकार सत महापुरूषो व महासतियांजी की सेवा मे समर्पित है। वैसे ही सामाजिक कार्यो को सम्पन्न करने मे अग्रणी रहते है। इनका अभिनन्दन सद्गुणों का अभिनन्दन है।

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी विगत चार सत्रो से यानि ९ वर्षो से शिक्षा सोसायटी के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे है। मै उनके साथ मत्री पद पर हूँ। मुझे श्री सिपानीजी का सर्वतोभावेन शिक्षा कार्यो मे सहयोग प्राप्त है। श्री सिपानीजी द्वारा विभिन्न संस्थाओ को प्रदत्त सेवाऐ अनुकरणीय और प्रशसनीय है।

श्री सिपानीजी दीर्घायु होकर इसी प्रकार सेवा और समाजोत्थान के कार्यो को सम्पादित करते रहे ऐसी शुभ कामनाऐ प्रेषित है।

धनराज बेताला
पूर्व महामंत्री,
श्री अ भा साधुमार्गी जैन संघ

॥ श्री महावीराय नमः ॥

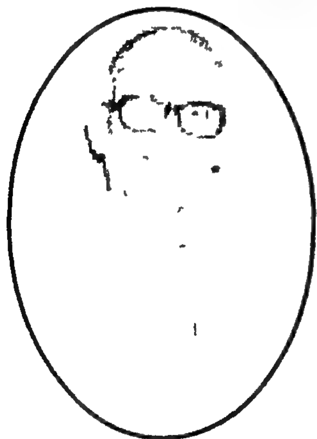
जय गुरु नाना — जय गुरु राम



卐 राम चमकते भानु समाना 卐

आदरणीय देवीलालजी सुखलेचा
सादर जय जिनेन्द्र !

आप द्वारा प्रकाशित अभिनन्दन ग्रंथ में श्री साधुमार्गी जैन संघ खिरकिया के प्रत्येक सदस्य की तरफ से मंगल कामनाएं प्रेषित हैं ।



बधाई संदेश

शासन गौरव, श्री सोहनलालजी सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के चयन पर आपके समाजरत्न होने पर हम गौरवान्वित हैं।

आप अपने गौरव को दिन दुना और रात चौगुना करते हुए समता के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाये यही मंगल मनीषा हैं।

-: शुभेच्छुक :-

[illegible] भंडारी — अशोककुमार भंडारी
अध्यक्ष — मंत्री

श्री साधुमार्गी जैन संघ, खिरकिया (मध्य प्रदेश)

नमो सिद्धाणं

जय गुरु नाना — जय गुरु रा



शासन समर्पित परम उत्साही
श्री देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक,
अमर रिषभ वीर,
बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

श्री सोहनलाल सिपानी अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाश अमर रिषभ वीर द्वारा किया जा रहा हैं जो उनके आदर्श जीवन की जीती जागती मिशाल जन-जन के हाथो मे पहुंचाने के लिए किया जा रहा हैं । मन अत्यधिक प्रमुदित हैं ।

शुभ कामना संदेश

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर ने शास समर्पित श्री सोहनलालजी सिपानी का चयन आचा श्री नानेश समता पुरस्कार वर्ष २००३ के लिए कि हैं । श्री सिपानीजी परिवार सहित दक्षिण भारत मे पधारने वाले चारित्रात्माओं की साल-संभाल एवं की अर्थ व्यवस्था और जरूरतमंद लोगों को सहाय प्रदान कर सेवा आदि के कार्य में संलग्न होने से सम पुरस्कार के अधिकारी के रुप में चयन किये जाने पर हार्दिक बधाई। आप समाज को नित नई ऊंचाइयां प्रदा करते रहेंगे। आपका जीवन धर्ममय त्यागमय बन रहे आपकी गुरुभक्ति दृढश्रद्धा प्रेरणीय हैं एवं अन्य के लि अनुकरणीय है।

श्रीयुत् सोहनलाल जी सिपानी के पूर्ण आरो शतायु की मंगल अभिलाषा...

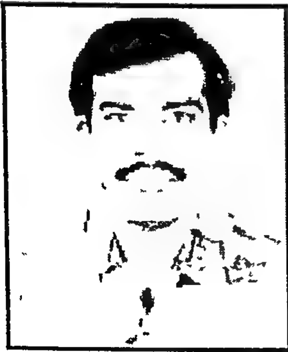
हार्दिक शुभेच्छुक :
मुमुक्षु मनीष [illegible]
खिरकिया (मध्य प्रदेश)

श्रीमान् सम्पादकजी, अमर रिषभवीर, बेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

हार्दिक मंगल कामना संदेश



सेवा शिरोमणि, देव-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित, जिन शासन रत्न, श्रीमान् सोहनलालजी सा सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्रदान करने पर अनेकानेक बधाई, आपका हमेशा हम सब को मार्गदर्शन मिलता रहें । संघ, समाज के प्रति आपकी विशुद्ध भावना के लिए हम सब आपके आभारी हैं। वीर प्रभु से मैं और मेरा परिवार प्रार्थना करते हैं कि आप दीर्घायु हो, शतायु हो, आप सदा स्वस्थ रहें.....



इसी मगल मनीषा के साथ

आप ही का शुभचितक

राजेश बोहरा

॥ श्री महावीराय नमः ॥



समता मनीषी, सेवानिष्ठ,

आदरणीय श्री सोहनलालजी सिपानी

को अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ

द्वारा राष्ट्रीय स्तर के

"आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार"

से सम्मानित करने के

उपलक्ष में

हार्दिक बधाई

और

अनेकानेक शुभकामनाएं

आपका स्नेहकांक्षी

ज्ञानीराम सेठिया

पूर्व अध्यक्ष,

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा,

[illegible] (बीकानेर, राज)

श्री महावीराय नमः

जय नानेश — जय [illegible]

श्रीमान् सम्पादकजी,
अमर रिषभवीर, बेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

शुभकामना संदेश

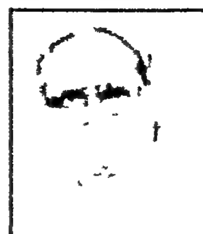
सेवा शिरोमणि, देव-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित,

उदारमना, जिन शासन रत्न,



श्रीमान् सोहनलालजी सा सिपानी

को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्रदान करने पर अनेकानेक बधाई, आपका हमेशा हम सब को मार्गदर्शन मिलता रहे। संघ, समाज के प्रति आपकी विशुद्ध भावना के लिए हम सब आपके आभारी है। वीर प्रभु से मैं और मेरा परिवार प्रार्थना करते है कि आप दीर्घायु हो, शतायु हो, और सदा स्वस्थ रहे।



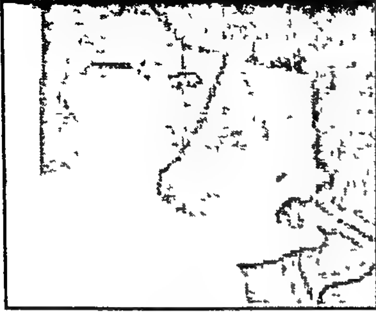
इसी मंगल [illegible]

आप ही का शुभ[illegible]

रमेशचंद श्रीमाल

[illegible]

॥ प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नम ॥



विश्व कीर्तिमान निर्माता छन्दराज
ॐ पारदर्शी
पारदर्शी साधना केन्द्र
२६१, उत्तरी आयड,
उदयपुर - ३१३ ००१



शुभकामना-सन्देश

श्रीयुक्त देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक, अमर रिषभ वीर, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

यह जानकर अत्यन्त हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अमर रिषभ वीर अपनी गौरवशाली विशेषांक प्रकाशन की शृखला में दिवसांक ३-२-२००४ को झीलों की नगरी उदयपुर में बेंगलोर निवासी परम गुरुभक्त, करूणामूर्त्ति, सुसंस्कारी, शासननिष्ठ, धर्म-परायण, दानवीर, सुसाहित्यानुरागी, जिनशासन के सजग प्रहरी, सुश्रावकरत्न, आदरणीय श्री सोहनलालजी सिपानी को आचार्य नानेश समता पुरस्कार व्यसन मुक्ति के प्रणेता, प्रशांतमना, तपोमूर्ति, तरुण तपस्वी, आचार्य श्री रामलालजी के सान्निध्य में दीक्षित होने वाले मुमुक्षु आत्माओं के पावन-पवित्र कर-कमलो से प्रदान किये जाने के अवसर पर एक वृहत् सोहनलाल सिपानी अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित करने जा रहा है। आपके कुशल-सम्पादन में प्रस्तुत ग्रंथ निश्चित रूप से श्री सोहनलाल सिपानी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उजागर करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेगा ही। ग्रंथ प्रकाशन पर मेरी आत्मीय शुभकामना स्वीकार करावें।

परमपिता श्री अरिहन्त प्रभु से हृदय के अन्तरतम प्रदेश से यही प्रार्थना, दुआ, विनय, अनुनय, अनुरोध, अरज, आग्रह, अरदास, दरख्वास्त, इल्तिजा, गुजारिश, निवेदन, रिक्वेस्ट, प्रेयर, फरीयाद एवं स्तुति करता हूँ कि वे श्री सोहनलालजी सिपानी को दीर्घायु एवं यशस्वी जीवन प्रदान करावें । जिससे व जिनशासन के सजग प्रहरी बनकर अपनी सेवाएँ प्रदान करते रहें। इसी मंगल-मनीषा के साथ-

आपका ही

पारदर्शी

॥ श्री वीतरागाय नम. ॥



चांदमल सुखलेचा
स्वतंत्रता सैनानी
पूर्व जिला प्रमुख अजमेर-मेवाड
पूर्व अध्यक्ष
खादी ग्रामोद्योग विकास मंडल,
देवगढ़
पो. छापली
वाया देवगढ, राजसमंद
फोन ०२९०४ - २४२२२७

-: आत्मीय शुभकामना :-

मुझे यह जानकर अपार हर्ष का अनुभव हुआ कि वर्ष २००३-२००४ का

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा गठित नव सदस्यों की खण्डपीठ ने बेंगलोर शहर के वयोवृद्ध श्रावकरत्न साधुमार्गी जैन संघ के प्राण,

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी

का राष्ट्रीय स्तर पर चयन किया है।

आप वास्तव में इस पुरस्कार के सही हकदार हैं क्योंकि आपने अपने जीवन के अनमोल क्षण साधु-साध्वियों की सेवा, संघ और समाज को जागृत बनाने में लगाया। आपने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग देश के विभिन्न संघ और समाज के लिए किया है।

मैं और मेरा परिवार जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता है कि आप का स्वास्थ्य अच्छा रहे, आगे भी आप संघ समाज, राज्य और देश की अविरल सेवा करते हुए मार्ग दर्शन देते रहें

शुभाकांक्षी - चांदमल सुखलेचा

दिलीप चारी
प्रभारी संपादक
राजस्थान पत्रिका, बेंगलोर

हार्दिक बधाई

श्रीयुत सोहनलाल जी सिपानी के बारे में जितना कहा जाता उतना ही कम है। सभी के लिए वे आदरणीय, सम्माननीय हैं, स्नेहिल है। उन्हें समता पुरस्कार के लिए चुना जाना निसंदेह उनकी समाज, धर्म सेवा का समुचित सम्मान है। यद्यपि सेवा को किसी पुरस्कार से नहीं तोला जा सकता लेकिन सार्वजनिक रूप से व्यक्ति को मान्यता देने की यह स्वाभाविक प्रक्रिया है। श्री सिपानी को राजस्थान पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई

दिलीप चारी
नं. ५६७, १६ वां मेन,
वाया मारुति सर्कल,
श्रीनगर, बेंगलोर-५६० ०५०
फोन : २६६१५१३६
मोब : ९८४५२२३३५५

श्री महावीराय नम



जय गुरु नाना　　　　जय गुरु राम

श्री दक्षिण भारतीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

समता भवन, तडीयारपेट, चैन्नई

परम सम्माननीय, समाज गौरव, सौम्य सरल स्वभाव के धनी उदार हृदयी, परम श्रद्धालु, अनन्य गुरुभक्त, सेवा और समर्पणा की साकार मूर्ति, निस्पृह समाजसेवी, प्रेरणा स्तोत्र श्रद्धेय श्री सोहनलालजी सिपानी को समता पुरस्कार के चयन से सम्पूर्ण सघ, समाज व हम सब गौरवान्वित व सम्मानित हुए है।

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी जिन्होंने पूर्वाचार्यो की सेवा की है और आज भी सघ की सेवा मे तन-मन-धन से अग्रणी है।

सदैव साधुमार्गी संघ को सरक्षण दिया है। पर कभी पद मे नहीं रहे और उदारता के साथ सहयोग करते रहे और कर रहे है। आपका सम्पूर्ण परिवार सस्कारित व अनुशासित है।

आप जो सेवा पूज्य आचार्य भगवन्त व साधु सतों और महासतियांजी म. सा की कर रहें और की है वह सेवा सराहनीय है। आप यशस्वी और दीर्घायु हो, यही हमारी शुभकामना हैं।

शुभेच्छुक :-

पन्नालाल सिपानी　　　　सुगनचंद धोका
अध्यक्ष　　　　मत्री

श्री दक्षिण भारतीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
चैन्नई

जय नानेश श्री महावीराय नमः जय रामेश

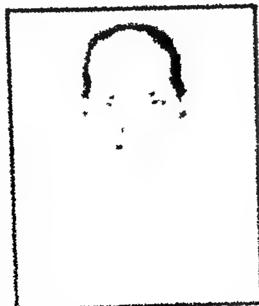


श्री पवनजी सुखलेचा
अमर रिषभ वीर,
हिन्दी साप्ताहिक, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

आचार्य नानेश समता पुरस्कार के लिए श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी का चयन किया गया हैं जो दक्षिण भारतीयों के लिए हर्ष और गौरव की बात हैं।

आप प्रकृति से सरल, उदारहृदयी, मिलनसार और मृदुभाषी हैं । सामाजिक धार्मिक और अनेक संस्थाओं में आपका योगदान अनुकरणीय रहा हैं। सादा जीवन और उच्च विचारों के आप धनी हैं।

मैं आपको इस महान पुरस्कार के लिए मेरी तरफ से और मेरे परिवार की तरफ से हार्दिक संवलकारना और बधाई प्रेषित करता हूँ।



पारसमल दक

॥ श्री महावीराय नमः ॥

आदरणीय



श्रीयुत् सोहनलालजी सा. सिपानी

जय जिनेन्द्र ।

यह समाचार सुनकर अत्यन्त खुशी हुई कि आपश्री को आचार्य नानेश समता पुरस्कार देने की घोषणा हुई है। सही अर्थो में आपने समता दर्शन को पूर्णरूपेण आत्मसात कर लिया है।

आपश्री ने त्याग, सेवा, उदारता की जो मिसाल समाज में कायम की है वो समाज के लिए अनुकरणीय है। आपश्री एक कुशल नेतृत्व प्रदान करने वाले, संघ के आधार स्तम्भ हैं। आपकी सेवा भावना, त्याग, निष्ठा एवं पूर्ण समर्पण समता के पर्याय बन गये हैं।

आपश्री को हमारे परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं निरन्तर उज्जवल समतामय जीवन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

हार्थीमल गोठिया

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ श्री वीतरागाय नम ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

प्रबुद्ध जीवियों की प्रिय संस्था

श्री समता प्रचार संघ

(अतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर)



सयोजक ·
सज्जनसिह मेहता "साथी"
सेवा निवृत विकास अधिकारी
झाला मन्ना चौराहा
वडी सादडी - 312403
जिला चित्तौडगढ (राज)
Ph 01473 - 264165

✲

पर्युषण पर्वाधिराज मे स्वाध्यायियो को धर्माराधन कराने हेतु नि शुल्क भेजना।

✲

प्रशिक्षण शिविरो द्वारा स्वाध्यायियो को प्रशिक्षित करना

✲

पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा स्वाध्यायियो की ज्ञान वृद्धि करना

✲

समता का प्रचार व प्रसार करना

✲

बालको व युवा पीढी मे धर्म के प्रति जागृति लाने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओ का आयोजन करना।

✲

साहित्य प्रकाशन करना।

शाखाए :-

✲ छत्तीसगढ-नगरी (म प्र)
✲ मालवा-रतलाम (म प्र)
✲ इन्दौर (म प्र)
✲ सिलचर (आसाम)

दि २९-०९-२००३

श्रीमान् आदरणीय देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक, अमर रिषभवीर, बेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

श्री सोहनलाल सिपानी अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन अमर रिषभवीर पत्रिका द्धारा किया जा रहा है यह परम हर्ष का विषय है।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर ने श्रीमान् श्रेष्ठीवर्य श्री सोहनलालजी सिपानी का चयन आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार वर्ष २००३-२००४ के लिए किया है।

श्री सोहनलालजी सा सिपानी जैन समाज के एक ऐसे विरले एव वरिष्ठ दानवीर सुश्रावक है । जिनकी दृढश्रद्धा, दृढनिष्ठा और दृढधर्मिता सभी के लिए प्रेरणादायी है, हमेशा उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व मे एक रूपता है ।

ऐसे समतानिष्ठ व्यक्तित्व को बधाई।

श्रीयुत सोहनलालजी सिपानी का हार्दिक अभिनन्दन एव आरोग्यमय शतायु जीवन की मगल कामना प्रेषित है ।

सयोजक
सज्जनसिंह मेहता
समता प्रचार संघ

॥ श्री महावीराय नम ॥

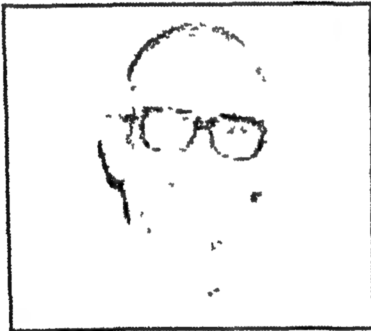
जय गुरु नाना　　　　　　　　जय गुरु राम

शुभ संदेश

विश्व शान्ति, तनाव मुक्ति के लिए आचार्य प्रवर ने समता दर्शन सिद्धात को आचार, विचार और व्यवहार मे लाने का दिव्य संदेश दिया।

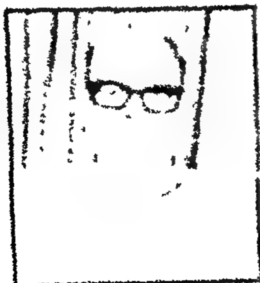
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर ने स्व आचार्य श्री की पावन पुण्य स्मृति में आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार की घोषणा की। इससे अधिक उपयुक्त और क्या हो सकता था।

इस वर्ष का समता पुरस्कार बेगलोर निवासी



शासन निष्ठ श्रीमान सोहनलालजी सिपानी को दिया गया है। श्री सिपानीजी धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर एव सेवा की प्रतिमूर्ति है।

समन्वय, संगठन, शासन के प्रति निष्ठा दृढधर्मी ही नहीं अपितु जिनकी रग-रग मे समता रस समाया हुआ है।



आपके दीर्घायु जीवन की मंगल कामना करते है। [illegible]

[illegible]

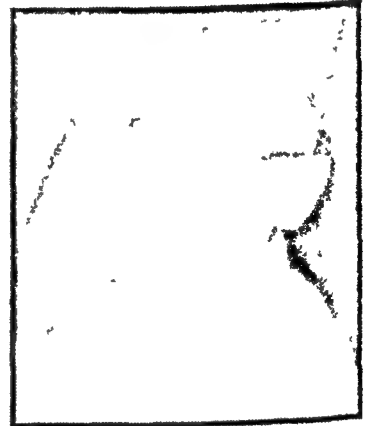
[illegible]

॥ श्री वीतरागाय नम. ॥

श्री देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक
बेगलोर (कर्नाटक)

सादर जय जिनेन्द्र !

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार का राष्ट्रीय सम्मान धर्मनिष्ठ, दानवीर सुश्रावक रत्न, परम गुरु भक्त श्रीमान सोहनलालजी सिपानी को प्रदान किया जा रहा है। जो एक अनुकरणीय उदाहरण है।



इस शुभ अवसर पर मैं मेरी ओर से और मेरे परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामना प्रेपित करता हूँ तथा वीर प्रभु से कामना करता हूँ कि

आप जीओ हजारों साल
साल के दिन हो दस हजार।

हार्दिक शुभेच्छुक :
तेजमल नंगावत
पूर्व उपाध्यक्ष श्री [illegible]
[illegible]

मानवीय व्यवहार के युगपुरूष

समता मनीषी आदर्श सुश्रावक श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी

धर्म संघ के चार स्तम्भ है। साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। साधुमार्गी सघ मे चारो स्तम्भो की सुदृढता शासन की विशिष्टता और भव्यता की महत्ता सार्थक करती है। इस सघ मे अनेक श्रावक-श्राविकाएं श्रद्धा-निष्ठा और समर्पण के अतुलनीय मानको से उच्च स्तरीय सरल सात्विक सामाजिक जीवन जी रहे हैं और कुछ विलक्षण सद्प्रवृत्तियो के कारण और भी अतिरिक्त महत्व लिये हुए है। आज विश्व के हर प्राणी को शाति की जरूरत है। यह शांति और आनन्द का स्त्रोत कब फूटेगा ? जब जन-जन मे समता की निर्झर धारा बहेगी आज समाज मे ऐसी विलक्षण प्रतिभाए है जो समता साधना के पथ पर अग्रसर है। दृढ़धर्मी, उत्कृष्ट समाजसेवी, आदर्श श्रावको मे एक नाम श्रीमान् सोहनलालजी सा सिपानी का है। जिनके जीवन से समता की अनेक धाराए प्रस्फुटित है- यथा -



- जीवन का हर पृष्ठ, हर पक्ति खुली पुस्तक तुल्य संघ और सघनायक के प्रति श्रद्धा से सराबोर है।
- आपकी गुरूभक्ति और समर्पणा बेजोड़ है।
- सम्यक् दृष्टिकोण तथा नियमित नागरिक कर्त्तव्यों का पालन अनुकरणीय है।
- सघीय एकता और समन्वयता के पोषक प्रशसनीय भावना है।
- सज्जनता, वाणी मे मधुरता, कर्त्तव्य और परोपकार, धर्मपरायणता, सस्कारो मे करूणा, दया, निर्धनो के प्रति सहृदयता आपके जीवन का अभिन्न अग है।
- धर्म सघ एवम् समाजोत्थान की भावना कूट-कूट कर आपके दिल मे भरी है।
- शिक्षा, चिकित्सा, साहित्य प्रकाशन और धर्म की प्रभावना के प्रति सदा सजग एवम् पारिवारिक पृष्ठभूमि से प्रेम, मर्यादा, सात्विक सद्व्यवहार एवम् सस्कारो से ओत-प्रोत विशाल हृदय वाले, श्री सिपानी जी हम सभी के लिये अनुकरणीय आदर्श है।
- धार्मिक, सामाजिक प्रत्येक क्षेत्र मे अग्रणी श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी की सहधर्मिणी, उदारहृदयी श्रीमती जेठीबाई जी भी मनसा, वाचा कर्मणा पूरा सहयोग करती है। आपका पूरा परिवार दया भावना और आस्था से ओत-प्रोत है। समता दर्शन के प्रणेता आचार्य श्री नानेश एवम् वर्तमान शासन नायक आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धावान् सिपानीजी के कर-कमलो का स्पर्श पाकर समता पुरस्कार धन्य होगा जीवन मे श्रम, लगन, विवेक और दृढधर्मिता की तेजस्विता के परिणाम स्वरूप यह उच्च मुकाम आपको मिला है। जिनेश्वर देव से आपके सुखी, समृद्ध, स्वस्थ दीर्घायु यशस्वी जीवन की मगल कामना करती हूँ। साथ ही संघ एवम् समाज को आपसे निरन्तर प्रेरणा और प्रोत्साहन की अपेक्षा है। पावन पुनीत अवसर पर हार्दिक अभिनन्दन।

-प्रतिभा सहलोत निम्बाहेड़ा (राज)
राष्ट्रीय उपाध्यक्षा
श्री अ भा साधुमार्गी जैन महिला समि

श्रीयुक्त देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक अमर रिषभवीर
बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

मंगल कामनाएं

मुझे और मेरे परिवार को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी पर अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन करने जा रहे है इसके लिए आपको बहुत-२ धन्यवाद।

आदरणीय श्रेष्ठीवर्य श्री सोहनलालजी सिपानी जैन समाज के एक ऐसे विरले एवं वरिष्ठ सुश्रावक है जिनकी दृढ़श्रध्दा, दृढ़ निष्ठा और दृढ़ धार्मिकता सभी के लिए प्रेरणादायी है, श्री सोहनलालजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में एक समानता नजर आती है।

ऐसे समतानिष्ठ, समता मनीषी व्यक्तित्व को नमन करते हैं।

समता विभूति आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री नानालालजी म.सा. की पुण्य स्मृति में यह पुरस्कार प्रारम्भ किया गया हैं। ऐसे समता साधक आचार्य श्री नानालालजी म.सा. एवं आपके उत्तराधिकारी आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा. को कोटि-कोटि वंदन व नमन।

आपका
भंवरलाल वैद
[illegible]

जय गुरु नाना श्री महावीराय नमः जय गुरु [illegible]

आदरणीय सम्पादकजी,
अमर रिषभवीर, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !



-: हार्दिक शुभमंगल कामना :-

श्री अ. भा साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर [illegible] आदरणीय श्रेष्ठीवर्य श्री सोहनलालजी सा. सिपानी [illegible] चयन आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए [illegible] है। जो सही है।

आदरणीय श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी [illegible] समाज के एक ऐसे उदारमना, शासननिष्ठ, वरिष्ठ [illegible] परम गुरु भक्त और सुश्रावक है। जिनकी शासन [illegible] प्रति और गुरु के प्रति दृढश्रद्धा/ निष्ठा/ धार्मिकता [illegible] के लिए प्रेरणाप्रद है, आदरणीय श्रीमंत सोहनलालजी सिपानी राजस्थान मे उदयरामसर (बीकानेर) के [illegible] वाले हैं और अभी आप बेंगलोर मे व्यवसायरत [illegible] आपमे अनेक गुण हैं। इसीलिए आपके व्यक्तित्व [illegible] कृतित्व में एक रुपता है।

आदरणीय श्री सोहनलालजी सिपानी सा [illegible] और मेरे परिवार की मंगल कामना प्रेषित है।

शांतिलाल सांखला



श्री महावीराय नम

इन्दरचंद बोहरा जैन
राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन क्रॉन्फ्रेन्स
नई दिल्ली-110 001

हार्दिक शुभाकांक्षा

आदरणीय श्रीमान् देवीलालजी सा. सुखलेचा
सम्पादक, अमर रिषभ वीर
बेंगलोर

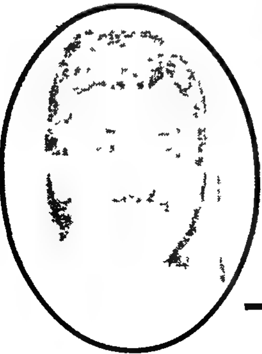
सादर जय जिनेन्द्र !

हमें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि बेंगलोर निवासी
कर्मठ समाजसेवी, सेवानिष्ठ उदारमना वयोवृद्ध श्रावक रत्न श्रीयुत् सोहनलालजी सा. सिपानी को आगामी ३ फरवरी २००४ को उदयपुर में आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से विभूषित किया जा रहा है।

श्रीयुत् सिपानीजी बेगलोर के प्रमुख उद्योगपतियों में से एक है, आपका जीवन अत्यन्त सादगीयुक्त, सरल एवम् उदार है। आप धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ श्रावकरत्न है। पूर्व पुण्योदय से प्राप्त लक्ष्मी का आपने अत्यन्त उदार हृदय से सम्पूर्ण भारत की विभिन्न समाजसेवी और धार्मिक संस्थाओं मे सदुपयोग किया है और कर रहे हैं। आपकी आचार्य नानेश एवम् उनके समुदायवर्ती साधु–साध्वियो के प्रति विशेष श्रद्धा भक्ति अनुकरणीय है।

ऐसे सरल–सादगीमय और समतायुक्त व्यक्तित्व का समता पुरस्कार के लिए चयन किसी व्यक्ति विशेष का नहीं वरन् उसके गुणो का अभिनन्दन है, जो निश्चित रूप से स्तुल्य है। समाज के इस विरल व्यक्तित्व को हम अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स की युवा शाखा और कर्नाटक युवा शाखा की ओर से उनकी इस विशिष्ठ उपलब्धि के लिए अंतर की उर्मियों से हार्दिक बधाई देते हुए परम पिता परमेश्वर से कामना करते है कि श्रीयुत् सिपानी जी दीर्घायु हो और भविष्य मे जैन समाज को अपने अनुभवों एवम् मार्गदर्शन से नई दशा एवम् दिशा प्रदान करने में सक्षम बनें।

एक बार पुनः आपश्री के प्रति सद् भावना व्यक्त करते हुए सधन्यवाद।



भवदीय,

(इन्दरचंद बोहरा जैन)
राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष

17/2, Campbell Road, Bangalore - 560 047 Ph 080- 2222 2422, 2555 2222

श्री महावीराय नमः

जय नानेश जय रामेश



श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
अमर रिषभ वीर, हिन्दी साप्ताहिक
बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

हार्दिक अनेकानेक बधाई

साधुमार्गी जैन संघ की शान, शासननिष्ठ, शासन रत्न, समाज भूषण, दानवीर सुश्रावक श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी को समता विभूति विश्व शान्ति के मसीहा, जिनशासन सरोवर के राजहंस आचार्य भगवंत श्री नानेश समता पुरस्कार के चयन पर मैं मेरी ओर से, मेरे परिवार की ओर से हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के चरण कमलों में कोटिश वन्दन !

शुभेच्छुक
शान्तिलाल खिवेंसरा
कोषाध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलोर

॥ श्री महावीराय नमः ॥

जय नानेश जय रामेश

श्रीमान् पवनजी सुखलेचा
अमर रिषभ वीर, बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

विशेष आचार्य नानेश समता पुरस्कार के लिए बेंगलोर निवासी सेठ श्री सोहनलालजी सिपानी का चयन हुआ है अतः आप द्वारा प्रकाशित अभिनन्दन ग्रंथ में मेरी शुभ कामनाएं प्रकाशित कराने का कष्ट करावें।

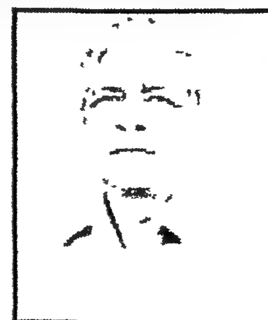
शुभ कामना संदेश

आदरणीय समता मनीषी, उदारमना, शासननिष्ठ,



श्री सोहनलालजी सिपानी प्रकृति से सरल, मिलनसार, सत्यनिष्ठ और व्यवहार कुशल चिंतनशील व्यक्तित्व के धनी हैं। वयोवृद्ध होने पर भी आपके चेहरे पर जो रौनक व लगन कार्य करने की हैं वही हमारे लिए एक मिसाल से कम नहीं हैं। हर सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं में आपका योगदान अनुकरणीय हैं।

मैं आपको इस महान पुरस्कार के लिए मेरी तरफ से और मेरे परिवार की ओर से हार्दिक मंगल बधाई अर्पित करता हूँ।



आपका
बाबूलाल भटेवरा
यशवंतपुरम्
बेंगलोर

श्री नाकोडा भैरवाय नम　　श्री शखेश्वर पार्श्वनाथाया नम　　श्री जिनकुशलगुरुभ्यो नम

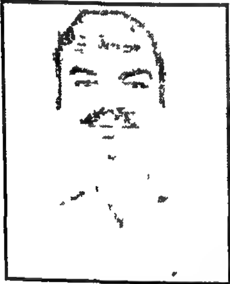


जैन सघ विकास के लिए हर पल चितन मनन करने वाले चितनशील,
सादगी एव सरलता की प्रतिमूर्ति, दान-शील-तप-भावना के प्रेरक,

आचार्य नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित

श्री सोहनलालजी सिपानी

को हार्दिक शुभकामना और बधाई -
तेजराज मालानी (मोकलसर वाले)



RAJASTHAN SHREE

TEJRAJ MALANI

SOCIAL WORKER

President **Rajasthan Ganhghor Parıshad** Bangalore

General Secretary **All India Pradıshık Marwadı Federatıon**

Trustee **Srı Jınkushal Surı Jain Dadawadı Trust,** Bangalore

Srı Munısuvrat Swamy Jaın Trust, Kumarapark, B'lore

Srı Suvıdınath Jain Swethamber Trust,Bangalore

Bharath Vıdya Nıketan School, Kumarapark, Bangalore

Srı Jınkushalsurı Jaın Dadawadı Sansthan, Sankeshwar (Guj)

Narayana Seva Sansthan Udaıpur (Raj)

Life Member **S R N Adarsh College,** Bangalore
Jain Associatıon, Bangalore
Oswal Parıshad, Bangalore
Police Story, Bangalore
Crime Preventıon Organısatıon India, New-Delhı

President **Srı Marudhar Railway Sangarash Smıttı,** Bangalore

Ex President **Srı Sıwanchı Oswal Jain Sangh,** Bangalore

Marg Darshak **Srı Bherav Bhakathı Seva Mandal** Bangalore
and Members for other Socıal Organısatıons

#14/2, 59th A Cross, 4th N Block, Rajajınagar, Rıght Side of Sujatha Talkıes, Near to Entrance, Bangalore - 560 010
Ph **2228 0960,** R **2312 3896,** Cell **37823896, 94483-50333**

|| श्री महावीराय नमः ||

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक, अमर रिषभवीर, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

बोहरा परिवार की शुभकामना संदेश



श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी

का समता पुरुष के चयन पर हार्दिक बधाई आप संघ एवं समाज की सेवा में अग्रणीय रहने वाले, पूज्य संत-सतियाजी म.सा. की सेवा-सुषुश्रा में प्रतिपल समर्पित रहनेवाले, धर्मपरायण, दानी, कर्त्तव्यनिष्ठ, मिलनसार एवं निराभिमानी प्रकृति से सरल व्यक्तित्व को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं :

-: शुभेच्छुक :-

दानमल बोहरा
रायचूर (कर्नाटक)

|| श्री महावीराय नमः ||

जय नानेश — जय रामेश

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक, अमर रिषभवीर, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

परम श्रद्धेय श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी को
राष्ट्रीय स्तर पर

"आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार"

प्रदान किया जा रहा हैं, जो वास्तव में सही है।

आपका सादा जीवन उच्च विचार व आपके जीवन मे समता देखते ही बनती हैं। आपने जिस तरह से व्यवसाय में सफलता प्राप्त की, उसी तरह संघ, समाज और देश की सेवा करते हुए सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में भी उच्च स्थान बनाया। आपके हृदय में सेवा की भावना हैं। धार्मिक कार्यों के प्रति भी पूर्ण समर्पणा हैं। आप संयम साधना, तप में भी अग्रणी रहते हैं। आपका पूरा परिवार भी धार्मिक संस्कारो से ओत-प्रोत हैं। आप तन मन धन से संघ की सेवा मे तत्पर रहते हैं। आपकी गुरु भक्ति भी अनुकरणीय है।

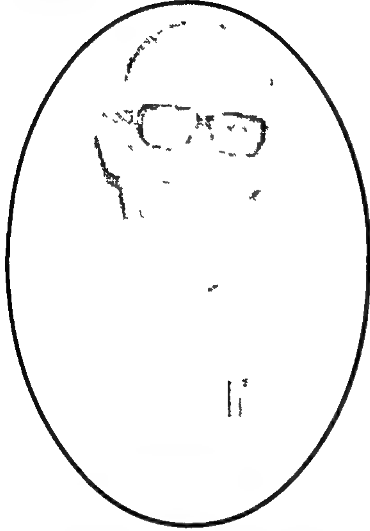
वास्तव में समता पुरस्कार के लिए ऐसे मनीषी का चयन बहुत ही उपयुक्त है। इसके लिए मैं मेरी ओर से, समस्त डागा परिवार की ओर से तथा श्री संघ की ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ और आप दीर्घायु हो व संघ समाज की ज्यादा से ज्यादा सेवा करें। इसी भावना के साथ।

आपका विनम्र
धुडमल डागा
अध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीनासर-गंगाशहर



M.N. Ramamurthy
Deputy Drugs Controller
Head Quaters, Bangalore

P.O. No 5377, Palace Road,
Bangalore-560 001
Ph : 22256386, 22264760



-: शुभकामना संदेश :-

श्रद्धानिष्ठ व्यवहार कुशल, करुणा
और वात्सल्य की मूर्ति, परम स्नेही
एवं उदारमना उपकारक श्रेष्ठीवर

श्रीमान् सोहनलाल जी सिपानी

को मिलने वाले

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

के लिए हार्दिक बधाई
एवं शुभकामना....



आपका वरद् हस्त, आशीर्वाद एवं स्नेह
मुझ पर और मेरे परिवार के साथ-साथ
संघ, समाज, राज्य एवं देश पर बना रहें।



आपके शुभ चितक

एम. एन. राममूर्ति

सत्यलता मूर्ति

न 567, 16 वा मेन,
जी पी नगर, बेंगलोर-560 050
फोन 26580866

|| श्री वीतरागाय नम ||

|| जय गुरु नाना || || जय गुरु राम ||

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, बीकानेर

आदरणीय सम्पादकजी,
अमर रिषभवीर, बेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

श्री अ. भा साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर ने श्रेष्ठीवर्य श्री सोहनलालजी सा. सिपानी का चयन आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए किया गया है।

श्री सोहनलालजी सा. सिपानी समाज के एक ऐसे उदारमना, शासननिष्ठ, वरिष्ठ सुश्रावक है । जिनकी शासन और गुरु के प्रति श्रद्धा और निष्ठा सभी के लिए प्रेरणादायी है, श्री सिपानीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व मे समता के दर्शन होते है ।

श्रीयुत सोहनलालजी सिपानी सा. को मै मेरी ओर से और महिला मंडल की ओर से मंगल कामना प्रेषित करती हूँ ।

शुभेच्छुक
मीना रांका
अध्यक्षा

१०वां माला, सिद्धार्थ आर जी ताडानी मार्ग,
वरली समुद्र तट, मुम्बई-400 018.
फोन- 24944641, 24950250

शुभकामना संदेश

चरम तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी की पाट परम्परा के अधिनायक श्री सुधर्मास्वामी के पट्टधर हुक्मगच्छ के जैनाचार्य श्री जवाहरलालजी म., शात क्राति के जन्मदाता आचार्य श्री गणेशीलालजी म., समता दर्शन के प्रणेता आचार्य श्री नानालालजी म. तथा आगमज्ञ आचार्य श्री रामलालजी म. एवं अनेक आचार्यो, उपाध्यायो तथा साधु-साध्वीवृंद की सेवा करने वाले शासननिष्ठ श्री सोहनलालजी सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्रदान करना एक आदर्श है ।

ये सम्मान श्री सोहनलालजी का नही परंतु आपके सद् कार्य का है। पुन श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन सघ के चयन पर धन्यवाद। हमारी मंगलकामना है कि सिपानी सा सदा स्वस्थ रहे एवं दीर्घायु हो.. इन्हीं मगल अभिलाषा के साथ

नथमल तातेड़
मंत्री
साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर (राजस्थान)

शुभकामना संदेश

सरल स्वभावी, शासननिष्ठ, धर्मानुरागी, श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी को समता पुरस्कार से सम्मानित करना सघ के लिए गौरव का विषय है ।

ब्यावर संघ के समस्त सदस्य इस निर्णय से अपने आपको धन्य मान रहे है । साथ ही प्रसन्नता से फुले नहीं समा रहे हैं

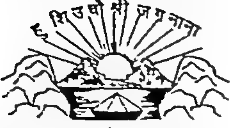
हमारे संघ की ओर से आपसे निवेदन है कि आप जैसा व्यक्ति आचार्य श्री रामेश शासन मे प्रतिपल आगे से आगे बढते रहे

जहां पुरुषार्थ और परिश्रम का रहता है मेल।
सदा आगे बढ़ती रहती है उनके जीवन की रेल ॥
करते रहो धर्म ध्यान तो लो आचार्य भगवन का नाम
फिर पछताओगे क्योंकि जीवन है चार दिनों का खेल

इन्हीं मंगल कामनाओ के साथ,
गौतमचन्द चोधरी
महामंत्री, श्री जैन मित्र मण्डल, ब्यावर (राज.)

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

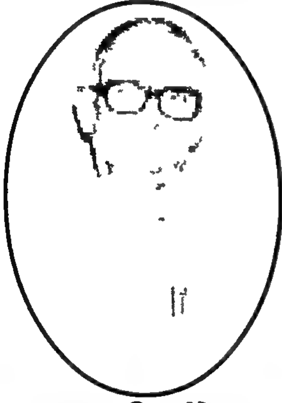
जय गुरु नाना जय गुरु राम



卐 राम चमकते भानु समाना 卐

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
अमर रिषभ वीर, हिन्दी साप्ताहिक
बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

आप द्वारा प्रकाशित अभिनन्दन ग्रंथ में हमारे मंडल की शुभ कामनाएं प्रकाशित करावें ।



बधाई संदेश

शासन चितामणी, समाज भूषण, आदर्श सुश्रावक श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के चयन पर मैं मेरी ओर से, मेरे परिवार व श्री जैन मंडल की ओर से हार्दिक शुभ कामना प्रेषित करता हूँ।



शुभेच्छुक :-
हस्तीमल सुखलेचा
उपाध्यक्ष
श्री जैन मंडल,
कॉटनपेट, बेंगलोर-५३

श्री महावीराय नमः

जय गुरु नाना जय गुरु राम

श्रीमान् पवनजी सुखलेचा
अमर रिषभ वीर, हिन्दी साप्ताहिक, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

विशेष आचार्य नानेश समता पुरस्कार के लिए बेंगलोर निवासी, दक्षिण भारत की शान, सेवानिष्ठ सुश्रावक रत्न श्री सोहनलालजी सिपानी के नाम की विधिवत घोषणा की गई हैं, यह हर्ष की बात हैं। अतः आप द्वारा प्रकाशित अभिनन्दन ग्रंथ में शुभ कामनाएं प्रकाशित करावें।

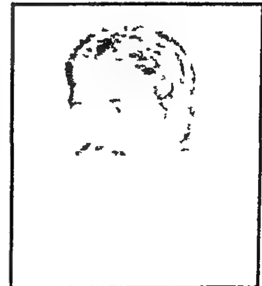
शुभ कामना संदेश

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार का
राष्ट्रीय सम्मान धर्मनिष्ठ, दानवीर
सुश्रावक रत्न परम गुरु भक्त



श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी
को प्रदान किया जा रहा है।
आपके अभिनन्दन पर हमारी वदना और
कोटिश वन्दन, सद्भावना व बधाई

हार्दिक शुभेच्छुक
मनोहरलाल
भागवंतीबाई पगारिया
विजयनगर
बेगलोर



श्री महावीराय नम

जय मरुधर | जय रुप सुकन



पारसमल लोढ़ा

राष्ट्रीय मंत्री

अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर

स्थानकवासी जैन क्रॉन्फ्रेन्स

नई दिल्ली-110 001

आत्मीय शुभ कामना संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष का अनुभव हुआ कि वर्ष २००३-२००४ का

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

श्री अ. भा साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर द्वारा गठित नव सदस्यों की खण्डपीठ ने हमारे बेगलोर शहर के वयोवृद्ध श्रावकरत्न

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी

का राष्ट्रीय स्तर पर चयन किया है।

आप वास्तव मे इस पुरस्कार के सही हकदार है क्योकि आपने अपने जीवन के अनमोल क्षण साधु-साध्वियो की सेवा, संघ और समाज को जागृत बनाने मे लगाया। आपने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग सघ और समाज के लिए किया है।

जिनेश्वर देव से प्रार्थना करते है कि आप का स्वास्थ्य अच्छा रहे, आगे भी आप सघ और समाज की अविरल सेवा करते हुए मार्ग दर्शन देते रहे।

आपका अपना

पारसमल लोढ़ा

वर्धमान ज्वेलर्स

शिवनगर, राजाजीनगर बेंगलोर

श्री वीतरागाय नमः

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक,
अमर रिषभ वीर, बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

सरलमना, संघ प्रभावक,
वरिष्ठ श्रावकवर्य
श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी
को
आचार्य श्री नानेश
समता पुरस्कार
प्रदान किये जाने पर
एवं
इस अवसर पर प्रकाशित
एवं श्रीयुत सिपानीजी को
समर्पित
सोहनलाल सिपानी अभिनंदन ग्रंथ
के अवसर पर
हार्दिक शुभकामनाएं

–शान्तिलाल बोहरा एम.ए.
धार्मिक अध्यापक
राजाजीनगर, बेंगलोर

जय नानेश श्री महावीराय नमः जय रामेश



श्री संपादकजी

अमर रिषभ वीर, बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए आदरणीय श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी, बेंगलोर का राष्ट्रीय स्तर पर चयन किया, जो हम सबके लिए अति हर्ष और गौरव की बात हैं।

श्रीमान् सिपानी जी प्रकृति से सरल, उदारहृदयी, मिलनसार और मृदुभाषी हैं।

इस समय आपकी ७५ वर्ष की आयु होने पर भी आपके चेहरे पर एक अनोखी चमक-दमक हैं। सामाजिक धार्मिक और अनेक संस्थाओं में आपका हमेशा अनुकरणीय योगदान रहा हैं।

मैं इस राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए मेरी तरफ से, मेरे परिवार की तरफ से तथा उदयपुर श्री संघ की ओर से हार्दिक मंगलकामना प्रेषित करता हूँ।

शुभाकांक्षी

भगवतीलाल खेमलीवाला

उदयपुर (राज.)

राष्ट्रीय मंत्री

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

जय महावीर

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ट्रस्ट

पजीयन क्रमाक 3115 - 8/5/73

पुराने बिजली घर के पोछे, खंडवा (म. प्र.) 450001

अध्यक्ष
तिलोकचंद बनवट
महावीर मार्ग,
खण्डवा
Ph 0733 - 22427

सचिव
अशोक बोथरा
श्रीनगर कॉलोनी, खण्डवा
Ph 23676



श्री संपादकजी

अमर रिषभ वीर,

हिन्दी साप्ताहिक, बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी का चयन किया गया हैं जो हम सबके लिए हर्ष और गौरव की बात हैं।

आप प्रकृति से सरल, उदारहृदयी, मिलनसार और मृदुभाषी हैं।

आपकी ७५ वर्ष की आयु होने पर भी आपके चेहरे पर चमक-दमक हैं।

सामाजिक धार्मिक और अनेक संस्थाओं में आपका अनुपम योगदान अनुकरणीय हैं।

हम सब आपको इस महान राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए हमारी तरफ से, हमारे परिवार की तरफ से और श्रीसघं की तरफ से हार्दिक मंगलकामना और बधाई प्रेषित करते हैं।

-:::::-::::-:::-::-: शुभाकांक्षी :-::-:::-::::-:::::-

अध्यक्ष — तिलोकचंद बनवट

सचिव — अशोक बोथरा



समता-मनीषी, परम गुरु भक्त, साहित्यानुरागी,
जिन-शासन के सच्चे सेवक, दानवीर भामाशाह

श्री सोहनलालजी सिपानी

जीवन झलक

(मनहरण कवित्त)

१

राजस्थान जहाँ सूर्य, सदा ही चमक रहा,
आन-बान-शान-न्यारी, मानता जहान है ।
बीकानेर जिला गाँव, उदयरामसर मे,
सिपानी का परिवार, करे धर्म-ध्यान है ।
उन्नीसौ अट्ठाइस की, पन्द्रह दिसम्बर को,
पाया पुत्र सोहन को, रत्न के समान है ।
पिता भेरुदान प्यारे, माता धन्नी के दुलारे,
पारदर्शी किलकारी, गूँजे गीत-गान हैं ॥

२

बीता बाला बचपन, किया पठन-मनन,
माता-पिता से सस्कार, धर्म के ही पाए है ।
यौवन का आगमन, शुरु गृहस्थ जीवन,
जेठीदेवी धर्मपत्नी, ब्याह कर लाए है ।
गंगाशहर के चाँदमलजी डागा की पुत्री,
धर्म-ध्यान सेवा में ही, समय बिताएं है ।
पारदर्शी सिपानी ने, पिता की बताई राह,
आदर्श-नीति पे चल, व्यापार बढाए है ।

३

पौत्र-पौत्रियो से भरा-पूरा परिवार सारा,
गोकल, रिधकरण, भाई पाते प्यार है।
सुन्दर, राजकुमार, कमल, विमल पुत्र,
सरला सुपुत्री प्यारी, खुश परिवार है।

जेठादेवी धर्मपत्नी, शब्द को साकार किया,
धर्म-कर्म-सेवा हेतु, रहती तैयार हैं।
सोहनलाल सिपानी, समता की है निशानी,
पारदर्शी गुप्त-दानी, स्वभाव उदार है।

४

हुक्म गच्छ की है शान, नानेश गुरु महान,
अष्टम पट्टधर की, जय-जयकार है।
नानेश गुरु के भक्त, रहें सदा अनुरक्त,
शासन-सेवा को आप, रहते तैयार है।

साधु-साध्वी की सेवा मे, कमी नही लाते कभी,
गुरु के सिद्धान्तो का ये, करते प्रचार है।
कई ग्रन्थ प्रकाशन, आपने गुरु के किए,
पारदर्शी सिपानीजी, सघ के आधार है।

५

भव्य विभास्वर भाल, रखे हृदय विशाल,
समता की प्रतिमूर्ति, सिपानी सुजान हैं।
रत्नत्रयी के पालक, कई सस्था के अध्यक्ष,
करते निष्काम कर्म-धर्म पहचान है।

द्वार पर जो भी आता, खाली कभी नहीं जाता,
बिना भेद-भाव करे, सबका सम्मान है।
पारदर्शी सिपानीजी, दैवी-व्यक्तिव के धनी,
जीवो के प्रति करुणा, भावना महान हैं।

६

गुरु भक्ति की मिसाल, जिन-धर्म अनुरागी,
सेवाभावी सुसंस्कारी, मधु सम वाणी है।
मानवता के पुजारी, कर्मयोगी-सदाचारी,
अहिंसा के प्रचारक, सम्प की निशानी हैं।

सच्चे समाज सेवक, युवा-पथ-प्रदर्शक,
मृदुल स्वभावी आप, आध्यात्मिक ज्ञानी है।
पाया आचार्य नानेश समता पारितोषिक,
पारदर्शी बधाइयाँ, स्वीकारे सिपानी हैं।

प्रणेता
(ॐ छन्दराज पारदर्शी)
पारदर्शी साधना केन्द्र
उदयपुर - ३१३ ००१

सम्यग् दर्शन
ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः



जिन्दगी की यादगार ७२ वर्ष पूर्व अपने पूज्य पिताजी सेठ श्री भैरूंदानजी सिपानी के साथ में बालक श्री सोहनलाल सिपानी (मात्र ३ वर्ष की उम्र में)





न्दगी की यादगार जवानी में श्री सोहनलाल सिपानी



अभिनन्दन ग्रहण करते हुए श्री सिपानी जी



अभिनन्दन ग्रहण करते हुए श्री सिपानीजी



नानेश वाणी की २१ पुस्तक का सेट प्रदान करते हुए श्री सिपानीजी

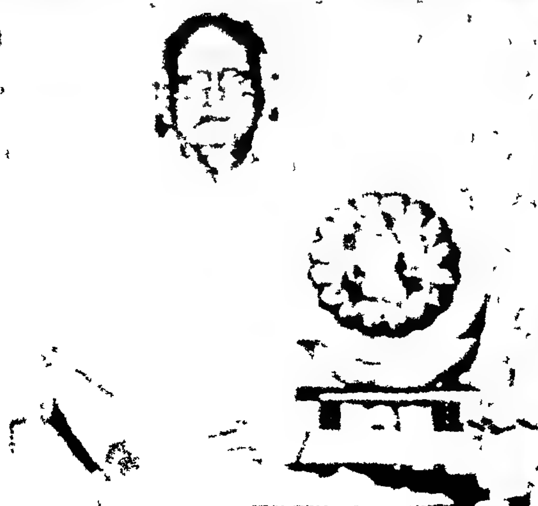


अभिनन्दन
सम्मान
ग्रहण करते हुए
श्री सोहनलालजी ...





श्रावकों के मध्य श्री ...





जेश वाणी पुस्तक का विमोचन करते



अभिनन्दन पत्र ग्रहण करते हुए श्री सिपानी जी







श्री राजमलजी चोरडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने पर अभिनन्दन करते हुए श्री सिपानी जी





श्री महेशजी नाहटा का अभिनन्दन करते हुए श्री सिपानी जी

अपने परिवार के साथ श्री सिपानी जी

श्री सोहनलालजी सिपानी का दांतानगर में वार्षिक समारोह पर अभिनन्दन करते हुए श्री आर. के.सिपानीजी

पारिवारिक परिचय

खण्ड-२

श्री सोहनलालजी सिपानी परिवार परिचय

- नाम : श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी
- पिता . श्रीमान् भेरुदानजी सिपानी
- माता श्रीमती धन्नीदेवीजी सिपानी
- गॉव · उदयरामसर
- जन्म वि स १९८५, मिगसर सुद १५, दि १५-१०-१९२८
- शिक्षा ७वीं
- विवाह वि स २००१, चेत वद १०
- धर्मपत्नी श्रीमती जेठीदेवी सिपानी

- पुत्र व पुत्र वधु : श्री सुन्दरलालजी -शातिदेवी सिपानी
- पौत्र-पौत्र वधु . श्री मनोजकुमारजी - सोनाली सिपानी
- पडपौत्र . श्रेणिकजी सिपानी, पडपौत्री मालविका सिपानी
- पौत्र-पौत्र वधु · श्री सजयकुमारजी-अजू सिपानी
- पडपौत्र राहूल सिपानी, पडपौत्री : राजूल, चेलना
- पौत्र-पौत्र वधु : श्री धीरजकुमारजी-सीमा सिपानी
- पडपौत्र · साहिल सिपानी ।

- पुत्र व पुत्र वधु : श्री राजकुमारजी -कचनदेवी सिपानी
- पौत्र-पौत्र वधु . श्री अनिलकुमारजी-प्रीति सिपानी
- पडपौत्र . अनुराग सिपानी, पडपौत्री आशना सिपानी
- पौत्री व जमाता : श्रीमती सगीता-श्री राजीवजी सेठिया
- पडदोहिता . तरुष, भव्य सेठिया।

- पुत्र व पुत्र वधु · श्री कमलचदजी -विमलादेवी सिपानी
- पौत्री- जमाई : श्रीमती कविता-श्री यशवतकुमारजी बोथरा
- पड दोहिता : अभिषेक बोथरा पडदोहिती . स्नेहा बोथरा
- श्रीमती काजल-श्री सजयकुमारजी साखला
- पडदोहिता : आकाश साखला पडदोहिती : खुशी साखला
- पूजा - श्री चदनकुमारजी बोहरा
- पौत्री . एकता सिपानी।

- पुत्र व पुत्र वधु : श्री विमलचदजी -कुमुददेवी सिपानी
- पौत्र-पौत्र वधु श्री सुनिलकुमारजी-श्रद्धा सिपानी
- पौत्र : श्री पुनीतकुमारजी सिपानी ।

- पुत्री व जमाई : श्रीमती सरलादेवी-श्री प्रकाशचदजी बेताला
- दोहिती व जमाई . नीतू-श्री सजयकुमारजी डागा
- दोहिती पुत्र . श्री पीयूष व पुत्री . प्रियका डागा ।
- दोहिता व दोहिता वधू : दीपक-ममतादेवी बेताला।
- अमित-टीना बेताला।

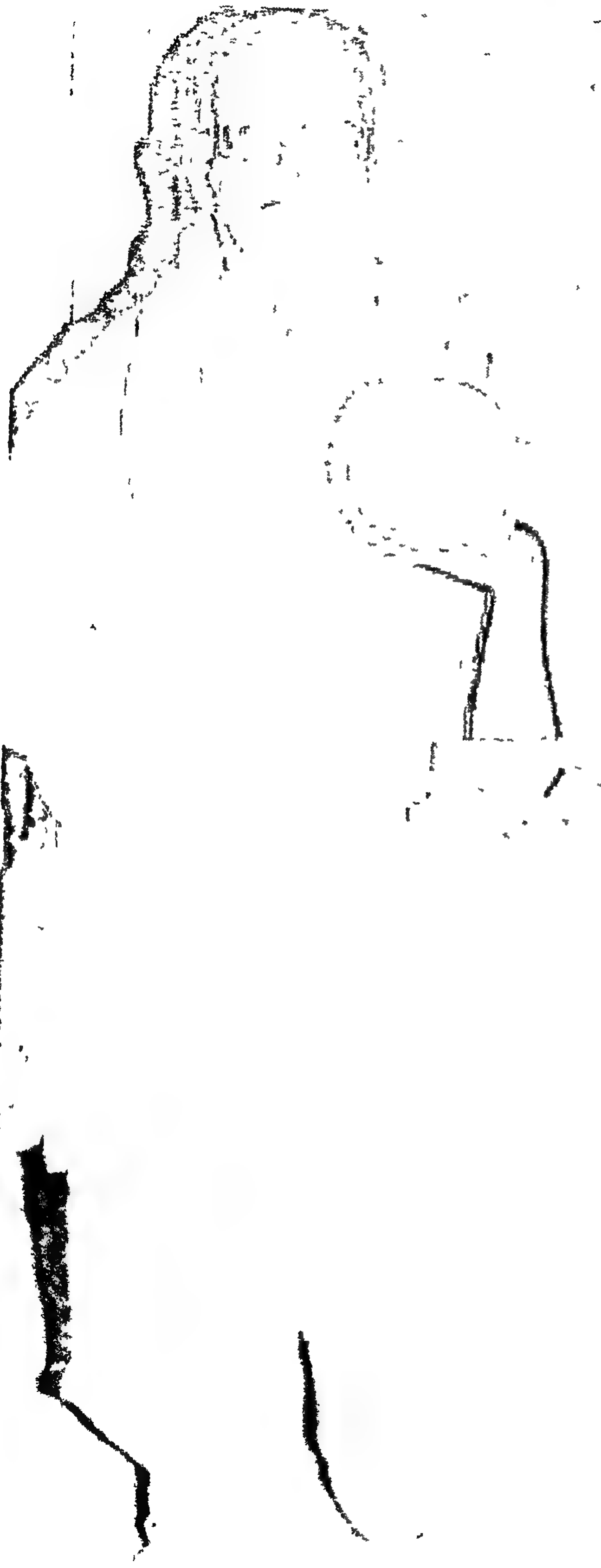
- लघु भ्राता : श्रीमान् गोकलचदजी-वसतीदेवी सिपानी
- भ्राता पुत्री-जमाई · मजूकुमारी-श्री लालचदजी भसाली
- सजूकुमारी-श्री किरणकुमारजी गुलगुलिया

- लघुभ्राता . श्रीमान् रिद्धकरणजी-सूरजदेवी सिपानी
- भ्राता पुत्र व वधू · श्री रमेशकुमारजी-श्रीमती निर्मलादेवी
- श्री दिनेशकुमारजी-श्रीमती मधुकुमारी सिपानी
- पुत्री जमाई : बबीताकुमारी-श्री अजीतकुमारजी बरमेचा

- बहन व जमाई श्रीमती छगनदेवी-श्रीमान् भवरलालजी दस्सानी
- श्रीमती मोहिनीदेवी-श्रीमान् जतनलालजी लूणिया ।

- आपका पूरा परिवार धार्मिक सस्कारो और विचारो से ओत-प्रोत है।
- सघ, समाज और मानव सेवा की भावना श्रीमान् सिपानीजी मे बचपन से ही कूट-कूट कर भरी हुई है।
- आपने यहाँ आकर भी अपने मूल मातृ-भूमि ग्राम घराने के पुरखो के लोक सस्कारो की विरासत को अक्षुण्ण रखा है।

– नरेन्द्र सुखलेचा



शासननिष्ठ, समाज भूषण, समता मनीषी, दृढ़धर्मी, दानवीर, श्रावकरत्न

श्रीयुत् सोहनलालजी सा. सिपानी

मनुष्य भव प्राप्त करके भी मानवता प्राप्त करना ... दुर्लभ है। सौभाग्य से उदयरामसर (बीकानेर ...) सेठ श्री भेरूंदानजी सिपानी की धर्मपत्नी श्रीमती ... की कुक्षी से विक्रम सं. १९८५ की मिगसर सुदी १५ ... जन्मे श्री सोहनलालजी सिपानी को यह दुर्लभ मान... अपने-समाज और जिनशासन के संस्कारों के ... धरोहर रूप मे प्राप्त हुई। बाल्यकाल से ही मेधावी ... सिपानीजी ने अपने पिता की आज्ञा का सदैव ... पालन किया करते। ग्राम स्तर पर व्यावहारिक शिक्षा ... करने के साथ आपने धार्मिक शिक्षा पर भी पूरा ... दिया और इस प्रकार एक साथ अभ्युदय व निःश्रेयस ... पथ पर अपने अंगद चरण गढाये। आपका पाणि... सस्कार गंगाशहर निवासी धर्मनिष्ठ डागा परिवार के ... श्री चादमलजी डागा की सुपुत्री श्रीमती जेठीदेवी ... सुसम्पन्न हुआ और श्रीमती जेठीदेवी आज भी ... धर्मसहायिका बनकर आपकी अनुगामी है।

श्री सिपानीजी ने अपने पिता के व्यवसाय ... प्रतिभा से नवीन आयाम दिये और आज अपनी ... बंगलोर मे सिपानी ग्रुप ऑफ कम्पनीज व ...

र मे सुप्रसिद्ध उद्यमी है। व्यापार मे आपकी अपूर्व प्रतिष्ठा ा आधार प्रामाणिकता है। आपने अर्थ के प्रति भारतीय ष्टि - न्यासीभाव को सदैव प्रधानता दी। इसी न्यासी ाव से प्रेरित होकर अपने अच्छे कार्यो हेतु मुक्तहस्त से ान दिया। सम्पूर्ण भारत मे आपके सहयोग से अनेक ास्थाए पल्लवित और पुष्पित हुई। आपके द्वार से कोई ख़ाली नही गया। गुप्तदान आपकी अन्तरवृत्ति है। अपने औद्योगिक कार्यो मे रत कर्मचारियो के प्रति आपका सहयोग भाव अनुकरणीय है।

समता मनीषी स्व आचार्य श्री नानेश के समता सिद्धात को आपने अपने जीवन मे पूर्णतः आत्मसात् किया। आप स्व आचार्य श्री नानेश के परम भक्त हैं और उनके आदर्शो के प्रति अटूट आस्था एवम् श्रद्धा रखते हैं। वर्तमान आचार्य श्री रामेश के प्रति आप इसी प्रकार सर्वभावेन समर्पित है। दक्षिण भारत मे साधु-सतो के विहार और विचरण की व्यवस्था मे आप सदैव अग्रणी रहे है। साधुमार्गी परम्परा को आपने अपने जीवन का अभिन्न अग बना लिया है। धर्म की प्रभावना और सघ तथा एकता के आप आधार स्तम्भ है। अपने सादे जीवन और उच्च विचारो से आप जन-जन के प्रिय और श्रद्धेय बन चुके है। सामायिक, स्वाध्याय, साधना, प्रतिक्रमण, यम, नियम, व्रत, प्रत्याख्यान प्रात ९ ०० बजे तक मौन आपकी सयमित-नियमित दिनचर्या का अभिन्न अग है। परिवार और समाज मे सत्सस्कारो के आप प्रेरणा स्त्रोत है। कोरमगला, बेगलोर के सिपानी भवन मे प्रति रविवार को प्रात· ८ ०० से ९ ०० बजे तक उस क्षेत्र के सभी परिवारो के आबाल-वृद्ध भाई-बहिनो का सामूहिक ज्ञान-ध्यान-प्रार्थना आराधना का सस्कार वर्धक सतत् संचालित अनुष्ठान आपकी एक अभिनन्दनीय और अनुकरणीय सत् प्रवृत्ति है।

सघ प्राण श्री सिपानीजी ने कभी पद का मोह नही रखा फिर भी सघ ने आपकी सेवाओ और लोकप्रियता को बहुमान प्रदान करते हुए आपको समय समय पर श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के उपाध्यक्ष और सुरेन्द्रकुमार साड शिक्षा सोसायटी के अध्यक्ष जैसे उच्चत्तर पदो पर अभिषिक्त किया और श्री सिपानीजी ने अपने कर्त्तव्य से इन पदो को सार्थक किया। अपने कर्म क्षेत्र बेगलोर मे आप आज भी निम्न सस्थाओ मे अध्यक्ष या सरक्षक रूप मे मार्ग दर्शन और नेतृत्व प्रदान कर रहे है। श्री साधुमार्गी जैन सघ, श्री एस एस जैन श्रावक सघ, विल्सन गार्डन, बीकानेर जैन समुदाय आदि आपने साम्प्रदायिक भावना से उपर उठकर सदैव जिन शासन की प्रभावना की है।

ऐसे अद्भूत कर्म योगी, दृढधर्मी, सुश्रावक श्री सोहनलालजी सिपानी का समता पुरस्कार के लिए चयन होने पर देश भर मे हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। तीन भाई, दो बहिनो, चार पुत्रो, एक पुत्री एवम् पौत्र-प्रपौत्र आदि से भरे-पूरे परिवार के स्वामी श्री सिपानीजी सयुक्त परिवार की वटवृक्ष प्रणाली के आदर्श है। आदर्श जीवन मूल्यो के धनी श्री सोहनलालजी सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से अभिषिक्त किये जाने पर हार्दिक बधाई।

भंवरलाल कोठारी
सयोजक
आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार समिति



ज्येष्ठ पुत्र रत्न श्री सुन्दरलालजी सिपानी





इस विचित्र संसार मे अनेक प्रकार के प्राणी है। जो अपने-अपने कार्य मे मस्त रहते है। अपने घर-परिवार-व्यवसाय के कार्यो मे मग्न रहते हैं। अपनी सीमा मे रहकर अपने कार्य के प्रति चिंतनशील रहते हैं। अवसर प्राप्त हुआ तो पारिवारिक रिश्तेदारी मे भाग लेते हैं। सामाजिक-धार्मिक कार्यो से कोसों दूर अपनी खीचड़ी अलग ही पकाते हैं। कभी कभार अपनी रिश्तेदारी के खातिर या फिर अपनी कोई विशेष योजना के तहत समारोह या कार्यक्रम में भाग ले लेते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों को कोई याद नहीं करते, इन सबसे परे है शात स्वभावी, सरलमना, व्यवहार कुशल, सेवा भावी, आज्ञाकारी, मित-भाषी, धर्मनिष्ठ, सुन्दर व्यक्तित्व, परम सतोषी श्रीमान् सुन्दरलालजी सिपानी।

श्रीमान् सुन्दरलालजी सिपानी ने अपने आदरणीय [illegible] ममतामयी दादीजी धर्मीदेवीजी [illegible] सोहनलालजी [illegible] मातुश्री श्रीमती जेठीदेवी की छत्रछाया मे सस्कार, सभ्यता, सत्[illegible] धार्मिक आचार-विचार, सतोष और समता की गौरव[illegible] परपरा को जीवन मे यशस्वी बनाने की कला [illegible] प्राप्त की।

आपका अच्छा स्वास्थ्य है, धन - दौलत है, [illegible] भरा-पूरा परिवार है, दिल मे संतोष है, सभी से [illegible] व्यवहार है, धर्म-भावना विकसित है, व्यापार-[illegible] अच्छा फैला हुआ है। आपके तीन छोटे भाई और [illegible] छोटी बहिन है अर्थात् आप ही श्रीमान् सोहनलालजी [illegible] के सबसे बड़े सुपुत्र है। आप पर आपके परिवार [illegible]। आप बड़े होनहार और अनुभवी हैं। आप में [illegible] पिताजी के गुणो का होना स्वाभाविक है। क्यों [illegible] गुण आपको अपने पिताजी से विरासत में प्राप्त [illegible] पर परिवार जनो का अच्छा प्रेम और अनुराग है। [illegible] और उद्योग में आपका नाम है। परिवार सभी [illegible] लेकर ही कार्य करते हैं।

ऐसे सरल व्यक्तित्व के धनी श्री सुन्दर[illegible] बड़े सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें ममता [illegible]

पिताश्री सोहनलालजी सिपानी और मातृपद को सुशोभित करने वाली सुश्राविका श्रीमती जेठीदेवी के सबसे बडे पुत्र होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । अत· घर मे, परिवार मे, खानदान मे सबसे बडे होने के कारण इन्हे अनायास ही खूब लाड - प्यार, ममता - वात्सल्य, धार्मिक सस्कार, पूर्वजो और अग्रजो के अनुभव की गौरवमय वशावली मे अग्रणीय स्थान प्राप्त किया है । अपने परिवार का अटूट स्नेह, असीम प्रेम, अखूट ममता का आचल आप पर बना रहा । आपको हमेशा सत-समागम मिलता रहा है ।

आप सबसे पडे पुत्र होने के कारण श्री सोहनलालजी सिपानी ने बहुत स्नेह से व्यवहारिक और धार्मिक ज्ञान-ध्यान, ससार के सुख-दु.ख, मन मे धर्म-अधर्म, दुनिया मे जय-पराजय, जीवन मे पाप-पुण्य आदि सासारिक जीवन के कई खट्टे-मीठे अनुभवो और जीवन के कई उतार - चढावो के बारे मे समय-समय पर बताते रहे है ।

- स्वय : **श्री सुन्दरलाल सिपानी**
- धर्मपत्नी - **शांतिदेवी सिपानी**
- पुत्र - पुत्र वधु : **श्री मनोजकुमार - सोनाली सिपानी**
- पौत्र : **श्रेणिक सिपानी** पौत्री : **मालविका सिपानी**
- पुत्र - पुत्र वधु : **श्री संजयकुमार - अंजू सिपानी**
- पौत्र : **राहूल सिपानी** पौत्री : **राजूल, चेलना सिपानी**
- पुत्र - पुत्र वधु : **श्री धीरजकुमार - सीमा सिपानी**
- पौत्र : **साहिल सिपानी ।**

पिताश्री द्वारा सिखलाये गये अनुभवो के आधार पर व्यावसायिक और व्यापारिक सभी गुत्थियाँ अपने आप ही सुलझती गयी । जिससे आपके मन मे अद्वितीय उत्साह की किरण जगमगाने लगी। जीवन मे हरियाली छा गयी ।

इससे सभी के अग्रज और मन-भावन श्री सुन्दरलालजी के मन मे सुहृदयता, मानवता, कर्त्तव्यनिष्ठता, व्यवहार-कूशलता, सेवा-भावना, नम्रता, भाईचारा, समता, सादगी और क्षमा पनपती रही ।

आपके जीवन मे सेवा और परोपकार के भाव उत्पन्न होते रहते है । जीवन मे अपने आप ज्ञान-दर्शन की भाव तरगे लहराने लगती है और सच्चाई अपने आप महकने लगती है, मन-मानस खिल जाता है। जिन्दगी मे अनुभवो के कारण ये खूब फले-फूले और अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त की ।

अपने कर्त्तव्य के प्रति हमेशा जागरुक सिपानी परिवार का यह चमकता सितारा, कार्य मे चतुर है, विवेक से भरा हुआ है, श्रद्धा से कार्य कर रहा है, सतोष और समता मे रमा हुआ है, भाईचारा और मैत्री से भरा हैं, सत्य और धर्म की मिसाल कायम कर रहा है। सम्पन्नता के सोपान पर चढ रहा है।

ये जिन शासन के प्रति जागरूक है । दया और करुणा के भाव इनके रग-रग मे भरे हुए है। इनमे साहस है । अनूठा धैर्य है । विवेक बल है। इनकी मधुरता से भरी ओजस्वी वाणी सबको अपनी ओर आकर्षित करती है । कार्य करने मे इनका अच्छा अनुभव है ।

श्री सुन्दरलालजी सिपानी सत्यता और आत्म शक्ति के उपासक है। सत्यता के कारण ही इनका मनोबल बढा है, आत्मबल दूगुना हुआ है, हर प्रकार की सभी शकाओ और समस्याओ का न्याय पूर्वक सही समाधान करते है।

श्री सुन्दरलालजी सिपानी चितनशील स्वभाव के हैं। ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी है। सभी के साथ मिलकर कार्य करना इनका अपना स्वभाव है। ये हमेशा स्वस्थ और प्रसन्नचित रहते है।

आप ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य का पालन करते है । जिससे आपको आत्म-शान्ति प्राप्त होती है । हर समय सतोष और समता का उपयोग करते हैं। प्रतिदिन नवकार मत्र का स्मरण करना, वीर प्रभु के नाम की मालाएं फेरना, जिससे मन को शाति प्राप्त होती है और सुख का अनुभव

होने लगता है।

समीक्षण ध्यानयोगी, विश्व शाति के मसीहा, समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा का आप पर और आपके परिवार पर विशेष आशीर्वाद रहा है । जैनत्व के अनुपम आशीर्वाद से घर मे सुख-वैभव-आनन्द का साम्राज्य है । इनके जीवन मे निर्भीकता और आत्मीयता है। ये सत्यनिष्ठ है, धर्मनिष्ठ है, धार्मिक संस्कार इनकी रग-रग में समाये हुए है। साधु संतो की सेवा इनका एक मात्र लक्ष्य है।

तरूण तपस्वी, तपो मूर्ति, सिरीवाल प्रतिबोधक, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, प्रशांतमना, आगम रहस्यो के परम ज्ञाता, आचार्य रामलालजी म सा के ये परम् भक्त है ।

परिवार, व्यापार, समाज, धर्म से सम्बन्धित किसी भी काम को पूरा करने मे ये हमेशा आगे रहते है । यही है इनकी सफलता का राज। ये प्रदर्शन-दिखावा-आडम्बर से कोसो दूर रहते है । ये किसी भी प्रकार का कोई झंझट नही पालते । सादा जीवन और उच्च विचार केसाथ ये मितव्ययता के पक्षधर है । सभी को साथ लेकर चलने वाले श्री सुन्दरलालजी सिपानी कोई समस्या खडी नहीं करते। लड़ाई-झगड़ा से दूर रहते है।

धार्मिक सेवा कार्य मे हमेशा आगे रहना ये अपना परम कर्त्तव्य समझते है। अपने माता-पिता के आदर्शो पर आगे बढने मे ही ये अपना गौरव समझते हैं।

कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान, पूर्वजों के प्रति समर्पित, पद-प्रतिष्ठा से दूर, मान-गर्व-घमण्ड से कोसों दूर और स्वाभिमान की इनके व्यक्तित्व में सुनहरी झलक है। आपको काम-काज के सिवाय निरर्थक बोलना इन्हें बिल्कुल पसंद नहीं है। श्रीमान् सुन्दरलालजी स्वभाव से सरल, गंभीर, [illegible] है। छोटी-छोटी बातों को लेकर ये कभी भी नहीं [illegible] और न किसी को [illegible]। [illegible]

[illegible]

सुश्राविका, सरल हृदयी श्रीमती शातादेवी सि[illegible] जीवन के हर क्षण मे परिवार को सवारने और [illegible] बनाने मे लगी है। धार्मिक- सामाजिक -पारीवारि[illegible] पूरा सहयोग देती है । सरलमना, सुहृदयी, धर्म[illegible] व्यवहार कुशल श्रीमती शातादेवी सिपानी एक आद[illegible] और सुश्राविका है।

श्रीमान् सुन्दरलालजी सिपानी ने कार्य के [illegible] करना नही सीखा । समय का सदुपयोग करना [illegible] अच्छा लगता। अतः प्राप्त समय को सुसफल बनाने [illegible] हमेशा तत्पर रहते है । व्यापार-व्यवसाय-व्यवहार [illegible] साफ है । आप स्पष्ट और सही बात कहने मे [illegible] डरते ।

सादा जीवन और उच्च विचार के धनी, स्पष्ट और [illegible] छवि वाले, मितभाषी और मितव्ययी, सामायिक [illegible] अपने जीवन का अग बनाने वाले, धर्म परायण, [illegible] के साथ कार्य करने वाले श्रीमान् सुन्दरलालजी [illegible] अनेक विचारो और अरमानो के धनी है ।

श्री सुन्दरलालजी सिपानी परिवार, समाज और [illegible] की गतिविधियो को बडे गौर से देखते हैं । फिर [illegible] कर आप स्वयं अपने आन्तरिक हृदय के साथ [illegible] को पूरा करने में लग जाते हैं ।

नाना गुरु का
है सन्देश
समतामय हो
सारा देश

श्रीमान् सोहनलालजी के द्वितीय सुपुत्र

श्री राजकुमारजी सिपानी



एक बार देवलोक मे ब्रह्मा के देव-दरबार मे अनेक वस्तुओ का वितरण हो रहा था, श्री राजकुमारजी सिपानी भागते हुए अल्कापुरी पहुॅचे और गौर और सुवर्ण की माग करने लगे । उन्हे कहा गया कि गौर वर्ण अब स्टॉक मे नही रहा । आये हो तो अब तो सिर्फ व्यक्तित्व है, स्वास्थ्य है, धन - दौलत है, वैभव है, यश है, नाम धाम है, ले लो । तुम आ ही गये हो तो मै तुम पर और तुम्हारे कार्य पर प्रसन्न हूँ एक बात मेरी ध्यान से सुन लो लोग तुम्हारे जन्म दिन को हमेशा-हमेशा याद रखेगे, मै दीपावली के दिन, अतिम तीर्थेश प्रभु महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव के दिन, गणधर प्रभु गौतम स्वामी के केवल ज्ञान के शुभ दिन तुम्हे इस ससार मे जन्म देता हूँ ताकि तुम्हे कोई बात की कमी नही रहेगी । अब राजकुमारजी स्वय ही बोल पडे मै मालामाल हो गया हूँ। मै ये समाचार मै घर पर दे कर आता हूँ।

अपने पूज्य दादाजी श्रीमान् भेरुदान जी और दादीजी श्रीमती धन्नीदेवीजी तथा माता-पिता की छत्रछाया मे सस्कार, सभ्यता, सस्कृति, धार्मिक विचार, आचार-विचार और समता की गौरवमयी परपरा को यशस्वी बनाने वाले श्री राजकुमारजी सिपानी बडे भाग्यशाली है, जिन्हे अपने पिता स्वनाम धन्य श्री सोहनलालजी सिपानी और माता धर्म परायण श्रीमती जेठीदेवी से खूब लाड प्यार, धार्मिक सस्कार, अनुभव, पूर्वजो की गौरव गाथा, सत-समागम और परिवार का खूब स्नेह सपादित किया है और कर रहे है ।

श्री सोहनलालजी सिपानी ने इन्हे ज्ञान-ध्यान, सुख-दुःख,धर्म-अधर्म, जय-पराजय, पाप-पुण्य आदि जीवन के कई खट्टे-मीठे अनुभवो और जीवन के कई उतार-चढावो के नजारो से इन्हे गौरवान्वित किया है। इससे इनके

व्यावसायिक जीवन की कई गुत्थियाँ सहज ही सम्पन्न होती गयी । तब इन के मानस मे अपूर्व साहस की ज्योति जगमगाने लगी। जीवन मधुमय बन कर हरा भरा हो गया, मानस का धर्ममय-सतरगी इन्द्रधनुष जगमगाने लगा। आनन्द और सुख के परमाणु मानस मे ज्योति बिखेरने लगे। इससे इनके जीवन मे कर्त्तव्य सेवा, नम्रता मैत्री और क्षमा खूब पनपी, खूब फले-फूले, खूब प्रसिद्धि पायी। खूब सम्पन्न हुए।

- नाम : **श्री राजकुमारजी**
- धर्मपत्नी : **श्रीमती कंचनदेवी सिपानी**
- पुत्र-पुत्र वधु : **श्री अनिलकुमारजी-श्रीमती प्रीति सिपानी**
- पौत्र : **अनुराग सिपानी**
- पौत्री : **आशना सिपानी**
- पुत्री व जमाता : **श्रीमती संगीता-श्री राजीवजी सेठिया**
- दोहिता : **तरुष, भव्य सेठिया।**

जब जीवन मे ज्ञान-दर्शन और चारित्र्य की भाव तरगे लहराने लगती है । तब सचाई महकने लगती है, मानस खिल जाता है, दिल उछलने लगता है। सिपानी परिवार का यह चमकता सितारा, होनहार, चतुर, श्रद्धा से भरा हुआ, भावुक हृदयी, समता और मैत्री में डूबा हुआ एक तरूण हैं। ये कर्मशील व्यक्तित्व के धनी है, समाज के जागरूक प्रहरी हैं, उदार और करुणा से भरे हुए हैं। इनमे धैर्य और विवेक का आत्मबल हैं। ये फडकते व्यक्तिव के तेजस्वी युवा हैं। सभी को साथ लेकर चलने वाले समतावान है। माधुर्य से भरी इनकी वाणी और कार्यशक्ति का अनुभव इनके सम्पर्क में आनेवाले व्यक्ति ही बता सकते है। श्री राजकुमारजी सिपानी शक्ति-भक्ति के उपासक हैं। इन्हीं मिश्रित भावो ने इनका मनोबल और आत्मबल को बढाया है, शंकाए मिटायी है और समस्याएं हल की है।

श्री राजकुमारजी सिपानी [illegible] स्वभाव के युवा हैं। [illegible]

की भावनाओ का नवीनीकरण हो जाता है। [illegible] और खुशी की लहर दौडने लगती है।

आज [illegible] आदमी [illegible] से परेशान [illegible] तनावों से [illegible] हुआ है, [illegible] दुःखी है। [illegible] करना चाहिए [illegible] क्या नहीं [illegible] चाहिए-इस [illegible] निर्णय नहीं [illegible] पाता, इसीलिए वह खिन्न है। इसे दूर करने के लिए [illegible] शान्ति और आत्म विश्वास बढाना आवश्यक है, [illegible] समता का उपयोग अनिवार्य हैं। वीर प्रभु के नाम की [illegible] फेरना, नवकार महामंत्र का स्मरण करते रहना और [illegible] के गुण-गौरव को दिल मे उतारते रहे और [illegible] इससे सुख का अनुभव होने लगा।

समता विभूति आचार्य श्री नानेश की इन पर [illegible] रही है, इनकी धार्मिक भावनो और श्रद्धा पर वे [illegible] इनकी कृपा से ये खूव फले-फूले और सम्पन्न हुए [illegible] जीवन मे निर्भीकता आयी हैं। ये नम्र, कर्त्तव्य [illegible] धर्मनिष्ठ है, धार्मिक सस्कार इनकी रग-रग में [illegible] है । साधु सतो की सेवा और संयम साधना पर [illegible] आचार्य श्री की भक्ति मे ये इतने तल्लीन हो जाते [illegible] इन्हे आचार्य श्री नानेश ही दिखायी देते हैं। [illegible] प्रबल प्रेरक, प्रशातमना, आगम रहस्यों के परम [illegible] रामलालजी म. सा के अनन्य उपासक हैं।

[illegible] काम को करने के लिए ये [illegible] शक्ति लगाकर उसे पूर्ण करते हैं। [illegible]

वाद मे पडकर कोई तर्क-वितर्क नही करते। लडाई-गडा-राग-द्वेष से दूर रहते है। पवित्र दिल वाले बुद्धिमान ।क्ति है।

शिक्षा - चिकित्सा - धार्मिक - सेवा कार्य मे इनका हरा अनुराग है। ऐसे मेधावी सज्जन को पाकर चतुर्विध ।घ यशस्वी है। समय की पाबन्दी, कार्य निष्ठा, लगन के ।ाथ जीवन जीने वाले आदर्श सज्जन है। ये जिन आदर्शो ौर सकल्पो को साथ लेकर चलते, उनका पूरी दृढता से नेर्वाह करते है। इनका जीवन व्यवस्थित और चिन्तन प्रिय ३। तेज दृष्टि वाले ये कला और सौदर्य के प्रेमी है ।

इनमे अनेक सकट सहने की शक्ति है । अनेक बाधाओ को पार करने की क्षमता है । अपनी बात के पक्के, सुलझे विचारो के प्रतीक और नेक दयावान इसान है । आन-बान-शान और स्वाभिमान की इनके व्यक्तित्व की सुनहरी महक है । काम के अलावा बोलना या अति बोलना इन्हे पसद नहीं । स्वभाव से ये सरल, गभीर, चितनशील है । छोटी-छोटी बातो को लेकर ये कभी भी नहीं उलझते और न किसी को उलझाते । कभी भी आप उत्तेजित नही होते । दृष्टि डालकर मौन हो जाते है। शरीर से स्वस्थ, मस्तिष्क से विचारवान और स्वभाव से नर्म है।

आपकी धर्मपत्नी अखण्ड सौभाग्यवती, आदर्श सुश्राविका, श्रीमती कचनदेवी सिपानी है । जो हर क्षण आपके जीवन को और परिवार को सवारने मे लगी रहती है । धर्म के क्षेत्र मे, सामाजिक क्षेत्र मे, पारीवारिक क्षेत्र मे पूरा सहयोग देती है । सरलमना, सुहृदयी, धर्मनिष्ठ और व्यवहार कुशल श्रीमती कचनदेवी सिपानी एक आदर्श गृहिणी है ।

श्रीमान् राजकुमारजी सिपानी क्षण मात्र का भी कार्य मे प्रमाद नहीं करते । आज का कार्य आज ही हो जाना चाहिए । कल पर ये कभी भरोसा नहीं करते । समय का दुरपयोग आपको बिलकूल अच्छा नहीं लगता । समय की महत्तता और कीमत आप अच्छी तरह समझते है , अतः प्राप्त अमूल्य समय को सफल बनाने मे आप हमेशा तत्पर रहते है । आप स्पष्ट और सही बात कहने वाले है सज्जन पुरुष है । किसी की बुराई और निन्दा से आप कोसो दूर है । अपने नियमित और मर्यादित जीवन मे आप बडे मस्त है । व्यापार-व्यवसाय-व्यवहार मे आप साफ है ।

श्रीमान् राजकुमारजी समयानुसार और समयानुकूल अपने व्यस्ततम जीवन के कार्य मे से धार्मिक तथा आध्यात्मिक कार्य के लिए और परोपकार के लिए समय निकालते है ।

धर्मवीर-कर्मवीर श्रीमान् राजकुमारजी अनेक कल्पनाओ, अरमानो और आशाओ के धनी है। श्री राजकुमार सिपानी समाज और धर्म की गतिविधियो को बडे गौर से देख रहे है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य की बहती धाराओ मे ये झॉक रहे है। समाज के इस रगमच पर कितने आ रहे है और कितने जा रहे है और क्या-क्या कर रहे है, इसका इन्हे ज्ञान है। अपने जीवन मे एकता, मैत्री और क्षमा के भावभरे मगल स्तूप पर खडे होकर ये देश काल की बदलती हुई तस्वीर और उसके खेल को देख रहे है।



श्री सोहनलालजी सिपानी के चमकते उज्जवल सितारे श्री कमलजी सिपानी

आदरणीय दादाजी सेठ साहब श्रीमान् भेरुदानजी सिपानी दादीजी आदरणीय श्रीमती धनीदेवीजी और परम् पूज्य पिताजी श्रीमान् सोहनलालजी एवं ममतामयी मातेश्वरी श्रीमती जेठीदेवी की छत्र छाया में प्रसिद्धि पाने वाले योग्य और गुणवान, नवयुवक, युवाउद्योगपति, कर्नाटक की राजधानी फूलो और कम्प्यूटर की नगरी बेंगलोर के उपनगर कोरमगला निवासी श्री कमलजी सिपानी समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, शासननिष्ठ, समाजसेवी, धर्मनिष्ठ, श्रद्धाशील और कर्त्तव्य परायण नौजवान है।



श्री कमलजी सिपानी की समाज के अनेक वयोवृद्धों, [illegible], साथियों-मित्रों, व्यापारियों, समाज सेवी [illegible] गुरुओं, संत-सतियों, आचार्यों [illegible] ।

परम भक्त है । शात क्राति के अग्रदूत [illegible] गणेशीलालजी म सा के आप परम उपासक है । [illegible] विभूति, आगम पुरुष, आचार्य श्री नानालालजी [illegible] आपके आस्था के केन्द्र है । आगमज्ञ, व्यसन [illegible] प्रबल प्रेरक आचार्य श्री रामलाल जी म. सा. [illegible] जीवन को [illegible] मोड प्रदान [illegible]

सघ की [illegible] और गतिविधियों [illegible] बढाने में [illegible] रहते है ।

श्री कमल[illegible] करते हुए [illegible] आगे से [illegible] रहे है । धर्म [illegible] आस्था और [illegible] की भावना [illegible]

प्रतिपल वन्दनीय परम् पूज्य पिताजी [illegible] सोहनलालजी सिपानी और ममतामयी, [illegible] और वात्सल्य की भण्डार मातेश्वरी [illegible] विरासत में मिले है। उनकी समानुभूति [illegible]

इनकी कार्य शैली मे जीवन की एक चमक है, एक आभा है, एक भाव-चित्र है । जिन्हे आप बनाते रहते है और कार्य करते रहते है। इनके चित्रो मे जीवन की गहराई, जीवन का उतार-चढाव व अनेक विचारो मे, समाज-देश-धर्म की उन्नति और विकास के दृश्य है।

मझला कद, गेहूँआ वर्ण, गोल आकृति, मुस्कराते नयन, फबती नुकीली नाक, बोलती बॉहे, कुछ गुनगुनाते, कुछ कहते, कुछ सुनते, कुछ मुस्कराते, कुछ विचार-चितन-मनन करते ज्ञान-दर्शन और तप मे मग्न, धर्म आराधना करते देखे गये है कमलजी को। ये अच्छा बोलते है । अच्छा लिखते है । इनमे ज्ञान और अनुभव है ।

स्वभाव से ये सरल, मृदु, उदार, स्नेहशील, दया, करुणा, वात्सल्य से भरे हुए है । इनका दिल गुलाब की महक-सा खुशबूदार है । इनका हृदय निर्मल पानी के झरने के समान पवित्र है । इनका मनो-मस्तिष्क आकाश से भी विशाल और सागर से भी गहरा है । हमेशा ये चलते-फिरते, खाते-पीते, उठते-बैठते, सोते-जागते, व्यापार और धर्मध्यान करते समता का ही ध्यान रखते है । ये मन मोहक आकर्षक व्यक्तित्व के धनी है । आप उदार हृदयी है। आप सेवा रस से हमेशा भरे हुए है। मानवता के सच्चे अर्थो मे पूजारी है। आप इसी भाव से सभी के मन भावन और चेहते बने हुए है।

साधु-साध्वीजी, सत महात्मा इनके केन्द्र बिन्दु है । समाज के गौरव युवा है। ऐसे जनप्रिय श्री कमलजी जन कल्याण के सद्कार्यो मे लगे हुए है । इन्होने अपना धार्मिक, सामाजिक, व्यापारिक क्षेत्र पुरुषार्थ से बनाया और सघ, समाज मे प्रतिष्ठित स्थान बनाया है।

* नाम : **श्री कमल सिपानी**
* धर्मपत्नी : **श्रीमती विमलादेवी सिपानी**
* पुत्री-जमाई : **श्रीमती कविता-श्री यशवंतकुमारजी बोथरा,** जयपुर
* दोहिता : **अभिषेक बोथरा** * दोहिती : **स्नेहा बोथरा**
* पुत्री-जमाई : **श्रीमती काजल-श्री संजयकुमारजी सांखला,** मुम्बई
* दोहिता : **आकाश सांखला** * दोहिती : **खुशी सांखला**
* पुत्री-जमाई : **पूजा : श्री चंदनकुमारजी बोहरा,** पीपलिया कला
* पुत्री : **एकता सिपानी** ।

इनके अतर । एक स्नेह धारा प्रवाहित होती रहती है, वही से ये साहस, हिम्मत, ऊर्जा और उत्साह प्राप्त करते रहते है। ये हमेशा शिक्षा, चिकित्सा, समाज सुधार और समाजोत्थान के कार्य मे तत्पर रहते है।

आज का बालक भविष्य का पालक है और आज की बालिका भविष्य की माँ है, अतः बालक और बालिकाओ मे व्यवहारिक शिक्षण के साथ-साथ धार्मिक सस्कार, नैतिक भावना और आध्यात्मिक शिक्षण की नितात आवश्यकता है । क्योकि आने वाले सुनहरे भविष्य का भार उन्हीं के कधो पर आने वाला है ।

नारी शिक्षा, समानता, समन्वय और स्व-अधिकारो के प्रबल हिमायती, व्यापक और उदार हृदयी, विशालमना, कर्त्तव्यनिष्ठ, व्यवहार कुशल, प्रतिपल जागरुक, वात के धनी, समय के पावद और व्यसन मुक्त धर्ममय जीवन जीने वाले, कम और मधुर शब्द वोलने वाले श्री कमलजी सिपानी सभी के प्रिय है।

श्री कमलजी का कहना है कि जरा ठहरो, कोई काम के लिए जल्दी मत करो, धैर्य से सोच - समझकर काम करो, विवेक रखो, शाति, सतोष और समता से ही सभी कार्य मे सफलता प्राप्त होती हैं। क्योकि अपने-अपने

पर सभी श्रेष्ठ हैं । ये गुणो के पारखी है । ये स्वयं गुणी है, ये गुणियो का आदर-मान-सम्मान-सत्कार करना समझते है और इन्हे सभी मे गुण ही गुण दिखाई देते है ।

अपने व्यवसाय-उद्योग मे भी आप बहुत चमके है । खूब प्रतिष्ठा पाई है । खूब नाम कमाया हैं । ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा, और प्रामाणिकता के साथ व्यापार करने वाले और स्व-जीवन जीने वाले है श्री कमलजी सिपानी । आज के इस भौतिक विलासपूर्ण वातावरण मे परिवार, समाज, धर्म, देश को ऐसे ही युवावर्ग की आवश्यकता हैं। जो सघ, समाज, धर्म और देश के लिए कुछ कर सके । नव चेतना पैदा कर सही जागृति ला सके। रुढियो को तोड़ कर आडंबर मिटा सके । इनकी मान्यता है कि आत्मवल ही सब कुछ है । अतरात्मा की आवाज ही सर्वोपरि है।

श्री कमलजी सिपानी की हार्दिक इच्छा है कि धर्म का जन-जन और घर-घर में प्रचार हो, युवक-युवतियॉ मर्यादा मे रहकर सस्कारशील और विवेकवान् वने, धर्मवान् वने, नम्र और अनुशासन प्रिय वने। देश, धर्म, समाज, संघ और जन-जीवन के लिए अच्छे-अच्छे उपयोगी और सार्थक कार्य करे । जिससे जन-जीवन में विश्वास वढे । आपस में एक-दूसरे के प्रति समन्वय, समता, भाईचारा और अपनत्व का विकास हो ।

निष्ठा के साथ समर्पित है ।

अनुशासन प्रिय, शात-क्रांति के अग्रदूत [illegible] गणेशीलालजी म.सा के पट्टधर विश्व शाति के [illegible] आचार्य श्री नानालालजी म. सा. और तरु[illegible] आचार्य श्री रामलाल जी म सा की श्री कमल[illegible] पर जबरदस्त छाप है ।

आगम पुरुष आचार्य श्री नानालालजी म [illegible] उदारहृदयी, समय की मर्यादा को समझने वाले, [illegible] के चेहते, बात नही काम मे विश्वास रखने [illegible] कमलजी को करीब से देखा है, उन्हे भली-भाँ[illegible] है । इसी आशा और विश्वास के साथ धर्मपाल प्र[illegible] समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म. सा [illegible] जीवन में समता की भावना का बीज डाला है और [illegible] की व्यापकता भरी है। धर्म और संघ के प्रति स्नेह [illegible] है।

श्रमण भगवान प्रभु महावीर के शासन को दि[illegible] सुधर्मा स्वामी के पाट को अक्षुण्ण वनाये रखने [illegible] चतुर्विध सघ के नायक, आगम पुरुप, जिन शासन [illegible] के राजहंस, आचार्य प्रवर श्री नानेश पट्टधर, [illegible] व्यसन मुक्ति के प्रवल प्रेरक, प्रशांतमना, तर[illegible] तपोमूर्ति, सिरीवाल प्रतिवोधक, आचार्य श्री रा[illegible] म सा के भी आप बहुत करीय रहे है, [illegible] आपने सम्यक् जीवन जीने के मूल्यो का [illegible] हैं।

ा है, उसमे घर-परिवार के सभी सदस्य उपस्थित होते और धार्मिक और आध्यात्मिक अनुष्ठान से द्वारा अपनी त्मा को सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की ओर अग्रसर रते है ।

धर्मप्रेमी और शासन प्रिय, गुरु भक्त कमलजी समय के बन्द और बात के धनी है।

आप चार भाई है। सबसे बडे श्री सुन्दरलालजी नपानी, दूसरे नम्बर मे श्री राजकुमारजी सिपानी, तीसरे म्बर पर आप स्वय और चौथे नम्बर पर श्री विमलचदजी सपानी जो कलाप्रेमी है, धर्मप्रेमी है, शिक्षाप्रेमी है, वाभावी है, उदारमना है, व्यवहार कूशल है, आदर्श पुरुष ;, सज्जन महानुभाव है। आप सभी सुन्दर और सात्विक वेचारो के धनी है।

आप प्रतिदिन अपने पूज्य माता-पिता और अपने से डो को प्रणाम करते है, आप ही नहीं अपितु घर के सभी सदस्यो के इस प्रकार का नियम है । जब भी आपको बेंगलोर से बाहर जाने का कोई कार्य हो तो अपने परम् पूज्य पिताजी से मागलिक ग्रहण करने के बाद ही प्रस्थान करते है ।

आपकी एवम् आपके परिवार की सफलता का सही राज यह है कि आप जब भी किसी भी प्रकार का नया कार्य प्रारम्भ करते है तो सर्व प्रथम आचार्य भगवत का मागलिक लेकर फिर नया कार्य शुरु करते है ।

धार्मिक और आध्यात्मिक विचारो से युक्त आपके एक बहन श्रीमती सरलाबाई बेताला है जो श्रीमान् प्रकाशचदजी बेताला की धर्मपत्नी है ।

आपकी धर्मपत्नी सुश्राविका अ सौ श्रीमती विमलादेवी सिपानी एक आदर्श गृहिणी है । तप-त्याग, धर्म-ध्यान मे रत रहते हुये प्रतिदिन नियमित २ घण्टे का स्वाध्याय अवश्य करती हैं। सम्यक् ज्ञान की आराधना करते हुये आपने सामायिक प्रतिक्रमण के साथ दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, नदी सूत्र आदि कई आगमो का अध्ययन किया है । इन्हे पचीस बोल आदि अन्य कई थोकडे कण्ठस्थ है। आप प्रतिदिन कम से कम ५-६ सामायिक नित्य करती है। ३, ५, ६, ८, ९, १५ उपवास तक की तपस्या श्रीमती विमला सिपानी ने की है । तप मे भी हमेशा आप आगे रहती है। अतः आप तप वीरागना और आदर्श महिला रत्न है।

श्रमण भगवान प्रभु महावीर स्वामी से प्रार्थना करते है कि आप इसी प्रकार सघ, समाज, धर्म और देश के विकास मे तन-मन-धन से अपना सहयोग प्रदान करते हुए जिनशासन की सेवा मे अपना अमूल्य समय और जीवन लगावे। अपने अर्थ का अधिक से अधिक सदुपयोग दीन-दुखियो की सेवा करने मे और साधार्मिक बन्धुओ की सहायता करते हुए अपने सद्कार्य द्वारा जीवन मे आगे से आगे बढते रहे ।



महावीर का भव्य सन्देश
जीओ और जीने दो

नौ तत्व का ज्ञान करें,
बारह व्रत को धारण करें।



श्री सोहनलालजी सिपानी के कनिष्ठ सुपुत्र श्री विमलचंदजी सिपानी

एक वक्त वैकुण्ठलोक मे विविध व विभिन्न वस्तुओ का वितरण हो रहा था, श्री विमलचदजी सिपानी विचार करते हुए वरुणपुरी पहुँचे, तो वहाँ पर देखा कि देवी-देवताओं की सभा चल रही है। वहाँ विमलजी चुपचाप [illegible] अलकापुरी के अनोखे आनन्द का [illegible]। आखिर [illegible] की नजर [illegible] [illegible] हो ? [illegible]

व्यवहार है, धर्म-भावना है, विशाल व्यापार है, [illegible] तुम आ ही गये हो तो मै तुम पर और तुम्हारे [illegible] अति प्रसन्न हूँ। एक बात मेरी ध्यान से सुन [illegible] भाई-बहिन मे तुम सबसे छोटे हो तुम पर [illegible] अनुराग अच्छा रहेगा। व्यापार और उद्योग में [illegible] नाम कमाओगे। सभी व्यक्ति तुम से सलाह [illegible] करेगे। तुम्हारा व्यापार मे अनुभव सर्वश्रेष्ठ रहेगा।

दादाजी सेठ श्रीमान् भेरुदान जी और दादी [illegible] धन्नीदेवीजी तथा पिता श्रीमान् सोहनलालजी [illegible] श्रीमती जेठीदेवी की छत्रछाया में संस्कार, संस्कृति, धार्मिक आचार-विचार, सतोष [illegible] गौरवमयी परपरा को यशस्वी बनाने की [illegible] प्राप्त की।

ऐसे आदर्श व्यक्तित्व वाले श्री [illegible] बड़े भाग्यशाली और होनहार हैं, जिन्हें [illegible] सोहनलालजी सिपानी और माता धर्म [illegible] श्रीमती [illegible] ने सबसे छोटे [illegible] था। अतः इन्हें [illegible] [illegible]

- नाम : **श्री विमलचंद सिपानी**
- धर्मपत्नी : **श्रीमती कुमुदेवी सिपानी**
- पुत्र-पुत्र वधु . **श्री सुनिलकुमार-श्रीमती श्रद्धा सिपानी**
- पुत्र : **पुनीतकुमार सिपानी** ।

सबसे छोटे और लाडले पुत्र होने के कारण पूज्य ताजी श्री सोहनलालजी सिपानी ने बहुत स्नेह से ज्ञान-ान, सुख-दुःख, धर्म-अधर्म, जय-पराजय, पाप-पुण्य ादि जीवन के कई खट्टे-मीठे अनुभवो और जीवन के ई उतार-चढावो के वगत कराया ।

इससे इनके यावसायिक और यापारिक जीवन की अनेक गुत्थियाँ सहज ही सुलझती गयी । इनके मन मस्तिष्क मे अपूर्व और अद्वितीय साहस की लहर जगमगाने लगी। जीवन मे सुनहरी हरियाली छा गयी । मन-मानस से धर्म ध्यान का शतरगी इन्द्रधनुष चमकने लगा। सुख और वैभव के अणु-परमाणु जगमग ज्योति बिखेरने लगे। इन सभी मन-भावन कारणो से विमलजी के मन मे सुहृदयता, मानवता, कर्त्तव्यनिष्ठता, सेवा, नम्रता, भाईचारा, समता और क्षमा पनपती रही । इसी कारण ये खूब फले-फूले और अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त की। सम्पन्नता मे भी आगे रहे ।

जब जीवन मे दान-शील-तप के भाव उठते है तो जीवन मे अपने आप ज्ञान-दर्शन और चारित्र्य की भाव तरगे लहराने लगती है । तब सचाई अपने आप महकने लगती है, मन-मानस खिल उठता है।

सिपानी परिवार का यह होनहार युवा चमकता सितारा, चतुर है, श्रद्धा से भरा हुआ है, विवेक से कार्य कर रहा है, समता और समन्वय से रगा हुआ है, भाईचारा और मैत्री से भरा हैं । ये अपने कर्त्तव्य के प्रति हमेशा जागरुक बन कर कार्य करके प्रति क्षण सफलता के सौपान पर आगे बढ रहा है ।

ये सघ और समाज के प्रति जागरूक है, उदारता के भाव और करुणा के भाव इनके रग-रग मे भरे हुए है। इनमे साहस, धैर्य और विवेक का बल है। भविष्य के होनहार तेजस्वी युवा है। इनके मधुर व्यवहार से भरी इनकी ओजस्वी वाणी और कार्यशक्ति का अनुभव इनके सम्पर्क मे आने वाला व्यक्ति ही जान सकता है।

श्री विमलचदजी सिपानी अपनी आत्म शक्ति के उपासक है। इन्ही भावो से इनका मनोबल बढा है, आत्मबल दूगुना हुआ है, सभी की शकाओ और समस्याओ का न्याय सगत सही समाधान किया है।

श्री विमलजी सिपानी चितनशील-स्वभाव के अद्भूत नौजवान है। ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी है। सभी के साथ मिलकर समयानुसार कार्य करना इनका अपना स्वभाव है। ये हमेशा स्वस्थ और प्रसन्नचित रहते है। सभी से मिलजूल कर रहने से मन की भावनाओ का नवीनीकरण हो जाता है।

आज के इस भौतिक युग मे आम आदमी चिन्ताओ से परेशान है और अभावो से दु-खी है। इस विषम परिस्थिति मे उसे क्या करना और क्या नही करना - इसका वह निर्णय नहीं कर पाता, इसीलिए वह दु खी और परेशान है। इसे दूर करने के लिए अपने कार्य के प्रति ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य का पालन करे । जिससे आत्म-शान्ति प्राप्त होती है और आत्म विश्वास को बढाना आवश्यक है । हर समय समता का उपयोग अनिवार्य है। नवकार मत्र का स्मरण, वीर प्रभु के नाम की मालाए फेरना, तीर्थकरों के गुणो को दिल मे उतारते रहे, जिससे मन को शाति प्राप्त होती है और सुख का अनुभव होता है ।

धर्मपाल प्रतिबोधक समता विभूति अ।

नानालालजी म सा का इन पर विशेष आशीर्वाद रहा है। इनके अनुपम आशीर्वाद से इनके घर मे सुख-वैभव-आनन्द का साम्राज्य है। इनके जीवन मे निर्भीकता और आत्मीयता आयी है। ये धर्मनिष्ठ है, धार्मिक सस्कार इनकी रग-रग में समाये हुए है। साधु सतो की सेवा इनका एक मात्र लक्ष्य है।

सिरीवाल प्रतिबोधक, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, प्रशातमना, आगम रहस्यो के परम ज्ञाता, आचार्य श्री रामलालजी म सा के ये अनन्य भक्त है।

पारिवारिक, व्यापारिक, सामाजिक, धार्मिक और किसी काम को पूरा करने के लिए ये हिम्मत नहीं हारते। यही इनकी सफलता का राज है। इनके पास न प्रदर्शन है न दिखावा है, न आडम्बर है, न कोई झंझट है। ये किसी कार्य मे पडकर कोई समस्या खडी नहीं करते। लडाई-झगड़ा-राग-द्वेष से दूर रहते है। साफ, नेक और पवित्र दिल वाले बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

शिक्षा - चिकित्सा - धार्मिक - सामाजिक सेवा कार्य मे इनका आत्मिक अनुराग है। ऐसे होनहार युवक को पाकर [illegible] यशस्वी है।

समय की पाबन्दी के साथ जीवन जीने वाले, कार्य के प्रति [illegible] निष्ठा और लगन रखने वाले आदर्श सज्जन हैं। [illegible] और [illegible] को साथ लेकर चलते, उनका [illegible] निर्वाह [illegible]। उनका जीवन व्यवस्थित [illegible] वाले अनुभवी व्यापारी [illegible]।

[illegible]

विचार धारा के अनुसार अपने जीवन को [illegible] वाले है। स्वभाव से ये सरल, गभीर, [illegible] छोटी-छोटी बातो को लेकर ये कभी भी नहीं [illegible] न किसी को उलझाते। स्वय सभी की [illegible] सुलझाते है।

आपकी धर्मपत्नी अखण्ड सौभाग्यवती सुश्राविका, श्रीमती कुमुददेवी सिपानी है। [illegible] पल मे हर क्षण परिवार को सवारने और [illegible] मे लगी रहती है। धर्म के क्षेत्र मे, सामाजिक [illegible] पारीवारिक क्षेत्र मे पूरा सहयोग देती है। [illegible] सुहृदयी, धर्मनिष्ठ और व्यवहार कुशल श्रीमती [illegible] सिपानी एक आदर्श गृहिणी है।

श्रीमान् विमलजी सिपानी अपने कार्य के प्रति [illegible] का भी प्रमाद नहीं करते। समय का दुरुपयोग [illegible] बिलकूल अच्छा नहीं लगता। समय की [illegible] अच्छी तरह समझते है, अतः प्राप्त समय [illegible] बनाने में आप हमेशा तत्पर रहते है। आप [illegible] बात कहने मे कभी नहीं डरते। व्यापार-व्यवहार मे आप साफ है।

श्रीमान् विमलजी समयानुसार अपने [illegible] धार्मिक तथा आध्यात्मिक कार्य के लिए [illegible] लिए समय निकालते हैं।

स्पष्ट और साफ छवि वाले धर्म [illegible] विमलजी सिपानी अनेक विचारों के [illegible] सिपानी परिवार, समाज और धर्म की [illegible] [illegible] से देखते हैं। फिर सोच समझ [illegible] [illegible] के साथ [illegible] [illegible]।

जय जिनेन्द्र



अभिनन्दन गीत

-प्रतिभा सहलोत, निम्बाहेडा (राज.)

समता सागर के अनुयायी समता की बीन बजाते है ।
गुरुभक्ति संघ समर्पण से यश और प्रतिष्ठा पाते है ॥

श्री भैरोंदानजी के सुत प्यारे, माता धन्नी के जाये है ।
श्री सोहनलालजी सिपानी जन-जन के मन को भाये है ।

सरल स्वभावी उदारमना जीवन का ध्येय निराला है ।
अन्तर में जिसके सदा बहे सेवा करुणा की धारा है ।

विपुल संपदा के स्वामी पर समता भाव रमाते है ।
निर्लिप्त भाव से रहकर के जीवन का साज सजाते है ।

संस्कारी परिजन सारे हैं नित धर्म की गंगा बहती है ।
त्याग तपस्या और प्रार्थना सदा सदन पर होती है ॥

सुत चार आपके विनयवान संस्कारित जीवन जीते है ।
धर्म सहायिका जैठीदेवी वात्सल्य भाव लुटाते है ।

सिपानी कुल के भूषण ने इस जग में नाम कमाया है ।
पाया है समता पुरस्कार जीवन को धन्य बनाया है ॥

अभिनन्दन है सिपानीजी दीर्घायु और यशस्वी हो ।
प्रतिभा समता सौपानों से जीवन इनका वर्चस्वी हो ॥

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

समता विभूति समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानेश समता के साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। उनका जीवन समतामय था। समतायुक्त सम्यक् आचरण ही उनके प्रवचनो का सार रहता था। एक जिज्ञासु के प्रश्न **किम् जीवनम्** का समाधान सूत्र मे **सम्यक् निर्णयकम् समतामयंच यत् तज्जीवनम्** देते हुए सन् १९७२ मे जयपुर चातुर्मासिक प्रवचनो मे आपने उसे विस्तार से व्याख्यायित किया था।

जैन दर्शन मूलत **समता दर्शन** है। अहिसा से अपरिग्रह तक पाँचो महाव्रतो और अणुव्रतो का पचयमयुक्त पच आयामी तत्त्व ज्ञान **समता** के इस एक शब्द मे समाहित है। **समत्वम् योग मुच्यते**। समता ही सर्वोच्च योग है। उसे जीवन मे कैसे ढाला जाये, व्यक्ति और समाज कैसे समतामय बन जाये, विषमताओ विकृत्तियो, विभावो व विकारो से विमुक्त होकर हम सभी स्वभाव रमण की सत्सस्कार युक्त स्थिति मे कैसे स्थिर हो जॉय, यही पूज्यश्री की सर्वोपरि चिन्ता तथा जन-जन के पौर का सम्यक् जागरण करने वाली सतत् प्रवाहमान चिन्तनधारा थी। समाज जीवन से विषमताओ का उन्मूलन कर समता की स्थापना के लिए वे जीवन भर पावन प्रेरणा करते रहे। मालवा के सैकडो गॉवो मे पिछडे वर्ग की बलाई जाति के हजारो परिवारो को मॉस-मदिरा आदि दुर्व्यसनो से मुक्त कर उन्हे सत् सस्कारयुक्त समुन्नत बनाने का क्रान्तिकारी युगीन कार्य करके उन्होने समता रचना का एक अनुकरणीय आदर्श स्वरूप प्रस्थापित किया है जो हमारे लिये एक प्रभावी प्रकाश स्तम्भ के रूप मे विद्यमान है।

समता प्रवर्तक परम प्रतापी आचार्य प्रवर इस भाव धारा को समाज मे रूपायित करने तथा उनके समता समाज सस्थापन के स्वप्न को साकार करने के लिए श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन सघ ने राष्ट्रीय स्तर पर इस **समता पुरस्कार** का सृजन किया। बीकानेर के श्रावक श्रेष्ठ स्व जसराजजी बैद के सुपुत्र दिल्ली निवासी श्रीयुत झवरलालजी बैद इस पुरस्कार के प्रेरक और प्रथम प्रायोजक रहे।

वर्ष २००१ मे सस्थापित **आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार** मूलत आचरण आधारित है। यह पुरस्कार प्रति दूसरे वर्ष ऐसे समता मनीषी को प्रदान किया जाता है जिन्होने समता को आत्मसात करने, समाज मे सत्य, अहिसा, करूणा, सवेदनशीलता जैसे सात्विक जीवन मूल्यो को प्रस्थापित करने और सस्कारयुक्त समतामय जीवन जीने की दिशा देने हेतु स्वय को सर्व भावेन समर्पित कर दिया हो। इस पुरस्कार की कसौटी है पूर्णत समतामय होना।

साधना का यह स्तर अत्यन्त प्रेरणादायी और प्रभावकारी है। इस स्तर को प्राप्त करने वाले साधक सचमुच गृहस्थ मे रहते हुए अनासक्त स्थितप्रज्ञ समत्व योगी की स्थिति को प्राप्त कर लेते है। ऐसे श्रेष्ठ समतादर्शी महामनीषी कभी भी सम्मान की अपेक्षा नही रखते। प्रशस्ति से दूर रहना ही उनकी अन्तर वृत्ति रहती है। पर समाज को सद्वृत्तियो से प्रेरित करने के लिए ऐसे गुण सम्पन्न सत्पुरूषो को उनके न चाहते हुए भी समादृत करना वाछनीय मानकर इस समता पुरस्कार की प्रस्थापना की गई है।

पुरस्कार स्वरूप चयनित समता मनीषी को एक प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न, शाल, श्रीफल तथा एक लाख की राशि प्रदान की जाती है।

वर्ष २००१ का प्रथम समता पुरस्कार जयपुर निवासी समता मनीषी तपोधनी आदर्श सुश्रावक श्रीयुत गुमानमलजी सा चौरडिया को दिल्ली के फिक्की सभागार मे दि २४ मई २००१ को प्रदान किया गया था।

गत वर्ष आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतु सघ द्वारा गठित निर्णायक मण्डल के सम्माननीय अध्यक्ष गुजरात के पूर्व राज्यपाल श्रीयुत सुन्दरसिहजी भडारी एव मानद सदस्यगणो के द्वारा उदयरामसर तथा बैगलोर निवासी समता मनीषी सेवानिष्ठ सुश्रावक श्रीयुत सोहनलालजी सिपानी का चयन किया गया। उन्हे राष्ट्रीय स्तर का यह समता पुरस्कार शक्ति व भक्ति की वीर प्रसविनी धर्म धरा मेवाड सुरम्य झीलो की नगरी उदयपुर मे वीतरागमना दीक्षार्थी भव्य मुमुक्षुजनो के पावन सान्निध्य मे दि ३ फरवरी २००४ को सादगी युक्त भव्य समारोह मे प्रदान किया जावेगा जो हम सबके लिए अत्यन्त प्रेरणादायी प्रसग हे।

भंवरलाल कोठारी
सयोजक
आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार समिति

सिपानी परिवार में अभूतपूर्व तप-त्याग

बेंगलोर। तप आत्मा से परमात्मा बनने का एक अनुपम सोपान हैं । तप से आत्मा निर्मल और विशुद्ध बनती हैं. वस्तुतः इच्छाओं का निरोध ही तप है, कहा भी है -

इच्छा निरोधस्त : तपः।

व्यसन मुक्ति के प्रणेता, शास्त्रज्ञ १००८ आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी आदर्श त्यागिनी, प्रखरवक्ता, परम विदुषी, महासतीजी श्री ललितप्रभाजी म.सा., कर्मठ पुरुषार्थी पूज्य श्री विशालप्रभाजी म. सा., मनस्वीप्रज्ञा श्री सन्मतिशीलाजी म.सा., विद्याविनोदी श्री विवेकशीलाजी म. सा. ठाणा-४ के सिपानी भवन, कोरमंगला, बेंगलोर मे चातुर्मास निमित्त सिपानी परिवार में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना व तप त्याग का अनुपम ठाठ लगा

अखण्ड सौभाग्यवती श्रीमती सोनाली सिपानी पौत्रवधु श्री सोहनलालजी सिपानी पुत्रवधु श्री सुंदरलालजी धर्मपत्नी श्री मनोजकुमार, सुपुत्री श्री शांतिकुमार जी गरिड़यान ने अठाई तप की आराधना कर अपनी आत्मा को भावित किया है। इसके पूर्व आपने बेले, तेले, आयंबिल उपवास आदि कई तपस्याएं की है। सामायिक एवं प्रतिक्रमण में [illegible] है।

लगातार आयंबिल करके रसनेंद्रिय पर विजय [illegible] यदा-कदा आयंबिल तप की आराधना चालू [illegible]

अखण्ड सौभाग्यवती श्रीमती सीमा सिपानी [illegible] श्री सोहनलाल जी पुत्रवधु श्री सुंदरलाल जी [illegible] धीरजकुमार सुपुत्री श्री सुजानमल जी कांकरिया ने [illegible] तप की आराधना कर परमात्म स्वरूप की आरा[illegible] इसके पूर्व आपने २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, [illegible] तपस्याएं की । धार्मिक योग्यता के साथ श्री [illegible] कंप्यूटर मे भी डिप्लोमा किया है।

श्री सुनिलकुमार सिपानी एव अखण्ड सौभा[illegible] श्रीमती श्रद्धा सिपानी पौत्र एवं पौत्रवधु श्री सो[illegible] सिपानी पुत्र एवं पुत्रवधु श्री विलमचंदजी सिपानी, [illegible] एव सुपुत्री श्री रमेशचंदजी नाहर ने मजोड़े अठा[illegible] आराधना करते हुये युवाओं के लिये एक अनु[illegible] आदर्श उपस्थित किया। युवावस्था में दोनों ने [illegible] की तपस्या करके कुल के गौरव मे वृद्धि की [illegible] बी.काम. तक अध्ययन किया है एवं सामायिक [illegible] अध्ययन रत है। प्रतिदिन स्वाध्याय ध्यान [illegible] में रत रहकर अपने आत्मा को भावित कर [illegible]

तपस्विनी वीरांगना श्रीमती विमलादेवी सिपानी ने १५ उपवास के प्रत्याख्यान किये

बेगलोर। इच्छाओ को रोकना तप है, दशवैकालिक सूत्र मे कहा है कि अपने पास उपलब्ध होते हुये उस वस्तु से ममत्व भाव हटाकर उसका त्याग करने वाला सच्चा त्यागी कहलाता है। तप वस्तुत. आत्मा के लिये होता है। शरीर तप करने का एक माध्यम है कहा भी है -

"शरीर माध्यम धर्म साधनम्"।



इसी तप की कडी मे दानवीर भामाशाह, समता पुरस्कार से सम्मानित सुश्रावक रत्न श्री सोहनलालजी सिपानी की पुत्रवधु, सरल हृदयी, हँसमुख मिलनसार, मधुर व्यक्तित्व के धनी, युवारत्न, सुश्रावक रत्न श्री कमलजी सिपानी की भार्या सुश्राविका रत्न, तप वीरागना, अखण्ड सौभाग्यवती श्रीमती विमलादेवी सिपानी ने अपने आत्मबल को मजबूत करते हुये आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी परम विदुषी महासती श्री ललित प्रभा जी म. सा के मुखारविद से सिपानी भवन की विशाल धर्म सभा मे १५ उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण करके अपने आत्मा को भावित किया है।

श्रीमती विमला देवी सिपानी ने तप करके जिन शासन मे अभिवृद्धि करते हुये अपने पिता श्री बालचंद सेठिया भीनाशहर वालो के साथ सिपानी परिवार के गौरव मे चार चांद लगाये है। तपस्वी वीरागना ने इसके पूर्व उपवास, आयंबिल, तेला, ४, ५, ६, ८ आदि कई तपस्याएं कर चुकी है।

तप त्याग मे रत रहते हुये आप प्रतिदिन नियमित २ घण्टे का स्वाध्याय अवश्य करती है। सम्यक् ज्ञान की आराधना करते हुये आप सामायिक प्रतिक्रमण के साथ दशवैकालिक उत्तराध्ययन सूत्र, नंदी सूत्र आदि कई आगमो का अध्ययन किया है। पच्चीस बोल आदि अन्य कई थोकडे आपको कण्ठस्थ है। आप प्रतिदिन कम से कम ५-६ सामायिक अवश्य करती हैं।

ऐसी तपवीरांगना श्रीमती विमला देवी सिपानी ने सिपानी परिवार और सेठिया परिवार के साथ जिन शासन की महत्ती प्रभावना कर आत्मा को भावित किया है।

तप त्याग का अनुपम ठाठ

बेंगलोर, सिपानी भवन कोरमंगला मे व्यसन मुक्ति के प्रणेता, तरूण तपस्वी, शास्त्रज्ञ १००८ आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी परम विदुषी महासती श्री ललित प्रभाजी म. सा. आदि ठाणा ४ के चातुर्मास निमित्त सिपानी भवन मे धर्म ध्यान, तप त्याग का मेला लगा।

प्रतिदिन पूज्य महासती जी म.सा. अपनी ओजस्वी वाणी एव प्रखर व्याख्यान शैली से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते । आपकी प्रवचन शैली से जिसने कभी तपस्या नहीं की वह भी तप के लिये तत्पर हो जाता है । प्रतिदिन विभिन्न विषयों के माध्यम से जिनवाणी की अमृत धारा अविरल गति से चलती रही है । राजा हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र सुबोध एव सरलभाषा मे महासती जी श्रोताओं को सुनाते ओर सत्यधर्म मे दृढ रहने की प्रेरणा देते । चातुर्मास के प्रारंभ काल मे ही श्रोता गण धर्म ध्यान का लाभ लेते रहे । महासती श्री विशाल प्रभा जी म.सा. सुबाहुकुमार के जीवन चरित्र का विवेचन करके श्रुत ओर चारित्र धर्म की आराधना की प्रेरणा देते रहे । महासती श्री सन्मतिशीला जी म. सा. [illegible] व्याख्यान शैली में जिनवाणी का अमृत [illegible] । महासती श्री [illegible] म. सा. नवतत्व का [illegible] व्याख्यान शैली से धर्म की प्रभावना [illegible] ।

इक्कीस-४, एकासना मासखमण ७, पोषध-[illegible] १, आदि तपस्याएं हुई ।

पर्युषण पर्वाराधना के दौरान श्रोताओं का [illegible] आपके प्रवचनो के लिये उमडता रहा [illegible] प्रतिदिन हजारो सामायिके होती रही धर्म[illegible] अभूतपूर्व रहा. दान, शील, तप ओर भावना की [illegible] आराधना हुई. प्रतिदिन विभिन्न विषयों के माध्यम [illegible] अपनी ओजस्वी व्याख्यान शैली के माध्यम से [illegible] भाव विभोर कर दिया. आपकी प्रेरणा से सदा धर्म [illegible] धर्मप्रभावना हुई. अंतगढदसा सूत्र का सुंदर सरल [illegible] विवेचन फरमाया ।

पर्युषण पर्व के पश्चात् भी दीर्घ तपस्याओं का [illegible] प्रतिदिन धर्म ध्यान का ठाठ लगा हुआ है [illegible] में बाहर से हेद्राबाद, बीकानेर, मद्रास, मंडया, [illegible], सागर, कडूर, हुण्सुर, टी. नरसीपुर, [illegible], कोलकत्ता, मध्य-प्रदेश आदि कई जगहों से [illegible] ताता लगा हुआ हैं।

अक्षरों में आंकलन

खण्ड-३

आचार्य नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित

समता मनीषी श्री सोहनलालजी सिपानी का आंकलन

-डॉ. उत्तमचंद कटारिया, बेंगलोर

। अहकार रहित
ी . तिक्कमबाजी से दूर
. मर्यादित जीवन जीने वाले

ती : तीर्थ की साधना करने वाले
र् : रज मल धोने वाले
थ : थकान रहित
क : कर्मशील बन कर कार्य करने वाले
र : रचनात्मक कार्य करने वाले

श्र श्रद्धा के केन्द्र
म . मन से भलाई का चितन करने वाले
ण : णमो सिद्धाण का जाप जपने वाले

भ . भला ही सोचने वाले
ग : गर्व से कोसो दूर
वा : वाणी से अमृत बरसाने वाले
न : नरम दिल के धनी

श्री : श्री से सम्पन्न

म : मद से दूर रहने वाले
हा . हार्दिकता से भर पूर
वी . वीतराग प्रभु के परम उपासक
र · रग-रग मे जैनत्व के भाव से परिपूर

स्वा : स्वाभिमान से जीवन जीने वाले
मी मीठास घोलने वाले

की : कीर्ति पताका फहराने वाले

स . सजगता के साथ चलने वाले
दा · दाग रहित जीवन जीने वाले
का · कार्य मे विश्वास रखने वाले
ल : लक्ष्य की ओर बढने वाले

ज : जन-जन के हितैषी
य : यतना से कार्य करने वाले

वि विश्व मैत्री की कामना करने वाले
ज : जन्म को सार्थक करने वाले

हो : होशियारी से जीवन यापन करने वाले

आचार्य नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित

श्री सोहनलालजी सिपानी का व्यक्तित्व

हु : हुलसितमना

शि : शिष्टाचारी

उ : उदारता के धनी

चौ : चौकस रहने वाले

श्री : श्रीमंत

ज : जनप्रिय

ग : गर्व अभिमान से दूर

ना : नाविक के समान

ना : नागरिक सेवा में मग्न

रा : राष्ट्र प्रेम से ओत प्रोत

म : मर्यादित जीवन जीने वाले .

च : चरित्रवान्

म : मधुर व्यवहारी

क : करूणावान्

ते : तेजस्वी

र : रक्षा करने वाले

हे : हेरा फेरी से दूर

भा : भारती के सच्चे सपूत

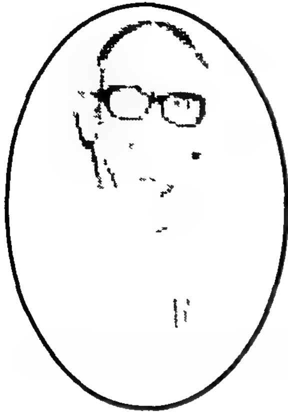
नु : नुस्खा बताने वाले

स : समर्पित भाव रखने वाले

मा : मायाचार से दूर

ना : नाव की भाँति

- किस्तूरचंद लूणावत, बेंगलोर



आचार्य नानेश
समता पुरस्कार से सम्मानित
श्री सोहनलालजी सिपानी

अ : अरिहंत प्रभु के जाप में रत रहने वाले
आ : आचार्य भगवन् की सेवामें तत्पर रहने वाले
इ : इच्छाओं का निरोध करने वाले
ई : ईर्ष्या भाव से मुक्त
उ : उदारता पूर्वक कार्य करने वाले
ऊ : ऊर्जावान्
ऋ : ऋजुवान्
ए : एकता के पक्षधर
ऐ : ऐश्वर्यवान्
ओ : ओजस्वी
औ : औपचारिकता से दूर
अं : अंध-विश्वास से दूर

क : कटिबद्ध होकर संघ सेवामें तत्पर
ख : खटपट से दूर
ग : गम्भीरता पूर्वक चिंतन करने वाले
घ : घमण्ड रहित
च : चतुराई से दूर कार्य करने वाले
छ : छल-कपट से दूर रहने वाले
ज : जवाहराचार्य के परम उपासक
झ : झंझटों से दूर रहने वाले
ट : टकराव से बचकर जीवन जीने वाले
ठ : ठगाई से दूर
ड : डगर पर चलने वाले
ढ : ढकोसलेबाजी से दूर
त : तकदीर के मालीक
थ : थकावट में भी तरोताजा
द : दयावान
ध : धनवान
न : नमस्कार मंत्र के उपासक
प : परमार्थ कार्य करने वाले
फ : फर्ज निभाने वाले
ब : बगिया के रखवाले
म : महावीर के सच्चे उपासक
य : यशस्वी जीवन जीने वाले
र : रक्षक
ल : लक्ष्मीपति
व : वचन पालक
श : शरणभूत
ष : षडयंत्र से दूर
स : सच्चा सपूत
श्र : श्रमशील
ह : हसमुख

-मेघराज डागा,
वेंगलोर

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित

उदारमना श्री सोहनलालजी सिपानी का आंकलन

श्री . श्रीमंत

अ : अध्यात्मक की ओर आगे बढ़ने वाले
खि : खिलवाड़ से दूर
ल : लक्ष्मीपति

भा : भारती के सच्चे सपूत
र : रक्षा का भाव रखने वाले
त : तकदीर के धनी
व · वक्त का मोल जानने वाले
र् . रखवाली करने वाले
षि : शिष्टाचार निभाने वाले
य : यतना पूर्वक जीवन जीने वाले

सा . सामायिक साधना में अनुरक्त
धु . धुरंधर
मा : मायाचार से दूर
र्गी · गीर्वाण

जै : जैनत्व निभाने वाले
न : नमस्कार मंत्र का जाप करने वाले

सं : संगठन की ज्योत जलाने वाले
घ : घनिष्ठता बढ़ाने वाले

बी . बीज की भॉति फल देने वाले
का : काम-काज में तैयार
ने : नेह वरसाने वाले
र . रईस पुरूष

-वीमलचन्द कांकलिया

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित

शासननिष्ठ श्री सोहनलालजी सिपानी का आंकलन

अ : अपनत्व बनाये रखने वाले
रि : रिद्धि-सिद्धि से भरपूर
हं . हंगामा से दूर रहने वाले
त : तटस्थ भाव से विचार करने वाले

सि : सिद्धांतानुसार कार्य करने वाले
द् : दरिया के समान बहने वाले
ध . धर्म का मर्म समझने वाले

आ . आकर्षक व्यक्तित्व के धनी
चा : चापलूसी से दूर
र् : रग-रग में जैनत्व का भाव
य : यतनामय जीवन जीने वाले

उ : उच्च विचार रखने वाले
पा . पाप कर्म को धोने वाले
ध्या · ध्यान में रत रहने वाले
य : यशस्वी जीवन जीने वाले

सा · सात्त्विक जीवन जीने वाले
धु . धुन के पक्के

- लीलमचंद ललवानी

श्री सिपानीजी के स्व-जीवन के मूल मंत्र

-मांगीलाल सुखलेचा

- वीतराग प्रभु द्वारा प्ररुपित जैन धर्म से आपने अपने जीवन में आगमानुकूल जैनत्व पर श्रद्धा और समकित का सही ज्ञान प्राप्त किया ।
- परम तीर्थकर रिषभ प्रभु और चरम तीर्थकर महावीर स्वामी से आपने सभी की सेवा करना, जीओ और जीने का अमर संदेश सीखा ।
- महान क्रियोद्धारक आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म. सा. से आपने अपने स्व - जीवन में निर्ग्रन्थ जैन संस्कृति के प्रति सजग रहना सीखा।
- शिवपथानुयायी आचार्य श्री शिवलालजी म. सा. से आपने अपने जीवन में व्यवहार कूशलता और सरलता के साथ जीवन जीना सीखा ।
- वादीमान मर्दक पूज्य आचार्य प्रवर श्री उदयसागर जी म. सा. से आपने अपने जीवन में विनम्रता के साथ महान् लघुता का गुण सीखा ।
- शांत-दांत निरहंकारी निर्ग्रंथ शिरोमणी आचार्य श्री चौथमल जी म. सा. से आपने निर्ग्रन्थ साधु-साध्वीजी म. सा. की सेवा करने का पाठ सीखा ।
- सुरासुरेन्द्रदुर्जय कामविजेता, जीव दया के प्राण आचार्य प्रवर श्री श्रीलाल जी म. सा. से आपने अपने जीवन में प्राणीमात्र पर परोपकार करना सीखा ।
- ज्योर्तिधर, युगपुरूष आचार्य श्री जवाहरलालजी म. सा. से आपने सादगी और आगम सिद्धांतों को स्व-जीवन में चरितार्थ करना सीखा ।
- शांत क्रांति के जन्म दाता, पूज्य आचार्य श्री गणेशीलाल जी म. सा. से आपने विनय-विवेक-सहनशीलता और त्याग का पाठ पढ़ा ।
- समता विभूति, धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य श्री नानालाल जी म. सा. के जीवन से आपने समता और न्यायानुकूल समन्वय का पाठ पढ़ा ।आगम रहस्य के परम ज्ञाता आगमज्ञ आचार्य श्री रामलाल जी म. सा से आपने शास्त्रों की वाणी को घर - घर पहुंचाने के लिए साहित्य प्रकाशन एवम् व्यसन मुक्त जीवन जीते हुए सभी को व्यसन मुक्त वनाने के लिए प्रयत्नशील है ।

दीक्षा
तपस्या
संथारा रिकार्ड
खण्ड-४



श्री साधुमार्गी जैन संघ में तपस्याओं का रिकार्ड



नाम	गांव	तप दिन	नाम	तप दिन
श्री अक्षय प्रभाजी	ब्यावर	१२१	घोर तपस्वी श्री कस्तुरचन्दजी	५१
श्री चारित्र प्रभाजी	कानोड	१०१	श्री पंकजमुनिजी	३६
श्री चारित्र प्रभाजी	श्रीकाल्ली	९९	श्री पकजमुनिजी	३६
श्री चारित्र प्रभाजी	शाहदा	७१	श्री उर्मिलाश्री जी	६१
श्री चारित्र प्रभाजी	जलगाव	६१	श्री सोमप्रभाजी	५१
श्री सीरेकंवरजी		३६	श्री किरणप्रभाजी	४१
श्री बादामकंवरजी		३६	श्री किरणप्रभाजी	४१
श्री सरदारकंवरजी		३८	श्री प्रीतिसुधाजी	५१
श्री सरदारकंवरजी		३६	श्री मणीप्रभाजी	४१
श्री सरदारकंवरजी		३१	श्री धीरजमुनिजी	३१
श्री शांताकवरजी		३१	श्री धीरजमुनिजी	३१
श्री रोशनकंवरजी		३१	श्री धीरजमुनिजी	३१
घोर तपस्वी श्री अमरमुनिजी		६२	श्री धीरजमुनिजी	३१
घोर तपस्वी श्री अमरमुनिजी दो बार		४१	श्री विवेकमुनिजी	३६
घोर तपस्वी श्री अमरमुनिजी		३१	श्री विवेकमुनिजी	३५
घोर तपस्वी श्री अमरमुनिजी		३१	श्री विवेकमुनिजी	३४
श्री कस्तुरकंवरजी		८१	श्री विवेकमुनिजी	३३
श्री सोहनकंवरजी		३१	श्री विवेकमुनिजी	३२
घोर तपस्वी श्री पुष्पमुनिजी		६७	श्री विवेकमुनिजी	३१
घोर तपस्वी श्री पुष्पमुनिजी		३१	श्री विवेकमुनिजी	३०
घोर तपस्वी श्री पुष्पमुनिजी		३१	श्री विवेकमुनिजी	२९
श्री बलभद्रमुनिजी		६१	श्री विवेकमुनिजी	२८
श्री राकेशमुनिजी		५१	श्री विवेकमुनिजी	२७
श्री मोहीतमुनिजी		३३	श्री विवेकमुनिजी	२६

नाम	तप दिन
श्री विवेकमुनिजी	२५
श्री विवेक मुनिजी	२४
श्री विवेकमुनिजी	२३
श्री विवेकमुनिजी	२२
श्री विवेकमुनिजी	२१
श्री विवेकमुनिजी	२०
श्री विवेकमुनिजी	१९
श्री विवेकमुनिजी	१८
श्री विवेकमुनिजी	१७
श्री विवेकमुनिजी	१६
श्री विवेकमुनिजी	१५
श्री विवेकमुनिजी	१४
श्री विवेकमुनिजी	१३

नाम	तप दि[illegible]
श्री विवेकमुनिजी	[illegible]
श्री विवेकमुनिजी	[illegible]
श्री विवेकमुनिजी	[illegible]
श्री विवेकमुनिजी	
श्री विवेकमुनिजी	
श्री विवेकमुनिजी	
श्री विवेकमुनिजी	
श्री विवेकमुनिजी	
श्री विवेकमुनिजी	
श्री विवेकमुनिजी	
श्री विवेकमुनिजी	
श्री विवेकमुनिजी	
श्री पुण्यप्रभाजी	

शास्त्रज्ञ तरूण तपस्वी प्रशान्तमना व्यसन मुक्ति के प्रणेता परम आराध्य आचार्य प्रवर १००८

श्री रामलालजी म. सा.

- तरूण तपस्वी श्री राजेशमुनिजी
- तरूण तपस्वी श्री सेवन्तमुनिजी,
- तरूण तपस्वी श्री धर्मेशमुनिजी
- तपस्वी श्री रणजीतमुनिजी
- तरूण तपस्वी श्री धमेन्द्रमुनिजी
- तरूण तपस्वी श्री पद्ममुनिजी म.,
- [illegible] श्री अशोकमुनिजी म.सा.,

- तपस्विनी, महा. श्री विमलाकंवरजी
- तपस्विनी, महा. श्री विचक्षणाश्रीजी,
- तपस्विनी, महासती श्री जयन्तश्रीजी
- तपस्विनी, महासती श्री प्रमोदश्रीजी म,
- तपस्विनी, महासती श्री मुक्ता श्रीजी
- तपस्विनी, महासती श्री गरिमाश्रीजी म..
- तपस्विनी महासती श्री अनुराग श्रीजी म.

- तरुण तपस्विनी महासती श्री विद्यावतीजी म.,
- तपास्विनी महासती श्री इन्दुबालाजी म.,
- तरुण तपस्विनी महासती श्री सुशीलाकवरजी
- तपस्विनी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.,
- तपस्विनी महा श्री तरुलताजी
- तपकीर्ति महासती श्री अक्षयप्रभाजी म.,
- तपस्विनी महासती श्री किरणप्रभाजी
- तरुण तपस्विनी महासती श्री स्वर्ण ज्योतिजी म.,
- तपस्विनी महासती श्री पावनश्रीजी म.,
- तपस्विनी महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी सा.,
- तपस्विनी महासती श्री विभाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री अर्पणाजी म.,
- तपस्विनी महा श्री अंजलीश्रीजी म.,
- तरुण तपस्विनी महा श्री सूर्यमाणीजी म.
- तपस्विनी महा श्री प्रेमलताजी,
- तपस्विनी महासती श्री पारसकवरजी
- तपस्विनी महासती श्री अजनाश्री,
- तपस्विनी महा श्री सुप्रभाजी
- तपस्विनी महा श्री जिनप्रभाजी
- तपस्विनी महासती श्री सुयशप्रज्ञाजी
- तपस्विनी श्री रविप्रभाजी म.
- तपस्विनी महाश्री रौनकश्रीजी म सा.
- तपस्विनी महा श्री कुसुमकांताजी म.,
- तपस्विनी महा श्री सुनेहाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा श्री सुशक्तिश्रीजी म ,
- तरुण तपस्विनी महासती श्री सुशीलाकँवरजी
- तपस्विनी महासती श्री सिद्धमणिजी
- तपस्विनी महा. श्री प्रीतीसुधाजी
- तपस्विनी महा. श्री सुभद्राश्रीजी
- तपस्विनी महासती श्री समीक्षणाश्रीजी म.
- तपस्विनी महा. श्री जयश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री चदना श्रीजी म ,
- तपस्विनी महा श्री चन्दन-बाला जी म.,
- तपस्विनी महासती श्री शकुन्तलाश्रीजी म.सा.,
- तपस्विनी महा. श्री अर्पणाश्रीजी म.,
- महातपोज्योत महासती श्री चारित्रप्रभाजी म.सा ,
- तपस्विनी महा. श्री चमेलीकँवरजी
- तपस्विनी महा श्री कल्याणकँवरजी,
- तपस्विनी महासती श्री सुवर्णश्रीजी
- तपस्विनी महा. श्री कुसुमलताजी
- तपस्विनी महासती श्री प्रेमलताजी म.
- तपस्विनी महा. श्री मंजुबालाजी म.,
- तपस्विनी महासती श्री पुष्पलताजी
- तपस्विनी महासती श्री विमलाकँवरजी म.,
- तपस्विनी महासती श्री पंकजश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री ललिताश्रीजी म.,
- तपस्विनी महासती श्री ताराकँवरजी
- तपस्विनी महासती श्री निरुपमाश्रीजी म ,
- तपस्विनी विनयश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा श्री सोमप्रभाजी म.,
- तपस्विनी महा श्री विरक्ताजी म.
- तपस्विनी महा. श्री कुसुमकाताजी
- तपस्विनी महा. श्री अविचलश्रीजी म ,
- तरुण तपस्विनी महा श्री सुशीला कवरजी म

- तपस्विनी महासती श्री इंगिताश्रीजी म.
- तपस्विनी महासती श्री विवेकश्रीजी म.
- तपस्विनी महा. श्री विनिता श्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री संयमप्रभाजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री पुण्यप्रभाजी
- तपस्विनी महा. श्री रंजनाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महासती श्री महिमाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री अस्मिता श्रीजी म.,
- तरुण तपस्विनी महा. श्री आस्थाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री सुलक्षणाश्रीजी
- तपस्विनी महा.श्री अरुणाश्रीजी म.,
- तरुण तपस्विनी महा. श्री प्रवीणाश्रीजी म.,
- तरुण तपस्विनी महा.श्री मनीषाश्रीजी म.,
- तरुण तपस्विनी सेवाभाविनी, महा. श्री धैर्यप्रभाजी म.,
- तपस्विनी महा श्री प्रियलक्षणाश्रीजी
- तरुण तपस्विनी महा श्री भावनाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा श्री सुमंगलाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री प्रांजलश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री विरलश्रीजी म.
- तपस्विनी महा. श्री लघुताश्री जी म.,
- तपस्विनी महासती श्री गरिमाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री आदर्शप्रभाश्रीजी म.,
- तरूण तपस्विनी महा. श्री ऋजुताश्री जी म.,
- तपस्विनी महा. श्री सरोजवालाजी
- तपस्विनी महा. श्री सुसिद्धिश्रीजी म.
- तपस्विनी महा. श्री सुप्रतिमाश्रीजी म.,
- . श्री मुग्चिर्श्रीजी म.,
- तपस्विनी महा.श्री शांतप्रभाजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री सरोजश्रीजी म.,
- तपस्विनी महासती श्री मुक्तिप्रभाजी
- तपस्विनी महा. श्री कल्पनाश्रीजी
- तपस्विनी महा श्री स्थितप्रज्ञाश्रीजी म.
- तपस्विनी महा.श्री पूर्णिमाश्रीजी म.,
- तरुण तपस्विनी महा. श्री लक्ष्यप्रभाश्रीजी म.,
- तपस्विनी विद्या. महा. श्री लक्ष्यज्योतिश्रीजी
- तपस्विनी विद्या. महा. श्री निशांत श्रीजी
- तपस्विनी महा. श्री सुचिताश्रीजी म ,
- तरुण तपस्विनी महासती श्री श्वेताश्रीजी म.
- तरुण तपस्विनी महा. श्री नूतनश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री ऋषिताश्रीजी म.
- तपस्विनी महा. श्री मंजुलाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री सुयशाश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा. श्री सुरभिश्रीजी म.
- तपस्विनी महा. श्री चिरागश्रीजी म.,
- तपस्विनी महा श्री विजेताश्रीजी म.

-: विशेष -

मास खमण तप करने वाले साधु-साध्वीजी म. को तपस्वी की उपमा दी गई है।

तप ही मोक्ष की सीढ़ी है

संथारा का रिकार्ड

क्षेत्र	नाम	दिन
कानोड	साध्वी श्री सरदारकवरजी	६१
भीनासर	साध्वी श्री वल्लभकवरजी	७२
उदयपुर	साध्वी श्री गुलाबकंवरजी	८२
पजाब	मुनि श्री बद्रीप्रसादजी	८२
नौखा	साध्वी श्री केशरकंवरजी	३४

जैन दीक्षा का रिकार्ड
आचार्य श्री नानेश की नेश्राय में

क्र.	गांव	दीक्षा
१.	रतलाम	२५
२.	बीकानेर	२१
३.	ब्यावर	१५
४.	अहमदाबाद	१५
५.	भीनासर	१२
६.	ब्यावर	१०
७.	बडीसादडी	८

इसी प्रकार ७, ६, ५, ४, ३, २ आदि दीक्षाएं अनेक बार हुई है। आपने ३७५ के लगभग मुमुक्षु भाई-बहिनो को दीक्षित कर पंच परमेष्ठी महामंत्र मे प्रस्थापित किया।

आचार्य श्री रामेश के नेश्राय में

क्र.	गांव	दीक्षा
१.	भीनासर	११
२.	जोधपुर	९
३.	उदयपुर	१५

दीर्घ तपस्या करने वालों का रेकार्ड्स

- ✲ श्री सहजमुनिजी म द्वारा बेंगलोर मे 365 उपवास, पूर्व 201,109, 111, 131, 108, 127 उपवास ?
- ✲ साध्वीश्री शुभमतिजी म. द्वारा जगराओ मे 265 उपवास पूर्व 31, 62, 131 उपवास ?
- ✲ साध्वीश्री हेमकुंवरजी म द्वारा दिल्ली मे 204 उपवास, विशेष 54 दिन चौविहार, पूर्व मे 311 उपवास ?
- ✲ श्रीमती जडावबाई लुणावत, जयपुर के 161 उपवास।
- ✲ श्रीमती धापूबाई धर्मपत्नी श्री जसराजजी गोलेछा, बेगलोर के 151 उपवास
- ✲ श्री प्रफुल्लभाई बखाई द्वारा कोट-मुबई मे 152 उपवास पूर्व आप 125 उपवास वर्ष 1998 मे 180 उपवास।
- ✲ श्री प्रज्ञेशकुमार शाह द्वारा अहमदाबाद मे 108 उपवास।
- ✲ श्री निरजनमुनिजी म सा द्वारा लाबा जाटान में 104 उपवास पूर्व भी आपके 85 उपवास।
- ✲ श्री अजयमुनिजी म. सा द्वारा आबू पर्वत पर 90 उपवास पूर्व 90, 111, 131, 161 उपवास।
- ✲ श्री केशवलालभाई सघवी द्वारा थराद मे 72 उपवास स्मरण रहे आपके भ्राता श्री सेवतीलाल सघवी के 51 उपवास
- ✲ श्रीमती विमलादेवी श्री शातिलालजी काकरिया, बेगलोर के 71 उपवास, 33 दिन तक चौविहार उपवास किये।
- ✲ श्रीमती निरंजना देवी जेन द्वारा इन्दौर मे 69 उपवास।
- ✲ श्रीमती बचीबेन सघवी द्वारा थराद मे 68 उपवास, स्मरण है आपके पतिदेव श्री सेवतीलाल के 51 उपवास
- ✲ श्री महेन्द्रभाई सघवी द्वारा थराद मे 68 उपवास।
- ✲ श्रीमती मोंघीबेन मोरखीया द्वारा थराद मे 68 उपवास
- ✲ श्री धनगमुनिजी म द्वारा भवानी मडी मे 67 उपवास।
- ✲ श्री रामचन्द्रमुनिजी म द्वारा थाणा मुबई मे 63 उपवास इससे पूर्व भी 69 उपवास।
- ✲ बेगलोर निवासी श्री कालूरामजी परिहार के मुम्बई मे 63 उपवास
- ✲ श्रीमती सुन्दरबाई संघवी द्वारा 76 वर्ष की उम्र मे उदयपुर मे 61

- ✲ श्रीमती भाग्यवतीदेवी मनोहरलालजी पगारिया द्वारा ... उपवास, सिद्धितप, 4 मास खमण, वर्षीतप आदि अनेक ...
- ✲ तपस्विनी श्रीमती किरणदेवी नरेन्द्रकुमारजी समदड़िया द्वारा 41 उपवास, सिद्धितप, मास खमण, वर्षीतप आदि ...
- ✲ श्रीमती सतोषदेवी रमेशकुमारजी भसाली, मुम्बई द्वारा 31 ... सिद्धितप, मास खमण, 3 वर्षीतप आदि अनेक तप। ... सतोष एवम् किरण अर्थात तीनो बहने तपस्वी है ... श्री मोहनलालजी बोहरा की सुपुत्रिया है।
- ✲ तपस्विनी श्री द्वारा कोयबतूर मे 55 उपवास।
- ✲ साध्वीश्री दरियावकुवरजी म द्वारा खागटा मे 53 उपवास
- ✲ श्री विनोदमुनिजी द्वारा मगलवाड चोराहा मे 51 उपवास
- ✲ श्री धैर्य प्रभ सागरजी म सा द्वारा मुबई मे 51 उपवास
- ✲ श्री राम मुनिजी म "निर्भय" द्वारा बेगलोर मे 51 उपवास
- ✲ साध्वीश्री हर्मिष्ठाश्रीजी म द्वारा सूरत मे 51 उपवास।
- ✲ श्रीमती लक्ष्मीदेवी गोलेछा द्वारा राजनादगाव मे 51 उपवास
- ✲ श्री नवीनचन्द्र शाह द्वारा कपडवज मे 51 उपवास
- ✲ साध्वीश्री प्रतिभाजी म द्वारा चरखी-दादरी मे 51 उपवास
- ✲ श्री घनश्याममुनिजी म द्वारा इचलकरजी मे 51 उपवास
- ✲ साध्वीश्री जयमालाजी द्वारा भीलवाडा मे 51 उपवास
- ✲ श्री सेवतीलाल सघवी द्वारा थराद मे 51 उपवास स्मरण ... भ्राता, श्री केशवलालभाई के 72, आपकी धर्मपत्नी बचीबेन के 68 उपवास।
- ✲ दीपिका बोरा द्वारा थराद मे 17 वर्ष की वय मे 51 उपवास

विशिष्ट तपस्वी :-

- ✲ बीकानेर मे ममता बाठिया ने 10 वर्ष की उम्र मे 31 उपवास
- ✲ धार (म प्र) मे रुचि प्रकाश ने 14 वर्ष की वय मे 31 ...
- ✲ चैन्नई मे श्री प्रवीणकुमार गाधी ने 18 वर्ष की वय मे ...

विशिष्ट तप :-

- ✲ भायकला-मुबई मे 6000 अट्ठम तप (तेले) की ...

सभी तपस्वियो को वन्दन. हार्दिक शुभ कामना ...

(हमारे कार्यालय मे प्राप्त सूचना के आधार पर ...

प्रभात स्वर

खण्ड-५

पाँच पदों की वन्दना

अरिहंत प्रभु वन्दना

नमूं श्री अरिहंत, कर्मो का किया अंत,
हुआ सो केवलवंत, करुणा-भंडारी है।
अतिशय चौतीस धार, पैंतीस वाणी उच्चार,
समझावे नर-नार, पर उपकारी है ॥
शरीर सुंदराकार, सूरज सो झलकार,
गुण है अनंतसार, दोष परिहारी है।
कहत है तिलोकरिख, मन वच काया कारी,
लुली-लुली बारम्बार, वंदना हमारी है॥
लुली-लुली बारम्बार, वंदना हमारी है॥१॥

सिद्ध प्रभु वन्दना

सकल करम टाल, वश कर लियो काल,
मुगति में रह्या माल, आत्मा को तारी है ।
देखत सकल भाव, हुआ है जगत राव,
सदा ही क्षायिक भाव, भये अविकारी है ॥
अचल अटल रूप, आवे नही भव-कूप,
अनूप स्वरूप ऊप, ऐसे सिद्ध धारी है ।
कहत है तिलोकरिख, बताओ ए वास प्रभु,
सदा ही उगंते सूर्य, वंदना हमारी है ॥
सदा ही सायंकाल, वंदना हमारी है ॥२॥

आचार्य वन्दना

गुण है छत्तीस पूर, धरत धरम उर,
मारत करम क्रूर, सुमति विचारी है ।
शुद्ध सो आचारवंत, सुंदर है रूप कंत,
भणिया सब ही सिद्धांत, वाचणी सुप्यारी है ॥
अधिक मधुर वेण, कोई नहीं लोपे केण,
सकल जीवों के सेण, किरत अपारी है ।
कहत है तिलोकरिख, हितकारी देते सीख,
ऐसे आचाराजजी को वंदना हमारी है ॥
ऐसे आचाराजजी को वंदना हमारी है ॥३॥

उपाध्याय वन्दना

पढत इग्यारह अंग, करमों सु करे जंग,
पाखंडी को मान भंग, करण हुशियारी है ।
चवदे पूरव धार, जानत आगम सार,
भवियन के सुखकार ,भ्रमता निवारी है ॥
पढावे भविक जन, स्थिर कर देते मन,
तप कर तावे तन, ममता को मारी है ।
कहत है तिलोकरिख, ज्ञान-भानु परतिख,
ऐसे उपाध्यायजी को, वंदना हमारी है ॥
ऐसे उपाध्यायजी को, वंदना हमारी है ॥४॥

-: साधु वन्दना :-

आदरी संयम भार, करणी करे अपार,
समिति गुपति धार, विकथा निवारी है ।
जयणा करे छह काय, सावद्य न बोले वाय ॥
बुझाई कषाय लाय, किरिया भंडारी है ॥
ज्ञान भणे आठों याम, लेवे भगवंत नाम,
धरम को करे काम, ममता को मारी हैं ।
कहत है तिलोकरिख, करमों का टाले विख,
ऐसे मुनिराजजी को, वंदना हमारी है ॥
ऐसे महासतियांजी को, वंदना हमारी है ॥
ऐसे तपस्वीराजजी को, वंदना हमारी है ॥५॥

श्री भक्तामर स्तोत्र

भक्तामर-प्रणत-मौलिमणि-प्रभाणा-
मुद्द्योतकं दलित-पाप-तमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा -
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥

य: संस्तुत: सकल-वाङ्मयतत्त्वबोधा -
दुद्भूतबुद्धिपटुभि: सुरलोक-नाथै:।
स्तोत्रै र्जगत्त्रितयचित्त हरैरूदारै:
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

बुद्धया विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ!
स्तोतुं समुद्यत-मतिर् विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्य: क इच्छति जन: सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षम: सुरगुरूप्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल- पवनोद्धत-नक्रचक्रं,
कोवा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश!
कर्तु स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत:।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशो: परिपालनार्थम् ॥५॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरूते वलान्माम्।
यत्कोकिल: किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिकानिरैकहेतु ॥६॥

त्वत्संन्तवेन भवसन्तति-सन्निवद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त-लोकमलिनीलमशेषमाशु
सूर्यांशुभिन्न[illegible] शार्वरमन्धकारम् ॥७॥

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूदबिन्दु: ॥८॥

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त-दोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरण: कुरूते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥९॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण! भूतनाथ!
भूतैर् गुणैर् भुवि भवन्तमभिष्टुवन्त:।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षु:।
पीत्वा पय: शशिकरद्युति-दुग्धसिन्धो:,
क्षारं जलं जलनिधेरसिंतु क इच्छेत् ॥११॥

यै: शांतरागरूचिभि: परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललामभूत!
तावंत एव खलु तेप्यणव: पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
नि:शेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलङ्क-मलिनं क्व निशाकरस्य
यद् वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

सम्पूर्णमण्डल-शशाङ्ककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रिजगदीश्वर! नाथमेकम्
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४

किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर्
मनागपि मनो न विकारमार्गम्।
ान्तकाल मरूता चलिताचलेन,
मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

निर्धूमवर्तिरपवर्जित-तैलपुरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरूतां चलिता चलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः ॥१६

तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
ष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
म्भोधरोदर-निरूद्धमहाप्रभावः,
र्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र! लोके ॥१७॥

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति-
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम्॥१८॥

क शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा?
ष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ!
नेष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
कार्य कियज्जलधरैर् जलभार-नम्रै. ॥१९॥

ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेज. स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
कि वीक्षितेन भवना भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरित नाथ! भवान्तरेऽपि॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसुता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम्॥२२।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस -
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यःशिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम्।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित! बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रय-शङ्करत्वात्।
धाताऽसि धीर! शिवमार्गविधेर विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरूषोत्तमोऽसि॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभुषणाय।
तुभ्यं नमस्त्रिजगत. परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै -
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषैरूपात्त-विविधाय-जातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरू-संश्रितमुन्मयुख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् किरणमस्ततमोवितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्ववर्ति॥२८॥

सिहाऽसने मणिमयूखशिखाविचित्रे
विभ्रजाते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् विलसंशुलता-वितानं
तुङ्गोदयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मे. ॥२९॥

कुन्दावदात-चलचामर-चारूशोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर-वारिधार -
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थागितभानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकरजाल-विवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

गम्भीरताररवपूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्यलोक-शुभसङ्गम-भूतिदक्षः।
सद्धर्मराजजयघोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वननि ते यशसः प्रवादी ॥३२॥

मन्दार-सुन्दर-नमेरू-सुपारिजात-
सन्तानकादि कुसुमोत्करवृष्टिरूद्धा।
गन्धोदबिन्दु-शुभमन्द-मरूत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतित ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

शुम्भत्प्रभावलय-भूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रय-द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्-दिवकार-निरंतर भूरिसंख्या,
दीप्त्याजयत्यपि निशामपि सोम-सौम्याम्॥३४॥

स्वर्गापवर्गगममार्ग-विमार्गणेष्टः
सद्धर्मतत्त्वकथनैक-पटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-
भापास्वभाव-परिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥

उन्निद्रहेम-नवपङ्कज-पुंजकांति,
पर्युल्लसन्नख-मयूखशिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशन [illegible] न परस्य।

यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोल-कपोलमूल-
मत्तभ्रमद्-भ्रमरनाद-विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥३८॥

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल प्रकर-भूषित-भूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधियोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३९॥

कल्पांतकाल-पवनोद्धत-वाह्विकल्पं
दावानलं ज्वलितमुज्जवलमुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकीर्तजनलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

रक्तेक्षणं समदकोकिल-कण्ठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

वल्गतुरङ्ग-गजगर्जित-भीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकरयमुख-शिखापविद्धं
त्वत् कीर्तनातम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

कुन्ताग्रभिन्नगज-शोणितवारिवाह-
वेगावतार-तरणातुरयोध-भीमे।
युद्धे जयं विजतदुर्जयजेयपक्षा-
स्त्वत्पाद-पङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीपणनक्रचक्र-
पाठीन-पीठभयदोल्वणवाडवाऽग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग-शिखरस्थित-यानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति॥[illegible]

ाभीषणजलोदर-भारभुग्नाः
यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः!
ाद-पङ्कज-रजोऽमृतदिग्धदेहा
र्ा भवन्ति मकरध्वज-तुल्यरूपाः ॥४५॥

आपाद-कण्ठमुरूश्रृङ्खल-वेष्टिताङ्गा
गाढं बृहन्निगडकोटि-निघृष्टजङ्घाः।
त्वन्नमामन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति॥४६॥

द्विपेन्द्र-मृगजराज-दवानलाहि-
ाम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्।
याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र। गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रूचिरवर्णविचित्रपुणाम्।
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

सागारी संथारा का पाठ

रात्रि को हर रात सोते समय निम्न पाठ बोलकर संथारा ग्रहण करें

**आहार शरीर उपधी,
पच्चक्खूं पाप अठार ।
मरण पाऊँ तो वोसिरे,
जीऊँ जागूं तो आगार ॥**

सुबह उठते ही ५ बार नमस्कार

आचार्य मंगल

जयहुक्म गणिवर आपको, शिवलाल शिवपथ गामी थे
आचार्यवर उदयगुणी, चौथमलजी स्वामी थे
श्रीलाल प्रतापी जय गुरूवर, जय जवाहराचार्य की
जैन जगत की शान गणपति वंदु नानाचार्यजी
वंदू रामाचार्यजी, वंदू सकल संघ समाजजी

भक्ति भाव

श्री राम गुरू के चरणों में, मैं नित उठ शीश नमाता हूं
मेरे मन की कलि खिल जाती है, जब दर्शन तुम्हारा पाता हूं

मुझे राम नाम ही प्यारा है, इसी का मुझे सहारा है
इस नाम में ऐसी बरकत हैं, जो चाहता हूं तो पाता हूं
जब याद तेरे गुण आते है दुःख दर्द सभी मिट जाते है
मैं बनकर मस्त दिवाना फिर बस गीत तेरे ही गाता हूं

गुरूराज तपस्वी महामुनि, सरताज हो तुम महाराज के
मै इक छोटा सा सेवक हूं - कुछ कहता हुआ शर्माता हूं
गुरू चरणों में है अर्ज यही, बढती दिनरात रहे भक्ति
मेरा मनुष्य जीवन सफल होवे यही भक्ति का पल पाता हूं।

वंदन बारंबार

अरिहंतों को नमस्कार, श्री सिद्धो को नमस्कार,
आचार्यो को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार,
जन मे जितने साधुगण है उन सब को वंदन बारंबार

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन हो -२
सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय -२

चंद्र पुष्प शीतल श्रेयांस नमु, वासु पूज्य जिन राय
विमल अनंत धर्म जस, उज्ज्वल शांति कुंथु अरमलि मनाय

मुनि सुव्रत नमी नेमी पार्श्व प्रभु वर्धमान प्रभु पुष्प चढाया
जिसने राग- द्वेष कामादिक को जीते, सब जग जान लिया

सब जीवो को मोक्ष मार्ग का निस्पृह हो उपदेश दिया
बुद्ध वीर जिन हरि-हर ब्रह्मा पैगंबर हो या अवतार
सब के चरण कमलो मे मेरा वंदन हो बारबार

श्री नानेश चालीसा

भक्ति भाव शुद्ध मन पढे, प्रतिदिन जो नरनार।
भवोदधि से वो पार है, शंका नहीं लिगार ।।1।।

अंतर शांति प्राप्त की, परचा है यह प्रत्यक्ष।
एक बार अजमाईये, कहते हैं जन दक्ष ।।2।।

जय नानेश गणी अवतारी।
विपद हरो गुरूदेव हमारी ।।1।।

माता श्रृंगारा के जाये।
मोडी सुत जग में कहलाये ।।2।।

दाता गांव में जन्म हे पाया।
जन्म भूमि का यश फैलाया ।।3।।

नाम है नाना काम विशाला।
पोखरना कुल को उजियाला ।।4।।

लघु वय में सब लोक निहारा।
छोड दिया फिर सब संसारा ।।5।।

पूर्व प्रबल पुण्योदय आया।
गणपति गण का गणी कहाया ।।6।।

सहन शीलता गजब तुम्हारी।
लखकर प्रमुदित जनता सारी ।।7।।

लाखों धरमपाल वनाया।
समता का संदेश सुनाया ।।8।।

गुरू परमारथ तुमने कीना।
पंथ प्र[illegible] का दीना ।।9।।

नयन-हीन इक वृद्धा माई।
दर्शन की ज्योति प्रकटाई ।।10।।

देव नौका को उल्टी कीन्हा।
भक्त उबार अभय वर दीन्हा ।।11।।

आधी व्याधि तन मन छाई।
नाम रटा सब ही नसाई ।।12।।

शुभ भावों से जो कोई ध्यावे।
भव जल तरणी पार लगावे ।।13।।

पंच अतिशय के तुम धारी।
कलियुग में प्रगटे अवतारी ।।1[illegible]

सकलागम के तुम हो ज्ञाता।
महादानी शीव के तुम दाता ।।15।।

तत्व ज्ञान नवनीत निकाला।
देते भर-भर प्रेम का प्याला ।।[illegible]

वाणी में है ओज निराला।
सुन नर-नारी कहते व्हाला ।।17।।

नहीं तुमसा जग में कोई योगी।
मोक्ष मार्ग में तुम सहयोगी ।।[illegible]

धन्य-धन्य है जैन समाजा।
पाया तुमसा गुरू महाराजा ।।19।।

नहीं जो शीलता चंदन में।
पाई वह तेरे चरणन् में ।।20।।

क्रम संघ के अष्टम नेता।
। तुम अष्ट कर्म विजेता ।।21।।

सुर नर चरण शरण में रहते।
पा वचनामृत हित घट भरते ।।22।।

म सुख शांति श्री के दाता।
म भव्य के भाग्य विधाता ।।23।।

तीन लोक में महिमा भारी।
हैं हमसब तव चरण मंझारी ।।24।।

हीं चिंतामणी तुम सम गुरूवर।
वह तो है केवल जड पत्थर ।।25।।

नहीं उपमा रवि-शशि की देता।
उष्ण सूर्य चंदा घट-बढता ।।26।।

काम धेनु है पशु बेचारा।
प्रभु सागर सारा है खारा ।।27।।

नहीं कोई उपमेय जगत में।
इसलिये तब बना भगत में ।।28।।

जिस जन-मन में आप विराजे।
अष्ट कर्म अरि दुरा भांजे ।।29।।

श्रमण संघ के प्रबल सैनानी।
नहीं तुमसा कोई दुजा सानी ।।30।।

सिंह गज अग्नि विषधर सारे।
भुतादिक भय दूर निवारे ।।31।।

शुद्ध मन सेवा जो आराधे।
मन-वांछित कारज वो साधे ।।32।।

आयरिया पद के आधारी।
शिष्य सम्पदा है बहु भारी ।।33।।

गजब आपकी भाषण शैली।
समवशरण की छटा निराली ।।34।।

दर्शन एक बार जो पाया।
फिर दुजा कोई दाय न आया ।।35।।

सकल संघ है ऋणि तिहारा
कैसे कर्ज उतरे हमारा ।।36।।

संगठन प्रेमी गहन गंभीरा।
दीपक ब्रह्म तेज शरीरा ।।37।।

जय-जय हो गणीवर नानेशा।
संघ अधिनायक जय अखिलेशा ।।38।।

तुमने लाखों प्राणी तारे।
क्या है गुरू अपराध हमारे ।।39।।

वंदन श्री चरणों में नाना।
धर्म गोतम को पार लगाना ।।40।।

सुमति गुप्ति नभकर वर्ष
भीम शहर चौमासा।
मुनि गौतम ने पूर्ण करी
श्री नानेश चालीसा ।।

जय गुरू नाना बोलो, जय गुरू नाना।
जय गुरू नाना बोलो, जय गुरू नाना ।।
जय गुरू नाना बोलो, जय गुरू नाना।
जय गुरू नाना बोलो, जय गुरू नाना ।।

श्री राम गुरु चालीसा

दोहा

वीर प्रभु का ध्यान धर, ले संबल नानेश।
गुरु गुण गाऊं प्रेम से जय जय जय रामेश ॥

हुक्म गच्छ के नाथ हो, ज्योतिपुंज गुणधाम।
श्रद्धायुत श्री चरण में, वंदन हो निष्काम ॥

जय जय राम नाम सुख कन्दा।
जय जय जय भूरा कुल चन्दा ॥1॥

पिता नेम के नयन सितारे।
मां गवरां के प्राण पियारे ॥2॥

दो हजार नो चेत सुहाना।
सुद चौदस धारा तन बाना ॥3॥

देशनोक में मंगल छाया।
मरुमाटी का मान बढ़ाया ॥4॥

जन्म नाम जयचन्द कहाया।
पुर परिजन मन राम सुहाया ॥5॥

पढकर जैन जवाहर वाणी।
तिरे अनेकों भवि जन प्राणी ॥6॥

कथा अनाथ सनाथ पढी जव।
धर्मशक्ति पहचानी थी तव ॥7॥

मुनि बनूं गर रोग नसावें।
धारा मन में परचा पावें ॥8॥

फिर नानेश शरण में आये।
संयम [illegible] ललचाये ॥9॥

पूनम संत फतह अरु मोती।
हुए प्रसन्न जब चर्चा होती ॥10॥

संयम पथ की करी समीक्षा।
तब गुरुवर से लीनी दीक्षा ॥11॥

तन की ममता दूर निवारी।
मन की समता खूब निखारी ॥12॥

मनोयोग से सेवा साधी।
वीतराग आज्ञा आराधी ॥13॥

गुरु आज्ञा में मुझको खोना।
धारा जल्दी पावन होना ॥14॥

जो साधक लायक बनता है।
वो संघ का नायक बनता है ॥15॥

बने संघ के तुम अधिकारी।
फैली महिमा जग में भारी ॥16॥

नाना से तुम तुम से नाना।
लगता चेहरा एक समाना ॥17॥

पंचाचार पलावें पाले।
मर्यादाओं के रखवाले ॥18॥

सकल शास्त्र के तुम हो ज्ञाता।
पंडित गण भी लख हर्षाता ॥19॥

महाज्ञानी है महा तपस्वी।
महाध्यानी है महा मनस्वी ॥20॥

ैनी आत्म जयी कहलाते ।
हावीर का धर्म निभाते ॥21॥

पधि अल्प मेधावी राया ।
ग्तिशय धारी अद्भुत माया ॥4॥

ग्म्यक् श्रद्धा शक्तिमान है ।
थ्री बहुश्रुत जी सत्यवान है ॥23॥

ादा जीवन गुरुवर त्यागी ।
ऊँचा चिंतन जिन अनुरागी ॥24॥

क्रेया चारु चरित सवाया ।
मानो चौथा आरा आया ॥25॥

जीवन में दर्शन आगम के ।
राम गुरु सूरज सम चमके ॥26॥

व्यसन मुक्त सन्देश सुनाया ।
सुख शान्ति का मार्ग दिखाया ॥27॥

घट घट ज्ञान प्रदीप जलाये ।
तत्व ग्रंथि को खोल बताये ॥28॥

मिथ्या सम्यक् भेद बताया ।
जिन धर्मी का मान बढ़ाया ॥29॥

नयनों से अमृत झरता है ।
पापी भी पावन बनता है ॥30॥

कृपा किरण जब जिस पर पड़ती ।
मन की कलियें उसकी खिलती ॥31॥

राम नाम संकट सब हर्ता ।
राम नाम संपत सब कर्ता ॥32॥

राम नाम है जन हितकारी ।
राम नाम है मंगलकारी ॥33॥

जपो राम सुख दुःख की बेला ।
जपो राम जन बीच अकेला ॥34॥

क्षमा श्रमण हे शांत सुधाकर ।
करुणा सागर धर्म दिवाकर ॥35॥

सुनो सुनो गुरुदेव हमारी ।
आई है अब मेरी बारी ॥36॥

मारग लम्बा घोर अंधेरा ।
साथ चलो या करो सवेरा ॥37॥

टूटी नैया दूर किनारा ।
भव जल शोखो बनो सहारा ॥38॥

पौरुष जागे आलस भागे ।
शुभ आशीष यही हम मांगे ॥39॥

गौतम की है यही पिपासा ।
अजर अमर दो शिव पद वासा ॥40॥

दोहा

चालीसा गुरु राम का, संकट मोचन हार ।
पढे सुने जो भाव से, होवे भव से पार ॥
काया रस नभ पद बरस, मास पोष वद ध्यान ।
मुनि गौतम रचना करी, वालाघाट सुस्थान ॥

॥ इति श्री राम गुरु चालीसा ॥

अमर कहानी

आओ बच्चों तुम्हें सुनायें, बातें वीर महान् की ।
जैन धर्म पर जिसने कर दी, जिंदगी कुर्बान भी ॥

गृहस्थ जीवन छोड जिन्होने, मुनि व्रत को अपनाया था ।
वेले बेले करके तपस्या, जीवन खूब तपाया था ।
एक चादर से बारह वर्ष तक, सर्दी गर्मी सहन किया ।
जीवन भर जो तेरह वस्तु से, और वस्तु को त्याग दिया ।
धन्य धन्य है जीवन जिनका, हुकम मुनि महान की, आओ ॥1

धर्म प्रचार करके जिसने, जीवन भर प्रयास किया ।
देश-देश मे जाकर जिसने, धर्म-नाद गुंजाय दिया ।
मानवता का सच्चा मतलब, मानव को बतलाया था ।
द्वितीय पाट पर शिवलालजी, जीवन ज्योति जगाया था ।
घर-घर मे जो ज्योति जलाई, सम्यक् ज्ञान महान की ॥2॥

स्वार्थ, दम्भ पाखण्ड हटाकर, विश्व प्रेम पढवाया था ।
रतनपुरी मे जिनवाणी की, झडियां खूब लगाया था ।
सागर सम गंभीर घोर, निष्परिग्रही निष्कामी थे ।
तृतीय पाट के नायक देखो, महागुणो के स्वामी थे ।
जय जय बोली थी जनता उदय सागर महान की ॥3॥

चतुर्थ पाट पर चौथमलजी चार गुणों के स्वामी थे ।
सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चरित्र, मोक्ष मार्ग के कामी थे ।
पथ भूले हुए पथिको को, जो सच्चा मार्ग बतलाया था ।
जिन वाणी का रूप बता कर, शासन खूब दिपाया था ।
जीवन भर जो की थी सेवा, जिन शासन महान की ॥4॥

ब्रह्मचर्य के धारी ओ, युग अवतारी श्रीलाल थे ।
सहन किया था परिषह भारी, अग्नि परीक्षा पास थे ।
सत्य धर्म के खातिर जिसने, जीवन का नही मोह किया ।
नव परिणीता पत्नी को जो, क्षण भर में ही त्याग दिया ।
गुण गावे जनता जो सारी, ऐसे संत महान की ॥5॥

[illegible] आचार्य जवाहर सब संतो मे श्रेष्ठ थे ।
[illegible] थी जग को, ज्ञान गुणो मे श्रेष्ठ थे ।
[illegible] कहलाते थे ।
[illegible] थे ।
[illegible] महान की ॥6॥

सरल सौम्य मुस्कान जिन्हों की, गजानंद गुरु ज्ञानी थे।
सरताज बनाया श्रमण संघ ने, संघ हितो के कामी थे।
अनुशासन में कठोर वज्र से, कोमल हृदय सु पाया [illegible]
सहन किया कष्टो को भारी, कर्म उदय जब आया था।
अद्भुत शांति देख तुम्हारी, जनता जय की महान की।

राणाजी के प्रागण मे जो, युवाचार्य पद [illegible]
तीस हजार जनता ने जहा पर, अपना शीश झुका [illegible]
सकल सघ ने श्रद्धा नायक, नाना गुरुवर [illegible]
आज आचार्य चरणो में तेरे, गौरव गाथा [illegible]
उदयपुर नगर की अरजी पर, मैं मरजी चाह् महान [illegible]

देखो नवम पाठ पर आगमज्ञाता, शास्रो के भण्डारी हैं।
तरुण तपस्वी, तपोमूर्ति, आत्म गुणों के धारी है॥
व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जन-जीवन आधारी है।
सिरीवाल प्रतिबोधक बन, दीन दुखियो की [illegible]
उग्र विहारी भव जल तारी, जय बोले राम गुरु महान [illegible]

सब बोलो जय जयकार

सब बोलो जय जयकार, नाना गुरुवर की ।
समता की दिव्य मशाल, नाना गुरुवर जी ॥टेर।

प्रथम पाट पर हुक्म मुनिश्वर, घोर तपस्वी बने गुरु[illegible]
शासन को दिया चमकाय, नाना गुरुवर जी ॥1॥

शिव मुनिश्वर बने उपकारी, भव्य जीवों के [illegible]
छ काया प्रतिपाल, नाना गुरु[illegible]

गिरी पाग वैरागी बन गये, उदयसागर तोरण से [illegible]
तारण तिरण की जहाज, नाना गुरुवर जी ॥3॥

चौथमल जी संघ के नायक, भव्य जीवों के दया के [illegible]
धीर वीर गम्भीर, नाना गुरु[illegible]

श्रीलाल ऋद्धि के त्यागी, नारी छोड कर बने [illegible]
धर्म का किया प्रचार, नाना गुरुवर जी ॥5॥

ज्योति जगाई [illegible] प्रांत में, [illegible]
[illegible] दातार, [illegible]

ा शील और क्रातिकारी, गणपति को पदवी नही प्यारी।
शासन से प्यार नाना गुरूवर जी ॥7॥

समता दर्शन के व्याख्याता, धर्मपाल के बने विधाता।
किया समता का प्रचार, नाना गुरूवर जी ॥8॥

गुरूवर अद्‌भुत योगी, जिनशासन की वृद्धि होगी।
.ो शासन चमके विशाल, नाना गुरूवर जी ॥9॥

आलोयणा

[आराधक अणी भवे जी करू पाप प्रकाश
नी हू माफी करो जी दास दास ने दास ॥1॥

यत्ना ना राखी जीव की जी झूठ वचन कह्या होय
चोरी कीधी भूल सू जी शील न पाल्यो होय ॥2॥

ाशा तृष्णा वश भम्योजी दम्यो न क्रोध कषाय
ग द्वेष दिल मे कियाजी पाप किया हर्षाय ॥3॥

वृद्ध अपग रोगी तणी जी सेवा न की चित लाय
कटुक वचन सतापियाजी पूछी न शाता जाय ॥4॥

ुद्ध क्रिया मे न करी जी टाली सर्व बेगार
ुद्ध सयम पाल्यो नही जी हा-हा मुझ धिक्कार ॥5॥

इष्ट अनिष्ट वस्तु परे जी राग द्वेष किया होय लीन
आरत रूद्र नित ध्यान मे जी रह्या भाव मलिन ॥6॥

र्म-ध्यान ध्यायो नही जी नही शुक्ल शुभ ध्यान
ाठा रूचि जागी नही जी कैसे होवे कल्याण ॥7॥

कपट सहित करणी करी जी आत्म प्रशसा हेत
गुणीरा गुण गाया नही जी कलक उन पर देत ॥8॥

प्रभु आज्ञा पाली नही जी प्रमाद किया दिन रात
खाई पीई ने सोय रहना जी किधी सयमरी घात ॥9॥

झगडा कराया संघ में जी किधा गच्छ मे भेद
लडिया-लडाया हर्ष से जी जिसका मुझ मन खेद ॥10॥

रसना वश हो मोय से भोग्या अनेषेणिक आहार
ज्ञान ध्यान मे नही रमीजी गई जमारो हार ॥11॥

अरिहत सिद्ध आचार्य की जी उपाध्याय अणगार
सेवा न शुद्ध मन से करीजी कैसे होवे भव पार ॥12॥

परिग्रह बढायो प्रेम से जी भर्या बहुत भण्डार
कूड कपट सेवन किया जी पाल्यो न शुद्ध आचार ॥13॥

सुमति गुपति निर्मल नही जी नही निर्मल नववाड।
परिषह मे कायर घणीजी करती तन का लाड ॥14॥

धर्म दयालु करूणा निधि जी सुमति दो जिनराज।
अनत अवगुण से भरी जी तारो गरीब निवाज ॥15॥

ज्ञान वैराग्य हो चित मे जी करू प्रपच का त्याग
इद्रिया दमु मन वश करू जी सयम मे अनुराग ॥16॥

आत्मा दमु समता धरू जी करू सत गुरू सेव।
कषाय तजु प्रभु ने भजु जी लेवु मुक्ति तत्क्षमेव ॥17॥

सौभाग्यमुनि समतानिधी जी केवल है तस दास।
खाचरोद दश साल मे जी किया है पाप प्रकाश ॥18॥

गुरू हमारे समता निधी नानेश रामेश ईश महान।
कर्म खपाय मुक्ति जाऊंजी लेवु शिवपुरी वास ॥19॥

कलयुग का कल्पवृक्ष लोगस्स

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥1॥
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥2॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥3॥
कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे, मुणिसुव्वयं णमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठणेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥4॥
एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥5॥
कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥6॥
चंदेसु णिम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयामयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिमंतु ॥7॥

मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया
बुध्द, वीर, जिन, हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो, यह चित्त उसी मे लीन रहो ॥1॥

विषयों की आशा नहीं, जिनको, साम्य भाव धन रखते हैं
निज पर के हित साधन में जो, निश दिन तत्पर रहते है ॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुःख समूह को हरते हैं ॥2॥

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्ही का नित्य रहे।
उन्ही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे ॥
नही सताऊं किसी जीव को, झूठ कभी नही कहा करूं
पर धन वनिता पर न लुभाऊं, सतोषमृत पिया करूँ ॥3॥

अहंकार का भाव न रखूं, नही किसी पर क्रोध करूं।
देख दूसरों की बढती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूं
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करू।
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं ॥4॥

मैत्री भाव जगत मे मेरा, सब जीवो से नित्य रहे।
दीन दु खी जीवों पर मेरे, उर से करूणा-स्रोत बहे ॥
दुर्जन-क्रूर कुमार्ग-रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्य भाव रक्खूं मै उन पर, ऐसी परिणति हो जावे ॥5॥

गुणी जनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड आवे।
बने जहां तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे
होऊं नहीं कृतघ्न कभी मै, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषो पर जावे ॥6॥

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखो वर्षो तक जीऊं या, मृत्यु आज ही आ जावे अथवा
कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न [illegible] मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥7॥

हो कर सुख मे मग्न न फूले, दुख मे कभी न घबरावे
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नही भय खावे
रहे अडोल अकंप निरंतर, यह मन दृढतर बन जावे।
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग में, सहनशीलता दिखलावे ॥8॥

सुखी रहें सबजीव जगत के, कोई कभी न घबरावे।
वैर, पाप अभिमान छोड जग, नित्य नये मगल गावे
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञानचरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावे ॥

ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे
धर्म-निष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे।
परम अहिसा धर्म जगत मे फैल सर्व-हित किया करे ॥10॥

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नही, कोई मुख से कहा करे
बन कर सब युगवीर हृदय से, देशोन्नति -रत रहा करे
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, निजानद मे रमा करे ॥1…
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दु ख संकट सहा करे

घंटाकर्ण मंत्र

ॐ घंटाकर्णो महावीर. सर्व-व्याधि विनाशक।
विस्फोटक-भयं प्राप्ते, रक्ष-रक्ष महाबल ॥1॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव! लिखितोऽ क्षर- पंक्तिभि
रोगास्तत्र प्रणश्यंति, वातपित्त-कफोद्भवा ॥2॥
तत्र राज-भयं नास्ति, यान्ति कर्णेजपा क्षयम्
शाकिनी-भूत-वैताला, राक्षसा प्रभवति न ॥3॥
नाकाले मरण तस्य, न च सर्पेण दश्यते।
अग्नि-चौर-भयं नास्ति, नास्ति तस्याप्यरिभ…
ॐ ह्रीं श्री घटाकर्ण नमोस्तु ते! ॐ नर-वीर! ठ ठ ठ स्वाहा ॥4॥

सूचना : घटाकर्ण मंत्र का 21 बार जप करने से राजभय, चोर-भय, … भय, सर्प-भय आदि दूर हो जाते हैं और भूत-प्रेत बाधा भी दूर हो …

अभिनन्दन

खण्ड-६

अभिनन्दनकर्त्ताओं का परिचय



समता पुरस्कार भी धन्य हो गया,
धन्य हो गये श्री सोहनलाल सिपानी।
मुमुक्षु भाई-बहिनों के कर कमलों से-
पाई है यह आशातीत निशानी ॥

महान भाग्यशाली, बेगलोर निवासी श्रीमान् सोहनलालजी सा सिपानी का आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्रदान कर सम्मान करने वाले, पच परमेष्ठी पद मे अपना नाम लिखाने वाले, वीतराग पथ पर आगे बढने वाले, मुमुक्षु भाई और बहिनो का सक्षिप्त परिचय यहाँ प्रेषित किया जा रहा है। क्योकि इन मुमुक्षु भाई-बहिनो के पावन कर कमलो से समता पुरस्कार भी धन्य हो गया और इससे भी अधिक धन्य हो गये आदरणीय सिपानीजी, जिन्हे ऐसा अनमोल सान्निध्य मिला, शुभ सजोग मिला।

जीवन मे आपने जितनी भी निर्मल पवित्र पावन आत्मिक पुण्यवाणी का बन्ध किया उसका आखिर मे उन्हे शुभ प्रसाद मिल ही गया। मुमुक्षुओ के अभिनन्दन समारोह के पावन अवसर पर मुमुक्षुओ द्वारा आपका सम्मान आपकी कीर्ति मे सोने मे सुहागे की भॉति सिद्ध हुआ।

स्वाध्याय प्रेमी और प्रबल सेवा भावना के धनी श्री फूलचंदजी बाफना का परिचय

- मुमुक्षु श्रीमान् फूलचदजी बाफना
- लौकिक शिक्षा १०
- धार्मिक अध्ययन दशवैकालिक सूत्र, मेरी भावना, २५ बोल, श्रमण प्रतिक्रमण, प्रार्थना, कर्मग्रन्थ भाग-१ व २ अन्य
- वैराग्य काल चार वर्ष • जन्म १०-८-१९५८, अछोली
- माता स्व श्रीमती राजीबाई बाफना
- पिता स्व श्री नेमीचदजी बाफना
- धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी बाफना। • नव दीक्षित श्री फुलमुनिजी म सा.

वीतराग मार्ग के उपासक, श्री संजयकुमारजी जैन का परिचय

- मुमुक्षु सजयकुमारजी जैन
- निवासी दिल्ली
- नव दीक्षित श्री संजयमुनिजी म सा.

मृदुभाषी, दृढ़ता के सुमेरू, निर्भिक श्री मनीषजी समदड़िया का परिचय

- मुमुक्षु श्रीमान् मनीषजी समदडिया
- लौकिक शिक्षा . १०
- धार्मिक अध्ययन .

  दशवैकालिक सूत्र, भक्तामर, पुच्छिस्सुणं, चितामणि, ३३-६७-२५ बोल, श्रमण प्रतिक्रमण, लघुदडक आदि थोकडे, प्रार्थना
- वैराग्य काल चार वर्ष
- जन्म १९-९-१९७८
- माता श्रीमती सुषमा समदडिया
- पिता श्री कमलचदजी समदडिया ।
- निवासी खिरकिया (म.प्र.)
- नव दीक्षित श्री मधुरमुनिजी म सा

सरलता और शालिनता की मूर्त, तपस्वीरत्न श्री किशोरजी बाफना का परिचय

- मुमुक्षु श्रीमान् किशोरजी बाफना
- लौकिक शिक्षा १०
- धार्मिक अध्ययन

  दशवैकालिक सूत्र, उववाई २२ गाथा, २५ बोल, श्रमण प्रतिक्रमण, अन्य आदि ।
- वैराग्य काल तीन वर्ष
- जन्म २३-११-१९७८,
- निवासी सूरत सिहपुरा
- माता श्रीमती रतनी देवी
- पिता श्री रघुलालजी बाफना, नि नोखा।
- नव दीक्षित श्री किशोरमुनिजी म.सा

सहनशीलता और नम्रताधारी श्री संजयकुमारजी संचेती का परिचय

- मुमुक्षु श्रीमान् सजयकुमारजी सचेती
- लौकिक शिक्षा बी. कॉम. द्वितीय वर्ष
- धार्मिक अध्ययन

  दशवैकालिक सूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, ६७ बोल, २५ बोल, श्रमण प्रतिक्रमण, जीवधडा, गति-अगति, अन्य आदि ।
- वैराग्य काल दो वर्ष
- जन्म २०-१०-१९८२,
- निवासी देशनोक
- माता श्रीमती रामादेवी
- पिता श्री हुलासमलजी सचेती ।
- नव दीक्षित श्री सजयमुनिजी म.सा.

सरलता की प्रतिमूर्ति, विनीत स्वभावी श्री अमृतकुमारजी भंसाली का परिचय

- मुमुक्षु अमृतकुमार भसाली
- लौकिक शिक्षा ८
- धार्मिक अध्ययन

  दशवैकालिक सूत्र, २५ बोल, ६७ वोल, श्रमण प्रतिक्रमण अन्य आदि ।
- वैराग्य काल छ माह
- जन्म स्थान शेरगढ
- माता श्रीमती भीखीबाई
- पिता श्री पारसमलजी भसाली ।
- नव दीक्षित श्री अमृतमुनिजी म सा.

ेवाभावी, सरलस्वभावी
श्रीमती राजमतीजी लोढ़ा का परिचय

- मुमुक्षु राजमती लोढा
- लौकिक शिक्षा छठवी
- धार्मिक अध्ययन कठस्थ

  दशवैकालिक सम्पूर्ण, पुच्छिस्सुणं, नमि पवज्जा
- स्त्रोत

  छ भक्तामर, उवसग्गंहर, हुक्मयष्टकम् स्त्रोत,
- स्तोक

  ३३-६७-२५ बोल, समिति गुप्ति, बडी गतागत, लघु दण्डक, जीवघडा, कर्म प्रकृति, छ कार्य, अवग्रह, उपयोग, तीन जागरण, पाच सूत्रो की वाचनी आदि।
- वैराग्य काल तीन वर्ष
- उम्र ४९ वर्ष
- पति श्री लक्ष्मीचदजी लोढा,
- निवासी अजड, जिला बडवानी (म.प्र.)
- ससुरजी स्व. हरकचदजी लोढा
- सास स्व मग्गीदेवी लोढा
- माता स्व जतन देवी चोपडा
- पिता स्व श्री मिश्रीमलजी चोपडा।
- नव दीक्षित महासतीजी श्री राजुलश्रीजी म सा.

मृदुभाषी, सरलमना, सहनशील, तपस्वीरत्ना अनिताजी सांखला का परिचय

- मुमुक्षु सुश्री अनिता साखला
- लौकिक शिक्षा दसवीं
- धार्मिक अध्ययन

  आगम कठस्थ - दशवैकालिक, नन्दीसूत्र, सुखविपाक सूत्र, अणुत्तरोववाई, वण्हिदशा, कप्पवडिसया, पुफ्फचुलिया, उत्तराध्ययन के कुछ अध्ययन आवश्यक सूत्र, वहत्कल्प।
- स्त्रोक

  स्त्रोक मंजुषा १ से ७ भाग तक, गुम्मा, बध, उदय, उदीरणा, सत्ता, छ भाव।
- स्त्रोत

  भक्तामर, कल्याणमदिर, पार्श्वनाथ स्त्रोत।
- धार्मिक परीक्षा

  जैन सिद्धान्त विशारद तथा जैन स्त्रोक मंजुषा विशारद।
- वैराग्य काल बारह वर्ष
- जन्म १४ अक्टूबर १९७४
- पदयात्रा ५०० कि मी.
- माता श्रीमती पुष्पादेवी साखला
- पिता श्री मदनलालजी सांखला,
- निवासी जोधपुर।
- नव दीक्षित महासतीजी श्री अभिक्षाजी म सा

उत्कृष्ट सेवा भावी और स्वाध्यायप्रेमी रानीजी बोहरा का परिचय

- मुमुक्षु रानी बोहरा
- धार्मिक अध्ययन जैन सिद्धान्त विशारद
- वैराग्य काल पॉच वर्ष
- जन्म १ अप्रेल १९७९
- पद यात्रा लगभग १२०० कि मी.
- माता स्व. मनोहरमा देवी बोहरा
- पिता श्री भैरुलालजी वोहरा,
- निवासी · चिकारडा, जिला चित्तौडगढ।
- नव दीक्षित महासतीजी श्री रुचिश्रीजी म सा.

अमित उत्साह और सरलता की धनी पिंकीजी जारोली का परिचय

- मुमुक्षु पिकी जारोली
- लौकिक शिक्षा · एम.ए. (हिन्दी साहित्य)
- धार्मिक अध्ययन जैन सिद्धान्त कोविद उत्तीर्ण
- वैराग्य काल चार वर्ष
- जन्म ८ जून १९७९
- पदयात्रा लगभग १००० कि.मी.
- माता श्रीमती धापुदेवी जारोली
- पिता श्री मोहनलालजी जारोली,

निवासी मगलवाड चौराहा, जिला चित्तौडगढ ।

- नव दीक्षित महासतीजी श्री प्रगतिश्रीजी म.सा.

स्वाध्याय को जीवन का लक्ष्य बनाने वाली डिम्पलजी कोठारी का परिचय

- मुमुक्षु डिम्पल कोठारी
- लौकिक शिक्षा · बी ए. (स्नातक)
- धार्मिक अध्ययन

१) आगम विभाग दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दीसूत्र, सुखविपाक सूत्र, अणुत्तरोववाई, दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार सूत्र, आचाराग-सूत्रकृताग, उपासकदशाग, सूर्यप्रज्ञप्ति, निरयावलिका, कल्पावतसिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदसा, आवश्यक सूत्र व निशीथ गतिमान।

२) संस्कृत विभाग-स्तोत्र- भक्तामर, कल्याणमंदिर, चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र, उपसग्गहर स्तोत्र, महावीराष्टकम्, हुक्माष्टकम् रत्नाकर व चवि शति प्रार्थना पचविशति।

३) स्तोक विभाग स्तोक मन्जुषा १० भाग

- वैराग्य काल पाच वर्ष
- जन्म २ दिस्मबर १९८०
- पदयात्रा ३०० लगभग कि मी.
- माता श्रीमती पुष्पादेवी कोठारी
- पिता श्री देवीलालजी कोठारी
- निवासी चिकराडा, चित्तौडगढ (राज)।
- नव दीक्षित महासतीजी श्री प्रबोधश्रीजी म सा.

सरल सौम्य व्यवहार कूशल अनिताजी धींग का परिचय

- मुमुक्षु अनिता धीग
- लौकिक शिक्षा बी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष) गणित
- धार्मिक अध्ययन

आगम कठस्थ दशवैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, नन्दीसूत्र, उववाई की २२ गाथा, अनुत्तरोववाई सूत्र, आचराग, सुखविपाक सूत्र, पुच्छिसुण, निरयावलिकादि सूत्र आवश्यकसूत्र

- स्तोत्र

भक्तामर, कल्याणमदिर, चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र, उपसग्गहर स्तोत्र, महावीराष्टकम्, हुक्माष्टकम् रत्नाकर पचीसी तत्त्वार्थ सूत्र।

- थोकडे

नवतत्त्व, गम्मा, गुणस्थान स्वरूप, २४ ठाणा स्तोक मजूषा के १ से ७ भाग (लगभग २० थोकडे)

- आगम वाचनी

अतगडदशांग सूत्र, उपसंगदशांग, प्रश्न व्याकरण, जाता धर्मकथाग सूत्र ।

- परीक्षा

जैन सिद्धात विशारद प्रथम खण्ड और जैन स्तोक विशारद ।

- वैराग्य काल . छ. वर्ष
- जन्म ६ अप्रेल १९८१
- माता श्रीमती सुशीलादेवी धींग
- पिता श्री लालचंदजी धीग,
- निवासी चिकराडा, चित्तौडगढ (राज.)
- नव दीक्षित महासतीजी श्री अनुप्रेक्षाश्रीजी म.सा.

सौम्य शीलता, अल्पभाषी, गायनकला में प्रवीण संगीताजी बरड़िया का परिचय

- मुमुक्षु संगीता बरडिया
- लौकिक शिक्षा : सीनियर हायर सैकण्डरी
- धार्मिक अध्ययन :

  वाचनी दशवैकालिक, सुखविपाक सूत्र, आचरांग, उववाई सूत्र, उवासगदसांग, अंतगडदसा, निरयावलिया, उत्तराध्ययन सूत्र, अनुत्तरोववाई सूत्र ।

  कंठस्थ पुच्छिसुणं, भक्तामर, दशवैकालिक (छ अध्ययन तक) कल्याणमंदिर, चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र, चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र, उपसग्गहर स्तोत्र, महावीराष्टकम्, हुक्माष्टकम्, रत्नाकर पचीसी
- जैन धार्मिक परीक्षा

  विभाकर परीक्षा उत्तीर्ण
- वैराग्य काल : तीन वर्ष
- जन्म ५ नवम्बर १९८१
- माता · श्रीमती कंचनदेवी वरडिया
- पिता · श्री अमरचंदजी वरडिया,
- निवासी · गंगाशहर, वीकानेर (राज.)
- नव दीक्षित महासतीजी श्री जीतयशाश्रीजी म.सा.

नम्रता और सरलता की उपासिका मंजूजी भूरा का परिचय

- लौकिक शिक्षा : दसवीं
- धार्मिक अध्ययन वाचनी

  दशवैकालिक सूत्र के कुछ अध्यय

  भक्तामर, प्रतिक्रमण
- वैराग्य काल पांच वर्ष
- जन्म १ दिसम्बर १९८१
- पदयात्रा लगभग १५०० कि. मी.
- माता श्रीमती कचनदेवी भूरा
- पिता श्री करणीदानजी भूरा,
- निवासी . देशनोक, बीकानेर (राज.)
- नव दीक्षित महासतीजी श्री मुस्कानश्रीजी म.सा.

शालीनता और विनयशीलता की धनी लताजी सुराणा का परिचय

- लौकिक शिक्षा १२वीं तक
- धार्मिक अध्ययन :

  दशवैकालिक, अनुत्तरोववाई सूत्र सुखविपाक सूत्र, निरयावलिया पंचक, वृहत्कल्प, दशासुतस्कन्ध, उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, स्तोक मंडल भाग १ से ७ तक, भक्तामर, कल्याणमंदिर, रत्नाकर २५ महावीराष्टकम्, हुक्माष्टकम् ।
- वैराग्य काल · तीन वर्ष
- जन्म. १९ जनवरी १९८६
- पदयात्रा लगभग १५०० कि. मी.
- माता श्रीमती रतनदेवी सुराणा
- पिता · श्री नरेन्द्रकुमारजी सुराणा
- निवासी · पथार कांदी, (असम), मूल . नोखा
- नव दीक्षित महासतीजी श्री अणिमाश्रीजी म.सा

—गौतम सुखलेचा, उदयपुर

जिन शासन की परम्परा में साधुमार्ग के ज्योतिर्मय नक्षत्र

डॉ. सरोज सुखलेचा, भीलवाडा

महापुरूषों की आविर्भाव परंपरा में श्री आदिनाथ भगवान की परपरा सर्वत्र अग्रणी रही है। ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से महाश्रमण भगवान श्री आदिनाथ जी की परपरा अति प्राचीन है।

प्रवृत्ति के बंधन से मुक्तकर मानव को निवृत्ति मार्ग पर अग्रसर करनेवाली यह परंपरा अक्षय है, अक्षुण्ण है। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग मे क्या.. कलियुग मे भी इस परपरा की अक्षरता व अक्षुण्णता बनी रही है और बनी रहेगी।



निवृत्ति व्यक्ति को कर्म बंध से मुक्त करने वाले मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करती है। निवृत्ति परंपरा (प्रकारांतर से जैन परपरा) व्यक्ति को सांसारिक एवं भौतिक सुख सुविधाओ को त्याग कर पंच महाव्रतधारी, त्यागी, श्रमण बनने हेतु प्रेरित करती है। इस प्रेरणा से व्यक्ति भौतिक सुविधाओ के प्रलोभनो से मुक्त होकर स्व एव पर कल्याण की कामना से अपना जीवन जिनधर्म को समर्पित कर देता है। वह जैन एवं जैन श्रमण बनता है। उसका जीवन त्यागमय तप.पूत दिनचर्या से पवित्र पावन होता है।

इस त्रिस्तुतिक देवार्चित परपरा मे पंचम गणधर श्री सुधर्मा स्वामी के ७४वे पाट पर महान तपोनिधि क्रियोद्धारक, युगदृष्टा आचार्य श्री हुक्मीचद जी म सा. हुए हैं, जिन्होने ऐसे समय मे क्राति का शखनाद किया जब श्रमण धर्म की मर्यादाओ से विमुख होकर साधक बाह्य प्रवृत्तियो में लिप्त हो रहे थे। ऐसे तत्कालीन शिथिल आचार को दूर कर उन्होने विशुद्ध शास्त्रीय आचार मर्यादाओ का दिग्दर्शन कराया। विषम समय मे आचार्य देव ने कोटा की पावन भूमि पर क्रियोद्वार करके शुद्ध श्रमण धर्म का प्रतिपादन किया।

इसी समुज्जवल गौरवशाली साधुमार्गी परपरा मे अनेक विरल विभूतियां हुई है, जिन्होने ज्ञान, दर्शन, चारित्र की विशुद्ध आराधना व तप:पूत साधना से भारतीय जनता को सम्यक् पथ का राही बनाया और जैन समाज के समक्ष वीतराग प्रभु का आदर्श प्रस्तुत कर विकसित किया।

समय की गति के साथ ही इस यशस्वी पम्परा की श्रृंखला मे आचार्य श्री शिवलाल जी म सा. हुए जिन्होने संघीय व्यवस्था को व्यवस्थित करने हेतु ७२ कलमो की समाचारी बनाई।

आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. हुए जो तोरण पर अमंगल से मुख मोड़कर महामंगलमय साधना मे रत हुए। आपके शासन मे क्षमासागर जैसे क्षमाशील, कोदरजी जैसे विनयवान एव परिदानजी जैसे रसनेन्द्रिय विजेता श्रमण

हुए जिन्हें स्वयं इतिहास सादर शीश झुकाता है।

चतुर्थ पाट संयम के सजग प्रहरी आचार्य श्री चौथमल जी म. सा. का रहा है, जिन्होंने इस समाज की नींव को मजबूत किया। अपने अंतेवासी शिष्यों, सहवर्ती संतों को विद्वान बनाकर इस परंपरा को जीवित रखा। आपकी संयम सजगता की सारे संघ में धाक थी।

आपके शिष्यरत्न पंचम पट्टधर महान संयमाराधक, व्याख्यान वाचस्पति आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. ने इस श्रमण परंपरा एवं समाज के चतुर्दिक विकास में योगदान दिया। अपनी विलक्षण प्रतिभा से राजा, महाराजाओं को भी जैन धर्म में अनुरंजित किया। पूज्य आचार्यदेव के महाप्रयाण के बाद श्रमण समाज विकट स्थिति में आ गया।

संवत् १९७७ मे आषाढ शुक्ला ३ को (आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. द्वारा घोषित युवाचार्य) मुनि श्री जवाहरलालजी म. सा. आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। जिन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा एवं यशस्वी श्रमण जीवन से भगवान महावीर की श्रमण परंपरा को आगे बढाया। जैन जगत के दिव्य नक्षत्र ज्योतिर्धर श्रीमद् जवाहराचार्य के प्रखर पांडित्य, सूक्ष्मप्रज्ञा, विलक्षण प्रतिभा, गंभीर विचारण, अद्भूत अध्ययनशीलता, अपूर्व तर्कणा शक्ति एव अगाध चारित्राराधना से जैन समाज ही नहीं अपितु बडे-बडे राष्ट्रनेता(जैसे गांधी, नेहरू, तिलक, पटेल, जयनारायण प्रकाश आदि) भी प्रभावित थे। आपके व्याख्यान राष्ट्रीय चेतना, जनजागृति व धर्म के ढोंग की निवृत्ति में सचोट थे, जो आज भी जवाहर किरणावली ५३ भागों के रूप में प्रस्तुत है।

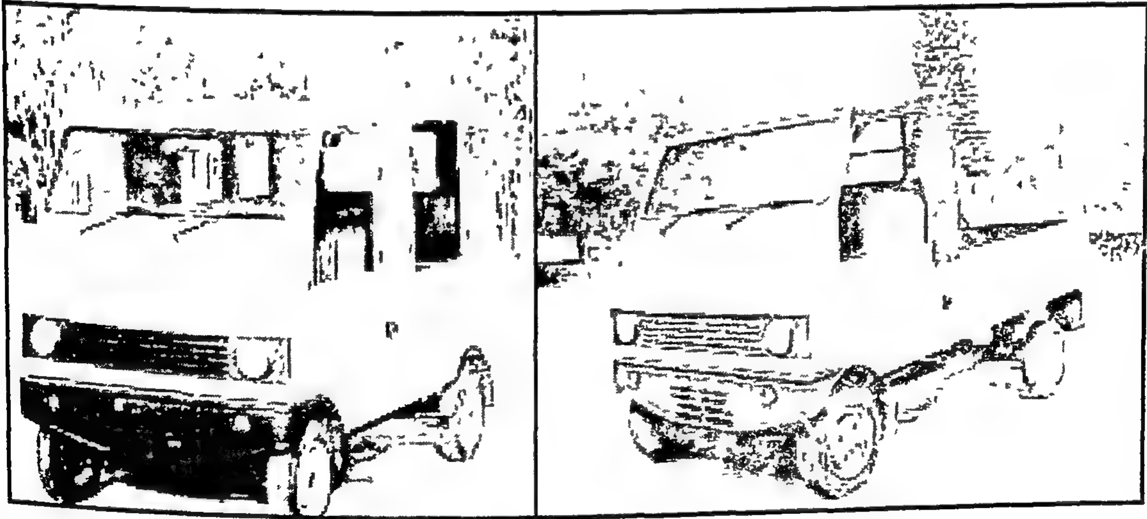
आपकी पाट परंपरा में शांतक्रांति के अग्रदूत युगदृष्टा आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. विराजे। जिन्होंने शिथिलाचार व अनुशासनहीनता देखकर संवत् २००९ के सादडी सम्मेलन मे ११११ संत-सती के नवनिर्मित वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के उपाचार्य के पद का भी त्याग कर दिया। कालांतर में अनेक अनुनय विनंती, समाधान तथा श्रमण संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए एक आचार्य की नेश्राय मे शिक्षा-दीक्षा-आहार-विहार-चातुर्मास-प्रायश्चित की एक समाचारी गठन के साथ आगे बढ़े।

आपने संख्या को महत्व नहीं देकर आगम की मर्यादा को महत्व दिया। उनके द्वारा सर्व सम्मति से भावी व्यवस्था हेतु श्री नानालालजी म.सा. को युवाचार्य की चादर ओढायी गई।

वि. सं. २०१९ माघ कृष्णा द्वितीया के दिन आप पर आचार्य पद का भार आया। आपने आचार्य पद पर रहते हुए आगमिक मर्यादाओं का श्रद्धा से पालने करते हुए श्रमण कर्त्तव्य निभाया। समता दर्शन के सिद्धांत और समीक्षण ध्यान के द्वारा आपने धर्म का बिगुल बजाया। जिस प्रकार ओसिया गॉव में ओसवाल गौत्र-जाति का उदगम हुआ। उसी प्रकार अछूत और निम्न समझे जाने वाली जाति के मनुष्यों को आपने जैनत्व का पाठ पढा कर धर्मपाल का नाम दिया।

अपने आचार्यत्व मे एक साथ ८, ९, ११, १५, २१ और २५ दीक्षा करीबन ३७५ मुमुक्षुओ को दीक्षित कर चतुर्थ आरे की पुनरावृत्ति कर जैनत्व में एक नया अध्याय प्रारम्भ किया। आपने अपना उत्तराधिकारी श्री रामलालजी म. सा. को घोषित किया।

जिनके अनुशासन में संघ प्रगति पथ पर अग्रसर है। व्यसन मुक्ति अभियान के द्वारा युवको मे एक नवीन अभियान चलाया है, जिससे भावी पीढी को व्यसन मुक्त बनाकर धर्म की ओर अग्रसर कर रहे हैं। आपने श्रावक-श्राविकाओं में धर्म जाग्रति के लिए प्रति वर्ष एक नया अभियान प्रारम्भ कर जिनशासन की प्रभावना कर रहे है, यह वर्ष श्रमणोपासक वर्ष है। आचार्य श्रीजी का चिन्तन संघ, समाज, देश एवं विश्व को व्यसन मुक्त बनाना है।



सुश्रावक सोहनलाल सिपानी..



उदार हृदयी बन संघ सेवा कर शासन खुब दिपाते।
शासननिष्ठ बन, समर्पणा भाव से समता भाव बढाते॥
मिलनसार चितनशील, सादा जीवन व उच्च विचार धारी।
माता धन्नी और पिता भेरूदान की महिमा बढाए भारी॥

स्थली प्रान्त की पुण्यधरा उदयरामसर गांव में जन्म है पाया।
ज्ञानाभ्यास कर पिता सग स्व-व्यापार मे हाथ बढाया॥
दक्षिण प्रांत को कर्म भूमि बना, धर्म की सेवा मन में ठानी।
ऐसे हैं समता मनीषी, सुश्रावक **सोहनलाल सिपानी**॥

स्व-जीवन को आदर्श बनाया, समकीत का किया धारण।
जपते सदा नवकार मंत्र और करते महावीर प्रभु उच्चारण॥
व्यवहार कूशल करूणावान सभी पर वात्सल्य भाव रखते।
परोपकारी कर्मठ समाजसेवी, जन-जन का चितन करते॥

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना राम का हर पल ध्यान लगाये।
लक्ष्मी का करते हर पल सदुपयोग और मान बढाये॥
आचार्य नानेश समता पुरस्कार की मिली देव निशानी।
ऐसे हैं समता मनीषी, सुश्रावक **सोहनलाल सिपानी**॥

-सम्पादक

-: आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार समिति :-

सयोजक
श्री भंवरलालजी कोठारी, बीकानेर

अध्यक्ष
श्री एल. एम. सिंघवी, नई दिल्ली

सदस्य

श्री डी. आर. मेहता, जयपुर
श्री एम. आर. मेहता, जयपुर
श्री हरिसिंहजी रांका, मुंबई
श्री चम्पालालजी डागा, गगाशहर
श्री आर. के. सिपानी, बेगलोर
श्री गुमानमलजी लोढ़ा, नई दिल्ली

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

खण्ड-७

आचार्य गौरव गाथा

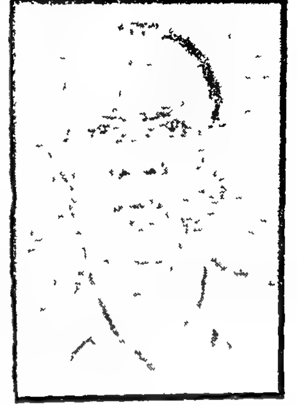
प्रवचन वाणी

खण्ड-८

शुभ संदेश

खण्ड-९

श्रावक के आचार से युक्त श्री सोहनलालजी सिपानी



–सुजानमल कनावट
बेंगलोर

श्रीमर्वज्ञपदाब्जसेवनमति : शास्त्रागमे चिन्तना,
तत्त्वातत्त्वविचारणे कुशलता सत्संयमे भावना।
सम्यक्त्वें रुचिता अघोपशमता जीवादिके रक्षणा,
सत्सागारिगुणा जिनैन्द्रकथिता यैषां प्रसादाच्छिवम्॥



अर्थात् - श्री जिनेन्द्र भगवान ने आगारधर्म अर्थात् श्रावकधर्म का पालन करने वाले के गुण इस प्रकार कहे है - सर्वज्ञ केवलज्ञानी भगवान् के चरण-कमलो के सेवन मे ही जिसकी बुद्धि लगी रहती है, अर्थात् जो सर्वज्ञ का आज्ञा का पालन करने की भावना रखता है और भक्तिभाव से युक्त है, आप्त पुरुषो द्वारा प्रणीत आगम शास्त्र के चिन्तन-मनन मे जो संलग्न रहता है, जो तत्त्व-अतत्त्व, धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय का विचार करने मे कुशल है, जिनप्ररूपित सयम का पालन करने की अभिलाषा रखता है, सम्यक्त्व मे रुचिमान् है, जो पापो को घटाने का निरन्तर प्रयास करता है, द्वीन्द्रिय आदि त्रस जीवो का तथा पृथ्वीकाय आदि एकेन्द्रिय जीवो की यथा शक्ति रक्षण करता है, वही सागारी श्रावक है।

जिनेन्द्र भगवान् ने श्रावक के यह गुण कहे है। इनके प्रसाद से शिव-सुख की प्राप्ति होती है । श्रावकरत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी प्रति पल अपने पापो को कम करने अर्थात् घटाने का प्रयत्न कर रहे है ।

न्यायोपात्तधनो यजन् गुणगुरून् सद्गीरित्रिवर्ग भजेत्,
अन्योन्यानुगुणं तदर्हगुहिणीस्थानालयो हीमय ।
युक्ताहरविहारआर्यसमिति प्राज्ञ कृतज्ञो वशी,
श्रृण्वन् धर्मविधि दयालुरघभीः सागारधर्म च
-सागारधर्मामृत

अर्थात् - न्याय से द्रव्योपार्जन करने वाला हो, गुणी जनों का सत्कार करने वाला हो, मधुर वाणी बोले, धर्म, अर्थ और काम को परस्पर अविरुद्ध रूप से यथोचित सेवन करने वाला हो, धर्मसाधन मे सहायक पत्नीवान् तथा स्थानवान् हो, श्रावक धर्म की मर्यादा के अनुसार आहार और व्यवहार करने वाला हो, संतपुरुषों को महान् मानने वाला कृतज्ञ हो, बुद्धिमान्-विवेकशील हो, अन्यकृत यत्किचित् उपकार को भी महान् मानने वाला कृतज्ञ हो, अपनी इन्द्रियो को और मन को काबू मे रखने वाला हो, सत् शास्त्रो का श्रवण करने वाला हो, दयालु हो और पापकृत्यों से डरने वाला हो, यह सब गुण श्रावको के लिए आदरणीय है। जो इन गुणो ये युक्त होता है, वही वास्तव मे गृहस्थधर्म का पालन कर सकता है ।

इस प्रकार से स्व-जीवन मे गुणो का पालन करने वाले स्वनाम धन्य शासननिष्ठ, धर्मप्रेमी, श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी सा है, जो अपने जीवन मे यथा - शक्ति श्रावकाचार पालन करते रहते है ।

(१) आगार का अर्थ है - घर । जो घर-गृहस्थी मे रह कर धर्माराधन करते हैं, उन्हे आगार कहते हैं और उनका धर्म सागारधर्म कहलाता है।

व्यवहार में कहा जाता है कि साधु के व्रत तो मोती के समान अखडित रूप में ही ग्रहण किय जाते हैं। साधु सर्वथा प्रकार से अर्थात् तीन करण और तीन योग से सावद्य योग का प्रत्याख्यान करते है और पॉचों महाव्रतों के धारक ही होते हैं।

एक - दो - तीन महाव्रतों का धारक साधु - साध्वीजी नहीं कहलाते है। इस प्रकार साधु के व्रत अखण्डित रूप मे ग्रहण किये जाने के कारण तथा साधु के व्रतो मे किसी प्रकार का आगार न होने के कारण और साधु घर त्यागी होने के कारण अनगार कहलाते है।

किन्तु श्रावक के व्रत सुवर्ण के समान होते है। तात्पर्य यह है कि मोती के समान ही सोने को अखंडित रूप में ग्रहण करना अनिवार्य नही है। सोना माशा, दो माशा, तोला, सौ तोला, जितनी इच्छा हो और जितने दाम पास में हो, उतना खरीद कर रख सकते हैं। इसी प्रकार श्रावक भी इच्छानुसार व्रत ग्रहण कर सकते हैं। इच्छा हो तो एक व्रत-धारण करे, इच्छा हो तो दो व्रत धारण करे, यावत् किसी की इच्छा हो तो बारह व्रत धारण करे। इसी प्रकार इच्छा हो तो एक करण, एक योग से और इच्छा हो तो तीन करण तीन योग से व्रतो को ग्रहण कर सकता है।

कहने और लिखने का तात्पर्य यह है कि श्रावक के व्रतों में ऐसा आग्रह नहीं है कि इतने व्रतो को और इतने करण-योग से ही ग्रहण करना चाहिए।

इस कारण से भी गृहस्थ के धर्म को आगारधर्म कह सकते हैं अर्थात् आगार युक्त व्रत के धारक व पालक श्रावक कहलाते है।

(२) सागारधर्म के पालक का दूसरा नाम श्रावक शब्द श्रु धातु से बना है, जिसका अर्थ है श्रवण करना-सुनना। अर्थात् जो शास्त्रों को श्रवण करने वाले हैं, उन्हे श्रावक कहते हैं। व्यवहार में श्रावक शब्द का अर्थ इस प्रकार है .-

श्रद्धालुतां श्राति श्रृणोति शासनं,
दानं वपेदाशु वृणोति दर्शनम्
कृन्तत्यपुण्यानि करोति संयम
तं श्रावकं प्राहुरमी विचक्षणा.॥

अर्थात् - जो

श्रा–श्रद्धवान् हो या शास्त्र को श्रवण करे,
व–दान का वपन करे या विवेकवान् हो,
क–पाप को काटे या क्रियावान् हो,

वह श्रावक है आशय यह है कि जो शुद्ध श्रद्धा से [illegible] और विवेकपूर्वक क्रिया करे वह श्रावक है।

(३) श्रावक का तीसरा नाम श्रमणोपासक भी है। [illegible] का अर्थ है - साधु और उपासक का अर्थ है - भक्त। अर्थात् [illegible] साधुओ की सेवा-भक्ति करे वह श्रावक कहलाता है। [illegible] ठाणांगसूत्र मे चार प्रकार के श्रमणोपासक कहे है -

हत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता,
तजहा–अम्मापिउसमाणा,
भाउसमाणा मित्तसमाणाः सवत्तिसमाणा ।

अर्थात् - भगवान् ने चार प्रकार के श्रमणोपासक कहे हैं। वे इस प्रकार है.-

(१) माता-पिता के समान - जिस प्रकार माता-पिता [illegible] पुत्र की सार सॅभाल करते है, उसी प्रकार कितने ही श्रावक-[illegible] साधु - साध्वी की तरफ से किसी भी प्रकार का उपकार प्राप्त [illegible] बिना ही, स्वभाव से ही साधु-साध्वी के संरक्षण मे हमेशा [illegible] रहते हैं। ऐसे श्रावक माता-पिता के समान कहलाते हैं।

(२) भाई के समान - यो तो भाई परस्पर मे विशेष [illegible] प्रेम नहीं दिखलाते किन्तु जब एक भाई पर कोई कठिन प्रसंग [illegible] पडता है, कोई विपत्ति आ जाती है, तब अपना सर्वस्व [illegible] करके भी एक दूसरे की सहायता करते हैं, इसी प्रकार [illegible] श्रावक, साधु-साध्वी पर विशेष प्रेम नहीं रखते है किन्तु [illegible] आने पर अपना सर्वस्व अर्पण करके भी उनकी [illegible] हैं, उस समय वे हृदय के सच्चे प्रेम से और वात्सल्य [illegible] भक्ति करते हैं।

(३) मित्र के समान - जैसे मित्र परस्पर एक दूसरे [illegible] करते हैं। एक, दूसरे के काम आये तो दूसरा भी [illegible] आता है और आपत्ति आने पर वह उनकी [illegible]

सी प्रकार [illegible] गुण ग्रहण करते हैं [illegible] है, ऐसा [illegible] यथोचित साता पहुँचाते हैं।

श्रमणोपासक या श्रावक [illegible] होते है। निश्चय में तो दर्शनमोहनीय की ३ प्रकृतियों का, अनन्तानुबंधी चौकडी का तथा अप्रत्याख्यानावरण चौकडी का - इस प्रकार ग्यारह प्रकृतियों का क्षयोपशम होने से और व्यवहार में २१ गुण, २१ लक्षण, १२ व्रत और ११ प्रतिमा आदि गुणों को स्वीकार करने से श्रावक का पद प्राप्त होता है।

और कदाचित् साधु - साध्वी पर किसी प्रकार की आपदा आ जाय तो श्रावक - श्राविका यथाशक्ति सहायता करके साता उपजाते हैं।

(४) सौत के समान - जैसे सौते आपस में एक दूसरी पर ईर्ष्या रखती है, निन्दा करती है, शाप देती हैं, पति से एक दूसरी की चुगली करती हैं, झूठा दोष लगाती है, मान भंग करने का प्रयत्न करती हैं, उसी प्रकार कितनेक श्रावक और श्राविकाए, साधु - साध्वी पर ईर्ष्या करते है, साधु और साध्वी की निन्दा करते है, साधु का बुरा करना सपत्नी के समान कहलाते है।

इसके अतिरिक्त श्रमणोपासक दूसरी तरह से भी चार प्रकार के कहे गये है -

अद्दागसमाणो, पडागसमाणो,
खाणुसमाणो, खरकटसमाणो।

अर्थात् ४ प्रकार के श्रावक होते है -

(१) आदर्श (अगिसा-कॉच) के समान, कॉच में जैसा रूप होता है वैसा ही दिखाई देता है उसी प्रकार कितने ही श्रावक व्याख्यान आदि श्रवण करते समय जैसे उत्सर्ग-अपवाद आदि मार्ग की प्ररूपणा साधु करते है उसी प्रकार श्रद्धान करते हैं।

नि शक भाव से आगम -वाक्यो पर श्रावक श्रद्धा रखते है। ऐसे श्रद्धाशील आगम के वाक्यो पर श्रद्धा रखने वाले धर्मप्रेमी, शात-स्वभावी श्री सोहनलालजी सिपानी को श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जेन द्वारा सम्मानित किया जा रहा है।

(२) पताका के समान - जिधर की हवा चलती है, पताका [illegible]

[illegible] और अनुकरणीय [illegible] है।

(३) [illegible] के समान - [illegible] जाता है, वहाँ से इधर-उधर [illegible] श्रावक अपने [illegible] मे अपना ही [illegible] सो ही सच्चा, ऐसे [illegible] कोसों दूर है श्री सोहनलालजी [illegible]।

(४) तीखे काँटे के समान - [illegible] है, दु ख देता है, [illegible] कितनेक श्रावक [illegible] गर्व से गर्वित बने हुए, [illegible] साधु का मन दुखाते हैं और [illegible] के लिए भी तैयार हो जाते हैं। [illegible] भाव मे रमण करने वाले [illegible]।

शास्त्र मे कहे हुए [illegible] पिता के समान, भाई के समान, मित्र के समान और [illegible] समान तो अच्छे, किन्तु सौत के समान, [illegible] के समान और [illegible] के समान बुरे है।

समता दर्शन
[illegible]
विश्व कल्याण
[illegible]
- आचार्य श्री [illegible]



श्रावक गुणों से युक्त श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी



संकलन : राजेश बोहरा, बेंगलोर

श्रावक बनने के लिए आगमों में निम्न लिखित गुण बताए गए है जो स्त्री ओर पुरुष निम्न गुणों को धारण करते है, वही सच्चे श्रावक-श्राविका कहलाते है।

अखुद्दो रुववं पगइसोमो लोगपियाओ ।
अकूरो भीरू असढो दक्खिण्ण लज्ञालु दयालु ॥१॥
मज्झत्थो सुदिट्ठी, गुणानुरागी सुपक्खजुत्तो सुदीह ।
विसेसन्नू वुड्ढानुगो विणीय कयण्णु परहियकत्ता लद्धलक्खो ॥२॥

(१) अक्षुद्र -दु:खप्रद स्वभाव वाले-ओछा प्रकृति वाले को क्षुद्र कहते है। श्रावक अपना अपराध करने वाले को भी दु.खप्रद नहीं होता है, तो औरो का तो कहना ही क्या है? अर्थात् किसी को भी दु:ख होने से श्रावक अक्षुद्र होता है।

(२) रूपवान् - यथाकृतिस्तथा प्रकृति अर्थात् जैसी शरीर की आकृति होती है वैसी उस मनुष्य की प्रकृति होती हैं। इस कथन के अनुसार श्रावक पूर्वोपार्जित पुण्य के प्रभाव से हस्त-पाद आदि पूर्ण अङ्गों वाला होता है। और कान, आंख आदि इन्द्रियां भी उसकी परिपूर्ण होती है। वह सुन्दर आकृति वाला, तेजस्वी और सशक्त शरीर वाला होता है।

(३) प्रकृति-सौम्य-जैसे ऊपर से सुंदर रूप वाला होता है, उसी प्रकार शांत, दांत क्षमावान्, शीतलस्वाभावी, मिलनसार, विश्वसनीय आदि गुणों से भीतर से भी सुन्दर होता है।

(४) लोकप्रिय - इहलोक, परलोक और उभयलोक से [illegible] होने से सब को प्रिय होता है, गुणी जनों की निन्दा, दुर्गुणियो की तथा मूर्खो की हंसी-दिल्लगी, [illegible] के प्रति मत्सरता-ईर्षा, बहुतो के विरोधी से मित्रता देश के [illegible] का उल्लङ्घन, सामर्थ्य होने पर भी दूसरो की सहायता न [illegible] इत्यादि कार्य लोकविरुद्ध गिने जाते हे, तथा ठेकेदारी, [illegible] कटवाना, सांप-विच्छू आदि को मारना इत्यादि कार्य [illegible] से विरुद्ध नहीं गिने जाते, तथापि परलोक मे दु [illegible] और सात कुव्यसनो का सेवन कभी नहीं करता।

द्यूत च मांस च सुरा च वेश्या, पार्पाधचौर्ये पर - दार[illegible]
एतानि सप्त व्यसनानि लोके, घोरातिघोरं नरकं न[illegible]

हार-जीत

हार-जीत के जितने खेल तथा काम है, वे सब [illegible] जाते हैं। जैसे ताश का खेल और सट्टा आदि [illegible] जुआ इसलिए कहलाता है कि सद्गुणों से [illegible] मनुष्य को जुआ (जुदा अलग) करके दुर्गुणों और [illegible] देता है। जो इस कुव्यसन का शिकार होता है उसे [illegible]

इज्जत का नाश हो जाता है। परिवार दर-दर की ठोकरे खाने को मजबूर होता है । जुआ खेलने वाला राजा का तथा पचो का अपराधी बनता है और नरक आदि दुर्गतियो मे जाता है।

मांस का आहार

मास का आहार भी हिसा का वर्द्धक, प्रकृति को क्रुर बनाने वाला तथा कोढ आदि रोगो का उत्पादक होता है। मांसभोजी लोग पशुओ के और कदाचित् मनुष्यो के भी घातक बन जाते है और आगे नरक-निगोद के दु ख भोगते है।

मदिरापान

मदिरापान भी बुद्धि का, बल का, धन का और प्रतिष्टा का नाशक है। मदिरा पीने वाला बेभान होकर माता और बहिन के साथ भी व्यभिचार करने पर उतारू हो जाता है और क्लेश बढाता है। वह आगे नरक का अतिथि बनता है।

वेश्यागामी

वेश्यागामी भी जाति से और धर्म से भ्रष्ट होकर अपनी बुद्धि, धन, आबरू आदि का नाश करके सुजाक, प्रमेह आदि भयानक बीमारियो से सड कर अकाल मृत्यु का ग्रास बन कर नरक मे जाता है।

शिकार

शिकारी करने वाला अनाथ, गरीब, निरपराध, बेचारे घास-पानी पर निर्वाह करने वाले जलचर, स्थलचर और खेचर आदि जीवो की हिसा करता है वह आगे नरक में जाकर यमों का शिकार बनता है।

चोरी

चोरी करने वाला भी जगत मे सब का निन्दनीय बन कर, राजा और पचो का अपराधी होकर, अकाल मृत्यु से मरकर नरक को जाता है।

जार/जारी (परपुरुषगमन/परस्त्रीगमन)

जार अर्थात् परपुरुष गमन और जारी अर्थात् परस्त्री गमन करने वाला भी जगत मे सब का निन्दनीय बन कर, राजा, सरकार तथा पचो का अपराधी होकर, अकाल मृत्यु से मरकर नरक को जाता है।

इस प्रकार यह सातो व्यसन दोनो लोकों में दु खदाता होने के कारण उभयलोक-विरुद्ध है। इनका त्याग श्रावक को अवश्यमेव करना चाहिए। इनके वशवर्त्ती हुआ मनुष्य धर्म का आचरण नही कर पाता । दोनो लोको से विरुद्ध और दु खप्रद कर्म है। इन तीनो प्रकारो के निन्दनीय कार्यो का परित्याग करके श्रावक जगत् का प्रेम-पात्र बनता है। सातों कुव्यसनो का त्याग धर्मप्रेमी श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी ने कर रखा है ।

(५) **अक्रूर**-अक्रूर-क्रूर अर्थात् निर्दय एवं कठोर दृष्टि और कठोर स्वभाव का त्याग करके सरल स्वभावी हो, गुणग्राही हो। पराये छिद्र कभी न देखे, अपने अवगुण देखा करे जिससे नम्र बना रहे।

(६) **भीरु** -भीरू लोकापवाद से तथा पाप कर्म से और नरक आदि दुर्गतियो के दु ख से सदैव डरता रहे । पापकर्म का तथा लोकविरुद्ध कार्य का कभी आचरण न करे।

(७) **अशठ** - अशठ जैसे मुर्ख भली-बुरी वस्तु मे गडबड कर देता है, वैसे श्रावक पुण्य-पाप के कार्य में गडबड न करे। धर्म और अधर्म के फल को तथा पुण्य और पाप के फल पृथक्-पृथक् समझ कर अधर्म को घटावे तथा धर्म और पुण्य की वृद्धि करे ।

(८) **दक्ष अर्थात् खूब विचक्षण हो** -दृष्टि डालते ही मनुष्य को एव कार्य को समझ जाय। अवसरोचित कार्य करने वाला हो और ऐसा होशियार रहे कि पाखण्डियो के छल मे न फॅसे।

(९) **लज्जालु** - अनन्तज्ञानी की और गुरुजनो की लज्जा रखता हुआ गुप्त रूप से प्रकट रूप से कभी कुकर्म का आचरण न करे, व्रतो को भंग न करे। लज्जा सर्व गुणो का आभूषण है। जो लज्जा त्याग कर निर्लज्ज हो जाता है उसके पतन की सीमा नहीं रहती ।

(१०) **दयालु**-दया ही धर्म का मूल है। ऐसा जानकर समस्त जीवो पर दया रक्खे,

अय निज. परो वेति, गणना लधुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु, वसुवैब कुटुम्बकम् ॥

अर्थात् - यह मेरा है और यह पराया है, ऐसा विचार तुच्छ बुद्धि वालों का होता है। श्रेष्ठ जन तो सारे ससार को ही अपना

कुटुम्ब समझते हैं । दुखी जीवों को देखकर अनुकम्पा लावे, यथाशक्ति सहायता करके उनका दु.ख दूर करे. मरते हुए को वचाने का प्रयत्न करे।

(११) मध्यस्थ - अच्छी-वुरी वातो को सुनकर तथा अच्छी-वुरी वस्तुओ को देख कर राग-द्वोपमय परिणाम न धारण करे, किसी भी पदार्थ मे गृद्धि धारण न करे, क्योकि राग, द्वेष और गृद्धि ही चिकने कर्म-वन्धन के मुख्य कारण हैं।

जे समदृष्टि जीव है, करे कुटुम्ब प्रतिपाल ।
अन्तर से न्यारो रहे, ज्यों धाय खिलावे बाल ॥

अर्थात् - जिस प्रकार धाय, वच्चे का लालन-पालन करती हुई भी अन्तस मे समझती है कि यह वच्चा मेरा नहीं है, जव तक मैं इसे दूध पिलाती हूँ, तव तक यह मुझे माता मानता है। दूध छूटा कि फिर मेरा नाम भी नहीं लेगा। इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि जीव कुटुम्व का पालन-पोपण करते हुए भी अन्तरंद मे सव को पराया ही समझता है। उनमें मोह, ममता और आसक्ति धारण नहीं करता। अतएव सव पदार्थो मे और अच्छे-वुरे वनावो मे मध्यस्थ रहे। रूक्ष-शुष्क वृत्ति धारण करके रहे, जिससे चिकने कर्मो का वन्ध न हो और पूर्वोपाजित कर्म शिथिल हो जाये और उनसे शीघ्र ही छुटकारा मिल जाय।

(१२) सुदृष्टि -इन्द्रियों मे विकार उत्पन्न करने वाले पदार्थो का अवलोकन करके अन्त करण को मलिन न वनावे, किन्तु ऐसे पदार्थो की ओर से अपनी दृष्टि हटा लेवे। सोम्यदृष्टि ढलते नेत्रो से रहे। अपनी दृष्टि को सदा पवित्र रखे।

(१३) गुणानुरागी - ज्ञानी, ध्यानी, जपी, तपी, संयमी ओर शुद्ध क्रिया के पालक, ब्रह्मचारी, क्षमावान. धैर्यवान्, धर्मप्रभावक, दानवीर इत्यादि पुरुपो के सद्गुणो पर अनुराग रक्खे, इनका वहुमान करे, माहात्म्य वढावे, यथाशक्ति सहायता करे, और उनके गुणो को प्रदीप्त करे। समझे कि हमारे अहोभाग्य है कि हमारे कुल मे. ग्राम मे, संघ या समाज में ऐसे-ऐसे गुणवान् सज्जन विद्यमान है। इनके सम्बन्ध से अपने कुल की तथा धर्म की उन्नति होगी। इत्यादि विचार करके उनके गुणो का प्रेमी और प्रशंसक रहे।

(१४) सुपक्षयुक्त - न्याय और न्यायी का पक्ष ग्रहण करे और अन्याय तथा अन्यायी का पक्ष छोड़ देवे। यहा प्रश्न [illegible] जा सकता है कि पहले रागद्वेष करने की मनाही की है। [illegible] न्यायी का पक्ष लेने और अन्यायी का पक्ष छोडने को कहा है। ऐसा करना राग-द्वेप हुआ कि नहीं? इसका समाधान यह है [illegible] अमृत को अमृत और विप को विप समझने मे या कहने मे [illegible] द्वेप नहीं समझना चाहिए। सम्यग्दृष्टि जिस वस्तु का जैसा य[illegible] स्वरूप समझता है वैसा ही कहता है।

जव अच्छे-वुरे का यथार्थ स्वरूप समझेगा तभी वुरे को [illegible] कर अच्छे को स्वीकार कर सकेगा। तभी आत्मा का सुधार [illegible] सकेगा। इसलिए श्रावक को न्यायपक्षी अवश्य होना चाहिए। [illegible] अतिरिक्त श्रावक के माता-पिता, स्त्री, पुत्र, मित्र आदि [illegible] शुद्धाचारी धर्मात्मा होने से भी श्रावक सुपक्षयुक्त कहलाता [illegible]

(१५) सुदीर्घदृष्टि-श्रावक अच्छी ओर दूरगामी दृष्टि [illegible] हो। श्रावक किसी भी कार्य के अन्तिम फल पर दीर्घ [illegible] विचार करता है। जो कार्य भविष्य मे आत्मिक गुणो का [illegible] कराने वाला हो, सुखदाता हो, प्रामाणिक पुरुषों द्वारा श्ला[illegible] हो, वही कार्य करता है। निन्दनीय ओर दु खप्रद कार्य न [illegible] करता। विना विचार कोई भी कोई कार्य नहीं करता, [illegible] ऐसा करने वाले को भविष्य में पश्चाताप करना पडता है [illegible]

(१६) विशेपज्ञ-गाय का व पावडर का दूध रंग मे ए[illegible] होता है, सोना ओर पीतल भी रंग से एक समान ही होते [illegible] उनके गुणो मे आकाश-पाताल जितना अन्तर होता है [illegible] अन्तर की परीक्षा विशेपज्ञ - विज्ञानी पुरुष ही [illegible] ऊपरी दिखावे के भ्रम मे नही पडते किन्तु भीतर के गुणों [illegible] करके निर्णय करते हैं। उसी प्रकार श्रावक और [illegible] तत्त्व आदि के विषय में विशेपज्ञ बनकर उनमें [illegible] जानते हैं, ग्रहण करने योग्य को ग्रहण करते हैं [illegible] का त्याग करते है।

(१७) वृद्धानुगम - श्रावक वयोवृद्ध और [illegible] मे रहने वाला हो। अर्थात् उनके [illegible] करे, यथाशक्ति उनके अनुसार [illegible] करने वाला हो। [illegible] अनुकरण करने वाला भी हो।

(१८) **विनीत**-कहा है- 'विणआ जिणसासणमूल' अर्थात् जिनेन्द्र भगवान् के शासन का मूल विनय ही है। ऐसा जानकर माता, पिता, ज्येष्ठ भ्राता और शिक्षक आदि गुरुजनो का यथोचित विनय करे और सब के प्रति नम्र हो कर रहे।

(१९) **कृतज्ञ**- नीतिकारो का कथन है कि जो दूसरो के किये उपकारो को नही मानता है, ऐसा कृतघ्न पृथ्वी के लिए भारभूत है। इस कथन को ध्यान मे रख कर जो अपने ऊपर किंचित् भी उपकार करे उसे महान् उपकारक मान कर उसके उपकार से उऋण होने का यथाशक्ति प्रयत्न करे।

श्री स्थानांगसूत्र मे तीन जनो से उऋण होना अर्थात् उनके उपकार का बदला चुकाना मुश्किल कहा है -

(१) गर्भ धारण से लेकर स्वयं समर्थ होने तक अनेक प्रकार के कष्ट सहन करके, अनेक उपचारो द्वारा रक्षण, पालन पोषण करने वाले माता-पिता को कोई पुत्र स्वयम् स्नान करावे, वस्त्राभूषणो से अलकृत करे, इच्छित भोजन करावे और उनकी आज्ञानुसार चल कर उन्हे सन्तुष्ट रक्खे, यहॉ तक कि उन्हे पीठ पर उठा कर सर्वत्र लिये फिरे तो भी उनके उपकार का बदला नही चुका सकता। हॉ, जितेन्द्र प्रणीत धर्म उनको अङ्गीकार करा कर अन्त मे यदि समाधिमरण करावे तो ऊरिन हो सकता है।

(२) किसी सेठ ने द्ररिद्री को द्रव्य की सहायता देकर व्यापार मे लगा दिया हो और श्रीमान् बना दिया हो। कर्मयोग से वह सेठ स्वय दरिद्री अवस्था को प्राप्त हो जाय। उस समय वह उपकृत नया श्रीमान् यदि अपना सारा धन उस सेठ को अर्पित कर दे और अपने माता-पिता के कथनानुसार उसकी उम्र भर सेवा करे तो वह ऊरिन हो सकता है।

(३) किसी धर्माचार्य का उपदेश श्रवण करके कोई मनुष्य देवपद को प्राप्त हुआ। वह देव उन आचार्य की यथोचित सेवा-भक्ति करे, परीषह, उपसर्ग, दुर्भिक्ष आदि से उनका सरक्षण करे, अन्य प्रकार से वैयावृत्य करे तो भी वह ऊरिन नहीं होता। हॉ, कदाचित् आचार्य के परिणाम संयम से या धर्म से विचलित हो जाएँ और उन्हे यथोचित उपाय करके वह धर्म मे स्थिर करे तो ऊरिन हो सकता है।

(२०) **परहितकर्त्ता**-कहा है- 'परोपकार पुण्याय' अर्थात् पर का उपकार करना पुण्य है। ऐसा जान कर यथाशक्ति, यथोचित रूप से श्रावक सदैव परोपकार करता रहता है। कदाचित् परोपकार के कार्य मे अपने को किसी प्रकार का कष्ट या दु ख हो या हानि हो तो भी वह परोपकार से मुख नही मोडता।

(२१) **लब्धलक्ष्य**-जैसे लोभी को धन की तृष्णा होती है और कामी को स्त्री की लालसा होती है, उसी प्रकार श्रावक को गुणो की लालसा होती है। निरन्तर थोडे-थोडे गुणो का अभ्यास करते-करते मनुष्य अच्छा गुणवान् बन जाता है। ऐसा जानकर श्रावक नित्य नये-नये गुणो का अभ्यास करते रहने से लब्धलक्ष्य हो जाता है। जिन-जिन गुणी जनो की सङ्गति होती है उनके गुणो को ग्रहण करते-करते अनेक गुणो का पात्र बन जाता है। इसके अतिरिक्त श्रावक अनेक शास्त्रो और ग्रन्थो का पठन-पाठन करने वाला होता है।

उत्तराध्ययनसूत्र के इक्कीसवे अध्ययन मे कहा है-'निग्गंथे पावयणो सावए से बिकोविए' अर्थात् चम्पा नगरी के पालित श्रावक निर्ग्रन्थ-प्रवचन (शास्त्र) मे कुशल है। तेईसवे अध्ययन मे कहा है-'सीलवता बहुस्सुया' अर्थात् राजीमतीजी शीलवती और बहुत श्रुतो को जानने वाली थी।

ऐसे बहुत-से उदाहरण और प्रमाण मौजूद है, जिनसे विदित होता है कि प्राचीनकाल के श्रावको और श्राविकाओ को अनेक शास्त्रो का ज्ञान होता था। ऐसा जान कर सामायिक से लेकर सव अगो का तथा सम्यक्त्व से लेकर सर्वविरति तक की क्रिया का अभ्यास करते-करते, सर्व गुणो का धारक बनना चाहिए।

जो इक्कीस गुणो के धारक होते है, वे श्रावक और श्राविका कहे जाते है। ऐसा जान कर श्रावक तथा श्राविका कहलाने वालो का कर्त्तव्य है कि उक्त इक्कीस गुणो मे से यथासम्भव अधिक से अधिक गुणो को धारण करे ।

सच्चे श्रावक वनकर अपनी और जिनधर्म की प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा वढावे। ऐसे गुणो से युक्त समता भाव में रमण करने वाले, सादगी और सरलता की मूर्ति, जिनेश्वर देव के मार्ग पर प्रतिपल आगे वढने वाले श्री सोहनलालजी सा सिपानी धर्म और जिन शासन की प्रतिष्ठा वढा रहे है ।



श्रावक लक्षणों को आत्मसात् करने वाले श्री सोहनलालजी सिपानी

संकलन **शान्तिलाल साण्ड**, बेंगलोर

(१) अल्पइच्छा - श्रावक धन की तथा विषयभोगों की तृष्णा को कम करके अल्प तृष्णा वाले होते हैं।

(२) अल्पारम्भ - जिस कार्य को करने से पृथ्वीकाय आदि छहों कायों का विशेष आरम्भ होता है, ऐसे कार्यो की वृद्धि नहीं करते, किन्तु प्रतिदिन कमी करते जाते हैं और अनर्थदण्ड से तो सदैव अलग ही रहते हैं। इस कारण वे अल्पारम्भ वाले होते हैं।

(३) अल्पपरिग्रह - श्रावक के पास जितनी सम्पत्ति होती है उसके बाद वह मर्यादा कर लेता है । पहले के परिग्रह को सत्कार्यो में व्यय करके उसे भी कम करता है, कुव्यापारों से द्रव्योपार्जन करने की इच्छा भी नहीं करता है, वह अल्पपरिग्रही होता है।

(४) सुशीलता - श्रावक परस्त्रीगमन का त्यागी होता ही है, स्वस्त्री में भी मर्यादाशील होता है, इसलिए शीलवान् कहलाता है। तथा आचार विचार की शुद्धता होने से सुशील होता है।

(५) सुव्रत - ग्रहण किये हुए व्रतों का, प्रत्याख्यान का, नियम का निरतिचार और चढ़ते परिणामों से पालन करता है, अत श्रावक सुव्रत कहलाता है।

(६) धर्मनिष्ठता - श्रावक धर्म-कार्यों में निष्ठ होता है, नित्य-नियम आदि का विधिपूर्वक पालन करता है और अपने प्रत्येक जीवन-व्यवहार में धर्म का विचार करता है। अतः वह धर्मनिष्ठ होता है।

(७) धर्मवृत्ति - श्रावक अपने तन, मन और वचन से अधर्म मे प्रवृत्ति नहीं करता, लोकनिन्दित कार्य नहीं करता, उसके तीनों योग धर्म मार्ग में प्रवृत्त हों, ऐसी आकांक्षा रखता है।

(८) कल्प उग्रविहारी - श्रावकधर्म के जो-जो कल्प अर्थात् आचार है, उनमें उग्र अर्थात् अप्रतिहत विहार करने वाला अर्थात् परीषह एवं उपसर्ग आने पर भी अपने आचार के विरुद्ध कार्य नहीं करने वाला होता है।

(९) महासंवेगविहारी - श्रावक का लक्ष्य सदा निवृत्ति मार्ग की ओर ही रहता है। वह संसार मे रहता हुआ भी संसार मे रचा-पचा नहीं रहता, अत महासंवेगविहारी कहलाता है।

(१०) उदासीन - घर-गृहस्थी का निर्वाह करने के लिए श्रावक को जो हिंसामय कृत्य करने पड़ते हैं, उन्हें करता हुआ भी वह उन्हें भला नहीं समझता। उन्हें करके प्रसन्नता का अनुभव नहीं करता, बल्कि उदासीन वृत्ति रखनेवाला होने से कारण उदासीन कहलाता है।

(११) वैराग्यवान् - धन-सम्पत्ति और कुटुम्ब-परिवार आदि के प्रति गहरी आसक्ति नहीं रखता तथा आरंभ और परिग्रह से निवृत्त होने का इच्छुक होता है।

(१२) एकान्त आर्य - श्रावक बाह्याभ्यन्तर [illegible] शुद्ध और [illegible] वृत्ति वाला होता है। [illegible] एकान्त आर्य कहलाता है।

(१३) मध्यमार्गी - सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र [illegible] के कारण श्रावक मध्यमार्गी होता है।

(१४) सुसाधु - श्रावक ने परिणामो से तो अव्रत की किया का सर्वथा निरुंधन कर दिया होता है। सिर्फ सासारिक कार्यो के लिए जो द्रव्यहिसा करता है, वह भी अनिच्छा से, निरुपाय होकर,

: हिंसा - अहिंसा की चौभंगी :

- द्रव्य से हिसा और भाव से हिसा - जैसे कसाई और पारधी द्वारा की जाने वाली हिसा।
- द्रव्य से हिसा, भाव से अहिसा - जैसे पचमहाव्रतधारी, समितिवान् साधु द्वारा आहार-विहार आदि करने मे हो जाने वाली हिसा ।
- द्रव्य से अहिसा, भाव से हिसा - जैसे अभव्य या द्रव्यलिगी साधु प्रमार्जन करके गमनागमन आदि क्रिया करता है।
- द्रव्य से अहिसा और भाव से अहिसा - जैसे अप्रमादी साधु तथा केवली की अहिसा।
- और उदासीन भाव से करनी पडती है। उसे करता हुआ भी वह धर्म की वृद्धि करता रहता है, अत आत्मसाधना करने वाला होने से अर्थात् मोक्षमार्ग का साधक होने से श्रावक, कहलाता है।

(१५) सुपात्र - जैसे सुवर्ण के पात्र मे सिंहनी का दूध ठहर सकता है, उसी प्रकार श्रावक मे सम्यक्त्व आदि सद्गुण सुरक्षित रह सकते है। इस कारण वह सुपात्र कहलाता है।

(१६) उत्तम - श्रावक मिथ्यात्वी की अपेक्षा अनन्त गुणी विशुद्ध पर्याय धारक होने के कारण उत्तम है।

(१७) क्रियावादी - पुण्य -पाप के फल को मानने वाला तथा बंधमोक्ष को मानने वाला होने के कारण श्रावक क्रियावादी होता है।

(१८) आस्तिक - श्री जिनेन्द्र भगवान् के वचनो पर श्रावक को परिपूर्ण प्रतीति होती है, अतएव वह आस्तिक होता है। वह आत्मा के अनादि अनन्त अस्तित्व को तथा परलोक को मानता है, इस कारण भी वह आस्तिक कहलाता है।

(१९) आराधक - श्रावक जिन-आज्ञा के अनुसार धर्मक्रिया करने के कारण आराधक कहलाता है।

(२०) जिनमार्ग का प्रभावक- श्रावक मन से सब जीवो पर मैत्रीभाव रखता है, गुणाधिक पर प्रमोदभाव रखता है, दुखी जीवो पर करुणाभाव रखता है और दुष्टो पर मध्यस्थ भाव रखता है। वचन से तथ्य और पथ्य वाणी का प्रयोग करता है और सम्यग्दृष्टि से लेकर सिद्ध भगवान् पर्यन्त गुणवानो का गुणकीर्तन करता है, धन से धर्मोन्नति के कामो मे उदारता दिखलाता है, विवेकपूर्वक द्रव्य का निरन्तर सद्व्यय करता है, अतएव वह जिनशासन का प्रभावक होता है।

(२१) अर्हन्त का शिष्य- साधु एवम् साध्वी अर्हन्त भगवान् के ज्येष्ठ शिष्ट है और श्रावक तथा श्राविका लघु शिष्य होते है, अत श्रावक अर्हन्त भगवान् का शिष्य कहलाता है।

२१ लक्षणो से युक्त जो होते है, वही ऊँची श्रेणी के श्रावक और श्राविकाए कहे जाते है। जैन आगमो मे श्रावक के व्रत/ नियम / प्रत्याख्यान विविध प्रकार के होते है और इस कारण श्रावको की अनेक श्रेणियो होती है।

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य भेद करने पर बारह व्रतधारी श्रावक उत्कृष्ट है, पंच अणुव्रत आदि के धारक मध्यम है और सिर्फ सम्यक्तत्व के धारक जघन्य है। राजस्थान के बीकानेर जीले के उदयरामसर निवासी अभी हाल दक्षिण भारत मे कर्नाटक की राजधानी, फूलो और कम्प्यूटर की नगरी बेंगलोर निवासी सेवाभावी, सरल-हृदयी, परोपकार करने मे हमेशा आगे रहकर जनहित करने वाले, धर्म-ध्यान से ओत-प्रोत, सघ-समाज और राष्ट्र के उत्थान का चितन-मनन करने वाले, धार्मिक सस्कारो से युक्त, सादा जीवन और उच्च विचारो के धनी, जिन शासन के रसिक, वयोवृद्ध होते हुए भी धर्म की दलाली मे अपना सब कुछ अर्पण करने वाले, सघ तथा सघ नायक के प्रति समर्पित श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी ऐसे लक्षणो से युक्त श्रावक रत्न है।

पापी से नहीं पाप से घृणा करो

- भगवान महावीर



पन्द्रह कर्मादान

संकलन :
मनोहरलाल गाँधी मण्डिया

नीचे लिखे १५ कर्मादान जो श्रावक और श्राविका को जानने योग्य है, परन्तु आचरण करने योग्य नहीं हैं

(१) अंगार कर्म (इंगालकम्मे)-

कोयला वना-वना कर वेचने का व्यापार करना, तथा लुहार सुनार, कुम्भार, हलवाई, भडभूजा, धोवी, कसेरा, धातुमार, भील और गिरनियो आदि का व्यापार-व्यवसाय करना, जो कि अग्नि के आरम्भ से होता है। ऐसे अंगार कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(२) वन कर्म (वणकम्मे)-

वाग-वगीचा-उद्यान-वाटिका-वाडी, क्यारी आदि मे फल, फूल, साग, भाजी आदि उत्पन्न करके वेचने का धन्धा करना । कूँजडे का व्यापार करना । वन - जंगल मे से घास, लकडी काट कर लाना और वेचना । कन्दमूल लाकर वेचना । सुथारी (खाती) का काम-धन्धा करना, यह वनकर्म है। ऐसे वन कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(३) शकट कर्म (साडी कम्मे) -

गाडी, रथ, छकडा, वग्धी, तागा, म्याना, पालकी, नाव, जहाज आदि वना-वनाकर वेचना या उनके उपकरण चक्र आदि वेचना। ऐसे शकट कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(४) भाटी कर्म (भाडी कम्मे) -

ऊँट घोड़े, गधे, वैल, गाडी, जहाज आदि को भाडे पर दूसरो को देना। ऐसे शकट कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(५) स्फोट कर्म (फोडीकम्मे) -

[illegible]

ऐसे हो विशिष्ट आरम्भ के अन्य कार्य करना। ऐसे स्फोट कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(६) दन्तवाणिज्य (दन्तवाणिज्जे)-

हाथी के दांतों हाथी पकडने वाले खूछ गहरा गडहा खोद कर, उसके उपर पतले वास विछा देते है और कागज की हथिनी खडी कर देते हैं। हाथी, हथिनी के आकर्पण से वहाँ जाता है और वाँसो के टूटते ही गड्ढे मे गिर कर मृत्यु को प्राप्त होता है। उसकी हड्डियो के चूडे वनते हे।

फॉस देश मे प्रति वर्प सत्तर हजार हाथी मारे जाते है। हाथी दांत के व्यापारी ओर उसकी वनी वस्तुओ का उपयोग करने वाले भी उस पाप के भागी होते हैं।

जेन जेसे दयालु समाज मे हाथी-दांत के चूडे पहनने का रिवाज शीघ्र बन्द हो जाना चाहिए। हाथी का, उल्लू या व्याघ्र के नाखूनों का हिरण या व्याघ्र आदि के चमडे का, चमरी गाय की पूछ के वालों जिन्दी चमरी गाय की पूछ दगा मे काट ली जाती है, जिसके चमर वनते हैं ओर अत्यन्त खेद की वात है कि धर्मस्थानो मे भी उनका प्रयोग किया जाता है। पूंछ कटने से कभी कभी गाय की मोत भी हो जाती है। हाथी दांत, पूछ का तथा शंख सीप कोडी ओर कस्तूरी आदि का व्यापार करना। ऐसे दन्तवाणिज्य कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(७) लाक्षावाणिज्य (लखवाणिज्जे)-

लाख, [illegible], गोंद, मनसिल, [illegible] आदि का व्यापार लाक्षवाणिज्य के अन्तर्गत है। ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(८) रसवाणिज्य (रसवाणिज्जे)-

[illegible]

होते है ।

(९) विषवाणिज्य (विषवाणिज्जे)-

अफीम, वच्छनाग, सोमल, धतूरा, विष आदि जहरीली प्राणघातक वस्तुओ का व्यापार करना । कीडी, जू, खटमल, चूहे आदि मारने की दवाइया बेचने का व्यवसाय करना । तलवार, खड्ग, बन्दूक, तोप, कटार, चाकू, तीर, भाला, धनुष-बाण आदि शस्त्रो का व्यापार करना। ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(१०) केशवाणिज्य (केसवाणिज्जे)-

पशुओ और पक्षियो का व्यवसाय करना या स्त्री-पुरुषो को बेचना आदि। ऐसे केश वाणिज्य कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(११) यन्त्रपीडनकर्म (जंतपीलणकम्मे)-

तेल निकालने की घानी, ईख आदि पीलने की कोल्हू आदि अथवा इनके पुर्जे बना कर बेचने का धधा करना। ऐसे यन्त्रपीडन कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(१२) निर्लाञ्छन कर्म (निल्लंछणकम्मे)-

बैल, घोडे आदि पशुओ की खस्सी करना अर्थात् अडकोष फोडकर उन्हे नपुसक बनाना । उनके कान, नाक, सीग, पूँछ आदि अगो को छेदन करना, मनुष्यो को नाजर करना अर्थात् अग-भग करके नामर्द करना । इस प्रकार के कार्य निर्लाञ्छन कहलाते है । ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(१३) दवाग्निदापनिका कर्म (दवग्गिदावणया)-

बाग - बगीचा मे, खेत -खलिहान मे तथा जगल मे अनाज, धान्य, घास, फल - फूल या वृक्ष अधिक उगाने के लिए आग लगाना । कई भील आदि असंस्कारी लोग धर्म समझकर जंगल मे आग लगा देते है । यह दवग्गिदावणिया कर्म कहलाते है । ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(१४) सरद्रहतालाबशोषणकर्म (सरदहतलायसोसणया) -

तालाब, कुंड आदि जलाशयो को सुखाने का कार्य करना । तालाब, कुण्ड आदि के सुखाने से उस जल काय की हिसा तो होती ही है, साथ ही साथ कुआ, बावडी, तालाब, कुण्ड, जलाशय मे रहे हुए मछली, मेढक, सर्प, मगरमछ आदि त्रस जीवो की भी अपरिमित हिसा होती है । ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(१५) असतीजनपोषणकर्म (असईजणपोसणया) -

असती अर्थात् दुराचारिणी स्त्रियो का पोषण करके उनसे दुराचार का सेवन कराकर द्रव्य उपार्जन करना, चाहे चूहे मारने के लिए बिल्ली पालना, बिल्ली मारने के निमित्त कुत्ता पालना, शिकारी कुत्ते आदि पाल कर बेचना, इत्यादि इस प्रकार के व्यापार करना असतीजनपोषण कर्म कहलाता है ।

दया की भावना से अथवा किसी दु खी पशु-पक्षी की रक्षा करने के उद्देश्य से जीवो का पालन किया तो दोष नही है । ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

उक्त पन्द्रह ही कर्मादान विशेष कर्मबन्ध के कारण है, क्योकि इनमे जीव हिसा की अधिकता है। कितनेक व्यापार ऐसे भी है जो अनर्थकारी है अथवा निन्दित है।

इससे ही आजीविका चलती हो तो उसकी मर्यादा अवश्य करनी चाहिए । जैसे आनन्द श्रावक ने ५०० हलो की जमीन रक्खी थी।

सकडाल कुभकार निम्बाडे पका कर ही अपनी आजीविक करते थे।

इस प्रकार जो श्रावक अतिचारो से वचकर व्रत का पालन करते है, वे मेरु पर्वत के बरावर पापो से बच जाते है और सिर्फ राई के बरावर पाप ही उन्हे लगता है।

व्रतधारी श्रावक और श्राविका शारीरिक आरोग्यता ओर मानसिक शान्ति, निराकुलता, सन्तोप, आनन्द ओर सुख के साथ अपना जीवन व्यतीत करते हुए स्वर्ग के और क्रमश मोक्ष के अनन्त अजर-अमर सुखो के स्वय भोक्ता वन जाते हैं। इन्हीं अनन्तानन्त सुखो की प्राप्ति के लिए समता मनीपी, धर्मानुरागी, व्रत-प्रत्याख्यान के धारी श्री सोहनलालजी सिपानी ने अपने स्व-जीवन को मर्यादामय वनाकर अपना जीवन यापन कर रहे है।

जय जिनेन्द्र



पन्द्रह कर्मादान

संकलन :
मनोहरलाल गाँधी मण्डिया

नीचे लिखे १५ कर्मादान जो श्रावक और श्राविका को जानने योग्य है, परन्तु आचरण करने योग्य नहीं हैं

(१) अंगार कर्म (इंगालकम्मे)-

कोयला बना-बना कर बेचने का व्यापार करना, तथा लुहार सुनार, कुम्भार, हलवाई, भडभूजा, धोबी, कसेरा, धातुमार, भील और गिरनियों आदि का व्यापार-व्यवसाय करना, जो कि अग्नि के आरम्भ से होता है। ऐसे अंगार कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(२) वन कर्म (वणकम्मे)-

बाग-बगीचा-उद्यान-वाटिका-बाडी, क्यारी आदि में फल, फूल, साग, भाजी आदि उत्पन्न करके बेचने का धन्धा करना । कूँजडे का व्यापार करना । वन - जंगल मे से घास, लकडी काट कर लाना और बेचना । कन्दमूल लाकर बेचना । सुथारी (खाती)का काम-धन्धा करना, यह वनकर्म है। ऐसे वन कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(३) शकट कर्म (साडी कम्मे) -

गाडी, रथ, छकडा, बग्धी, तांगा, म्याना, पालकी, नाव, जहाज आदि बना-बनाकर बेचना या उनके उपकरण चक्र आदि बेचना। ऐसे शकट कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(४) भाटी कर्म (भाडी कम्मे) -

ऊँट घोडे, गधे, बैल, गाडी, जहाज आदि को भाडे पर दूसरो को देना। ऐसे शकट कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(५) स्फोट कर्म (फोडीकम्मे) -

जमीन को फोडने का व्यापार करना, मिट्टी, पत्थर. कंकर, मुरड, सिला, रेल के कोयले आदि की खुदवाकर उनका व्यापार करना, कूप, बावडी, कुंड, तालाब, नहर आदि बनवा-बनवाकर बेचना, घट्टी (चक्की), ऊखली, कुंडी, खरल, आदि पत्थर के बना-बनाकर बेचना, हल-वखर आदि से पृथ्वी सुधारने का धन्धा करना, तथा ऐसे हो विशिष्ट आरम्भ के अन्य कार्य करना। ऐसे स्फोट कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(६) दन्तवाणिज्य (दन्तवाणिज्जे)-

हाथी के दांतो हाथी पकडने वाले खूछ गहरा गडहा खोद कर, उसके उपर पतले बांस बिछा देते है और कागज की हथिनी खडी कर देते हैं। हाथी, हथिनी के आकर्षण से वहाँ जाता है और बॉसों के टूटते ही गड्ढे मे गिर कर मृत्यु को प्राप्त होता है। उसकी हड्डियों के चूडे बनते है।

फॉस देश में प्रति वर्ष सत्तर हजार हाथी मारे जाते है। हाथी दांत के व्यापारी और उसकी बनी वस्तुओं का उपयोग करने वाले भी उस पाप के भागी होते हैं।

जैन जैसे दयालु समाज मे हाथी-दांत के चूडे पहनने का रिवाज शीघ्र बन्द हो जाना चाहिए। हाथी का, उलू या व्याघ्र के नाखूनो का हिरण या व्याघ्र आदि के चमडे का, चमरी गाय की पूँछ के बालों जिन्दी चमरी गाय की पूँछ दगा से काट ली जाती हे, जिसके चमर बनते है और अत्यन्त खेद की बात है कि धर्मस्थानों मे भी उनका प्रयोग किया जाता है। पूँछ कटने से कभी कभी गाय की मौत भी हो जाती है। हाथी दांत, पूछ का तथा शंख सीप कौडी और कस्तूरी आदि का व्यापार करना। ऐसे दंत वाणिज्य कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(७) लाक्षावाणिज्य (लखवाणिज्जे)-

लाख, चपडी, गोंद, मनसिल, धावडी के फूल, कुसुंवा हडताल आदि का व्यापार लाक्षावाणिज्य के अन्तर्गत है। ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(८) रसवाणिज्य (रसवाणिज्जे)-

मदिरा आदि रसो का व्यापार करना। ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक

होते है ।

(९) विषवाणिज्य (विषवाणिज्जे)-

अफीम, वच्छनाग, सोमल, धतूरा, विष आदि जहरीली प्राणघातक वस्तुओ का व्यापार करना । कीडी, जू, खटमल, चूहे आदि मारने की दवाइया बेचने का व्यवसाय करना । तलवार, खड्ग, बन्दूक, तोप, कटार, चाकू, तीर, भाला, धनुष-बाण आदि शस्त्रो का व्यापार करना। ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(१०) केशवाणिज्य (केसवाणिज्जे)-

पशुओ और पक्षियो का व्यवसाय करना या स्त्री-पुरुषो को बेचना आदि। ऐसे केश वाणिज्य कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(११) यन्त्रपीडनकर्म (जंतपीलणकम्मे)-

तेल निकालने की घानी, ईख आदि पीलने की कोल्हू आदि अथवा इनके पुर्जे बना कर बेचने का धधा करना। ऐसे यन्त्रपीडन कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(१२) निर्लाञ्छन कर्म (निल्लंछणकम्मे)-

बैल, घोडे आदि पशुओ की खस्सी करना अर्थात् अडकोष फोडकर उन्हे नपुसक बनाना। उनके कान, नाक, सीग, पूँछ आदि अगो को छेदन करना, मनुष्यो को नाजर करना अर्थात् अग-भग करके नामर्द करना। इस प्रकार के कार्य निर्लाञ्छन कहलाते है । ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है।

(१३) दवाग्निदापनिका कर्म (दवग्गिदावणया)-

बाग - बगीचा मे, खेत -खलिहान मे तथा जगल मे अनाज, धान्य, घास, फल - फूल या वृक्ष अधिक उगाने के लिए आग लगाना। कई भील आदि असस्कारी लोग धर्म समझकर जगल मे आग लगा देते है। यह दवग्गिदावणिया कर्म कहलाते है। ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है।

(१४) सरद्रहतालाबशोषणकर्म (सरदहतलायसोसणया) -

तालाब, कुंड आदि जलाशयो को सुखाने का कार्य करना । तालाब, कुण्ड आदि के सुखाने से उस जल काय की हिसा तो होती ही है, साथ ही साथ कुआ, बावडी, तालाब, कुण्ड, जलाशय मे रहे हुए मछली, मेढक, सर्प, मगरमछ आदि त्रस जीवो की भी अपरिमित हिसा होती है । ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

(१५) असतीजनपोषणकर्म (असईजणपोसणया) -

असती अर्थात् दुराचारिणी स्त्रियो का पोषण करके उनसे दुराचार का सेवन कराकर द्रव्य उपार्जन करना, चाहे चूहे मारने के लिए बिल्ली पालना, बिल्ली मारने के निमित्त कुत्ता पालना, शिकारी कुत्ते आदि पाल कर बेचना, इत्यादि इस प्रकार के व्यापार करना असतीजनपोषण कर्म कहलाता है ।

दया की भावना से अथवा किसी दु खी पशु-पक्षी की रक्षा करने के उद्देश्य से जीवो का पालन किया तो दोष नही है । ऐसे कर्म के त्यागी श्रावक होते है ।

उक्त पन्द्रह ही कर्मादान विशेष कर्मबन्ध के कारण है, क्योकि इनमे जीव हिसा की अधिकता है। कितनेक व्यापार ऐसे भी है जो अनर्थकारी है अथवा निन्दित है।

इससे ही आजीविका चलती हो तो उसकी मर्यादा अवश्य करनी चाहिए । जैसे आनन्द श्रावक ने ५०० हलो की जमीन रक्खी थी।

सकडाल कुभकार निम्बाडे पका कर ही अपनी आजीविक करते थे।

इस प्रकार जो श्रावक अतिचारो से बचकर व्रत का पालन करते है, वे मेरु पर्वत के बराबर पापो से बच जाते है और सिर्फ राई के बराबर पाप ही उन्हे लगता है।

व्रतधारी श्रावक और श्राविका शारीरिक आरोग्यता और मानसिक शान्ति, निराकुलता, सन्तोष, आनन्द और सुख के साथ अपना जीवन व्यतीत करते हुए स्वर्ग के और क्रमश मोक्ष के अनन्त अजर-अमर सुखो के स्वय भोक्ता बन जाते है। इन्हीं अनन्तानन्त सुखो की प्राप्ति के लिए समता मनीषी, धर्मानुरागी, व्रत-प्रत्याख्यान के धारी श्री सोहनलालजी सिपानी ने अपने स्व-जीवन को मर्यादामय बनाकर अपना जीवन यापन कर रहे है।

जय जिनेन्द्र



श्रावक की ग्यारह पडिमाएँ

संकलन : **महावीर मेहता**, बेंगलोर

बारह व्रतों का पालन करते-करते और वैराग्यभाव मे वृद्धि करते-करते श्रावक जब विशेष रूप से विरक्त होते हैं,तब अधिक धर्म-साधना की अभिलाषा से प्रेरित होकर अपने गृहकार्य का और परिग्रह का भार अपने पुत्र, भ्राता आदि को सौप देते है। वे स्वयं गार्हस्थ्य सम्बन्धी ममता से निवृत्त हो जाते हैं। इसके पश्चात् धर्मोपकरण-आसन गुच्छक, रजोहरण, मुख-वस्त्रिका, माला, शास्त्र, ओढने-बिछाने के वस्त्र, भाजन-मार्तारया आदि लेकर पौषधशाला या उपाश्रय आदि धर्मस्थान मे चले जाते है। फिर नीचे लिखी हुई श्रावक की प्रतिमाओं का शास्त्रोक्त विधि के अनुसार समाचरण करते है। यथा-

श्रावकपदानि देवैरेकादश देशितानि येषु खलु।
स्वगुणाअन्यगुणैः सह, सन्तिष्ठन्ते क्रमविवृध्दाः ॥

-रत्नकरण्डतश्रावकाचार

अर्थात्-तीर्थङ्कर देवो ने श्रावक के ग्याहर स्थान कहे हैं। वे स्थान क्रम से वृद्धि को प्राप्त होते हैं और अगले स्थानों में पूर्व-पूर्व के गुण पाये जाते है। तात्पर्य यह है कि पहली प्रतिमा की विधि दूसरी प्रतिमा मे और इसी प्रकार सब पिछली प्रतिमाओं की अगली प्रतिमाओं मे भी पालन की जाती है। वे प्रतिमाएँ इस प्रकार है -

(१) दर्शन प्रतिमा (दंसणपडिसा) -

एक महीने तक निर्मल सम्यक्त्व का पालन करे। सम्यक्त्व का शंका, कांक्षा आदि कोई भी अतिचार किंचित् भी न लगने दे। गृहस्थो को तथा अन्यतीर्थियों को नमस्कार आदि न करे और एकान्तर उपवास करे।

(२) व्रत प्रतिमा (वयपडिमा) -

दो महीने पर्यन्त सम्यक्त्वपूर्वक बारह व्रतों का निर्मल-निरतिचार रूप से पालन करे। किसी भी अतिचार का सेवन न करे और बेले-बेले पारण करे।

(३) सामायिक प्रतिमा (सामाइयपडिमा)-

तीन महीने तक सम्यक्त्व और व्रतपूर्वक प्रात. मध्याह्न और सायंकाल बत्तीस दोषो से रहित सामायिक करे और तेले-तेले का पारण करे।

(४) पौषध प्रतिमा (पोसहपडिमा)-

चार मास पर्यन्त, सम्यक्त्व, व्रत, और सामायिकपूर्वक, पौषध के पूर्वोक्त १८ दोषो से बच कर प्रतिमास छह पौषधोपवास करे। चौले-चौले पारणा करे।

(५) नियम प्रतिमा-

पॉच महीने पर्यन्त, सम्यक्त्व, व्रत, सामायिक और पौषधोपवासपूर्वक पॉच प्रकार के नियमों का समाचरण करे। पॉच नियम यह हैं-

(१) बडा स्नान न करना (२) क्षौर (हजामत) न करना (३) पैरो मे जुता आदि न पहनना (४) धोती की एक लांग खुली रखना (५) दिन मे ब्रह्मचर्य का पालन करना। पंचोले-पचोले पारण करे।

(६) ब्रह्मचर्य प्रतिमा-

छह महीना तक, सम्यक्त्व, व्रत, सामायिक, पौषध और नियमपूर्वक नव वाडों से युक्त अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करना और छह-छह उपवासों का पारण करना।

(७) सचित्तत्याग प्रतिमा-

सात मास तक, सम्यक्त्व, व्रत, सामायिक, पोपध नियम और व्रह्मचर्य के साथ, सव प्रकार की सचित्त वस्तुओं के उपभोग-परिभोग का परित्याग करे और सात-सात उपवास का पारण करे।

(८) आरम्भत्याग प्रतिमा-

आठ मास तक, सम्यक्त्व, व्रत, सामायिक, पौषध, नियम, ब्रह्मचर्य और सचित्तत्याग के साथ पृथ्वीकाय आदि छहो कायो का स्वयं आरम्भ करने का त्याग करे और आठ-आठ उपवासो का पारणा करे।

(९) प्रेष्यारम्भत्याग प्रतिमा-

नौ महीने पर्यन्त, सम्यक्त्व, व्रत, सामायिक, पौषध, नियम, बह्मचर्य, सचित्तत्याग और स्वयंकृत आरम्भ त्याग के साथ छहो कायों का आरम्भ दूसरे से कराने का भी त्याग करे। नौ-नौ उपवासो के बाद पारणा करे।

(१०) उद्दिष्टत्याग प्रतिमा-

दस महीने तक, सम्यक्त्व, व्रत, सामायिक, पौषध, नियम, ब्रह्मचर्य, सचित्तत्याग, आरम्भत्याग, प्रेष्यारम्भत्याग के साथ-साथ उद्दिष्ट वस्तुओ का भो त्याग करे। अर्थात् अपने निमित्त बनाये हुए आहार आदि समस्त पदार्थ भोगने का त्याग करे। दस-दस उपवास के बाद पारणा करे।

(११) श्रमणभूत प्रतिमा-

सम्यक्त्व आदि पूर्वोक्त दशो बोलों का पालन करते हुए, ग्यारह मास तक, साधु के समान आचरण करे, तीन करण तीन योग से सावद्य कार्य का त्याग करे, सिर के, दाढी के तथा मछो के बालो का लोच करे, शिखा रक्खे, शक्ति न हो तो क्षौर करा ले, रजोहरण की डंडी पर वस्त्र न लपेटे-खुली डंडी का रजोहरण रक्खे, धातु के पात्र रक्खे। अपनी जाति मे भिक्षावृत्ति करके ४२ दोषों से रहित आहार-पानी आदि आवश्यक वस्तुएँ ग्रहण करे। कदाचित् कोई भ्रमवश उसे साधु समझ ले तो स्पष्ट शब्दो मे कह दे कि-मै प्रतिमाधारी श्रावक हूं, साधु नही हूँ। भिक्षा के आहार-पानी आदि को उपाश्रय आदि मे लाकर गृद्धिरहित होकर भोगे। ग्यारह-ग्यारह उपवास के पारण करे।

इस प्रकार ग्यारह प्रतिमाओ के पालने मे ५।। वर्ष लगते है। इसके पश्चात् साधु-दीक्षा धारण कर लेनी चाहिए। कदाचित् शरीर अधिक निर्बल हो गया हो और आयु का अन्त सन्निकट ही आ गया प्रतीत हो और जीवित रहने की आशा न हो तो सलेखना करके समाधि पूर्वक ही शरीर का त्याग करना चाहिए। इस प्रकार श्रावक तीन प्रकार के है-

(१) सम्यक्त्वधारी जघन्य श्रावक है,

(२) बारह व्रतधारी मध्यम श्रावक है और

(३) प्रतिमाधारी उत्कृष्ट श्रावक होते है।

जिन शासन शिरोमणि, शासननिष्ठ, धर्मप्राण श्रावकरत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी अब इस उम्र मे भी प्रतिमा को धारण करने का चितन-मनन कर रहे है ।

अविकल इन्द्रियाँ

लम्बी आयु भी कदाचित् पुण्ययोग से मिल गई तो भी उससे आत्मा का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। अगर इन्द्रियॉ यथायोग्य कार्य न करती हो तो जीवन प्राय व्यर्थ हो जाता है। कोई जन्म से अन्धा होता है, कोई बहिरा होता है, कोई गूँगा होता है। ऐसे पुरुषो के लिए जीवन भारभूत हो जाता है और वे आत्मार्थ की साधना नही कर सकते। आत्म-साधना के लिए परिपूर्ण और नीरोग इन्द्रियो को आवश्यकता होती है। शास्त्र मे कहा है -

जाविंदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे

अर्थात् जब तक इन्द्रियॉ क्षीण नही होती तब तक धर्म का आचरण कर ले। कान से बहिरा धर्मश्रवण नही कर सकता और धर्मश्रवण के बिना मोक्ष की प्राप्ति होना कठिन है, अन्धा आदमी धर्मश्रवण करके भी जीवो की दया नही पाल सकता। अतएव पॉचो इन्द्रियों का नीरोग होना बहुत आवश्यक है। इन्द्रियॉ की सफलता और नीरोगता होना प्रबल पुण्य का उदय समझना चाहिए। सौभाग्य से जिन्हे ऐसी इन्द्रियॉ प्राप्त हुई है उन्हे धर्म का आचरण करके इन्द्रियॉ को सार्थक बनाना चाहिए। विषयो मे लगाकर महान् पुण्य से प्राप्त हुई सामग्री के बदले पाप उपार्जन नही करना चाहिए। जो लोग परिपूर्ण इन्द्रियॉ पाकर उन्हे भोगो में लगाते है, वे चिन्तामणि को कौवा उडाने के लिए फैंक देने वाले मूर्ख पुरुष के समान है।

उदारमना, श्रावक रत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी को अपनी स्वय की अनन्तानन्त पुण्य वाणी से सभी इन्द्रियां पूर्णतया स्वस्थ मिली है, वे नीरोग है । आपने अपनी सभी इन्द्रियो को वश मे कर रखा है ।



मनुष्यभव



संकलनकर्त्ता **सम्पतराज कटारिया**, बेंगलोर

मानव भव कितना दुर्लभ है, इस विषय का थोड़ा-सा प्रतिपादन और किया जाता है, जिससे पाठक अपने जीवन का वास्तविक मूल्य समझ सकें और महामूल्यवान् जीवन का सदुपयोग करके अपने कल्याण में प्रवृत्त हों। पहले आत्मा अवकाही निगोद में अर्थात् अव्यवहार राशि मे अनन्त काल तक रहा। वहाँ एक-एक श्वास में अठारह (अकाम निर्जरा होने पर) अनन्त पुण्य की जब वृद्धि हुई तब नित्यनिगोद से निकल कर इतर-निगोद-व्यवहार राशि में उत्पन्न हुआ। बहुत-सा काल व्यवहार राशि में बिताने के पश्चात् जब फिर अनन्त पुण्य का उदय हुआ तब बादर अवस्था प्राप्त हुई। अर्थात् स्थावर हुआ। स्थावर जीवों की अनेक जातियों में कुलों मे और अनेक योनियों में भटकता रहा। वह इस प्रकार -

(१)**पृथ्वीकाय (मिट्टी)**- इस की सात लाख जातियाँ हैं जातियों का हिसाब इस प्रकार है.- पृथ्वीकाय के मूल भेद ३५० हैं। इनकों पाँच वर्ण, दो गंधर पाँच रस, आठ स्पर्श और पाँच संस्थान से अनुक्रम से गुणाकार करने पर ३५० x ५ x २ x ५ x ८ x ४ = ७००००० जातियाँ पृथ्वीकाय की होती है। इसी प्रकार अपूकाय, तेजस्काय और वायुकाय के विषय में समझ लेना चाहिए। जिसकी जितनी लाख जातियाँ हों, उसका मूल आधा सैकडा ग्रहण करके पूर्वोक्त वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थान से गुणा करने पर निश्चित जाति की संख्या निकल आती है। इसकी तात्पर्य यह हुआ कि जिसका वर्ण, गंध, रस स्पर्श और संस्थान-जहाँ पाँचों एक-से हों उसकी एक जाति कहलाती है, और किसी भी एक में अन्तर पड जाय तो जातियाँ भिन्न हो जाती है। माता के पक्ष को जाति कहते है। सब जीवों की जातियाँ ८४ लाख है। यथा- भ्रमर की मूल जाति तो एक हैं, मगर कोई भ्रमर पुष्प का, कोई लक्कड का कोई गोवर का होता है। इस तरह तीन प्रकार के भ्रमर गिने जाते हैं। ऐसे ही सबके कुल भी भिन्न भिन्न है। पितृपक्ष को कुल कहते हैं। कुलों की संख्या एक करोड साढे सत्तानवे लाख करोड है। यह संख्या पन्नवणसूत्र मे कही है। तत्त्व केवलीगम्य। और बारह लाख करोड कुल है। वनस्पतिकाय कि चौबीस लाख योनियाँ (जातियाँ) हैं। इनमे दस लाख प्रत्येक वनस्पति की और चौदह लाख साधारण वनस्पति की है। जातियाँ हैं। अठाईस करोड कुल हैं। उत्कृष्ट आयु दस हजार वर्ष की है। इसमें निगोद के आश्रित जीव ने अनन्त काल व्यतीत किया है। अनन्त पुण्य की वृद्धि होने पर एकेन्द्रिय अवस्था त्याग कर द्वीन्द्रिय अवस्था प्राप्त की।

द्वीन्द्रियादि त्रस-काय-इनमे द्वीन्द्रिय जीवों की दो लाख जातियाँ है। सात करोड कुल हैं उत्कृष्ट आयु बारह वर्ष की है। फिर अनन्त पुण्य की वृद्धि होने पर बड़ी कठिनाई से त्रीन्द्रिय पर्याय की प्राप्ति हुई। इसकी दो लाख जातियाँ है, आठ लाख करोड कुल हैं और ४६ दिन की उत्कृष्ट आयु है। वहाँ से अनन्त पुण्य की वृद्धि होने पर चौ-इन्द्रिय पर्याय पाई। इसकी दो लाख जातियाँ हैं, नौ लाख करोड कुल हैं और छह महीने की आयु है। यह द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चौइन्द्रिय जीव विकलत्रय कहलाते हैं। इन्हें विकलेन्द्रिय भी कहते हैं। इन तीन विकलेन्द्रिय जीवो में जन्म-मरण करके संख्यात काल व्यतीत किया है।

निगोद से लेकर असज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय तक की अवस्थाओ में जीव पराधीन रह कर भूख, प्यास, शीत, उष्ण, छेदन भेदन आदि की विविध वेदनाएँ सहन करता रहा। इन वेदनाओ को सहन करने से भी अकामनिर्जरा होती है। यह भी पुण्यवृद्धि का कारण है।

विकलेन्द्रिय जीवो की नाना पर्यायों में परिभ्रमण करते-करते अनन्त पुण्य की वृद्धि होने पर असंज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय अवस्था प्राप्त हुई। फिर अनन्त पुण्य की वृद्धि होने पर संज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय

हुआ। इन सज्ञी और असज्ञी तिर्यञ्च पंचेन्द्रियो की चार लाख जातियॉ है और पॉच भेद है। पॉचो भेदो का विवरण इस प्रकार है-

(१) **जलचर** (पानी मे रहने वाले मच्छ, कछुवा आदि जीव) के साढे बारह करोड कुल है। असंज्ञी और संज्ञी दोनो प्रकार के जलचर जीवो की उत्कृष्ट आयु करोड पूर्व की है।

(२) **थलचरो** (पृथ्वी पर चलने वाले गाय, घोडा आदि प्राणियो) के दस लाख करोड कुल है। असंज्ञी जलचर की उत्कृष्ट आयु चौरासी हजार वर्ष की है और संज्ञी की तीन पल्योपम की है।

(३) **खेचरों** (आकाश मे उडने वाले कबूतर, तोता आदि पक्षियो) के बारह लाख करोड कुल है। असंज्ञी खेचर की उत्कृष्ट आयु पल्य के असंख्यातवे भाग है।

(४) **उरपरिसर्पो** (रेंगकर चलने वाले सॉप, अजगर आदि प्राणियो) के नौ लाख करोड कुल है। असंजी उरपरिसर्प की उ०आयु ५३ हजार वर्ष की संजी उरपरिसर्प की करोड पूर्व की है।

(५) **भुजपरिसर्प** (भुजाओ के बल से चलने वाले चुहे आदि प्राणियो) के नौ लाखकुल है। असज्ञी भुजपरिसर्प की उत्कृष्ट आयु बयालीस हजार वर्ष की है और सज्ञी भुजपरिसर्प की करोड पूर्व की है। इन पॉचो मे जीव लगातार आठ भव कर सकता है। इन आठ मे से सात भव सख्यात आयु वाले एक भव असंख्यात वर्ष को आयु वाला होता है।

इस प्रकार विविध प्रकार की अवस्थाओ मे भीषण दु ख भोगता-भोगता जीव कभी नरक मे चला जाता है। नरक के जीवो की चार लाख जातियॉ है और पच्चीस लाख करोड कुल है। नारकी जीवो को उत्कृष्ट आयु ३३ सागर की है। नरक मे एक साथ एक ही भव होता है। लगा्तार दूसरा भव नही होता। अर्थात् नरक जीव नरक से निकल कर फिर अगले भव मे नरक मे उत्पन्न नही होता। नरक और देवगति का एक-एक ही भव होता है। नरक जीव मरकर नरक मे नही उत्पन्न होता और देव मर कर देव नही होता। इसके अतिरिक्त नरक का जीव मरकर देव नही होता और देव मरकर नारक नही होता। इसका कारण यह है कि कर्म करने का विशेष स्थल मर्त्यलोक (मध्यलोक) है। यहां किये हुए शुभ कर्मो का फल देवगति मे जाने पर मिलता है और अशुभ कर्मो का फल नरकगति मे जाने पर मिलता है। जैसे-कोई मनुष्य मौज शौक छोडकर, प्रमादरहित होकर कमाई करता है तो वह अपने घर जाकर सुख से आराम करता हैं। पर जो आदमी दुकान पर आराम करता है और प्रमाद मे डूबा रहता है तथा धन का अपव्यय करता है, उसे घर जाकर भूखो मरना पडता है, गरीबी आदि के कष्ट सहन करने पडते है। दुकान को मध्य लोक समझना चाहिए और घर को नरक-स्वर्ग समझना चाहिए। परिभ्रमण करते-करते जीव पुण्ययोग से कदाचित् देवगति मे उत्पन्न हो तो देवों की चार लाख जातियां है और छब्बोस करोड कुल है। वहॉ उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरोपम की है। देवगति मे भी जीव का एक ही भव होता है।

इस प्रकार मनुष्यगति मे आने से पहले जीव को दूसरी तीन गतियो मे लम्बा परिभ्रमण करना पडता है। यह परिभ्रमण करते-करते अनन्त पुण्य का उदय होते पर महामूल्यवान् मनुष्य-पर्याय प्राप्त होती है। इस मनुष्यगति मे चौदह लाख जातियॉ है, बारह लाख करोड कुल है, तीन पल्य की उत्कृष्ट आयु है।

मनुष्यगति मे भी अगर जुगलिया मनुष्य के रूप मे उपजे तो एक ही भव होता है। अगर कर्मभूमि मे भद्रपरिणामी मनुष्य के रूप मे जनमे तो लगातार सात भव मनुष्य के होते है इस प्रकार अनेकानेक कठिनाइयॉ भोगने के बाद मनुष्यगति प्राप्त होती है। सब मिलकर चौरासोलाख जीव योनियॉ है और एक करोड, साढे सत्तानवे लाख करोड कुल है। मनुष्य के अतिरिक्त सत्तर लाख जीवयोनियो से बचकर मनुष्य योनि को पा लेना कितना कठिन है !

श्री प्रज्ञापनासूत्र मे जीवो की ६८ प्रकार की गिनती की। उनमे सबसे थोडे गर्भज बतलाये गये हैं। गर्भज मनुष्य के उत्पन्न होने का स्थल भी बहुत परिमित है। तिर्छे लोक मे अढाई द्वीप के भीतर ही मनुष्य उत्पन्न होते है। सम्पूर्ण लोक का घनाकार परिमाण ३४३ राजू है। उसमे से अढाई द्वीप ४५ लाख योजन मे ही। इस ४५ लाख योजन मे भी दो लाख योजन विस्तार मे समुद्र फैले हुए है। इनके अतिरिक्त द्वीप की भूमि में भी नदियॉ है, पहाड है, वन आदि हैं, जहॉ मनुष्यो की आवादी नहीं होती। इस तरह विचार करने पर भी यही प्रतीत होता है कि मनुष्यभव मिलना वहुत कठिन है।

उत्तम कुल

आर्यदेश में मनुष्य जन्म होने पर भी उत्तम कुल का योग मिलना अत्यन्त कठिन है। जो महापुण्यशाली होता है, उसी का उत्तम कुल में जन्म होता है। कितनेक कुलीन मनुष्य पुत्र न होने के कारण बहुत संतप्त रहते है। किन्तु पूर्वोपार्जित प्रबल पुण्य के बिना पुत्र की प्राप्ति नहीं होती। संसार मे पुण्यशाली जीव थोडे ही होते हैं। नीच कुलों में देखा जाय तो पापी जनों की उत्पत्ति अधिक दिखाई देती हैं। इसका कारण यही है कि संसार मे पापी जीव बहुत देखे जाते हैं। जाति मात्र से ही किसी को उच्च या नीच नही कहा जा सकता। क्योकि शरीर की आकृति, अवयव, शरीर के भीतर के विभाग सभी मनुष्यो के समान होते हैं। अतएव मूलत. मनुष्य जाति एक कहलाती है। कहा भी है-मनुष्यजातिरैकेव जातिकर्मोदयोद्भवो। वास्तव मे उच्चता और नीचता गुण-कर्मो से आती है। उत्तम गुणों वाले सत्कर्म करने वाले मनुष्य उच्च गिने जाते हैं और नीच कर्म करने वाले मनुष्य नीच गिने जाते है। श्री उत्तराध्ययन सूत्र, अध्याय २५ वें में श्री जयघोष मुनि कहते हैं -

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तियो ।
वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥

अर्थात् - कर्म के अनुसार बाह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहलाते है।

ब्रह्मजानातीति ब्राह्मणः अर्थात् जो ब्रह्म या आत्मा को जानता हैं - आत्मज्ञान प्राप्त करता है वही ब्राह्मण कहलाता है।

क्षतात् त्रायते यः सः क्षत्रिय. अर्थात् जी निर्बलों की रक्षा करता है वही क्षत्रिय कहलाता है। तथा वाणिज्य (नीतिपूर्वक व्यापार) करने वाला वैश्य कहलाता है और

सेवा करने वाला शूद्र कहलाता है। दूसरे ग्रन्थो मे भी कहा है -

न विशेष इति वर्णानां सर्व ब्रह्ममयं जगत् ।
ब्राह्मणपूर्व श्रेष्ठं हि कर्मणा वर्णतां गतम् ॥

- महाभारत, शांतिपर्व.

अर्थात् - वर्ण की कोई विशेषता नही है। यह समस्त जगत् ब्रह्ममय है। पहले सब ब्राह्मण ही थे, फिर जिसने जैसा कर्म किया, वह उसे वर्ण वाला कहलाने लगा।

अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तो

अर्थात् - उत्तम वर्ण वाला भी अधर्म का आचरण करने से नीचता को प्राप्त हो जाता है।

धर्मचर्यया जघन्यो वर्ण . पूर्वपूर्ववर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तो

अर्थात्-नीच वर्ण वाला भी धर्माचरण से उत्तम-उत्तम वर्ण प्राप्त करता जाता है। यह आयस्तंब धर्मसूत्र के प्रश्न २. पटल ४ मे लिखा है।

विश्वामित्रो वसिष्ठश्च, मतंगो नारदोहपि च।
तपोविशेषात्सम्प्राप्ता, उत्तमत्वं न जातितः ॥

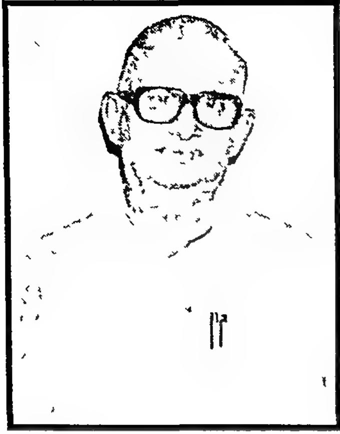
-शुक्रनीति, अध्याय ४, प्रकरण ४.

अर्थात् - विश्वामित्र, वसिष्ठ और नारद ऋषि नीच जाति मे उत्पन्न होकर भी तप की विशेषता के कारण उत्तमता को प्राप्त हुए। अत जाति की कोई विशेषता नही हैं। जैनशास्त्र भी यही कहते हैं-न दीसई जाइविसेस कोई।

जपो नास्ति तपो नास्ति, नास्ति चेन्द्रियनिग्रह. ।
दया दानं दमो नास्ति, इति चाण्डाललक्षणम् ॥

अर्थात् परमात्मा का जप, स्मरण भजन, कीर्त्तन ध्यान, स्तवन आदि न करना, रात-दिन अपने घर-धन्धे मे ही रचा-पचा रहना, व्रत-नियम उपवास आदि न करना, सदा खा-पीकर शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाना और उसी मे आनन्द मानना, भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार न करना, अग्नि की तरह सभी वस्तुओं को हडप जाना, इंद्रियो पर तनिक भी कावू न रखना, सदा मजा-मौज मे तथा परस्त्रियों के साथ विपयभोग में आनन्द मानना किसी भी प्राणी को दु.खी देखकर दिल में अनुकम्पा न आना,

(शेष १८ पेज पर)



आर्य क्षेत्र

सकलन : त्रिलोकचंद सेठिया, बेगलोर

केवल मनुष्य जन्म की प्राप्ति से ही मुमुक्षजनो के इष्ट अर्थ की सिद्धि नही हो जाती। मनुष्यजन्म के साथ दूसरा साधन आर्य क्षेत्र भी मिलना आवश्यक है। जो जीव मनुष्य होकर भी अनार्य क्षेत्र मे उत्पन्न होते है उनका मनुष्य होना व्यर्थ हो जाता है, बल्कि और अधिक अनर्थ का भी कारण बन जाता है। मनुष्य को आर्य क्षेत्र की प्राप्ति होना कितना दुर्लभ है, अब इस बात पर विचार करते है।

सब ओर अनन्तानन्त अलोक के मध्य मे ३४३ रज्जु घनाकार लोक है, जिसमे १९६ घनाकार रज्जु का अधोलोक है। इस अधो (नीचे) लोक मे नारकी जीव तथा भवनपति और वाणव्यन्तर देव रहते है। इस क्षेत्र मे धर्माराधन की सुविधा नही होती है। क्योकि नारकी जीव अपने उपार्जन किये हुए पापो का फल भोगते हुए दु ख ही दु ख मे अपना काल व्यतीत करते है और देव अपने शुभ कर्मो का फल भोगते हुए सुख मे अपना काल अतिक्रमण करते है। लोक के मध्य मे सिर्फ दस रज्जु जितनी जगह मे तिर्छा लोक है और उसमे असंख्यात समुद्ध और द्वीप है। इन असख्यात द्वीप-समुद्रो मे अढाई द्वीपो में ही मनुष्यो की बस्ती है और फिर इन अढाई द्वीपो मे भी दो महासमुद्रो, पर्वतो, नदियो वगैरह को छोडकर केवल १५ कर्म भूमियॉ, ३० अकर्मभूमियॉ और ५६ अन्तर्द्वीप-इस तरह १०१ मनुष्यो के रहने के क्षेत्र है। इनमे से अकर्मभूमियो और अन्तर्द्वीपो में जुगलिया मनुष्य ही रहते है। वे देवो सरीखे पूर्वोपार्जित शुभ कर्मो के पुण्य रूप फल भोगते है, धर्म की तनिक भी आराधना नहीं कर सकते। धर्माराधना के योग्य केवल कर्मभूमि के पन्द्रह ही क्षेत्र है। इन क्षेत्रो मे से पॉच विदेह क्षेत्रो मे तो सदैव धर्म की प्रवृत्ति रहती है, किन्तु पॉच भरत और पॉच ऐरवत क्षेत्रो मे दस-दस कोडाकोडी सागर के अवर्सापणी और उत्सर्पिणी काल मे से नौ कोडाकोडी सागरोपम जितने काल मे युगलिया मनुष्य ही रहते है। वे भी धर्माराधना नही कर सकते। सिर्फ एक कोडाकोडी सागरोपम से कुछ अधिक काल ही धर्म की प्रवृत्ति का रहता है। इन दस क्षेत्रो मे, प्रत्येक क्षेत्र मे बत्तीस-बत्तीस हजार देश है। इनमे से ३१९७४ ॥ अनार्य देश है और सिर्फ २५॥ देश आर्य देश है।

आर्यदेशों के नाम इस प्रकार हैं:-

(१) मगध देश-इसकी राजधानी राजगृही नगरी है और इस देश मे एक करोड छ्यासठ लाख ग्राम है
(२) अग देशराजधानी चम्पा नगरी और पचास लाख ग्राम
(३) बगदेश-ताम्रलिप्ता नगरी और अस्सी हजार ग्राम।
(४) कलिग देश-कचनपुर नगर और अठारह हजार ग्राम।
(५) काशी देश-वाराणसी नगरी और एक लाख पंचानवे हजार ग्राम।
(६) कौशलदेश-साकेतपुर नगर और नौ हजार ग्राम।
(७) कुरुदेश-गजपुर नगर, पचावन हजार ग्राम।
(८) कुशावर्त देश-सौरीपुर नगर और छ्यासठ हजार ग्राम।
(९) पॉचाल देश-कपिलपुर नगर और तीन लाख, तेरासी हजार ग्राम।
(१०) जांगल देश-आइछत्ती नगरी और अट्ठाइस हजार ग्राम।
(११) विदेह देश-मथुरा नगरी, आठ हजार ग्राम।
(१२) सोरठ देश-द्वारिका नगरी, छह लाख अस्सी हजार तीन सौ तेईस ग्राम।
(१३) वत्सदेश-कौशाम्बी नगरी, अट्ठाइस हजार ग्राम।
(१४) सांडिल देश-आनन्दपुर नगर, इक्कीस हजार ग्राम।
(१५) मलय देश-भद्दिलपुर नगर, सात हजार ग्राम।
(१६) वराड-वहुलपुर नगर, अट्ठाईस हजार ग्राम।

(१७) वरणदेश-अछा नगरी, बयालीस हजार ग्राम।

(१८) दशार्ण देश-मृतिकावली नगरी, तेतालीस हजार ग्राम।

(१९) बेदका देश-सोक्तितावती नगरी, तेतालीस हजार ग्राम।

(२०) सिंधुदेश-वीतभय पट्टन, छह लाख पचासी हजार ग्राम।

(२१) सौवीर देश-मथुरा नगरी, आठ हजार ग्राम।

(२२) सूरसेन देश-पावापुर नगर, छत्तीस हजार ग्राम।

(२३) भंगदेश-मिश्रपुर नगर, एक हजार चार सौ बीस ग्राम।

(२४) कुणाल देश-श्रावस्ती नगरी, तेतीस हजार ग्राम।

(२५) लाट देशकोटिपर्व नगरी, दो लाख बयालीस हजार ग्राम।

(२५) केकय देश-श्वेताम्बिका नगरी, दो हजार पॉच सौ ग्राम।

यह देश धर्म वाले हैं, इसलिए आर्य देश कहलाते है। इन आर्यदेशों मे मनुष्य जन्म की प्राप्ति होना महा कठिन है।

अनन्त पुण्यवाणी के उदय से श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का जन्म आर्य क्षेत्र के भारत वर्ष में राजस्थान की मरु माटी बीकानेर जिले के उदयरामसर मे आज से ७५ वर्ष पूर्व वि.सं. १९८५, मिगसर सुद १५ तदनुसार दि. १५-१०-१९२८ को सेठ श्रीमान् भेरुदानजी सिपानी की धर्मपत्नी अ. सौभाग्यवती श्राविकारत्न श्रीमती धन्नीदेवी सिपानी की कुक्षी से हुआ ।

आप अपने जीवन को धर्ममय बनाकर जीवन यापन कर रहे है ।

(पेज १६ का शेष)

उत्तम कुल

सदा षट्काय के जीवो की हिंसा किया करना, मद्यमांस का भक्षण करना, किसी को किंचित् भी दान न देना, महापरिग्रही कंजूस एवं तृष्णावान् होना, कोई उदार दान देता हो तो उसे भी रोककर अन्तराय डालना, आत्मदमन, नियम व्रत-प्रत्याख्यान न करना, यह सब चाण्डाल के लक्षण हैं। जिसमे यह पूर्वोक्त लक्षण न पाये जाते हों, बल्कि जो यथाशक्ति जप, तप, इन्द्रियदमन, दया दानादि सत्कार्य करे उसे उच्चजातीय-उत्तम कुल का कहना चाहिए। ऐसा उत्तम कुल जैन है और उसमें जन्म मिलना तीव्र पुण्य का फल समझता चाहिए।

अनन्तानन्त गुणों के उदय से ही उत्तम कुल अर्थात जैन [illegible] श्रीमान सोहनलालजी सिपानी का जन्म हुआ।

सच्चे श्रावक के लक्षण

कयवयकम्मो तह सीलवं च गुणवं च उज्जुववहारी।
गुरुसुरसूसू पवयणकुसलो खलु भगवओ सद्धो॥

अर्थात्-सम्यक्त्व तथा व्रत आदि श्रावक के कर्मो का सम्यक् प्रकार से समाचारण करने वाला, शीलवान्, गुणवान्, सरल व्यवहार करने वाला गुरुजनो की सेवाभक्ति करने वाला, जिनेन्द्र के प्रवचन मे कुशल जिन भगवान् का श्राद्ध (श्रावक) होता है। (गाथा)

आगारी सामाइयंगाणि, सड्ढी काएण फासए।
पोसहं दुहओ पक्खं, एगरायं न हावए ॥२७॥

-श्री उत्तराध्ययन ।

अर्थात्-श्रद्धावान् गृहस्थ को सामायिक आदि व्रतो का पालन करना चाहिए। कृष्णपक्ष मे और शुक्लपक्ष में पौषधव्रत का आचरण करना चाहिए। एक रात्रि भी बिना धर्मक्रिया के नही गॅवानी चाहिए अर्थात् प्रतिदिन आवश्यक दैनिक धर्मकृत्य अवश्य करना चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा से युक्त श्रावक गृहवास करता हुआ भी सुव्रती कहलाता है। वह मल, मूत्र, रक्त, मांस आदि के पिण्ड इस औदारिक शरीर को त्याग कर यक्ष लोक को प्राप्त होता है अर्थात् देवगति पाकर इच्छानुसार रूप बना लेने वाला वैक्रियशरीर का धारक देव होता है। इसके पश्चात् वह थोडे ही भवों मे जन्म जरा, मरण के तथा आधि, व्याधि, उपाधि के समस्त दु.खो का अन्त करके मुक्ति के अनन्त अक्षय अव्याबाध सुख का अधिकारी बनेगा।

समता मनीषी श्री सोहनलालजी सिपानी अपने जीवन मे सामायिक के रंग में रंगे हुए तथा जिन प्रवचन मे एकमेक होने के कारण इस वर्ष व्यसन मुक्ति के प्रेणता, प्रशांतमना, आगमज्ञ, आचार्य श्री रामलालजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी परम् विदुषी महासतीजी श्री ललित प्रभाजी आदि ठाणा-४ का वर्षावास अपने स्व धर्म स्थानक सिपानी भवन कोरमंगला, बेंगलोर में कराकर अपना तथा अपने परिवार के साथ जन-साधारण के लिए आत्म उत्थान का धर्म कार्य करा रहे हे ।



दीर्घ आयु

सकलन : **यशवंतकुमार बोथरा**, बेगलोर



उत्तम कुल मिल जाने पर भी यदि आयु अल्प मिले तो कोई प्रयोजन सिद्ध नही होता। अतएव दीर्घायु का मिलना भी आवश्यक है। जिसने पहले महान् और उग्र पुण्य का उपार्जन किया है, उसीको समस्त सामग्री के साथ दीर्घ आयु की प्राप्ति होती है। तीसरे और चौथे आरे के मनुष्यो की आयु पूर्व-परिमित थी। उनकी आयु के जितने सैकड होते है, आजकल उतने श्वासोच्छवास की भी आयु नही होती। सौ वर्ष के कुल श्वासोच्छवास चार अरब, सात करोड, अडतालीस लाख और चालीस हजार होते है। इसमे भी सुखपूर्वक सौ वर्ष पूरा करने वाला तो कोई विरला ही भाग्यशाली होता है। कहा भी है -

आयुर्वर्षशतं नृणां परिमितं रात्रौ तदधे गतम्,
तस्यधिस्य परार्धचार्धमपर-बालत्ववृध्दत्वयो ।
शेषं व्याधि वियोगदु खसहितं सेवादिभिर्नीयते,
जीवे वारितंरगचञ्चलतरे सौख्य कुत प्राणिनाम्?

सारांश-आजकल मनुष्य की उत्कृष्ट आयु करीब सौ वर्ष की होती है। इस सौ वर्ष की जिन्दगी मे मनुष्य को कितना सुख मिलता है, इस बात का बनिये की तरह हिसाब करके देखे।

एक वर्ष के ३६० दिन होते है और सौ वर्ष के ३६,००० दिन हुए।

इनमे से आधे अर्थात् अठारह हजार दिन तो निद्रा मे चले गये। कहा है-निद्रा गुरुजी बिन मौत मूवा अर्थात् हे गुरुजी ! निद्रा बिना मौत की मौत है ! निद्रा मे सुख-दु ख का स्पष्ट भान नहीं रहता।

शेष अठारह हजार दिन रहे। उनके तीन भाग कर ले।

एक भाग अर्थात् छह हजार दिन बाल्यावस्था मे व्यतीत हो गये। यह दिन भी अज्ञान अवस्था मे ही व्यतीत किये समझने चाहिए, क्योकि बालक को सत्य-असत्य का भान नही होता।

दूसरे छह हजार दिन वृद्धावस्था मे व्यतीत होते है। वृद्धावस्था महादु ख का कारण है। शास्त्र मे जगह-जगह कहा है-जन्मदु ख जरादु ख इस अवस्था मे मन मौज-शौक भोगने की इच्छा करता है, किन्तु इन्द्रियॉ बहुत निर्बल हो जाती है। उत्तम खान-पान आदि का सेवन किया जाय तो उलटा दु ख बढ जाता है।

वलिभिर्मुखमाक्रान्त पलितैरङ्कितं शिर ।
गात्राणि शिथिलायन्ते, तृष्णैका तरुणायते ॥

अर्थात्-बुढापे मे चमडी मे सिकुडन पड गई है, मस्तक के वाल सफेद हो गये है, और सब अङ्गोपाङ्ग ढीले पढ गये है सिर्फ एक मात्र तृष्णा हरी-भरी है !

भोग न भुक्ता वयमेव भुक्ता , तपो न तप्त वयमेव तप्ता ।
कालो न यातो वयमेव याता तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा. ॥

अर्थात्-हमने भोग नही भोगे बल्कि भोगो ने ही हमे भोग लिया है। हमने तप तो तपा नहीं, फिर भी दु ख रूपी ताप से मन सतप्त हो गया- शरीर दुर्बल हो गया। लोग कहते है, समय वीत गया, पर समय नही बीता हम स्वय बीत गये ! हम जीर्ण हो गये, पर तृष्णा जीर्ण नहीं हुई।

बुढापे मे ऑखो से ठीक तरह दिखाई नहीं देता, कानो से सुनाई नहीं देता, दांत गिर जाने से खाने मे मजा नहीं आता खुराक पूरी तरह चबाया न जाने के कारण पचता नहीं है। अपच अनेक रोगों को उत्पन्न करता है। वूढे आदमी का शरीर अशक्त, निकम्मा और अप्रिय हो जाता है। उसकी ऐसी हालत देखकर स्वजन भी अपमान करते हैं। इस प्रकार वृद्धावस्था मे अनेक दु.ख है। इस

प्रकार बालक और वृद्ध अवस्था के बारह हजार दिन बेकार गये ! अब छह हजार दिन युवावस्था के रहे। उन मे भी कभी-कभी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं और रोगजन्य वेदना आकुल-व्याकुल बना देती है। कदाचित् रोग से छुटकारा मिला तो किसी स्वजन के वियोग का दु.ख आ पडता है और विलाप ही विलाप मे बहुत से दिन निकल जाते हैं। कदाचित् इससे शान्ति मिली तो लेन-देन,लाभ-हानि, इज्जत-आबरू, तेजी-मन्दी, रगडा-झगडा, सगाई-विवाह आदि अनेक उपाधियाँ लग जाती है ! प्रतिदिन हिसाब रखने वाले भाइयो ! अब जरा विचार करके देखा कि अगर आपकी आयु पूरे सौ वर्ष की हो तो भी आप कितने दिनों तक सुख भोग सकते ? और भी कहा है -

गब्भाइ मज्ंति बुयाबुयाणं, नरा परा पंचसिहा कुमारा ।

जोवणगा मज्झिमा थेरगायं, चयंति आउक्खय पलीणा ॥

संभोग के समय नौ लाख संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य स्त्री के गर्भाशय मे उत्पन्न होते हैं। इनमें से एक, दो या चार जीवित रहते हैं, शेष सब पुरुष के वीर्य स्पर्श से मर जाते हैं। कुछ गर्भाशय में तत्काल, कुछ गर्भाशय मे कुछ महीना बीतने पर और कुछ असह्य संयोग मिलने से मर जाते हैं। कई मनुष्य जनमते समय आडे आ जाते हैं तब उन्हें काट-काट कर निकालना पडता है। जन्म होने के अनन्तर कितने हो मनुष्य अज्ञान के कारण बचपन में ही मर जाते हैं और कितने ही भर जवानी में काल के ग्रास बन जाते हैं। बहुत थोडे मनुष्य विविध प्रकार के विघ्नों से बचकर वृद्धावस्था तक जीवित रह पाते हैं, फिर भी आखिर एक न एक दिन उन्हें भी शरीर त्याग कर दूसरी पर्याय धारण करनी पडती है। चक्की के दो पाटों के बीच जो दाना आ गया है, वह साबत नहीं रह सकता। चक्की के कुछ ही चक्कर फिरने पर वह पिसे बिना नहीं रहता। इसी प्रकार जगत् में काल रूपी चक्की (घन्टी) है। उसके दो पाट है।

आदित्यस्य गतागतैरहरहैः सक्षीयते जीवितम्,
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः कालो न विज्ञायते ।
द्दन्द्वा जन्मजराविपत्तिमरण त्रासश्च नोत्पद्यते,
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूत जगत् ॥

अर्थात्-सूर्य का उदय और अस्त होने से दिनोदिन आयु घटती जाती है। फिर भी अनेक कामकाज और उपाधियो मे फँसे हुए जीव को काल का ख्याल नही आता। खुद जन्म जरा मरण के दु ख भोगते देखता है, फिर भी त्रास नही उत्पन्न होता कि मेरी भी यही अवस्था होने वाली है- मेरी भी मृत्यु होने वाली है, इसलिए थोडा-बहुत धर्मकार्य कर लूँ ! सारा ससार मानो मोह की मदिरा मे छका हुआ बेभान हो रहा है !

इन दोनों पाटों के बीच समस्त संसारी जीव फँसे हुए है। ऐसी स्थिति मे इन जीवों को काया का क्या भरोसा है? कौन कह सकता है कि मेरा शरीर कल तक भी कायम रह सकेगा ! अगले क्षण का भी तो विश्वास नहीं किया जा सकता ! तात्पर्य यह है कि इस जीवन का किसी समय अवश्य ही अन्त आना है, पर वह समय कौनसा होगा यह नही कहा जा सकता। करोडों उपाय करने पर भी मृत्यु से कोई बच नही सकता। अनादिकाल से लेकर आजतक एक भी मनुष्य मौत के चगुल से नही बच सका और किसी का बच सकना सम्भव भी नहीं है। काल अच्छे बुरे, राजा, रंक, बालक, वृद्ध जवान आदि किसी का भी विचार नहीं करता।

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी अनन्त पुण्यवाणी के कारण इस भव में आध्यात्मिकता से जीवन जी रहे है। आप दीर्घायु आयु वाले श्रावकरत्न है । सामाजिक कार्यो एवम् धार्मिक अनुष्ठानों मे आप अपना अमूल्य समय तन-मन-धन के साथ लगा रहे है । लम्बी आयु मिलने पर भी आप हमेशा अपना धार्मिक नित्य-नियम, व्रत-त्याख्यान से अपनी आत्मा को उज्जवल बना रहे है।

इस प्रकार शांतचित होकर विचार करने से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि लंबी आयु प्राप्त होना बहुत कठिन है। जिसे लम्बी आयु मिली है वह प्रबल पुण्य का भागी है। हे मनुष्य ! तनिक विचार कर कि असीम अनन्त पुण्य का व्यय करके तूने जो दीर्घ आयु प्राप्त की है, उसके बदले में तू क्या ले रहा है ? कहीं पुण्य की अनमोल पूँजी गँवा कर तू पाप तो उसके बदले नहीं खरीद रहा है? बन्धु ! धर्म-कार्य कर, प्रमाद न कर। इससे तेरी पुण्य की पूँजी बढेगी।



सद्गुरु का समागम

-. सकलन ·-

रतनलाल रांका, चैन्नई



मनुष्य जन्म, उत्तम कूल, दीर्घ आयु आदि जीव को अनन्त बार मिली है, फिर भी कार्यसिद्धि नही हुई क्योकि जब तक सातवे साधन सद्गुरु की सङ्गति न मिल जाय तब तक वह सब वृथा है। सद्गुरु का समागम मिलना बडा कठिन है। इस जगत् मे पाखण्डी, दुराचारी, स्वार्थी, ढोङ्गी गुरु तो गलियो-गलियो मे मारे-मारे फिरते है। मगर वे पत्थर की नौका के समान है, जो आप डूबते और अपने आश्रितो को डुबाते है। ऐसे कुगुरुओ की सङ्गति करने से तो बिना गुरु का रहना ही क्या बुरा है? जीवन-शुद्धि और आत्मकल्याण के लिए सयमी गुरुओ के समागम की आवश्यकता है। ऐसे कनक-कामिनी के त्यागी, पथ प्रदर्शक विद्वान् गुरुओ का समागम होना कठिन है। किसी ने कहा है -

पाखण्डी पूजाय छे, पण्डित पर नहीं ध्यान ।
गोरस लो घर घर कहे, दारू मिले दुकान ॥

दूध जैसे उत्तम पदार्थ को बेचने वाली गुवालिन घर घर फिरती है और कहती है-दूध लो, दूध लो। फिर भी दूध के ग्राहक बहुत कम होते है। किन्तु शराब जैसी अपवित्र और निन्दनीय वस्तु दुकान पर ही बिकती है फिर भी वहाॅ लेने वालो की भीड लगी रहती है। इसी प्रकार गाॅव गाॅव विचरने वाले उत्तम ज्ञानी गुरु को मानने वाले जगत् मे थोडे होते है और ज्ञानहीन तथा पाखण्डियो का सत्कार-सन्मान और पूजा-भक्ति करने वाले बहुत होते है। यहाॅ तक कि कई धर्मान्ध तो अपनी प्यारी पत्नी को भी सेविका के रूप मे उन्हे समर्पित कर देते है। इस से अधिक मूढता और क्या हो सकती है? कहा भी है -

गुरु लोभी चेला लालची, दोनों खेले दाव ।
दोनों डूबे बापडे, बैठ पत्थर की नाव ।।

लोभी गुरुओ को चेले भी लालची मिलते है। दोनो अपने अपने स्वार्थ के दाव खेलते है और एक दूसरे को तथा दुनियाॅ को भरमा कर तरह-तरह की कुचाले सिखाते है। मगर ऐसे गुरु और चेले आखिर ससार-सागर के कीचड मे फॅस कर अनेक दु ख उठाते है। ऐसे पाखण्डी अपनी आत्मा का कल्याण किस प्रकार कर सकते है? जो अपने नीच स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए ही गुरु बना है और जिसका चित स्वार्थसाधना मे निरन्तर संलग्न रहता है, वह कैसे स्वयं तिरेगा और कैसे दूसरो को तारेगा।

कानिया मानता कर, तू चेलो मैं गुर।
रूपया नारियल धर, भावे डूब के तर ॥

पाखण्डी गुरु अपने भोले चेले से कहता है-हे कानिया ! मेरी मान्यता कर तू मेरा चेला है और मैं तेरा गुरु हूॅ। तू रुपया और नारियल मेरे चरणो में रख दे, फिर चाहे तू डूब या तर, इसकी मुझे चिन्ता नहीं है ।

इस प्रकार जो इन्द्रियो के गुलाम हैं, जिनका मन नियंत्रण मे नहीं है, जो कनक और कान्ता के कामी हैं, जिन्हें इहलोक और परलोक की तनिक भी चिन्ता नहीं है, जो षट्काय का आरंभ करने वाले है, गृहस्थो से भी अधिक जीवघात करते हैं, जो लोभी और लम्पट हैं वे अपने चेलों को भी डुवोते हैं और आप भी डूबते हैं। जो गुरु लोभी होगा वह दूसरो का रुख देखकर ही वात करेगा। वह सच्चा उपदेश और ज्ञान नहीं दे सकता। वह

सोचेगा-अगर भक्त को कोई अप्रिय बात कह देंगे तो उसे बुरा लगेगा और उससे मुझे द्रव्य की प्राप्ति नहीं होगी।

ऐसा सोचकर वे श्रोताओं का मन प्रसन्न करने के लिए मीठी-मीठी बातें कहते और अपना मतलब गांठ लेते हैं। श्रोता डूबे या तरे, इससे उन्हें कोई वास्ता नहीं। उन्हें तो नकद नारायण की प्राप्ति से सरोकार है। ऐसे पाखंडी गुरुओं के विषय में ठीक ही कहा है :-

छोड़िके संसार छार छार से विहार करे,
माया को निवारी, फिर माया दिलधारी है।
पिछला तो धोया कीच, फिर कीच बीच रहे,
दोनों पथ खोये, बात बनी सो बिगारी है।
साधु कहलाय नारी निरखै लोभाय और,
कंचन की करै चाह प्रभुता प्रसारी है।
लीनी है फकीरी, फिर अमीरी की आश करे,
काहे को धिक्कार सिर की पगड़ी उतारी है ॥

जो सुज्ञ जन कल्याणकारी सत्यधर्म की प्राप्ति की इच्छा रखते हों, उन्हें कनक और कान्ता के त्यागी, निर्लोभ, ज्ञानवान् गुरु की खोज करके उन्हें स्वीकार करना चाहिए। ऐसे सदगुरु ही मंगलकारी हो सकते हैं। उनके उपदेश-प्रकाश से ही मिथ्यात्व रूपी अंधकार का विनाश होगा। ऐसे सद्गुरु की पहचान करने के लिए शास्त्रों में पच्चीस गुण बतलाये गये हैं। जिसमें यह गुण हों वही सच्चा उपदेशक गुरु है।

पंचमहाव्रत धारी, संत महाराज ही सच्चे साधु-साध्वीजी है । जिनेश्वर देव द्वारा बतलाए गए मार्ग पर चलने वाले, तीर्थकर प्रभु द्वारा स्थापित चतुर्विध संघ अर्थात् साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रुपी संघ के नायक आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म. सा. का संघ हमें प्राप्त हुआ है । आचार्य श्री जवाहरलालजी म. सा., आचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा., आचार्य श्री नानालालजी म. सा. और आचार्य श्री रामलालजी म. सा. की सेवामें अपना जीवन व्यतीत करने वाले बेंगलोर निवासी श्री सोहनलालजी सिपानी धन्य है । उन्हें सद् गुरु का समागम मिला हुआ है, जिसका आप पूरा-पूरा लाभ उठा भी रहे है ।

श्रावक के गुणों का छंद

(मनहर सवैया)

मिथ्यामत भेद टारी भया अणुव्रतधारी,
एकादश भेद भारी हिरदे बहतु है।
सेवा जिनराज की है यही सिरताज की है,
भक्ति मुनिराज की है चित्त में चहतु है।
विषै है निवारी रीति भोजन अभक्ष्य प्रीति,
इन्द्रिन को जीति चित्त थिरता गहतु है।
दया भाव सदा धरै मित्रता प्रमाण करै,
पाप-मल-पंक हरै श्रावक सो कहतु है॥

अर्थात्-सम्यक्तत्व प्राप्त होने के पश्चात् जो श्रावक व्रत धारण करते हैं, वे मिथ्यात्वमय समस्त रीति-रिवाजों का त्याग कर देते है और अणुव्रतो, गुणव्रतों तथा शिक्षाव्रतो का सम्यक् प्रकार से पालन करते है।

अवसर प्राप्त होने पर श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं का भी आचरण करते है। ऐसे श्रावक जिनेश्वर भगवान् का आज्ञा में ही धर्म मानते हैं और सदैव निर्ग्रन्थ मुनिराजो की सेवा करते हैं।

विषय कषाय को मन्द करने के लिए सदा उद्यत रहते है।

जिह्वा-इन्द्रिय वश में होने से इन्द्रियो की लोलुपता का त्याग कर देते हैं और जितेन्द्रिय होने से चित्तवृत्ति को भी स्थिर रखते है।

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी वे समस्त प्राणियों पर दयादृष्टि रखने वाले, सब पर मैत्रीभाव रखने वाले, अनाथ अपंग दुखी जीवों पर दया करके यथाशक्ति सहायता करने वाले श्रावक है । कठोर-क्रूर वृत्ति का त्याग करके सदा नम्र भाव धारण करते हैं। जो इतने गुणों के धारक होते हैं वे श्रावक कहलाते हैं। ऐसे श्रावक रत्न, श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी इन सब गुणों की एक आदर्श मिसाल है ।



सद्वक्ता के गुणों से युक्त सोहनलालजी सिपानी

संकलन : **उदयराम दक**, हुण्सुर-लसानी

(१) **दृढ़ श्रद्धा-** जब उपदेशक स्वयं पक्की श्रद्धा वाला होता है, तभी वह श्रोताओं की शंका का निवारण करके उन्हे श्रद्धावान् बना सकता है।

(२) **वाचनाकलाकुशल-** वांचने और सुनाने की कला मे कुशल हो। कोई भी शास्त्र वांचते समय अटके नही, शुद्धता और सरलता से शास्त्र सुनावे। कठिन और रूखे विषय को भी सुगम और सरस करके कहे।

(३) **निश्चय-व्यवहारज्ञाता-** निश्चयनय और व्यवहारनय के स्वरूप को समझने वाला हो। शास्त्र का कौन-सा कथन किस नय से है, इस बात को भलीभॉति नही समझने वाला वक्ता अपने श्रोताओ को भ्रम मे डाल देता है और स्वय भी भ्रम मे पड जाता है। इससे कई प्रकार के अनर्थ हो जाते है।

(४) **जिनाज्ञा के भंग से डरना-** वक्ता अपनी ज्ञान मे सर्वज्ञ भगवान् की आज्ञा के विरुद्ध कोई बात न कहे। एक देश के राजा की आज्ञा भंग करने से भी दण्ड का भागी होना पडता है तो तीन लोक के नाथ तीर्थङ्कर भगवान् की आज्ञा का लोप करने वाले की क्या दुर्गति होगी? ऐसा जानकर वीतराग भगवान् की आज्ञा के विरुद्ध प्ररूपण न करे।

(५) **क्षमा-** जो क्रोधी होगा वह अपने दुर्गुण से डर कर क्षमा आदि धर्मो की यथातथ्य प्ररूपणा करने मे भी संकोच करेगा। इसके अतिरिक्त कभी क्रोध के आवेश मे आकर अनुचित बात भी कह देगा-रंग मे भंग कर देगा। अत वक्ता को अपना विवेक सदा जागृत रखने के लिए क्षमावान् अवश्य होना चाहिए।

(६) **निरभिमानता-** विनयवान् की बुद्धि बडी प्रवल रहती है और इस कारण वह यथातथ्य उपदेश कर सकता है। अभिमानी पुरुष सत्य-असत्य का विचार नही करता। अपनी असत्य बात को अनेक हेतु लगा कर सिद्ध करने की चेष्टा करता है और दूसरे की सत्य बात को भी मिथ्या सिद्ध करना चाहता है।

(७) **निष्कपटता-** जो सरल होता है वही यथावत् उपदेश कर सकता है। कपटी पुरुष अपने दुर्गण को छिपाने के लिए सच्ची बात को उलट देता है।

(८) **निर्लोभता-** निर्लोभ उपदेशक सदा बेपरवाह होता है- किसी से दबता नही है, किसी की खुशामदी नही करता-वह राजा और रङ्क - सबको एक सरीखा सत्य उपदेश कर सकता है।

गुकारस्त्वन्धकार स्याद्, रुकारस्तन्निरोधक ।
अन्धकार विनाशित्वाद् गुरुरित्यभिधीयते ॥

अर्थात्-गुरु पद में गु का अर्थ अन्धकार है और रु का अर्थ उसे रोकने वाला है। इस प्रकार अन्धकार को रोकने वाला होने से गुरु कहलाता है। लोभी और खुशामदी वक्ता श्रोताओ को प्रसन्न करने की नियत से सत्य बात को भी बदल देता है।

(९) **अभिप्रायज्ञता-** जो-जो प्रश्न श्रोताओ के मन में उत्पन्न हो, उन्हे उनकी मुखमुद्रा से समझ कर स्वयमेव समाधान कर दे।

(१०) **धैर्य-** प्रत्येक विषय को धैर्य के साथ ऐसी स्पष्टता से प्रतिपादन करे जिससे वह श्रोताओ के दिल मे बैठ जाय। प्रश्नो से क्षुब्ध न हो। मधुरता से समाधान करे।

(११) **हठी नही-** यदि किसी प्रश्न का उत्तर न जानता हो या तत्काल न सूझे तो हठ पकड कर भिन्न प्रकार की स्थापना न करे। नम्रता पूर्वक स्पष्ट रह दे कि मुझे इस प्रश्न का उत्तर ज्ञात नहीं है। अत किसी ज्ञानी से पूछ कर उत्तर दूगा।

(१२) **निन्द्यकर्म** से रहित-सच्चा वक्ता वही है जो चोरी, व्यभिचार, विश्वासघात आदि निन्दनीय कर्मो से दूर रहता है। जो

सद्गुणी होगा वही दूसरों से नहीं दबेगा।

(१३) **कुलीनता-** कुलहीन वक्ता होगा तो श्रोता उसकी मर्यादा नहीं रक्खेंगे और उसके वचनों का प्रभाव नहीं पडेगा।

(१४) **परिपूर्णाङ्गिता-** वक्ता के सभी अंग परिपूर्ण होने चाहिए। अंगहीन वक्ता शोभा नहीं देता।

(१५) **स्वरमाधुर्य-** खराब स्वर वाले वक्ता के वचन श्रोताओ को प्रिय नहीं होते।

(१६) **बुद्धिमत्ता-** वक्ता बुद्धिशाली होना चाहिए।

(१७) **मधुरवचन-** जिस वक्ता की भाषा में मिठास नहीं होती, उसके वचन श्रोताओं में प्रीति उत्पन्न नहीं करते। प्रीति उत्पन्न हुए बिना श्रोता मनोयोग से श्रवण नही करते। कटुक और कठोर भाषा के प्रयोग से श्रोताओं के चित्त में क्षोभ पैदा होता है।

(१८) **वक्ता प्रभावशाली होना चाहिए -** जिसका व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है उसके वचन भी प्रभावशाली होते हैं।

(१९) **सामर्थ्य-** वक्ता समर्थ होना चाहिए अर्थात् उपदेश देते-देते थक नही जाना चाहिए।

(२०) **विशाल अध्ययन -** अनेक ग्रन्थों का अवलोकन, अध्ययन, मनन, चिन्तन होना चाहिए।

(२१) **अध्यात्मवेत्ता-** वक्ता आत्मज्ञानी होना चाहिए। आत्मा को जाने बिना समस्त ज्ञान निस्सार है . निष्प्रयोजन है।

(२२) **शब्दों के रहस्य का ज्ञान होना चाहिए -** जो शब्दों के गहरे मर्म को नहीं समझता और आन्तरिक भावो को प्रकट करने के लिए उपयुक्त शब्दों का प्रयोग नहीं कर सकता, वह उपदेश देने योग्य नहीं है। उसका उपदेश कभी भ्रान्ति उत्पन्न कर सकता है और प्रभावजनक नहीं होता।

(२३) **अर्थ का संकोच और विस्तार-** करने की योग्यता होनी चाहिए। समय पडने पर किसी वात को विस्तृत रूप से समझा सके और कभी विस्तार से कहने की वात को संक्षेप में कह सके।

(२४) **तर्कज्ञ-** वक्ता को युक्ति तथा तर्क का ज्ञाता होना चाहिए। शास्त्र में मूल सिद्धान्तो का प्रतिपादन होता हैं। प्रत्येक व्यक्ति के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर शास्त्र में स्पष्ट रूप से नहीं लिखा रहता। उन मूल सिद्धान्तों के आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उ- देने के लिए युक्ति तथा तर्क की आवश्यकता होती है।

(२५) **गुणयुक्तता-** वक्ता को प्रतिष्ठित, प्रामाणि- प्रभावशाली और विश्वासपात्र बनाने वाले सभी गुण उसमें हो- चाहिए। गुणों के अभाव में उसके वचन मान्य नही होते।

यह पच्चीस गुण जिसमें पाये जाते हैं वहीं असरकारक औ- यथार्थ उपदेश दे सकता है। ऐसे ज्ञानी सद्वक्ता संयमी को यो- मिलना बहुत कठिन है।

सद्गुरु की संगति से १० गुणो की प्राप्ति होती है। श्रीभगवतीसू- में कहा है -

सवणे नाणे विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥

अर्थात्-

(१) ज्ञानी मुनि का समागम करने से सर्वप्रथम धर्म-श्रवण करने का अवसर मिलता है।

(२) जो श्रवण करता है उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है।

(३) ज्ञान से विज्ञान (विशिष्ट ज्ञान) का होना स्वभाविक है।

(४) विज्ञान होने पर अर्थात् विवेकदृष्टि जागृत होने पर दुष्कृत्य का प्रत्याख्यान होना है।

(५) प्रत्याख्यान के फलस्वरूप संवर की प्राप्ति होती है, क्योंकि प्रत्याख्यानी जीव आस्रव को रोक देता है।

(६) आस्रव का निरोध करने से तीर्थङ्कर की आज्ञा का आराधक हुआ।

(७) आराधक होने से तप की प्राप्ति होती है।

(८) तप के प्रभाव से कर्म कटते हैं।

(९) कर्म कटने से अक्रियावान् अर्थात् स्थिर योगी और सब पापों से रहित होता है।

(१०) सव पापों से रहित होने पर सिद्धि अर्थात् मुक्ति मिलती है। इस प्रकार सन्तो के समागम से महान् लाभ की प्राप्ति होती है।

ये ही संत समागम आदर्श श्रावक रत्न श्री मोहनलालजी प्राप्त कर रहे है।



श्रोता के गुणों के धारक श्री सिपानीजी

संकलन : **धनराज डागा**, बेगलोर

(१) **धर्म की परीक्षा करे** – जब कोई मनुष्य किसी वस्तु को ग्रहण करना चाहता है तो अनेक प्रकार से उसकी परीक्षा करता है। एक पैसे की हॅडिया खरीदते समय उसे ठोक-बजाकर लेता है। कपडे का पोत देख-भाल कर फिर खरीदा जाता है। ऐसी नाशवान् वस्तुएँ भी परीक्षा करके ली जाती है और लेने के बाद बडी सावधानी से संभाल कर रक्खी जाती है। फिर भी वह सदा नही रहती। वह एकान्त सुख देने वाली भी नही होती है। कभी-कभी उनके निमित्त से सुख के बदले दु ख की प्राप्ति हो जाती है। तो धर्म की क्या परीक्षा किये बिना ही ग्रहण कर लेना चाहिए? धर्म अनमोल वस्तु है और एकान्त सुखदायक है। उसका कभी विनाश नही होता। ऐसी स्थिति मे उसकी परीक्षा अवश्य करनी चाहिए। जिस धर्म पर मनुष्य का अनंत भविष्य निर्भर है, उसकी परीक्षा किये बिना ही उसे ग्रहण कर लेना चरम सीमा की मूर्खता है। फिर भी धर्म की परीक्षा करने वाले मनुष्य बहुत कम दिखाई देते है। किसी कवि ने कहा है -

एक एक के पीछे, रस्ता न कोई बुझता ।
अन्धे फॅसे सब घोर में, कहाँ तक पुकारे सुझता ॥

बडा ऊँट आगे हुआ, पीछे हुई कतार ।
सब ही डूबे बापडे, बडे ऊँट के लार ॥

ससार मे इस प्रकार की अन्धाधुन्धी चल रही है। अनादिकाल से यह भेडचाल चली आती है।

कुछ लोग कहते है-हमारे बाप-दादा जिस धर्म का पालन करते आये है, उस धर्म का परित्याग किस प्रकार किया जाय? उनसे पूछना चाहिए-तुम्हारे बाप-दादा तो गरीब थे, फिर तुम धनवान् होने का प्रयत्न क्यो कर रहे हो? उस गरीबी को ही अपने गले का हार क्यो नही बनाते? तुम्हारे पास जो धन है उसे फैंक क्यो नही देते? तुम्हारे पिता या दादा लॅगडे, कान या बहरे थे तो तुम भी वैसे ही क्यो नही बनते? ऐसा कहा जाय तो उन्हे अच्छा नही लगेगा। वे ऐसा करने को तैयार नही होगे। तब धर्म के विषय मे ही बाप-दादा को क्यो बीच मे लाया जाता है? अगर कोई उत्तम धर्म को स्वीकार करने लगे तो क्या पूर्वज मना करने आएँगे? या उनका कोई अहित हो जायगा? सच तो यह है कि श्रोताओ को धर्म के विषय मे जरा भी पक्षपात न करते हुए परीक्षा करनी चाहिए। परीक्षा करने पर जो धर्म हितकारी प्रतीत हो, जिससे यह जन्म और भविष्य उज्ज्वल एव मंगलमय बने उसी धर्म का ग्रहण एव पालन करना चाहिए।

(२) **दुःख से भयभीत हो**- जो नरक-निगोद आदि के दु ख से डरेगा वही धर्मकथा श्रवण करके पापकर्म से निवृत्त होगा। जो पाप-कर्म करने मे निडर होगा, जिसे परलोक का भय नही होगा उसे धर्मोपदेश कैसे लगेगा?

दृष्टान्त-कन्दमूल खाने वाले एक जैन से किसी साधु ने कहा कि बहुत पाप करोगे तो नरक मे जाना पडेगा। जैन ने पूछा-महाराज ! नरक के स्थान कितने है? साधु ने कहा-नरक सात है। जैन बोला-अरे महाराज ! मै तो पन्द्रहवे नरक मे जाने के लिए कमर कसे बैठा था, आपने तो आधे भी नही बतलाये? अब चिन्ता नही !

ऐसे निडर श्रोता पर धर्मोपदेश का क्या प्रभाव पडेगा।

(३) **सुख का अभिलाषी हो**- जो स्वर्ग और मोक्ष के सुख को मानता होगा और उसकी कामना करता होगा वह धर्मकथा श्रवण करेगा और धर्ममार्ग मे अपनी शक्ति लगाएगा।

(४) **बुद्धिमान् हो**- जो बुद्धिमान् होगा वही धर्म के रहस्यों को समझेगा और बुद्धिमत्ता के साथ प्रवृत्ति करके, तोल कर

सत्य धर्म को अङ्गीकार करेगा।

(५) **मनन करने वाला हो** - उपदेश सुनकर वही का वही पल्ला झटक दे, एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दे तो कोई लाभ नहीं होता। श्रोता का कर्त्तव्य है कि धर्म की बात सुन कर उसे हृदय में धारण करे, उस पर मनन करे, सत्य असत्य का निर्णय करे और फिर उसे करे या त्यागे।

(६) **धारण करने वाला हो** - धर्म की जो बात श्रवण करे उसे हृदय मे धारण कर रक्खे। ऐसा करने से श्रोता विशेषज्ञ बन सकता है।

(७) हेय उपादेय ज्ञेय का ज्ञाता हो। सुनी हुई सभी बाते एक सी नहीं होती। इस लिए विद्वान् श्रोता उन्हे तीन विभागों में विभक्त करते हैं। यथा-जो हेंय (छोडने योग्य) हो उस वस्तु को त्याग करे। जो उपादेय (ग्रहण करने योग्य) हो उसे ग्रहण करे और जो ज्ञेय (सिर्फ जानने योग्य अर्थात् उपेक्षा करने योग्य) हो उसे जान ले।

(८) निश्चय-व्यवहारज्ञाता हो। निश्चय और व्यवहार का जोडा दोनों पैरो के समान हैं। चलते समय जिस पर पैर को आगे बढाना होता है, वही पैर आगे बढाया जाता है। इसी प्रकार शास्त्र मे दोनों नयो की अपेक्षा से कथन किया जाता है। उदाहरणार्थ-कालमासे काल किच्चा यह शास्त्र का पाठ है। इसका आक्षय है- आयुष्यकाल पूर्ण होने पर मृत्यु होती है। यह निश्चयनय का अभिप्राय है। ठाणांगसूत्र मे बतलाया गया है कि सात कारणो से, असमय मे आयु टूट जाती है। यह व्यवहार नय की प्ररूपणा है। निश्चयनय से कहा जाता है कि आत्मा ही देव है, ज्ञान ही गुरु है। अगर कोई पुरुष एकान्त निश्चयनय को पकड कर बैठ जाय और परमात्मा का भजन करना छोड दे और अपने आप को ही गुरु मानने लगे तो भवसागर मे ही डूबेगा। अतएव निश्चय-व्यवहार दोनों को सम्यक् प्रकार से समझना चाहिए। कौन-सी प्ररूपणा किस नय की अपेक्षा से की जा रही है, इस प्रकार का विवेक न रखने से अनेक अनर्थ हुए हें और हो रहे हैं।

(९) विनयवान् हो। विनीत श्रोता को ही यथोचित ज्ञान पचता है। भवन करते समय जो-जो संशय उत्पन्न हो उनका वे विनयपूर्वक निर्णय कर लेते हैं।

(१०) दृढ श्रद्धालु हो। अनेकान्तमय शास्रो के सूक्ष्म भा... को मुन कर चित को डॉवाडोल करता हुआ उन पर ... रक्खे। जो वचन बुद्धि मे व आवे, उसके लिए अपनी बुद्धि ... कसर समझे। इस प्रकार की श्रद्धा रखने वाला ही आत्मकल्... कर सकता है।

(११) अवसर-कुशल हो। जिस समय जैसा उचित हो, उ... समय वैसा ही प्रश्न करे। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव को देखे बिना प्रवत्ति करने से विपरीत प्रभाव पडता है।

(१२) र्निविचिकित्सी हो। व्याख्यान-श्रवण करने मुझे अव... लाभ होगा, इस प्रकार का विश्वास श्रोता को अवश्य होना चाहिए।

(१३) जिज्ञासु हो। जैसे भूखे को भोजन की, प्यासे को पानो की, रोगी को औषध की, लोभी को लाभ को, पथ भूले को पथप्रदर्शक की उत्कंठा रहती है, उसी प्रकार श्रोता को ज्ञा... आदि गुणो के लिए उत्सुकता होनी चाहिए।

(१४) रस-ग्राही हो। जैसे पूर्वोक्त भूखा-प्यासा भोजन-पानी को पाकर प्रसन्न होता है और रुचिपूर्वक उसका उपयोग करता है, उसी प्रकार श्रोता को भी व्याख्यान-श्रवण का योग मिलने पर रुचि के साथ श्रवण करने का लाभ उठाना चाहिए।

(१५) इहलौकिक सुखो की इच्छा न करे। श्रोता धन, पुत्र यश, कीति आदि इस लोक के सुखो की इच्छा न करे। अर्थात ज्ञान के महान् लाभ को इस लोक सम्बन्धी क्षणिक सुखो के लिए न गॅवादे ।

(१६) पारलौकिक सुखों की इच्छा न करे। यथा-आगामी भव में राजपद स्वर्ग-सुख आदि को अभिलापा न करे। सिर्फ मोक्षकी एकमात्र से शास्त्रश्रवण और धर्माचरण करे।

(१७) सुखदाता हो। अपने हित का उपेश देने वाले वक्ता को यथायोग्य वस्त्र, स्थान, धन, आहार आदि को सहायता दे... तथा उसको उचित सेवा-भक्ति करके उसके उत्साह को वृद्धि करे

(१८) प्रसन्नकारी हो। वक्ता के चित्त को हर तरह से प्रसन्न रखे

(१९) निर्णयकारी हो। सुनी हुई वातों में अगर संशय ... जाय तो पूछताछ करके उमका निर्णय करे। सशय न हो तो भी

उस विषय को अधिक स्पष्ट रूपसे समझने के लिए सरल भाव से प्रश्नोत्तर करे।

(२०) प्रकाशक हो। व्याख्यान मे सुना कथन मित्रो एव हितैषियो के सामने प्रकाशित करे और उनके चित को व्याख्यान सुनने के लिए प्रेरित करे।

(२१) गुणग्राहक हो। गुणो को ही ग्रहण करे। कदाचित् वक्ता मे कोई दोष दृष्टिगोचर हो तो उसे त्याग दे।

उक्त इक्कीस गुणो के धारक श्रोताओ की सभा मे ही पण्डित पुरुषो के ज्ञान की खूबियाँ प्रकट होती है। पण्डित तो दुकानदार के समान सूक्ष्म, बादर, व्यावहारिक, नैश्चयिक, शास्त्रीय स्वसमय, परसमय आदि अनेक प्रकार के कथनोके ज्ञाता होते है। जैसे हल्दी के ग्राहक के सामने कसर का डिब्बा खोलना वृथा है और टाट के ग्राहक के समक्ष रेशम पेश करना व्यर्थ है, उसी प्रकार अल्पज्ञ या अज्ञ श्रोताओ के समक्ष शास्त्र को गूढतर बाते कहना भी वृथा हो जाती है। अतएव पण्डित जैसी परिषद् देखने है, वैसा ही व्याख्यान कर देते है मगर ज्ञान की गहन बातो को पूर्वोक्त प्रकार के श्रोता ही समझ पाते है। ऐसा श्रोता भी ससार मे दुर्लभ है।

शुद्ध श्रद्धान

सकलन **त्रिलोकचंद सेठिया**, बेगलोर

सद्धा परम दुल्लहा। भी जिनेश्वर भगवान् ने कहा है कि आत्मा को श्रद्धा अर्थात् सम्यक्त्व की प्राप्ति होना बहुत कठिन है। शास्त्रो के श्रवण करने का अवसर अनेकबार मिल जाता है, मगर उस पर श्रद्धा करने वाले कोई विरले ही होते है।

(१) कितनेक समझते है कि हमारे बाप-दादा सुनते आये है, तो हमे भी सुनना चाहिए। ये लोग कुल की रूढि के अनुसार सुनते है।

(२) कुछ लोग समझते है कि हम जैन कुल मे जनमे है तो व्याख्यान भी सुन लेना चाहिए।

(३) कोई-कोई यह खयाल करते है कि हम बडे नामाकित है, आगे बैठने वाले है, हमे सब धर्मात्मा समझते है इसलिए हमे व्याख्यान जरूर सुनना चाहिए इससे हमारा मान-महात्म्य बना रहेगा।

(४) किसी किसी का विचार होता है कि अपने गाव मे साधु आये है - उपदेशक आये है, अगर ५-१० मनुष्य भी व्याख्यान सुनने नही जाएँगे तो अपने गाँव की बदनामा होगी।

(५) कुछ लोग सोचते है-व्याख्यान सुनेगे तो साधुजी खुश हो जाएँगे। कदाचित् कभी कोई चुटकला बता दिया तो निहाल हो जाएँगे। इस प्रकार लालच से प्रेरित होकर व्याख्यान सुनते है।

(६) कई लोग विचार करते है कि अमुक साहब व्याख्यान सुनने जाते है तो चलो हम भी सुन ले। ऐसे लोग दोस्ती निभाने के लिए जाते है।

(७) कुछ लोग बड आदमी के दबाव मे आकर शर्म के मारे व्याख्यान सुनते है।

(८) कोई-कोई स्त्री पुरुपो का रूप-श्रृङ्गार देखकर अपनी दुष्ट वासना का पोषण करने के लिए भी व्याख्यान श्रवण करने चले जाते है।

इस प्रकार अनेक प्रयोजनो से जो शास्त्र-श्रवण करने चले जाते है, किन्तु जिनके अन्त करण मे शुद्ध श्रद्ध नही होती उनहे गुणो की प्राप्ति नहीं होती। कहा भी है -

दीनी पण लागी नही, रीते चूले फूँक ।
गुरु वेचारा क्या करे, चेले मे है चूक ॥

शास्त्र श्रवण

संकलन : **सम्पतराज धोका**, बेंगलोर

सदुपदेशक अर्थात् सद्वक्ता का योग होने पर भी शास्व श्रवण करने का योग मिलना बहुत ही मुश्किल है क्योंकि इस संसार में धर्मशास्त्र सुनने की रुचि रखने वाले लोग बहुत थोडे ही होते हैं। कोई कहता है- साधु महाराज पधारे हैं उपदेश दे रहे हैं, चलो सुन आवें। तो सामने वाला इसके उत्तर में कहता है-साधु तो निकम्मे है। इन्हें और काम ही क्या है? अपने पीछे तो बाल-बच्चे है, घर द्वार है, धंधा वगैरह अनेक उपाधियॉ लगो हैं। अपने को संसार छोडकर बाबा बनना है कि व्याख्यान सुना करे। इसी समय अगर दूसरा कोई आदमी आकर कहे कि आज एक नया नाटक आया है, चलो देख आवें। तो वहीं आदमी पैसे खर्च करके नाटक देखने को तैयार हो जायगा। माता-पिता की आज्ञा की परवाह किये बिना, बाल-बच्चो को रोता छोडकर भूख-प्यास सर्दी-गर्मी आदि का खयाल न करके समय से पहले ही वहॉ पहुंच जायगा, महापाप से कमाया हुआ पैसा खर्च करके टिकट खरीदेगा, नीच लोगोंके धक्के खाता हुआ अन्दर जायगा, बैठने की जगह न मिले तो खडा रहेगा। पेशाब करने की इच्छा होगी तब भी पेशाब रोक रक्खेगा, नीद आयगी तो ऑखें मसल कर, पानी छिडक कर जबर्दस्ती प्रयत्न करके जागने की कोशिश करता है। पेशाब रोकने से और समयानुसार नीद नही लेने से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। इसके अतिरिक्त नाटक में कृष्ण, रुक्मिणी आदि उत्तम पुरुषो तथा सतियों की ओर कुदृष्टि से देखता है, कुचेष्टाएँ करता है। ! अगर कोई मनुष्य प्रेक्षक की मॉ-बहन का रूप बना कर नाटकशाला में नाचे तो प्रेक्षक को कितना बुरा लगेगा ?

अरे अज्ञानियो ! जरा विचार तो करो कि जिसे तुम परमेश्वर के रूप में, संत के रूप में या सती के रूप में मानते हो उसी के नाटक को नाचकूद कर वडी प्रसन्नता से देखते हो ! कितनी लज्जा को वात है? अधर्मयुक्त और पापकारी नाटक-तमाशे में दोडे-दोडे जाते हो ओर धर्मशास्त्र श्रवण करने मे शरमाते हो? सच है, महापापो के भाग्य में उत्तम धर्म कहॉ?

धर्म श्रवण करने के विषय में कुछ लोग कहते हैं-हमसे धर्म क्रिया तो होती नहीं है, फिर सुनने से लाभ ही क्या है? ऐसे लोगों के लिए यह उत्तर है कि जो सुनेगा वह कभी न कभी उसे अमल में लाने का भी प्रयत्न करेगा। किसी ने सुना कि फलाँ मकान में भूत है। तो फिर जहाँतक संभव होता है, वह आदमी उस मकान मे नही जाता है। कदाचित् जाना अनिवार्य हो तो डरता-डरता जाता है कि भूत कहीं सतावे नहीं! मकान मे एक पहर का काम होगा तो एक घडी में झटपट उसे निवटा कर बाहर निकल आयगा। और जबतक अन्दर रहेगा, डरता ही रहेगा। इसी प्रकार शास्त्र श्रवण करने के लिए आने वाला पुरुष जब यह सुनता है कि अमुक कार्य करने से पाप होता है तो जहॉतक हो सकेगा, उस कार्य को वह नहीं करेगा। करना अनिवार्य होगा तो भी करते-करते झिझकेगा, थोडा करेण और पाप से डरता रहेगा। इस प्रकार करते-करते कभी पाप को बिलकुल ही त्याग देगा।

कुछ लोग कहते हैं-धर्मशास्त्र हमारो समझ मे तो आता नहीं है, फिर सुनने से क्या लाभ है? इसका उत्तर यह है-जब किसी को सॉप या बिच्छू काट खाता है तो मन्त्रवादी उसके सामने वैठकर मन्त्र पढता है। विप से पीडित पुरुप को मन्त्र समझ में नही आता, फिर भी विप तो उतर ही जाता है। इसी प्रकार धर्मश्रवण करने से पाप कम हो जाते है, सुनते-सुनते शास्त्र समझ में आने लगते है। इस तरह शास्त्र-श्रवण करने से अवश्य ही लाभ होता हैं। दशवैकालिक में कहा है .-

सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं ।
उभयंपि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे ॥

अर्थात्-शास्त्रों का श्रवण करने से पुण्य ओर पाप तथा उनका ज्ञान होता है, इस काम को करने से पुण्य होता है और इस कार्य को करने से पाप होता है, यह वात शास्त्र से ही ज्ञान होती है। शास्त्र ही से यह भी पता चलता है कि पुण्य और पाप का फल सुख और दु ख है। दोनों का फल जान कर जो श्रेयस्कर हो उसे स्वीकार करेगा। अत सद्गुरु का उपदेश अवश्य सुनना चाहिए।

ब्रह्मचर्य की रक्षा नौ वाड़ से ही संभव

सकलन : **सुरेशचंद गाँधी**, बेगलोर

जैसे किसान खेत की रक्षा के लिए, खेत के चारो तरफ कॉटो की वाड लगाते है, उसी प्रकार ब्रह्मचारी पुरुष ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए नौ वाडो का पालन करते है । कहा भी है -

आलो थीजणाइण्णो, थीकहा य मणोरमा ।
संथवो चेव नारीणं, तेसिं इंदियदरिसणं ॥
कूइयं रुइये गीअं, हसियं भुत्तासणाणि य ।
पणीयं भत्तपाणं च, अइमायं पाणभोयणं ॥
गायभूसण-मिट्ठं च, कामभोगा य दुज्जया ।
नरस्सत्तगवेस्सिस्स विसं तालउडं जहा ॥

१) स्त्रीजन से युक्त मकान - जिस मकान मे बिल्ली रहती हो, उसी मे अगर चूहा रहा तो उसकी खेर नहीं । किसी भी क्षण उसके प्राणो का अन्त आ सकता है, उसी प्रकार जिस मकान मे देव की, मनुष्य की अथवा तिर्यच की स्त्री या नपुसक का निवास हो, वहां ब्रह्मचारी पुरुष रहे तो उसके ब्रह्मचर्य का विनाश हो जाता है । श्री दशवैकालिकसूत्र मे कहा है -

हत्थपायपडिच्छिन्नं, कन्ननासविगपिअं ।
अवि वाससयं नारिं, बंभयारी विवज्जए ॥

अर्थात्-जिसके हाथ और पैर कटे हो, जिसके कान और नाक भी कटी हो, और जो सौ वर्ष की बुढिया हो, उससे भी ब्रह्मचारी को दूर रहना चाहिए । जिस मकान मे ऐसी स्त्री रहती हो उसमे भी ब्रह्मचारी को नही रहना चाहिए ।

२) मनोरम स्त्री कथा- जैसे नींबू, इमली आदि खट्टे पदार्थो का नाम लेने से मुहँ मे से पानी छूटता है, उसी प्रकार स्त्री के सौन्दर्य, श्रृगार, लावण्य, हाव भाव और चातुर्य का वर्णन करने से विकार उत्पन्न होता है ।

३) स्त्रियों का परिचय- जैसे गेहू मे आटे मे भूरा कोला (पेठा) रखने से उसका बंध नही होता है और चावलो के पास नारियल रहने से उसमे कीडे पड जाते है, उसी प्रकार स्त्री-पुरुष अगर एक आसन पर बैठे तो उनका ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाता है ।

४) स्त्रियो के अंगोपांग देखना - जैसे सूर्य की ओर टकटकी लगाकर देखने से ऑखो को हानि पहुँचती है, उसी प्रकार स्त्री के अगोपागो को निरखने से ब्रह्मचर्य का नाश होता है ।

५) स्त्रियो के शब्द-गीत आदि सुनना - जैसे मेघ की गर्जना सुनने से मोर को हर्ष होता है, उसी प्रकार पर्दा, दोवल आदि के दूसरी ओर क्रीडा करनेवाले दंपत्ती की कुचेष्टांऐ, शब्द, गायन और हॅसी-मजाक की बाते सुनने से विकार की उत्पत्ति होती है ।

६) भोगे भोगों का स्मरण - एक वृद्धा के घर की छाछ पीकर कुछ मुसाफिर छह महीने बाद वापिस लौटे । तब बुढिया ने कहा-मै तुम्हे जीवित देखकर बहुत प्रसन्न हुई हू क्योकि तुम्हारे जाने के बाद छाछ मे से सर्प निकला था । यह शब्द सुनते ही वे मुसाफिर मृत्यु को प्राप्त हो गया । इसी प्रकार पूर्वावस्था मे स्त्री के साथ किये हुए भोजन और भोग आदि का स्मरण करने से ब्रह्मचर्य का विनाश होता है ।

७) कामवर्धक भोजन-पान - जैसे सन्निपात के रोगी को दूध -शक्कर मिलाकर देना रोगवर्धक होता है, उसी प्रकार सदैव, सरस कामोत्तेजक भोजन भी ब्रह्मचारी के लिए हानिकारक होता है ।

८) अधिक भोजन-पान - जैसे सेर की हंडिया मे सवा सेर खिचडी पकाने से हॅडिया फूट जाती है, उसी प्रकार मर्यादा से अधिक आहार करने से अजीर्ण आदि रोग उत्पन्न होते है और विकार की वृद्धि होने से ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाता है ।

९) शरीर का श्रृंगार - जैसे दरिद्र के पास चिन्तामणि नहीं रहता है, उसी प्रकार स्नान, मर्दन, श्रृगार आदि करके शरीर को आकर्षक बनाने वाले का ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाता है ।

ब्रह्मचारी पुरुष को चाहिए कि वह उल्लिखित नौ बातो को, जो ब्रह्मचारी के लिए तालपुट नामक विष के समान है, त्याग कर दे । ब्रह्मचारिणी नारी को यही सव वातें पुरुष के विषय मे समझ लेना चाहिए । इनका परित्याग कर नव वाड से विशुद्ध ब्रह्मचारी का पालन करना चाहिए । ब्रह्मचारी की रक्षा के लिए अन्य मत मे भी कहा है.-

सुखं शय्या सूक्ष्मवस्त्रं, ताम्बूलं स्नानमञ्जनं ।
दन्तकाष्ठं सुगन्धं च, ब्रह्मचर्यस्य दूषणम् ॥

अर्थात्-कोमल बिछोने पर सोना, बारीक वस्त्र पहनना, पान खाना, स्नान करना, आँखों में अंजन लगाना, दातौन करना और सुगंधित पदार्थो का लेपन करना, यह ब्रह्मचर्य को दूषित करने वाली बातों है।

और भी कहा है.-

विभूसावत्तियं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं।
संसार-सायरे घोरे, जेणं पडइ दुरुत्तरे। दश अ. ६

अर्थात-जो साधु स्नान-श्रृंगार आदि से शरीर की विभूषा करता है, वह चिकने (कठिन) कर्मो का बंध करता है और संसार-सागर मे ऐसा डूबता है कि पीछे निकलना कठिन हो जाता है।

इस प्रकार अनेक शास्त्रीय प्रमाणों से प्रतीत होता है कि ब्रह्मचारी को स्नान, श्रृंगार आदि नही करना चाहिए। जो स्नान करेगा वह शरीर की सुन्दरता का अवलोकन करने के लिए दर्पण देखेगा, बालों में तेल लगाएगा, बालों को साफ करने के लिये कंघा रखेगा। शरीर को दुर्बल देखकर पुष्ट बनाने के लिए सरस भोजन का लोलुपी बनेगा, फिर वस्त्रादि का श्रृंगार सजेगा। इस प्रकार अनेक दोषो को परम्परा से उत्पत्ति जानकर ब्रह्मचारी को कदापि स्नान नहीं करना चाहिये।

जो लोग स्नान से शुद्धि होने की बात कहते है उन्हें जानना चाहिए कि जिस में कोई एक मुर्दे गाडे जा चुके है ऐसी मिट्टी के बने घाट मे, ऐसे पानी से, जिसमे दुनिया भर का मूल-मूत्र मिला होता है, स्नान करने से आत्मा की शुद्धि किस प्रकार हो सकती है? रही शरीर की शुद्धि, सो शरीर रक्त, मांस आदि का पिण्ड है। उसे हजार बार धोने पर भी वह शुद्ध नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त पानी मे अनेक त्रस और असंख्य स्थावर जीव होते है। उन जीवों के शरीर को अपने शरीर से रगडने से शरीर शुद्ध नहीं हो सकता। भला विचार तो कीजिए कि इस शरीर की उत्पति शुक्र और शोणित से होती है। हड्डी, मांस, रक्त, चर्वी आदि का थैला है। चमडी से ढंका हुआ है। मल-मूत्र आदि अशुचि पदार्थों से भरा हुआ है। इस प्रकार सदेव अपवित्र रहने वाला यह शरीर पानी डालने से किस प्रकार पवित्र हो सकता है? जो लोग पानी से शरीर का पवित्र होना मानते हैं, उनसे यह प्रश्न पूछना चाहिए कि-मान लीजिए, एक आदमी ने सो बार कुल्ला करके अपने मुख को पवित्र कर लिया। उसके बाद उसने कुल्ला कर पानी आपके ऊपर थूक दिया। तो आप घृणा करेंगे या नहीं? अगर आप घृणा करते हैं तो आपको मानना पडेगा कि सौ बार कु... करने पर भी उस आदमी का मुख शुद्ध-अपवित्र ही रहा था। प... हो गया होता तो आपको घृणा क्यो होती? इस व्यावहारिक उदा... से ही सिद्ध हो जाता है कि पानी से शरीर की शुद्धि नहीं होत... काशीखण्डपुराण मे कहा है.-

मुदो भारसहसेण, जलकुम्भशतेन च।
न शुद्धयति दुराचारी, स्नानं तीर्थशतैरपि॥

अर्थात् - कोई दुराचारी हजारो भार (परिमाण-विशेष) मिट्टी, शरीर को मल-मल कर लगावे और सैकडों घडे पानी से प्रक्षालन करे तो भी शुद्ध नहीं हो सकता है।

फिर भी यदि स्नान से शुद्धि मानते हो तो जाति भेद को क्यों पकड़-रक्खा है? फिर तो भंगी, भील, चमार आदि भी स्नान करके ब्राह्मण क्यो न बन जाए? मगर स्नान करने मात्र से नीच जाति वाला उच्च नही बन सकता। इन सब बातो से निश्चित समझिए कि सिर्फ स्नान ही शुद्धि का कारण नहीं है। स्नान करने से शरीर पर लगा हुआ मैल ही साफ हो सकता है, अन्त करण को पवित्र बनाने वाला स्नान नहीं, सदाचार ही है। अतएव सुज्ञ पुरुषो! शील-स्नान सदा शुचि बिना पानी से स्नान किय ही ब्रह्मचारी पुरुष शील रुप स्नान से सदेव पवित्र है। जैसे मकान मे कोई बच्चा मलत्याग कर देता है तो उतनी ही जगह साफ की जाती है, उसी प्रकार ब्रह्मचारी पुरुष का जितना शरीर मल आदि से मलीन हो जाता है, उतना ही शरीर धोकर वे साफ कर लेते है। उन्हें सारा शरीर धोने की आवश्यकता नहीं रहती।

उक्त नौ वाडो मे से किसी एक वाड को भंग करने वाले ब्रह्मचारी को शंका उत्पन्न हो जाती है। मै ब्रह्मचर्य का पालन करूं या न करूं, इस प्रकार का संदेह उसके चित्त में उत्पन्न हो जाती है। उसके हृदय में कांक्षा अर्थात् भोगोपभोग भोगने की इच्छा भी जागृत हो उठती है। यही नहीं, वह विचिकित्सा से भी ग्रस्त हो जाता है। सोचने लगता है कि इतने दिन ब्रह्मचर्य पालने से कुछ ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त नहीं हुई तो आगे भी क्या फल होगा! इन दोषों के फलस्वरुप वह भेद को भी प्राप्त हो जाता हे अर्थात् ब्रह्मचर्य को नष्ट कर डालता है। उसके मन मे और तन में उन्माद (मस्ती) उत्पन्न हो जाता है और फिर लम्बे समय तक रहने वाले सुजाक प्रमेह, शूल आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसका अन्तिम फल यह होता है कि ऐसा पुरुष-केवली-प्ररूपित धर्म (संयम) से भ्रष्ट होकर अनन्त काल तक संसार भ्रमण करता है।



२६ बोलों की मर्यादा

संकलन श्री किस्तुरचंद लुणावत, बेंगलोर

जो वस्तु एक बार उपयोग मे आवे, उसे उपभोग कहते है, जैसे- अन्न, पानी, विलेपन, माला आदि। जो वस्तु बार-बार भोगी जा सकती है, उसे परिभोग कहते है, जैसे-आसन, शैया, वस्त्र, वनिता आदि पदार्थो की आवश्यकता रहती है, स्वाद या मादकता के लिए नही। इसी प्रकार से लज्जा ढंकने के लिए वस्त्रो की आवश्यकता होती है, फैशन तथा आडम्बर के लिए नही। इसी बात को लक्ष्य मे रखकर सब वस्तुओ की मर्यादा की जाती है। ऐसी मर्यादाएं सैकडो, हजारो पदार्थो की जा सकती है, परन्तु श्रावक सुगमता से व्रत पाल सके, इस दृष्टि से उन सबका समावेश, निम्न २६ वस्तुओ मे कर दिया गया है। बुद्धिमान के लिए इशारा काफी होता है, इस उक्ति के अनुसार श्रावक अपने नैतिक जीवन के विकास के लिए जब जिस वस्तु की जितनी कम मर्यादा करना उचित समझे के। उन २६ प्रकार की मर्यादाओ का ज्ञान सर्व साधारण को होना चाहिये, इसलिये उनका सक्षेप मे उल्लेख कर देना परमावश्यक है -

१. **उल्लणिया विधि परिमाण.**- हाथ-मुँह पोछने के लिए रुमाल या टावल आदि वस्त्रो की मर्यादा करना।

२ **दंतण विधिः**- दन्त धावन (दतौन) से सम्बन्धित पदार्थो के सम्बन्ध में मर्यादा करना।

३. **फल विधिः**- ऑवला आदि फलो की मर्यादा करना।

४. **अभ्यंगन विधि**- तेलादि मर्दन करने योग्य पदार्थो की मर्यादा करना।

५. **उबटन विधिः**- उबटन (पीठी) आदि पदार्थो की मर्यादा करना।

६. **मज्जण विधिः**- स्नान के जितने प्रकार है, उनकी सख्या की मर्यादा करना।

७. **वस्त्र विधिः**- रूई तथा ऊन के वस्त्रों की मर्यादा करना।

८ **विलेपन विधिः**- चन्दन, केसर, कुकुम आदि शरीर को सुशोभित करने वाले पदार्थो की मर्यादा करना।

९. **पुष्प विधिः**- भाति-भाति के पुष्पो के उपयोग की मर्यादा करना।

१०. **आभारण विधिः**- शरीर पर धारण करने योग्य आभूषणो की मर्यादा करना।

११. **धूप विधिः**- वायु शुद्धि के लिए धूप (सुगन्धित पदार्थो) की मर्यादा करना।

१२. **पेय विधि**·- पेय पदार्थो के सम्बन्ध मे मर्यादा करना।

१३. **भक्षण विधिः**- भोजन से पूर्व नाश्ते मे काम आने लायक पदार्थो की मर्यादा करना।

१४ **ओदन विधिः**- विधि पूर्वक अग्नि द्वारा उबाल कर खाये जाने वाले पदार्थो की मर्यादा करना, जैसे-चावल, खिचडी, दलिया, पोहा आदि।

१५ **सूप विधिः**- खाई जाने वाली दालो की मर्यादा करना।

१६. **विगय विधिः**- दूध, दही, धृत, तेल, गुड, शक्कर, मधु आदि पदार्थ भोजन को सुस्वादु और शरीर को पुष्ट बनाते है, उन पदार्थो की मर्यादा करना।

१७. **शाक विधिः**- सूखे या हरे ताजा शाको को मर्यादा करना।

१८. **माहुर विधिः**- आम, जामुन, केला, अनार आदि फल

जो मधुर (मीठे) है, उनकी तथा द्राक्ष, बादाम, पिश्ता आदि सूखे फलों की मर्यादा करना।

१९. **जीमण विधिः-** भोजन के रुप में क्षुधा निवारणार्थ उपयोग में आने वाले रोटी, पूरी, परांठा आदि पदार्थो की मर्यादा करना।

२०. **पानी विधिः-** शीतोदक, उष्णोदक गन्धोदक, खारा पानी, मीठा पानी आदि पानी के प्रकारो की मर्यादा करना।

२१. **मुखवास विधिः-** मुख शुद्धि के लिए खाये जाने वाले पान, सुपारी, इलायची, खट्टा, चूर्ण आदि पदार्थो की मर्यादा करना।

२२. **उवाहण विधिः-** पैरों में पहिनने लायक जूते, गूंट, चप्पल, खडाऊ आदि की मर्यादा करना।

२३. **वाहन विधिः-** भ्रमण या प्रवास करने लायक सवारियों की मर्यादा करना, जैसे-बैलगाडी, रथ, तांगा, मोटर, पालकी, नाव, जहाज आदि।

२४. **शयण विधिः-** सोने-बैठने लायक वस्तुओं की मर्यादा करना, जैसे-पलंग, खाट, पाट, आसन, बिछौना, मेज, कुर्सी आदि।

२५. **सचित विधिः-** ऐसे पदार्थ जो जीव सहित है, और जो बिना अचित बनाये हो खाये जाते हैं, ऐसे सचित पदार्थो की मर्यादा करना, जैसे-केला, जामुनादि।

२६. **द्रव्य विधिः-** सचित या अचित द्रव्यो की ऊपर जो मर्यादा की गई है, उनमे भी प्रतिदिन यह निश्चय करना कि मैं आज इतने द्रव्यो के उपयोग से ही अपना काम चला लूँगा। इस प्रकार का द्रव्यो का त्याग करने का मूल आशय यह है कि संसार मे उपभोग्य पदार्थ अनन्त हैं, एक व्यक्ति चाहे तव भी सवका उपयोग नहीं ले सकता हे, फिर कुछ उपयोग मे लेने लायक पदार्थ अपनी इच्छानुसार रखकर वाकी सवका त्याग क्यो न कर दिया जाय ? जितना त्याग, उतनी शान्ति। द्रव्यों के त्याग का नियम लै लेने से समुद्र जितना पाप घटकर बून्द के बराबर रह जाता है। इस तरह त्याग करने वाले व नियम धारण करने वाले श्री [illegible] का सम्मान हो रहा है।



नीरोग शरीर

परिपूर्ण इन्द्रियाँ प्राप्त हो जाने पर जब तक शरीर नीरोग न हो तब तक धर्म की आराधना नही होती। रोगी मनुष्य सदा व्याकुल बना रहता है और निरन्तर आर्त्तध्यान किया करता है। ऐसी स्थिति में स्वस्थ चित्त से निराकुलतापूर्वक आध्यात्मिक साधना सम्भव नही है। अतएव शारीरिक स्वस्थता रूप छठे साधन का मिलना भी बहुत कठिन है। शास्त्र मे कहा है - वाही जाव न वड्ढई, ताव धम्म समाचरे अर्थात् जब तक शरीर मे व्याधि का जोर नही बढा है, तब तक धर्म कर ले। अपने शरीर में पॉच करौड, अडसठ लाख, निन्यानवे हजार, पॉच सौ चौरासी (५,६८,९९,५८४) रोग गुप्त या प्रकट रूप मे रहते हैं। जब तक पुण्य कर्म का प्रबलता है तबतक वे सब रोग भीतर दबे रहते है. पर जब पाप का उदय होता है तब वे प्रकट हो जाते है और शरीर का विनाश कर डालते हैं। ज्वर, सिर की पीडा, पेट मे वायु का दर्द आदि रोग सदा लगे रहते है तो धर्मक्रिया किस प्रकार हो सकती है? पहावत है- पहला सुख निरोगी काया। शरीर तन्दुरुस्त हुआ तो सब बातें अच्छी लगती है और दान, जप, तप, ध्यान, सवर आदि मोक्ष की करनी होती है। मगर इस नोरोग शरीर का मिलना बडा कठिन है। जिन्हे पुण्ययोग से नीरोग शरीर मिला है, अनका कर्त्तव्य है कि वे उसको सफल करके आत्महित साध ले।

किसी-किसी जगह छठा साधन धन का सुयोग गिनाया है। मराठी भाषा में कहते है - पहिले पोटोबा, मग विठोबा अर्थात् पहले पेटपूर्ति का साधन मिले तो फिर परमेश्वर का नाम याद आता है। लक्ष्मी का संयोग हो ओर साथ ही सन्तोष की प्राप्ति हो जाय तो निश्चिन्तता से धर्मध्यान किया जा सकता है। अतएव लक्ष्मी का संयोग मिलना भी कठिन है। जिन्हें लक्ष्मी का सुयोग मिला है, वे अगर उसके द्वारा आत्म [illegible] करते हैं तो लक्ष्मी साधक है। अन्यथा वही लक्ष्मी [illegible] वाली सिद्ध होती है। अत हे लक्ष्मी-पति ! [illegible] लक्ष्मी को पाप का साधन मत बना। उसे धर्मकार्य में [illegible] पुण्य की वृद्धि कर और आत्महित में लग जा।



चौदह नियम धारक

संकलन **श्री हस्तीमल सुखलेचा**, बेंगलोर

श्रावक के लिए प्रतिदिन चौदह नियमो का चिन्तन करना आवश्यक बतलाया गया है, वे चौदह नियम निम्न प्रकार है -

१ **सचित वस्तु**:- श्रावक सचित वस्तुओ का यथाशक्ति त्याग करे।

२ **द्रव्य**.- जो पदार्थ स्वाद के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार से तैयार किये जाते है, उनके खान-पान की मर्यादा करे।

३ **विगय** - दूध, दही, घृत, तेल और मिठाई ये पॉच सामान्य विगय है। इनका यथाशक्ति सख्या तथा परिमाण मे त्याग करे। मधु तथा मक्खन विशेष विगय है, इनका निस्कारण उपयोग करने का त्याग करे। सकारण उपयोग करने की मर्यादा करे। मद्य व मास महाविगय है। इन दोनो का श्रावक सर्वदा त्याग करे।

४. **जूता-चप्पल**:- पॉव की रक्षा के लिये जो चीजे पहनी जाती है, उनकी मर्यादा करे।

५. **पान** - भोजनोपरान्त मुख-शुद्धि के लिये जो भी वस्तुए ग्रहण की जाती है, जैसे पान, सुपारी, इलायची, खट्टा, चूर्ण आदि पदार्थो की मर्यादा करे।

६ **वस्त्र**·- पहनने, ओढने व बिछाने के सब प्रकार के वस्त्रो की भी यथासम्भव मर्यादा करे तथा दिन प्रतिदिन उनमे कमी करे।

७. **पुष्प**:- सुगन्धित पदार्थ फूल, इत्र, तेल आदि की मर्यादा करे।

८ **वाहन**·- हाथी, घोडा, ऊँट, गाडी, तागा, मोटर, साईकल, रेल, नाव, जहाज, वायुयान आदि सभी सवारी के साधनो व उनके उपयोग की प्रतिदिन मर्यादा करे।

९. **शयन**.- शय्या, पाट, पाटला, पलंग, बिस्तर आदि के विषय मे मर्यादा करे।

१०. **विलेपन**:- शरीर पर जिनका लेप किया जाता है, ऐसे केसर, चन्दन, तेल, साबुन आदि पदार्थो की मर्यादा करे।

११ **ब्रह्मचर्य**:- चौथे स्वदार सन्तोष तथा परदार विवर्जन (चौथे स्वपति सन्तोष तथा परपुरुष विवर्जन) रूप व्रत मे जो मर्यादा की थी, उसको एक रात दिन के लिए सर्वथा सकुचित करे तथा पति-पत्नी के ससर्ग के सम्बन्ध मे मर्यादा करे।

१२ **दिशा** - पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण ऊँची नीची तिरछी दिशाओ की जीवन भर के लिए जो मर्यादा स्वीकार करे।

१३. **स्नान**:- देश स्नान या सर्व स्नान की मर्यादा करे।

१४. **भोजन**·- भोजन के सम्बन्ध मे इस प्रकार की मर्यादा करे कि मै आज इतने परिमाण से अधिक नही खाऊँगा।

इस प्रकार से श्रावकरत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी उपयुक्त चौदह नियमो का प्रतिदिन चिन्तन करते हुए अपने जीवन को अध्यात्म मार्ग की ओर अग्रसर कर रहे है।

मुंहपति अर्थात् मुखवस्त्रिका लगाने के ८ कारण

१ भगवान की मूल परम्परा कायम रहती है ।

२ जैन धर्म का चिह्न है ।

३ बाहर के कीटाणु मुह मे प्रवेश नहीं करते ।

४ मुह की गर्म हवा से बाहर के जीव नहीं मरते ।

५ धार्मिक पुस्तको पर थूक नहीं गिरती ।

६ काया क्लेश तप होता है ।

७ मुखवस्त्रिका वाले के साथ मुखवस्त्रिका लगाकर बात करने से विनय प्रगट होता है।

८ शील का उत्तम पालन होता है ।

मुखवस्त्रिका का माप:-

२१ अगुल लवी तथा १६ अगुल चोडी (आठ पुट)



श्रावक का सही स्वरुप

संकलन : **श्री कमल सिपानी**, बेंगलोर

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान सस्कृति है। जैन धर्म भी इसी संस्कृति का एक अविच्छित्र अंग है। जैन धर्म मे निवृत्ति को प्रधानता दी गई है। आत्मसंयम, तपस्या, दान, शील तथा भावना इसी निवृत्ति के अंग है और आत्म-साधना इन्ही के माध्यम से की जाती है। जैन धर्म आत्मवादी होने के साथ-साथ क्रिया प्रधान धर्म है, और विशुद्ध परिणामो द्वारा की जाने वाली क्रिया ही उत्कृष्ट फलदायिनी अर्थात् परम पद प्राप्त कराने वाली मानी जाती है।

प्राय सभी दर्शन यह मानते है कि संसार दु खों से व्याप्त है, और सुख की इच्छा सभी करते है। लौकिक सुख, जो दु ख मिश्रित है, उससे निवृत्त करना अध्यात्म साधना का चरम लक्ष्य है। जैन धर्म में उसके दो मार्ग निर्दिष्ट किये गये है- श्रमण धर्म तथा श्रावक धर्म।

श्रमण तथा श्रावक ये दोनो शब्द जैन धर्म के विशेष प्रकार के पारिभाषिक शब्द है।

श्रमण की उपासना करने वाला व्यक्ति श्रमणोपासक या श्रावक कहलाता है। श्रमण के जीवन को अपने समक्ष एक आदर्श के रुप में रखकर गृहस्थाश्रम मे रह करके भी विषय-वासनाओ से निवृत्त रहते हुए मर्यादापूर्ण संयमी जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति सामान्य तौर पर श्रावक कहलाता है। श्रावक शब्द मे तीन अक्षर है और तीनो ही विशेष अर्थ के द्योतक हैं।

श्रा शब्द का अर्थ है श्रद्धा को धारण करना।

व शब्द का अर्थ है वपन करना-अर्थात् दान रुप बीज को वोना।

क शब्द का अर्थ आस्रव रुप कार्यो का छेदन करना या कर्त्तव्य का पालन करना। तात्पर्य यह है कि जो वीतराग के वचनो मे पूर्ण श्रद्धा रखता हो, स्वय न्यायोपार्जित द्रव्य का सामाजिक व धार्मिक कार्यो में यथावसर तथा यथाशक्ति प्रसन्नतापूर्वक सदुपयोग करता हो और गृहस्थ के द्वारा पालने योग्य सभी कर्त्तव्यों का पालन करने के लिये जो सदा रहता हो, वह श्रावक कहलाता है। इसी बात को एक श्लोक के द्वारा या प्रकट किया गया है-

श्रद्धालुतां श्राति श्रृणोति शासन, दानं वपेदाशु वृणोति दर्शनम्।
कृन्तत्यपुण्यानि करोति संयम, तं श्रावकं प्राहुरमी विचक्षण ॥

उपर्युक्त व्याख्या के अनुसार श्रावक के जीवन मे श्रद्धा का होना परम आवश्यक माना गया है। जैन धर्म में ही नही, सर्वत्र श्रद्धा या विश्वास को प्रधानता दी गई है। जैन दर्शन मे श्रद्धा के लिये एक विशेष शब्द है, जो सम्यक्त्व के नाम से पहिचाना जाता है। सुदेव, सुधर्म और सुगुरु पर अटल श्रद्धा रखना, सम्यक्त्व कहलाता है। यदि श्रावक को देव, धर्म तथा गुरु को सही पहिचान नही होगी या उसकी सारी क्रियाएँ या उपासना मिथ्या रुप हो जावेंगी इसलिए इनकी यथार्थ पहिचान करके देव तथा धर्म का स्वरुप जानना प्रथम आवश्यकता है और बाद में गुरु को पहिचान तथा उसके वचनो पर अटल श्रद्धा होना नितान्त आवश्यक है। यदि किसी प्रकार की शंका रही तो सारी साधना निरर्थक हो जाने का भय है, कहा भी है- **संशय आत्मा विनश्यति** अर्थात् सशयशील आत्मा धर्म मार्ग से च्युत हो जाती है और फिर **इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः** की भाँति साधना के लिए अयोग्य सिद्ध हो जाती है। सम्यक्त्व के ५ लक्षण कहे गये है - प्रशम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था। इनका संक्षिप्त अर्थ जान लेना आवश्यक है, जिससे सम्यक्त्व विशुद्ध बन सके।

प्रशमः- क्रोध, मान, माया और लोभ रुप कपायो की मन्दता

होना प्रशम कहलाता है। इस प्रकार का प्रशम भाव श्रावक के लिए अनिवार्य है, क्योकि सरलता श्रावक का आवश्यक गुण है।

संवेग:- गृहस्थाश्रम को तथा ससार को बन्दीखाने के समान समझना और जन्म-मरण रुप संसार के चक्र से बहार निकलने की सदा इच्छा करना।

निर्वेद:- आरम्भ तथा परिग्रह से निवृत होने की इच्छा होना और सांसारिक भोगविलासो के प्रति आन्तरिक अनासक्ति का भाव विद्यमान रहना। निर्वेद भाव से दृष्टि निर्मल तथा आत्मा पवित्र बनाती है।

अनुकम्पा:- अपनी और से किसी भी प्राणी को भय या कष्ट न पहुँचाना और दूसरे से भय या कष्ट पाते हुए जीव को उससे मुक्त करने का प्रयत्न करना अनुकम्पा है अर्थात् दु खी प्राणियो को देखकर हृदय का करुणा से भर जाना ही अनुकम्पा है।

आस्था:- आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करना तथा परलोक, स्वर्ग, नरक, पुण्य व पापादि को मानना आस्था अथवा आस्तिक्य कहलाता है।

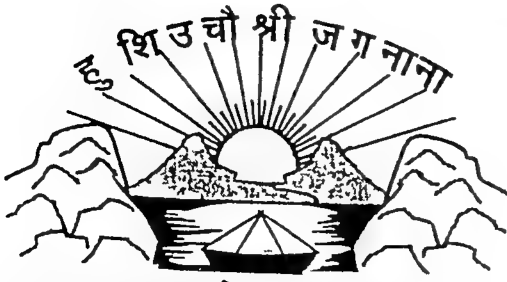
इस प्रकार से श्रावक सम्यक्तत्व गुण का धारक तथा उपयुक्त लक्षणो से युक्त होना चाहिए।

इस प्रकार श्रावक के स्वरुप को श्री सोहनलालजी सिपानी ने हृदयागम किया है।

मार्गानुसारी के ३५ गुण

१. न्याय सम्पन्न द्रव्य प्राप्त करे।
२. सात कुव्यसनो का त्याग करे।
३. अभक्ष का त्यागी होवे।
४. गुण परीक्षा से सम्बंध जोडे।
५. पाप भीरु होवे।
६ देश का हित चाहने वाला हो।
७. पर निन्दा का त्यागी।
८. अति प्रकट, अतिगुप्त व अनेक द्वारवाले मकान मे न रहे।
९. सद्गुणी की संगति करे।
१०. बुद्धि के आठ गुणो का धारक हो।
११. कदाग्रही न होवे, सरल हो।
१२. सेवा भावी हो।
१३. विनयी हो।
१४. भय स्थान त्यागे।
१५. आय-व्यय का हिसाब रखे।
१६. उचित सभ्य वस्त्राभूषण पहने।
१७ स्वाध्याय करे (नित्य नियमित धार्मिक वाचन-श्रवण करे)
१८. अजीर्ण मे भोजन ग्रहण न करे।
१९. योग्य समय पर भोजन करे।
२०. समय का सदुपयोग करे।
२१. तीन पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ व मर्म) विवेकी हो।
२२. समयज्ञ (द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का ज्ञाता) हो।
२३ शांत प्रकृति वाला हो।
२४. ब्रह्मचर्य को ध्येय समझने वाला हो।
२५. सत्यव्रत धारी हो।
२६ दीर्घ दृष्टा हो।
२७. दयालु हो।
२८.परोपकारी हो।
२९ कृतघ्न न होकर कृतज्ञ हो।
३० आत्म प्रशंसा न इच्छे, न करे, न करावे।
३१ विवेकी। (योग्यायोग्य का ज्ञाता)
३२. लज्जावान होवे।
३३. धैर्यवान होवे।
३४ क्रोध, मान, माया, लोभ, राग और द्वेष का नाश करें।
३५. इन्द्रियो को जीते। जितेन्द्रीय हो।

विशेष:- इन ३५ गुणो का धारण करनेवाला ही नैतिक धार्मिक जैन जीवन के योग्य हो सकता है। ऐसे है गुणो के धारक श्री सोहनलालजी सिपानी।



卐 राम चमकते भानु समाना 卐

संघ समर्पणा गीत



संघ हमारा अविचल मंगल, नन्दन वन सा महक रहा ।
हम सब इसके फूल व कलियां, सुन्दरतम निज संघ अहा ! ।।

वीर प्रभु के उपदेशों ने, संघ की महिमा गाई है ।
सूर-नर वन्दन करे संघ को, संघ साधना भाई है।।

संघ समष्टि का हित करता, व्यष्टि उसमें शामिल है।
संघ हेतु निज स्वार्थ तजे जो, वही प्रशंसा काबिल है।।

व्यक्तिवाद विद्वेष बढ़ाता, संघवाद दे प्रेम सदा ।
व्यक्तिभाव को छोड समर्पण, संघ भाव में रहे सदा ।।

व्यक्ति अकेला निर्बल होता, संघ सबल होता माने।
संघो शक्ति कलौ युगे की, सत्य भावना पहचाने ।।

एक सूत्र कोई भी तोडे, रस्सी हस्ती को बांधे।
एक-एक मिल बना संघ यह, दुस्सम्भव को भी साधे ।।

संघ श्रेय में आत्म श्रेय है, ऐसा दृढ विश्वास मेरा।
संघ में मुझे मे भेद न कोई, बोल रहा हर श्वांस मेरा ।।

संघ परम उपकारी हमको, संघ ने सम्यक् बोध दिया।
संघ ने होता हम क्या होते, संघ ने हमको गोद लिया ।।

शैशव, यौवन, वृद्धावस्था, सदा संघ उपकारी है ।
भव सागर से तारण हारा, हम इसके आभारी है ।।

नगर, चक्र, रथ, पद्म, चंद्र, रवि, सागर, मेरु की उपमा।
सूत्र नन्दि में संघ गौरव की, क्या कोई है कम महिमा।।

से वन्धा संघ है, हिल मिल आगे बढते हैं ।
निन्दा, विकथा तज गुणिजन के, गुणगण मन में धरते है।।

दूर हटा छल, छद्म, अहं को, सरल, सहज, सद्भाव धरे ।
परहित हेतु तज, निज इच्छा, सहज सुकोमल भाव धरे ।।

नाम अमर है उन वीरों का, जिनने संघ सेवा धारी ।
अपना कुछ ना सोच, किया सर्वस्व संघ पे बलिहारी ।।

यही प्रार्थना वीर प्रभु से, ऐसी शक्ति दो हमको।
संघ सेवा मे झौंके जीवन और न कुछ सुझे हमको ।।

संघ हेतु कुर्बान हमारा, तन-मन-जीवन सारा है।
संघ हमारा ईश्वर, हमको संघ प्राण से प्यारा है ।।

चमड़ी कागज खून की स्याही, अस्थि लेखनी लेकर के ।
रचें भले संघ गौरव गाथा, उऋण न हो उपकारो से ।।

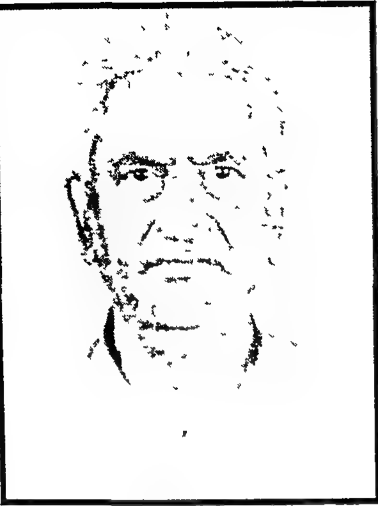
अरिहंत सिद्ध सुदेव हमारे, गुरु निर्ग्रन्थ मुनिश्वर है ।
जिन भाषित सद् धर्म दयामय, नित्य यही अंतर स्वर है ।।

सद् गुरू आज्ञा ही प्रभु आज्ञा, इसमे भेद न कोई है ।
शास्त्र-शास्त्र में जगह-जगह पर, वीर वचन भी वो ही है ।।

संघ नायक ! सघ मालिक, हम सब साधु मार्ग अनुयायी है ।
और नहीं दूजे हम कोई, बस तेरी पद छाई है ।।

रत्नत्रय शुद्ध पालन करके, तोड़े कर्मो की कारा ।
नाना गुण का धाम संघ है, घर-घर गुंजे यह नारा ।।

स्वार्थ मान को छोड, संघ की सेवा जो नर करता है ।
इह-परलौकिक कष्ट दूर कर, सौख्य संपदा वरता है ।।



ये कौन........?

लेखक : श्री मिट्ठालाल मुरड़िया, बेंगलोर

तूफान आया था

हजारों वर्ष पूर्व विश्व मे एक जबरदस्त तूफान आया था उससे सारी पृथ्वी तहस-नहस हो गई थी, वह बडा भयानक प्रलय था, भयकर बिजलिया कडकी, घोर मूसलाधार वर्षा हुई, महीनो तक नभ मे घनघोर घटाएं छाई रही। पाप-अन्याय भू लूण्ठित हो गये। कितु भाग्य से एक विटप ज्यो का त्यों हिमखड की तरह अडिग रहा। वह अपने फूलो और फलो से सभी को सुख और आनद देता रहा। मुस्कराता रहा। कहते है उसकी परंपरा का एक अवशेष पेड आज भी अपने अतराल मे वर्षो का इतिहास लिए सुख-दु·ख, हसी -रुदन, संयोग-वियोग व पाप-पुण्य छिपाये मानव जाति के उत्थान व पतन की कहानी कह रहा है।

देख रहा है इतिहास को

उस पेड की तरह धर्म और दर्शन का, समता और सस्कृति का, न्याय और नीति का, सत्य और शिव का एक सशक्त प्रहरी अपने धीर, वीर, गभीर रूप से सभी का मार्गदर्शन कर रहा है, अपने धर्म की आन, बान और शान का यह चतुर चितेरा, सकल्प-विकल्पो का मसीहा सत-चित्त आनंद का जयघोष, सत चारित्रय का मगल सेतु दृढता के साथ खडा है, स्वाभिमान के साथ अडा है। देख रहा है इतिहास को। पुराणो के शील सकोच को, ऋषियो के कमडलो मे भरे हुए दूध को, समाज और देश के चरित्र को, वैभव के ध्वंसावशेषों को, परिवर्तन, सुधार, विकास और प्रगतिशीलता के चक्र को? बडी दृढता है इस महामहिम में? बडी हिम्मत और साहस है इस साधक में। बडा ही गहरा और महान है यह धर्म नायक। इसकी गहराइयो का पता पाना कठिन है। प्रबुद्ध विचारक है यह सत। यहॉ अनेक धर्म सस्कृतियो का पावन सगम है। मधुर मिलन है धर्म समन्वय का। चितन, मनन, ज्ञान, ध्यान और साधना का यह मेरुदड है ? इसने मरु स्थल में भी भावो की पावन मदाकिनी बहाई है। यह कीर्ति लुटा रहा है। यशस्वी बना रहा है। यह अपने अंतर में अनन्त आशा और विश्वास लिए हुए व्यापक विचारो की ऊची मिनार पर खडा है। देखता रहा है. वह देखता रहा है... पावन जल के पवित्र पावन प्रवाह को।

उसमें मृदुता छलक रही है

यह संत जीवन को उज्जवल बनाने के लिए चले, बढे, अपनी टोली के साथ प्रसन्न मुद्रा मे मुस्कराते हुए चलते रहे, यह परमानंद पथ पर निरतर गतिमान रहे। इनका किसी से कोई लेना-देना नही, कोई भेद प्रपंच नही, कोई स्वार्थमय सकेत नहीं, अपनी टोली का कोई आग्रह नही , परोक्ष और प्रत्यक्ष मे कोई अतर नही। यहा न किसी से कोई मोह। न किसी से कोई लोभ है। न प्रदर्शन है। न आडंबर है। जी हा, वह स्वच्छ है, पवित्र है, यहां श्रेय और प्रेम का सर्वागीण समर्पण है। इसमे सरलता, मृदुता छलक रही है। फिर भी एक दर्द है। एक टीस है और एक पुकार है अंतर की जो सदियो से ब्रह्मांड मे गूंज रही है।

इतिहास में बहुत बडा कीर्तिमान स्थापित किया है

इसकी अपनी मर्यादा और संकल्प है, ज्ञान, दर्शन और चारित्रय पर इसकी गहरी दृष्टि है। यह दृष्टि जहां गड जाती है, वहां धर्म साधना का रूप निखर जाता है। भूत, वर्तमान और

भविष्य जिसका समुज्ज्वल है। इस परम प्रतापी धीर ने इतिहास में बहुत बडा कीर्तिमान स्थापित किया है। सभी धर्माचार्य इस पर आश्चर्य चकित है। सभी देखते रहे इसके धैर्य को। विवेक को, क्षमता को। इसकी कार्य कुशलता पर सभी विचार में पडे है। इसके अपने भाग्य में धर्म साधना की बडी उपलब्धि रही है। यह बनाता रहा, यह जोडता रहा, यह मिलाता रहा।

यहां मधुर संगीत है

इसने गौतम और अन्य गणधर के यश को और द्विगुणित किया। सुधर्मा और जम्बु के पाट को यशस्वी बनाया है। इसने महावीर के शासन दीप को प्रज्ज्वलित किया है, इस अमरदीप में वह अपने अंतर का अनंत स्नेह डालता रहा। इसलिए इसमें आत्मीयता की महक है, प्रेम की सुगंध है, मंत्रों की झणकारमय ध्वनि है। इसमें सद्भावों का पीयूष रस भरा है। इन्होंने आगम वाणी धरती पर बिखेरी है। कण-कण में मिलाई है। यहां-वहां मधुर संगीत है, कला है, सौंदर्य है, धर्म संस्कृति है। इसमें मंगल ध्वनि के तार तरंगित हो रहे है. तार-तार से मिल रहे हैं। तार की तरंगे अनंत को छूकर अंतराल में समा रही है। आत्मा को झंकृत कर रही है। यहां खगों का कलरव है। खेतों का आनंद है, खलिहानों की शांति है, भावों की मैदानी तलहटी में दौडते जाइये। आपको अपूर्व संतोष, सुख और आनंद मिलेगा।

धन्य है इस महिमामय को

जहां महावीर की तन्मयता, बुद्ध की करूणा, ईसा की शांति, श्री राम का वचनपालन, श्री कृष्ण की मित्रता, मुहम्मद की दया, विवेकानंद का साहस, परमहंस की निस्पृहता, महाराणा प्रताप की देशभक्ति, भामाशाह की कर्त्तव्य परायणता, छत्रपति शिवाजी की हूंकार, तिलक की ललकार, टालस्टाय की लगन, लिंकन की तत्परता, तुलसी की तन्मयता, सूर की भक्ति, कबीर का साहस, रसखान की भाव-भक्ति और प्रेमचंद की सहानुभूति सभी एक साथ लहरा रहे है।

धन्य है इस व्यक्तित्व के गौरवमय चारित्रय को और धन्य है इस प्रतापी पुरुष को।

वीतरागता का अंकुर

यह महायोगी आदि तीर्थकर प्रभु ऋषभदेव की भाँति ... क्रांति करने वाला हुआ। यह समता मनीषी पतित पावन ... रोग मिटाने वाले तीर्थेश श्री शातिनाथ की भाँ... जनकल्याणकारी कार्यो को आयाम देने वाला हुआ। क... और दया की महानूमूर्ति जिनेश्वर देव श्री अरिष्टनेमिनाथ ... भाँति समस्त जीवो को अभयदान देने वाले हुए है। ज... साधारण की पीडा हरने वाले, मनोकामना पूर्ण करने वाले पार्श्व प्रभु की तरह पतितो का उद्धारक करने वाले बने है। विश्व शांति के मसीहा, अंतिम तीर्थेश, शासन नायक, प्र... महावीर की भांति जन-जन में धर्म देशना कर करीबन ३८० मुमुक्षु आत्माओं को पंच परमेष्ठी महामंत्र में नाम दर्ज कराने वाले आगम पुरुष हुए।

वीतरागता अनंत रूपों में फूट रही

यह संतों को बनाता रहा, उनमे मानवता की महक डालता रहा, साहित्य और संगीत का रस भरता रहा, यह बना-बनाकर बढाता जा रहा था, इस दिशा में इस व्यक्तित्व का बडा कमाल रहा। जो हजारों वर्ष के इतिहास में कोई नहीं कर सके इसने बडे आनन्द से किया। तीर्थकरों की स्मृतियों के साथ-साथ, श्रुत केवली भद्रबाहु की वीतरागता अनत-अनतरूपों मे फूट रही है।

यह कुशल कलाकार है

यह राजनेता नहीं, कोई अभिनेता भी नही, यह तो धर्म क्षेत्र का कुशल कलाकार रहा। यह सामान्य जन में देवत्व जगाता रहा। आत्मा को महात्मा, महात्मा को परमात्मा बनाता रहा। नर को नारायण बनाता रहा। कंकर को शंकर बनाता रहा। जीव को शिव बनाता रहा। इस जीवनदर्शी और आत्मदर्शी संत ने सैकडों का जीवन निर्माण किया। इसकी दृष्टि पर हजारों श्रद्धालु समर्पित हैं।

चमत्कृत कर रही है

इसमें स्व. दिवाकरजी की सार्वभौमिकता, स्व. आचार्य आत्मारामजी म.सा. की भक्ति, स्व. जवाहराचार्य की राष्ट्रीयता, स्व. गच्छाधिपति श्री समर्थमलजी म.सा. की गुरुभक्ति, आचार्य

गणेशीलालालजी म सा. की गभीरता स्व. आचार्य श्री आनन्दऋषिजी की सहनशीलता, स्व आचार्य हस्तीमलजी म.सा की साधना, स्व आचार्य तुलसी की कुशलता एक साथ समाकर चतुर्विध संघ को चमत्कृत करते रहे है।

दिव्यता झलक रही है

यहा एक महान तेज व अलौकिकता है, प्रसन्नमुद्रा है, उन्नत ललाट पर तेजस्विता और गोलाकृति पर दिव्यता झलक रही है। बडी गंभीरता पूर्वक अपना कदम उठाने वाला स्वनाम धन्य है। यशस्वी गौरवशाली यह कौन है ?

देश का गौरव है

संघ का प्रताप है। शाति और मैत्री का प्रतीक है। तेरी कीर्ति गगन मे गायी जा रही है। जब तक यह धरती है। जब तक यह राष्ट्र है। जब तक यह समाज है। जब तक वीर शासन है। तब तक तेरी शालीनता, तेरे सतत्व की, तेरे आचार्यत्व की, तेरे समत्व की सभी और प्रेम दुदुभी बज रहती रहेगी। बजती रहेगी।

अगर तूं विदेशों में होता

तेरी स्वतत्र धरा पर, तेरे महिमामय चितन पर, सारे चतुर्विध सघ का ध्यान लगा है। अगर तू जैन समाज का आचार्य न होकर अमरिका मे होता तो वाशिगटन और अब्राहिम लिकन से भी अधिक पूजा जाता। अगर इग्लैड मे होता तो बेलिग्टन और नेलसन तेरे शिष्य बन जाते, तू स्काटलैड मे होता तो वालेस और राबर्ट ब्रू तेरे साथी हो जाते, फ्रास और इटली मे होता तो जाने आफ आर्क और मेजुनी की तरह धर्म का जयघोष करता। मगर तू सत है। तेरी अपनी मर्यादाए है। तेरी अपनी सीमाए है। शास्त्र, आगम की लक्ष्मण रेखा है। शीलसकोच है।

इस देश ने किसी को नहीं पहचाना

कितु इस देश ने न रवीन्द्रनाथ टैगोर को समझा न मुन्शी प्रेमचद को पहचाना। न विवेकानंद को जाना, न परमहस के अंतरतम मे उतरा। तेरे लिए हमारे पास रक्खा ही क्या है जिसका सम्बल लेकर तेरी पूजा करे।

हम तो आंखों मे आसू भर कर लज्जा के साथ तेरी कीर्ति कथा गा रहे है। गाते जा रहे है। गाते रहंगे। क्योकि तेरी प्रबल आत्मशक्ति के सम्मुख कोई ठहर भी नही सकता, तू शिल्पकार, कला-प्रेमी, साहित्य सगीत का अनुरागी, आगम शास्त्र का ज्ञाता, परमात्मा पर अटल विश्वास, ऐसे उज्जवल व्यक्तित्व को शत-शत वदन है। शत-शत अभिनदन श्रद्धा से, भक्ति से, भावना से, चरण वदना यह कौन है? जिसे मैने निकट से देखकर परखा है।

ऐसे थे आचार्य नानेश। जिनकी पावन स्मृति मे आचार्य नानेश समता पुरस्कार प्रारम्भ किया गया।

खमत-खामणा

वदन श्री गुरुराज को,
खमाऊँ संघ-समाज को।
आप हो तारण-तिरण जहाज,
कोटि-2 वंदन मुनिराज।
माफ करो अपराध को,
खमाऊँ संघ-समाज को॥ वंदन ...
गुरु गौतम अणगार महान,
तपस्वी संत गुणों की खान।
वदन मन वच काय से,
खमाऊँ संघ-समाज को॥ वदन ...
दूर होय दैनिक दुष्कर्म,
जमे हृदय में जिनवर धर्म।
पावे जिससे मोक्ष को,
खमाऊँ संघ-समाज को॥ वंदन ...
वंदन सद्गुरुनाथ ने,
खमाऊँ सारा ही साथ ने॥ वंदन ...



समता दर्शन द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा सम्भव - आचार्य श्री नानेश

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इस सत्य को स्वीकार करने में किसी को विरोध नहीं है। विरोध हो भी नहीं सकता है। क्योंकि अपने से इत्तर मनुष्यों के सहयोग से ही जीवन यात्रा में वह नये - नये कीर्तिमान स्थापित करता हैं।

वस्तुत· किसी समूह या समुदाय का नाम समाज नहीं है। (पशुओं) मनुष्येतरों की बहुसंख्या को एक शब्द से कहने के लिये इन शर्तो का प्रयोग होता है। उनमें ज्ञान चेतना है, किन्तु उसका सदुपयोग करने कि वे क्षमता नहीं रखते हैं। आचरण विचार कि कोई धारा नहीं किन्तु प्राप्त कर भोग करना ही उनकी प्रवृति है और उसमें किसी प्रकार का बदलाव नहीं आया हैं। पर मनुष्य स्थिति इनसे भिन्न हैं। वह अपनी क्षमता को अभिव्यक्त करता हैं। जिसमें नित-नूतन उपलब्धियों का वह संग्रह करता हैं। इसी के आचार - विचार की व्यवस्थित प्रक्रिया का वह अनुसरण करता है। और आध्यात्मिक विकास करने के लिये अग्रसर रहता हैं। वस्तुतः अध्यात्म की चरम स्थिति प्राप्त करना उसके पुरूषार्थ का लक्ष्य हैं, तो भौतिक क्षेत्र में भी उसने अपने ज्ञान का चमत्कार दिखाया है। इसीलिये मनुष्य मात्र का संग्रह करने लिये समाज शब्द का प्रयोग होता है।

देश या अन्य कारणों से मनुष्य मनुष्य में भेद या अतर मान लि... जाये। पर उन सबकी मूल वृत्तिया प्रवृत्तियां समान हैं। इस दृष्टि से सम... मानव जाति में समानता है एव समता उसका स्वभाव है।

मनुष्य ही नहीं, प्रकृति के प्रत्येक तत्व ने अपनी समता -समानता की मर्यादा भंग नहीं की है। जैसे जल स्वभावत शीतल है, अग्नि ऊष्ण है। इस प्रकार प्रत्येक सचेतन समता का वाहक है। इतना ही नहीं अचेतन पदार्थो की यही स्थिति है। समता यानि अपने मूल स्वभाव मे विकृति न आने देना। सदैव स्वभाव में स्थित रहना। आचार्य हेमचन्द्रसूरी ने कहा है -आदीप आस्योअ समस्वभावं।

जैन काल गणना के अनुसार देखा जाये तो प्राणधारियों का अधिक समय समभाव में व्यतीत होता था। उस समय मे राग द्वेष, वेर -विरोध विषमता के लिये अवकाश नहीं रहता था। इसलिये उस युग मे समता की उपयोगिता पर विचार करने कि जरूरत भी नहीं रही। परन्तु जब समय वदला तो प्राकृतिक पदार्थो के युगधर्मो में न्यूनता आने के साथ उनके अभाव की स्थिति भी प्रारंभ हो गई। परिणामत . मनुष्यों में दीनता हीनता आने के कारण विषमता की स्थिति आने बनने लगी। द्वेष के साथ दूसरे के अधिकारो और स्वामित्व के हनन की प्रवृति भी इसी से वढने लगी। इस स्थिति का शमन करने के लिये उपाय किये गये। लेकिन युग का प्रभाव परिवर्तित नहीं हो सका।



चौदह नियम धारक

संकलन **श्री हस्तीमल सुखलेचा**, बेंगलोर

श्रावक के लिए प्रतिदिन चौदह नियमो का चिन्तन करना आवश्यक बतलाया गया है, वे चौदह नियम निम्न प्रकार है -

१. **सचित वस्तुः**- श्रावक सचित वस्तुओ का यथाशक्ति त्याग करे।

२ **द्रव्यः**- जो पदार्थ स्वाद के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार से तैयार किये जाते है, उनके खान-पान की मर्यादा करे।

३. **विगय** - दूध, दही, घृत, तेल और मिठाई ये पॉच सामान्य विगय है। इनका यथाशक्ति सख्या तथा परिमाण मे त्याग करे। मधु तथा मक्खन विशेष विगय है, इनका निस्कारण उपयोग करने का त्याग करे। सकारण उपयोग करने की मर्यादा करे। मद्य व मास महाविगय है। इन दोनो का श्रावक सर्वदा त्याग करे।

४. **जूता-चप्पलः**- पॉव की रक्षा के लिये जो चीजे पहनी जाती है, उनकी मर्यादा करे।

५. **पान.**- भोजनोपरान्त मुख-शुद्धि के लिये जो भी वस्तुए ग्रहण की जाती है, जैसे पान, सुपारी, इलायची, खट्टा, चूर्ण आदि पदार्थो की मर्यादा करे।

६. **वस्त्र** - पहनने, ओढने व बिछाने के सब प्रकार के वस्त्रो की भी यथासम्भव मर्यादा करे तथा दिन प्रतिदिन उनमे कमी करे।

७. **पुष्प** - सुगन्धित पदार्थ फूल, इत्र, तेल आदि की मर्यादा करे।

८. **वाहनः**- हाथी, घोडा, ऊँट, गाडी, तागा, मोटर, साईकल, रेल, नाव, जहाज, वायुयान आदि सभी सवारी के साधनो व उनके उपयोग की प्रतिदिन मर्यादा करे।

९. **शयन**·- शय्या, पाट, पाटला, पलंग, बिस्तर आदि के विषय मे मर्यादा करे।

१० **विलेपन** - शरीर पर जिनका लेप किया जाता है, ऐसे केसर, चन्दन, तेल, साबुन आदि पदार्थो की मर्यादा करे।

११. **ब्रह्मचर्य**·- चौथे स्वदार सन्तोष तथा परदार विवर्जन (चौथे स्वपति सन्तोष तथा परपुरुष विवर्जन) रूप व्रत मे जो मर्यादा की थी, उसको एक रात दिन के लिए सर्वथा सकुचित करे तथा पति-पत्नी के ससर्ग के सम्बन्ध मे मर्यादा करे।

१२. **दिशा** - पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण ऊँची नीची तिरछी दिशाओ की जीवन भर के लिए जो मर्यादा स्वीकार करे।

१३. **स्नान**·- देश स्नान या सर्व स्नान की मर्यादा करे।

१४. **भोजन**·- भोजन के सम्बन्ध मे इस प्रकार की मर्यादा करे कि मै आज इतने परिमाण से अधिक नही खाऊँगा।

इस प्रकार से श्रावकरत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी उपयुक्त चौदह नियमो का प्रतिदिन चिन्तन करते हुए अपने जीवन को अध्यात्म मार्ग की ओर अग्रसर कर रहे है।

मुंहपति अर्थात् मुखवस्त्रिका लगाने के ८ कारण

१ भगवान की मूल परम्परा कायम रहती है ।

२ जैन धर्म का चिह्न है ।

३ बाहर के कीटाणु मुह मे प्रवेश नहीं करते ।

४ मुह की गर्म हवा से बाहर के जीव नहीं मरते ।

५ धार्मिक पुस्तको पर थूक नहीं गिरती ।

६ काया क्लेश तप होता है ।

७ मुखवस्त्रिका वाले के साथ मुखवस्त्रिका लगाकर बात करने से विनय प्रगट होता है ।

८ शील का उत्तम पालन होता है ।

मुखवस्त्रिका का मापः-

२१ अगुल लवी तथा १६ अगुल चोडी (आठ पुट)



श्रावक का सही स्वरुप

संकलन : **श्री कमल सिपानी**, बेंगलोर

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। जैन धर्म भी इसी संस्कृति का एक अविच्छित्र अंग है। जैन धर्म मे निवृत्ति को प्रधानता दी गई है। आत्मसंयम, तपस्या, दान, शील तथा भावना इसी निवृत्ति के अग है और आत्म-साधना इन्हीं के माध्यम से की जाती है। जैन धर्म आत्मवादी होने के साथ-साथ क्रिया प्रधान धर्म है, और विशुद्ध परिणामों द्वारा की जाने वाली क्रिया ही उत्कृष्ट फलदायिनी अर्थात् परम पद प्राप्त कराने वाली मानी जाती है।

प्राय सभी दर्शन यह मानते है कि संसार दु खो से व्याप्त है, और सुख की इच्छा सभी करते हैं। लौकिक सुख, जो दु ख मिश्रित है, उससे निवृत्त करना अध्यात्म साधना का चरम लक्ष्य है। जैन धर्म में उसके दो मार्ग निर्दिष्ट किये गये हैं- श्रमण धर्म तथा श्रावक धर्म।

श्रमण तथा श्रावक ये दोनो शब्द जैन धर्म के विशेष प्रकार के पारिभाषिक शब्द है।

श्रमण की उपासना करने वाला व्यक्ति श्रमणोपासक या श्रावक कहलाता है। श्रमण के जीवन को अपने समक्ष एक आदर्श के रुप मे रखकर गृहस्थाश्रम मे रह करके भी विषय-वासनाओ से निवृत्त रहते हुए मर्यादापूर्ण संयमी जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति सामान्य तौर पर श्रावक कहलाता है। श्रावक शब्द में तीन अक्षर है और तीनो ही विशेष अर्थ के द्योतक है।

श्रा शब्द का अर्थ है श्रद्धा को धारण करना।

व शब्द का अर्थ है वपन करना-अर्थात् दान रुप बीज को बोना।

क शब्द का अर्थ आस्त्रव रुप कार्यो का छेदन करना या कर्त्तव्य का पालन करना। तात्पर्य यह है कि जो वीतराग के वचनों में पूर्ण श्रद्धा रखता हो, स्वय न्यायोपार्जित द्रव्य का सामाजिक व धार्मिक कार्यो मे यथावसर तथा यथाशक्ति प्रसन्नतापूर्वक सदुपयोग करता हो और गृहस्थ के द्वारा पालने योग्य सभी कर्त्तव्यो का पालन करने के लिये जो सदा रहता हो, वह श्रावक कहलाता है। इसी बात को एक श्लोक के द्वारा यं प्रकट किया गया है-

श्रद्धालुतां श्राति श्रृणोति शासनं, दानं वपेदाशु वृणोति दर्शनम्
कृन्तत्यपुण्यानि करोति संयमं, तं श्रावकं प्राहुरमी विचक्षण

उपर्युक्त व्याख्या के अनुसार श्रावक के जीवन में श्रद्धा क होना परम आवश्यक माना गया है। जैन धर्म मे ही नही, सर्व श्रद्धा या विश्वास को प्रधानता दी गई है। जैन दर्शन मे श्रद्धा के लिये एक विशेष शब्द है, जो सम्यक्तव के नाम से पहिचान जाता है। सुदेव, सुधर्म और सुगुरु पर अटल श्रद्धा रखना सम्यक्त्व कहलाता है। यदि श्रावक को देव, धर्म तथा गुरु क सही पहिचान नही होगी या उसकी सारी क्रियाएँ या उपास मिथ्या रुप हो जावेगी इसलिए इनकी यथार्थ पहिचान करके दे तथा धर्म का स्वरुप जानना प्रथम आवश्यकता है और बाद गुरु को पहिचान तथा उसके वचनो पर अटल श्रद्धा होना नितां आवश्यक है। यदि किसी प्रकार की शंका रही तो सारी साध निरर्थक हो जाने का भय है, कहा भी है- **संशय आत्म विनश्यति** अर्थात् संशयशील आत्मा धर्म मार्ग से च्युत हो जाती है और फिर **इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः** की भाँति साधना के लिए अयोग्य सिद्ध हो जाती है। सम्यक्तव के ५ लक्षण कहे गये है - प्रशम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था। इनका संक्षिप्त अर्थ जान लेना आवश्यक है, जिससे सम्यक्तत्व विशुद्ध बन सके।

प्रशमः- क्रोध, मान, माया और लोभ रुप कषायों की मन्दता

होना प्रशम कहलाता है। इस प्रकार का प्रशम भाव श्रावक के लिए अनिवार्य है, क्योकि सरलता श्रावक का आवश्यक गुण है।

संवेग:- गृहस्थाश्रम को तथा संसार को बन्दीखाने के समान समझना और जन्म-मरण रुप ससार के चक्र से बहार निकलने की सदा इच्छा करना।

निर्वेद·- आरम्भ तथा परिग्रह से निवृत होने की इच्छा होना और सांसारिक भोगविलासो के प्रति आन्तरिक अनासक्ति का भाव विद्यमान रहना। निर्वेद भाव से दृष्टि निर्मल तथा आत्मा पवित्र बनाती है।

अनुकम्पा·- अपनी और से किसी भी प्राणी को भय या कष्ट न पहुँचाना और दूसरे से भय या कष्ट पाते हुए जीव को उससे मुक्त करने का प्रयत्न करना अनुकम्पा है अर्थात् दु खी प्राणियो को देखकर हृदय का करुणा से भर जाना ही अनुकम्पा है।

आस्था:- आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करना तथा परलोक, स्वर्ग, नरक, पुण्य व पापादि को मानना आस्था अथवा आस्तिक्य कहलाता है।

इस प्रकार से श्रावक सम्यक्तत्व गुण का धारक तथा उपयुक्त लक्ष्णो से युक्त होना चाहिए।

इस प्रकार श्रावक के स्वरुप को श्री सोहनलालजी सिपानी ने हृदयागम किया है।

मार्गानुसारी के ३५ गुण

१. न्याय सम्पन्न द्रव्य प्राप्त करे।
२ सात कुव्यसनो का त्याग करे।
३ अभक्ष का त्यागी होवे।
४. गुण परीक्षा से सम्बंध जोडे।
५ पाप भीरु होवे।
६ देश का हित चाहने वाला हो।
७. पर निन्दा का त्यागी ।
८ अति प्रकट, अतिगुप्त व अनेक द्वारवाले मकान मे न रहे।
९ सद्गुणी की संगति करे।
१०. बुद्धि के आठ गुणो का धारक हो।
११. कदाग्रही न होवे, सरल हो।
१२. सेवा भावी हो।
१३ विनयी हो ।
१४ भय स्थान त्यागे ।
१५. आय-व्यय का हिसाब रखे ।
१६. उचित सभ्य वस्त्राभूषण पहने ।
१७ स्वाध्याय करे (नित्य नियमित धार्मिक वाचन-श्रवण करे)
१८. अजीर्ण मे भोजन ग्रहण न करे।
१९. योग्य समय पर भोजन करे।
२०. समय का सदुपयोग करे ।
२१. तीन पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ व मर्म) विवेकी हो ।
२२ समयज्ञ (द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का ज्ञाता) हो ।
२३ शात प्रकृति वाला हो ।
२४. ब्रह्मचर्य को ध्येय समझने वाला हो।
२५ सत्यव्रत धारी हो।
२६. दीर्घ दृष्टा हो।
२७. दयालु हो।
२८.परोपकारी हो।
२९. कृतघ्न न होकर कृतज्ञ हो ।
३०. आत्म प्रशसा न इच्छे, न करे, न करावे ।
३१. विवेकी । (योग्यायोग्य का ज्ञाता)
३२ लज्जावान होवे ।
३३. धैर्यवान होवे ।
३४. क्रोध, मान, माया, लोभ, राग और द्वेष का नाश करे।
३५. इन्द्रियो को जीते । जितेन्द्रीय हो ।

विशेष.- इन ३५ गुणो का धारण करनेवाला ही नैतिक धार्मिक जैन जीवन के योग्य हो सकता है। ऐसे है गुणो के धारक श्री सोहनलालजी सिपानी।



संघ समर्पणा गीत



संघ हमारा अविचल मंगल, नन्दन वन सा महक रहा ।
हम सब इसके फूल व कलियां, सुन्दरतम निज संघ अहा ।।।

वीर प्रभु के उपदेशों ने, संघ की महिमा गाई है ।
सूर-नर वन्दन करे संघ को, संघ साधना भाई है।।

संघ समष्टि का हित करता, व्यष्टि उसमें शामिल है।
संघ हेतु निज स्वार्थ तजे जो, वही प्रशंसा काबिल है।।

व्यक्तिवाद विद्वेष बढाता, संघवाद दे प्रेम सदा ।
व्यक्तिभाव को छोड समर्पण, संघ भाव में रहे सदा ॥

व्यक्ति अकेला निर्बल होता, संघ सबल होता मानें।
संघो शक्ति कलौ युगे की, सत्य भावना पहचाने ॥

एक सूत्र कोई भी तोडे, रस्सी हस्ती को बांधे।
एक-एक मिल बना संघ यह, दुस्सम्भव को भी साधे ॥

संघ श्रेय में आत्म श्रेय है, ऐसा दृढ विश्वास मेरा।
संघ मे मुझे में भेद न कोई, बोल रहा हर श्वांस मेरा ॥

संघ परम उपकारी हमको, संघ ने सम्यक् बोध दिया।
संघ ने होता हम क्या होते, संघ ने हमको गोद लिया ॥

शैशव, यौवन, वृद्धावस्था, सदा संघ उपकारी है ।
भव सागर से तारण हारा, हम इसके आभारी है ।।

नगर, चक्र, रथ, पद्म, चंद्र, रवि, सागर, मेरु की उपमा।
सूत्र नन्दि मे संघ गौरव की, क्या कोई है कम महिमा।।

से वन्धा संघ है, हिल मिल आगे वढते हैं ।
निन्दा,विकथा तज गुणिजन के,गुणगण मन में धरते है॥

दूर हटा छल, छद्म, अहं को, सरल, सहज, सद्भाव धरे।
परहित हेतु तज, निज इच्छा, सहज सुकोमल भाव धरे ॥

नाम अमर है उन वीरों का, जिनने संघ सेवा धारी ।
अपना कुछ ना सोच, किया सर्वस्व संघ पे बलिहारी ॥

यही प्रार्थना वीर प्रभु से,ऐसी शक्ति दो हमको।
संघ सेवा में झौंके जीवन और न कुछ सुझे हमको ॥

संघ हेतु कुर्बान हमारा, तन-मन-जीवन सारा है।
संघ हमारा ईश्वर, हमको संघ प्राण से प्यारा है ॥

चमडी कागज खून की स्याही, अस्थि लेखनी लेकर के।
रचें भले संघ गौरव गाथा, उऋण न हो उपकारो से ॥

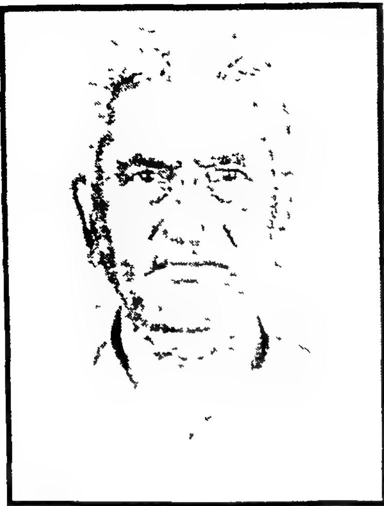
अरिहंत सिद्ध सुदेव हमारे,गुरु निर्ग्रन्थ मुनिश्वर है ।
जिन भाषित सद् धर्म दयामय, नित्य यही अंतर स्वर है ॥

सद् गुरू आज्ञा ही प्रभु आज्ञा, इसमें भेद न कोई है ।
शास्त्र-शास्त्र मे जगह-जगह पर, वीर वचन भी वो ही है ॥

संघ नायक ! संघ मालिक, हम सब साधु मार्ग अनुयायी है।
और नहीं दूजे हम कोई, बस तेरी पद छाई है ॥

रत्नत्रय शुद्ध पालन करके, तोडे कर्मो की कारा ।
नाना गुण का धाम संघ है, घर-घर गुंजे यह नारा ॥

स्वार्थ मान को छोड, संघ की सेवा जो नर करता है ।
इह-परलौकिक कष्ट दूर कर, सौख्य संपदा वरता है ॥



ये कौन........?

लेखक : श्री मिट्ठालाल मुरड़िया, बेंगलोर

तूफान आया था

हजारो वर्ष पूर्व विश्व मे एक जबरदस्त तूफान आया था उससे सारी पृथ्वी तहस-नहस हो गई थी, वह बडा भयानक प्रलय था, भयकर बिजलिया कडकी, घोर मूसलाधार वर्षा हुई, महीनो तक नभ मे घनघोर घटाए छाई रही। पाप-अन्याय भू लूण्ठित हो गये। किंतु भाग्य से एक विटप ज्यो का त्यो हिमखड की तरह अडिग रहा। वह अपने फूलो और फलो से सभी को सुख और आनद देता रहा। मुस्कराता रहा। कहते है उसकी परपरा का एक अवशेष पेड आज भी अपने अतराल मे वर्षो का इतिहास लिए सुख-दु ख, हसी -रुदन, सयोग-वियोग व पाप-पुण्य छिपाये मानव जाति के उत्थान व पतन की कहानी कह रहा है।

देख रहा है इतिहास को

उस पेड की तरह धर्म और दर्शन का, समता और सस्कृति का, न्याय और नीति का, सत्य और शिव का एक सशक्त प्रहरी अपने धीर, वीर, गंभीर रूप से सभी का मार्गदर्शन कर रहा है, अपने धर्म की आन, बान और शान का यह चतुर चितेरा, सकल्प-विकल्पो का मसीहा सत-चित्त आनद का जयघोष, सत चारित्रय का मंगल सेतु दृढता के साथ खडा है, स्वाभिमान के साथ अडा है। देख रहा है इतिहास को। पुराणो के शील संकोच को, ऋषियो के कमडलो मे भरे हुए दूध को, समाज और देश के चरित्र को, वैभव के ध्वसावशेषो को, परिवर्तन, सुधार, विकास और प्रगतिशीलता के चक्र को? बडी दृढता है इस महामहिम मे? बडी हिम्मत और साहस है इस साधक मे। बडा ही गहरा और महान है यह धर्म नायक। इसकी गहराइयो का पता पाना कठिन है। प्रबुद्ध विचारक है यह सत। यहॉ अनेक धर्म संस्कृतियों का पावन सगम है। मधुर मिलन है धर्म समन्वय का। चिंतन, मनन, ज्ञान, ध्यान और साधना का यह मेरुदंड है ? इसने मरु स्थल में भी भावो की पावन मंदाकिनी बहाई है। यह कीर्ति लुटा रहा है। यशस्वी बना रहा है। यह अपने अतर मे अनन्त आशा और विश्वास लिए हुए व्यापक विचारो की ऊंची मिनार पर खडा है। देखता रहा है . वह देखता रहा है .. पावन जल के पवित्र पावन प्रवाह को।

उसमें मृदुता छलक रही है

यह सत जीवन को उज्वल बनाने के लिए चले, बढे, अपनी टोली के साथ प्रसन्न मुद्रा मे मुस्कराते हुए चलते रहे, यह परमानंद पथ पर निरतर गतिमान रहे। इनका किसी से कोई लेना-देना नही, कोई भेद प्रपंच नही, कोई स्वार्थमय सकेत नहीं, अपनी टोली का कोई आग्रह नही , परोक्ष और प्रत्यक्ष मे कोई अतर नही। यहां न किसी से कोई मोह। न किसी से कोई लोभ है। न प्रदर्शन है। न आडबर है। जी हा, वह स्वच्छ है, पवित्र है, यहा श्रेय और प्रेम का सर्वागीण समर्पण है। इसमे सरलता, मृदुता छलक रही है। फिर भी एक दर्द है। एक टीस है और एक पुकार है अतर की जो सदियों से ब्रह्माड मे गूज रही है।

इतिहास में बहुत बडा कीर्तिमान स्थापित किया है

इसकी अपनी मर्यादा और सकल्प है, ज्ञान, दर्शन और चारित्रय पर इसकी गहरी दृष्टि है। यह दृष्टि जहां गड जाती है, वहा धर्म साधना का रूप निखर जाता है। भूत, वर्तमान और

भविष्य जिसका समुज्जवल है। इस परम प्रतापी धीर ने इतिहास में बहुत बडा कीर्तिमान स्थापित किया है। सभी धर्माचार्य इस पर आश्चर्य चकित है। सभी देखते रहे इसके धैर्य को। विवेक को, क्षमता को। इसकी कार्य कुशलता पर सभी विचार में पडे है। इसके अपने भाग्य में धर्म साधना की बडी उपलब्धि रही है। यह बनाता रहा, यह जोडता रहा, यह मिलाता रहा।

यहां मधुर संगीत है

इसने गौतम और अन्य गणधर के यश को और द्विगुणित किया। सुधर्मा और जम्बु के पाट को यशस्वी बनाया है। इसने महावीर के शासन दीप को प्रज्ज्वलित किया है, इस अमरदीप में वह अपने अंतर का अनंत स्नेह डालता रहा। इसलिए इसमें आत्मीयता की महक है, प्रेम की सुगंध है, मंत्रों की झणकारमय ध्वनि है। इसमें सद्‌भावों का पीयूष रस भरा है। इन्होंने आगम वाणी धरती पर बिखेरी है। कण-कण में मिलाई है। यहां-वहां मधुर संगीत है, कला है, सौंदर्य है, धर्म संस्कृति है। इसमें मंगल ध्वनि के तार तरंगित हो रहे है. तार-तार से मिल रहे हैं। तार की तरंगे अनंत को छूकर अंतराल में समा रही है। आत्मा को झंकृत कर रही है। यहां खगों का कलरव है। खेतों का आनंद है, खलिहानों की शांति है, भावों की मैदानी तलहटी में दौडते जाइये। आपको अपूर्व संतोष, सुख और आनंद मिलेगा।

धन्य है इस महिमामय को

जहां महावीर की तन्मयता, बुद्ध की करूणा, ईसा की शांति, श्री राम का वचनपालन, श्री कृष्ण की मित्रता, मुहम्मद की दया, विवेकानंद का साहस, परमहंस की निस्पृहता, महाराणा प्रताप की देशभक्ति, भामाशाह की कर्त्तव्य परायणता, छत्रपति शिवाजी की हूंकार, तिलक की ललकार, टालस्टाय की लगन, लिंकन की तत्परता, तुलसी की तन्मयता, सूर की भक्ति, कवीर का साहस, रसखान की भाव-भक्ति और प्रेमचंद की सहानुभूति सभी एक साथ लहरा रहे है।

धन्य है इस व्यक्तित्व के गौरवमय चारित्रय को और धन्य है इस प्रतापी पुरुष को।

वीतरागता का अंकुर

यह महायोगी आदि तीर्थकर प्रभु ऋषभदेव की भाँति क्र क्रांति करने वाला हुआ। यह समता मनीषी पतित पावन रोग मिटाने वाले तीर्थेश श्री शांतिनाथ की भाँ जनकल्याणकारी कार्यो को आयाम देने वाला हुआ। क और दया की महानूमूर्ति जिनेश्वर देव श्री अरिष्टनेमिनाथ की भाँति समस्त जीवों को अभयदान देने वाले हुए है। ज साधारण की पीडा हरने वाले, मनोकामना पूर्ण करने वा पार्श्व प्रभु की तरह पतितो का उद्धारक करने वाले बने है। विश्व शांति के मसीहा, अंतिम तीर्थेश, शासन नायक, प्रभु महावीर की भांति जन-जन में धर्म देशना कर करीबन ३८ मुमुक्षु आत्माओं को पंच परमेष्ठी महामंत्र मे नाम दर्ज कराने वाले आगम पुरुष हुए।

वीतरागता अनंत रूपों में फूट रही

यह संतों को बनाता रहा, उनमें मानवता की महक डालता रहा, साहित्य और संगीत का रस भरता रहा, यह बना-बनाकर बढाता जा रहा था, इस दिशा में इस व्यक्तित्व का बडा कमाल रहा। जो हजारों वर्ष के इतिहास में कोई नहीं कर सके इसने बडे आनन्द से किया। तीर्थकरों की स्मृतियों के साथ-साथ, श्रुत केवली भद्रबाहु की वीतरागता अनंत-अनंतरूपो मे फूट रही है।

यह कुशल कलाकार है

यह राजनेता नही, कोई अभिनेता भी नहीं, यह तो धर्म क्षेत्र का कुशल कलाकार रहा। यह सामान्य जन में देवत्व जगाता रहा। आत्मा को महात्मा, महात्मा को परमात्मा बनाता रहा। नर को नारायण बनाता रहा। कंकर को शंकर बनाता रहा। जीव को शिव बनाता रहा। इस जीवनदर्शी और आत्मदर्शी संत ने सैकडों का जीवन निर्माण किया। इसकी दृष्टि पर हजारों श्रद्धालु समर्पित हैं।

चमत्कृत कर रही है

इसमें स्व. दिवाकरजी की सार्वभौमिकता, स्व. आचार्य आत्मारामजी म.सा. की भक्ति, स्व. जवाहराचार्य की राष्ट्रीयता, स्व. गच्छाधिपति श्री समर्थमलजी म.सा. की गुरुभक्ति, आचार्य

गणेशीललालजी म.सा की गभीरता स्व आचार्य श्री आनन्दऋषिजी की सहनशीलता, स्व. आचार्य हस्तीमलजी म.सा की साधना, स्व. आचार्य तुलसी की कुशलता एक साथ समाकर चतुर्विध सघ को चमत्कृत करते रहे है।

दिव्यता झलक रही है

यहा एक महान तेज व अलौकिकता है, प्रसन्नमुद्रा है, उन्नत ललाट पर तेजस्विता और गोलाकृति पर दिव्यता झलक रही है। बडी गभीरता पूर्वक अपना कदम उठाने वाला स्वनाम धन्य है। यशस्वी गौरवशाली यह कौन है ?

देश का गौरव है

सघ का प्रताप है। शांति और मैत्री का प्रतीक है। तेरी कीर्ति गगन मे गायी जा रही है। जब तक यह धरती है। जब तक यह राष्ट्र है। जब तक यह समाज है। जब तक वीर शासन है। तब तक तेरी शालीनता, तेरे सतत्व की, तेरे आचार्यत्व की, तेरे समत्व की सभी और प्रेम दुदुभी बज रहती रहेगी। बजती रहेगी।

अगर तूं विदेशों में होता

तेरी स्वतत्र धरा पर, तेरे महिमामय चितन पर, सारे चतुर्विध सघ का ध्यान लगा है। अगर तू जैन समाज का आचार्य न होकर अमरिका मे होता तो वाशिगटन और अब्राहिम लिकन से भी अधिक पूजा जाता। अगर इग्लैड मे होता तो बेलिग्टन और नेलसन तेरे शिष्य बन जाते, तू स्काटलैड मे होता तो वालेस और राबर्ट ब्रू तेरे साथी हो जाते, फ्रास और इटली मे होता तो जाने आफ आर्क और मेजुनी की तरह धर्म का जयघोष करता। मगर तू सत है। तेरी अपनी मर्यादाए है। तेरी अपनी सीमाए है। शास्त्र, आगम की लक्ष्मण रेखा है। शीलसकोच है।

इस देश ने किसी को नहीं पहचाना

किंतु इस देश ने न रवीन्द्रनाथ टैगोर को समझा न मुन्शी प्रेमचद को पहचाना। न विवेकानद को जाना, न परमहस के अतरतम मे उतरा। तेरे लिए हमारे पास रक्खा ही क्या है जिसका सम्बल लेकर तेरी पूजा करे।

हम तो आखो में आसू भर कर लज्जा के साथ तेरी कीर्ति कथा गा रहे है। गाते जा रहे हैं। गाते रहंगे। क्योकि तेरी प्रबल आत्मशक्ति के सम्मुख कोई ठहर भी नही सकता, तू शिल्पकार, कला-प्रेमी, साहित्य सगीत का अनुरागी, आगम शास्त्र का ज्ञाता, परमात्मा पर अटल विश्वास, ऐसे उज्जवल व्यक्तित्व को शत-शत वदन है। शत-शत अभिनदन श्रद्धा से, भक्ति से, भावना से, चरण वदना यह कौन है? जिसे मैने निकट से देखकर परखा है।

ऐसे थे आचार्य नानेश। जिनकी पावन स्मृति मे आचार्य नानेश समता पुरस्कार प्रारम्भ किया गया।

खमत-खामणा

वंदन श्री गुरुराज को,
खमाऊँ संघ-समाज को।
आप हो तारण-तिरण जहाज,
कोटि-2 वंदन मुनिराज।
माफ करो अपराध को,
खमाऊँ संघ-समाज को॥ वंदन ...
गुरु गौतम अणगार महान,
तपस्वी संत गुणों की खान।
वंदन मन वच काय से,
खमाऊँ सघ-समाज को॥ वदन ...
दूर होय दैनिक दुष्कर्म,
जमे हृदय में जिनवर धर्म।
पावें जिससे मोक्ष को,
खमाऊँ संघ-समाज को॥ वंदन ...
वंदन सद्गुरुनाथ ने,
खमाऊँ सारा ही साथ ने॥ वंदन ...



समता दर्शन द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा सम्भव - आचार्य श्री नानेश

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इस सत्य को स्वीकार करने में किसी को विरोध नही है। विरोध हो भी नहीं सकता है। क्योकि अपने से इत्तर मनुष्यों के सहयोग से ही जीवन यात्रा में वह नये - नये कीर्तिमान स्थापित करता है।

वस्तुतः किसी समूह या समुदाय का नाम समाज नही है। (पशुओं) मनुष्येतरों की बहुसंख्या को एक शब्द से कहने के लिये इन शर्तो का प्रयोग होता है। उनमें ज्ञान चेतना है, किन्तु उसका सदुपयोग करने कि वे क्षमता नही रखते हैं। आचरण विचार कि कोई धारा नहीं किन्तु प्राप्त कर भोग करना ही उनकी प्रवृति है और उसमें किसी प्रकार का बदलाव नही आया हैं। पर मनुष्य स्थिति इनसे भिन्न हैं। वह अपनी क्षमता को अभिव्यक्त करता हैं। जिसमें नित-नूतन उपलब्धियों का वह संग्रह करता हैं। इसी के आचार - विचार की व्यवस्थित प्रक्रिया का वह अनुसरण करता हैं। और आध्यात्मिक विकास करने के लिये अग्रसर रहता हैं। वस्तुत· अध्यात्म की चरम स्थिति प्राप्त करना उसके पुरूपार्थ का लक्ष्य हैं, तो भौतिक क्षेत्र में भी उसने अपने ज्ञान का चमत्कार दिखाया है। इसीलिये मनुष्य मात्र का संग्रह करने के लिये समाज शव्द का प्रयोग होता है।

देश या अन्य कारणो से मनुष्य मनुष्य में भेद या अंतर मान लि- जाये। पर उन सबकी मूल वृत्तिया प्रवृत्तिया समान है। इस दृष्टि से सम. मानव जाति में समानता है एव समता उसका स्वभाव है।

मनुष्य ही नहीं , प्रकृति के प्रत्येक तत्व ने अपनी समता -समानता की मर्यादा भंग नहीं की है। जैसे जल स्वभावत शीतल है, अग्नि ऊष्ण है। इस प्रकार प्रत्येक सचेतन समता का वाहक है। इतना ही नहीं अचेतन पदार्थो की यही स्थिति है। समता यानि अपने मूल स्वभाव में विकृति न आने देना। सदैव स्वभाव में स्थित रहना। आचार्य हेमचन्द्रसूरी ने कहा है -आदीप आस्योअ समस्वभावं।

जैन काल गणना के अनुसार देखा जाये तो प्राणधारियों का अधिक समय समभाव में व्यतीत होता था। उस समय ने राग द्वेष, वेर -विरोध विषमता के लिये अवकाश नहीं रहता था। इसलिये उस युग मे समता की उपयोगिता पर विचार करने कि जरूरत भी नहीं रही। परन्तु जव समय वदला तो प्राकृतिक पदार्थो के युगधर्मो में न्यूनता आने के साथ उनके अभाव की स्थिति भी प्रारंभ हो गई। परिणामत · मनुष्यों में दीनता हीनता आने के कारण विपमता की स्थिति आ वनने लगी। द्वेष के साथ दूसरे के अधिकारों और स्वामित्व के हनन की प्रवृति भी इसी से वढने लगी। इस स्थिति के शमन करने के लिये उपाय किये गये। लेकिन युग का प्रभाव परिवर्तित नहीं हो सका।

ये कभी निराश नहीं हुए :-

इनके जीवन मे कई उथल पुथल मचे, सकटों के बादल गरजे, विपत्तियों की बिजलियो कडकी, कई भयावने भूकम्प आये, कई प्रतिशोध टकराये। मगर यह साहसी सत कभी निराश नही हुआ अपने अदम्य उत्साह, आन्तरिक प्रेरणाओ और मर्यादाओं मे रहकर अपना पथ आलोकित करते गये।

ये विश्वकर्मा थे :-

नास्तिक को आस्तिक, हिंसक को अहिसक, दयाहीन को दयावान बनाकर उनके अन्तर-दिल में दया और करुणा पैदा की थी। हमारी निर्बल और सूनि काया मे श्रेय और प्रेम का रक्त भरते रहे। ये बिगडो को बनाते थे, गिरते हुए को उठाते थे, निराशावान को आशावान बनाते थे, पतितो को सम्मान देते थे और धर्म का बोध देते हुए सभी का पथ मगलमय बनाकर प्रशस्त करते थे।

अब ये नही रहे। उनके साधना जीवन के सभी चल चित्र धरती के कण-कण मे बिखर गये, अणु-अणु मे समा गये। ऐसे धर्माचार्य से राष्ट्र यशस्वी हुआ। धर्म अणुओ से इनका देवत्व जागृत था। इन्हें देश ने जाना, समाज ने पहचाना, और धर्म ने आत्मसात कर लिया। ये इतिहास बनाने वाले सृष्टा थे दूरदर्शी दृष्टा थे, सतो को गढने वाले विश्वकर्मा थे और समता के मसीहा थे।

ये दो अलंकरणों के धनी थे :-

आचार्य नानेश उन सतो मे से थे, जिनकी ख्याति और गौरव गरिमा राष्ट्र की सीमा पार कर चुकी थी उनका चारित्रिक बल, आत्मशक्ति और अनुशासन पर गहरा चिन्तन हो चुका था। कई धर्म दर्शनों के संगम थे। प्रलोभन और लालच से दूर थे। निस्पृह और निस्वार्थी बनकर कर्मयोगी हो गये थे। पद प्रतिष्ठा मे इन्हे अनुराग नहीं था। इनके पास आचार्यत्व और संतत्व के दो अलंकरण थे। इनकी प्रतिभा और शासन चलाने की हिम्मत देखकर इन अलंकरणों से इन्हे सम्मानित किया था।

आभा चमकती थी:-

जीवन भर ये गौरवशाली, विश्वासी और आत्मबली संत रहे थे। इनका परामर्श शतप्रतिशत सही रहता था। इनकी वाणी और दृष्टि मे महान चमत्कार था। ये स्वच्छ थे और जीवन भर स्वच्छ बने रहे, ये स्पष्ट थे और जीवन भर स्पष्ट बने रहे। विपरीत परिस्थितियो से लोहा लेना इनका स्वभाव था। सत-चित-आनन्द मे रमे रहे। सन्तो को बनाते रहे, गढते रहे और उनके मानस में चेतना का माधुर्य भरते रहे। इनके मुख पर एक अपूर्व ज्योति जगमगाती रहती थी और सदैव आभा चमकती थी।

माता पिता और भाई का लाडला सपूत साधना के माध्यम से कहा से कहाँ पहुँच गया। गाँव का एक नन्हा बालक राष्ट्र का ज्योतिर्धर हो गया। जहाँ क्षितिज और धरती मिली हुई दीखती है, तारे झिलमिलाते है, शतरगी आभा ध्वनित होकर नयनो को तृप्त करती है। वहाँ इन्होने सुख-दुख, पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म और उत्थान-पतन के कई नजारे देखे, राष्ट्र और समाज बदला, मगर यह सत ज्यो का त्यों अपने आगमिक सिद्धातो और आदर्शो पर डटा रहा।

कितना दर्द इस आचार्य में :-

देश प्रेम और देश भक्ति से इनका मानस भरा था, श्री जवाहराचार्य के साहित्य ने इनका जीवन बदल दिया था। यही एक ऐसे सत थे, जिन्होने मध्यप्रदेश के सैकडों ग्राम निवासियों की विचार धारा, आचार विचार, खान-पान, वदल दिया था। नशा छुडा दिया था। कितनी दर्द भरी लगन थी, इस आचार्य मे, कितनी सवेदन शील शक्ति थी इस आचार्य मे, यह संत चला गया, मगर उनके विश्वास कण आज भी मिट्टी के कण-कण मे, भवन खण्डों मे, महलो में किलो मे, भीम पाषाण खण्डो में, मीनारो मे बोल रहे है गूज रहे है, तरगित हो रहे है, सगीत धारा बह रही है, विजय घोष कर रहे है।

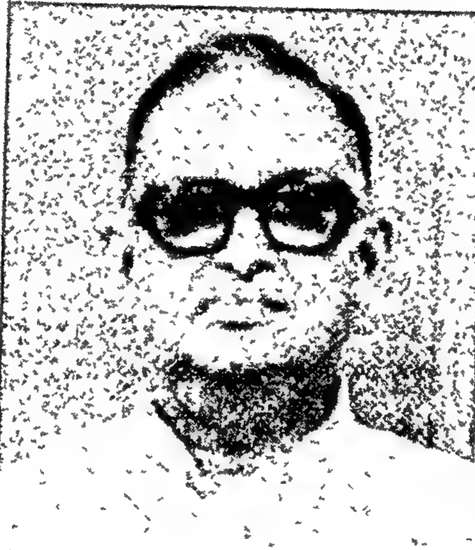
आचार्य नानेश ? तुम जाओ ! हंस अपने पख फडफडाता हुआ उड गया। सभी ने देखा, मगर कोई कुछ न कर मका।

शत-शत वन्दन अभिनन्दन।

ब्रह्मा के दरबार में श्री सोहनलालजी सिपानी

श्री मिट्ठालाल मुरड़िया, साहित्यरत्न-धर्मरत्न

ब्रह्मा, विष्णु और महेश का दरबार लगा हुआ था, लाखों लोग धन, पद, वर्ण, कद लेने के लिए जमा थे, विलम्ब के कारण तर्क - वितर्क, धक्का - मुक्की और शोरगुल होने लगा, मुक्के लाठियाँ और पिस्तौले तन गई। यह सारा दृश्य ब्रह्मा देख रहे थे। वहाँ श्री सोहनलालजी सिपानी भी पहुँचे, धीरे से ब्रह्मा के पॉव दबाने लगे, विष्णु के मालिश और महेश के सिर पर अमृतांजन मलने लगे। समता का यह पुजारी चुपचाप सेवा में लगा था। प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने श्री सोहनलालजी सिपानी को वर्ण, धन, आयु, कद, मान-सम्मान - यश - सुख, वैभव, सुसंस्कारमय परिवार देने की घोषणा कर दी। श्री सिपानीजी उछलते कूदते भागे-भागे श्रीमती जेठी बाई सिपानी के पास पहुंचकर अपनी विजय- कथा सुनाने लगे।



मार्ग में सुंदर, राज, कमल, विमल और सरला मिले। पिताजी क्या बात है। तुम जरा ठहरो। पहले मुझे तुम्हारी ममतामयी माँ को बहादुरी की कथा सुनाने दो।

स्व. सेठ श्री भैरूंदानजी सिपानी एवं श्रीमती धन्नीदेवी के आत्मज श्री सोहनलालजी की गुरु निष्ठा, धर्म परायणता, शासन समर्पणा एवं समाज सेवा में वेंगलोर का साधुमार्गी जैन संघ और वीकानेर, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ ही नहीं, समग्र जैन समाज गौरवान्वित है।

श्री भैरूंदानजी सिपानी मूलत: वीकानेर जिलान्तर्गत उदयरामसर निवासी है। आप स्कूली शिक्षा अधिक प्राप्त नहीं कर सके परन्तु अपनी श्रमनिष्ठा, लगन, अनुपम प्रतिभा एवव्यावसायिककुशलता से आपने अर्थोपार्जन तो किया ही, धार्मिक/सामाजिक कार्यो मे अग्र... रहकर मुक्त हस्त से दान भी दिया। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती धन्नीदेवी की कुक्षि से पुत्र-त्रय सर्व श्री सोहनलालजी, श्री गोकुलचन्दजी एवं श्री रिधकरणजी व पुत्री-द्वय श्रीमती छगनी देवी दस्सानी व श्रीमती मोहनी देवी लूणिया का जन्म हुआ, जिन्हे धर्मनिष्ठा तथा सेवा के संस्कार माताश्री से एवं संघ/शासन निष्ठा तथा जनकल्याण के संस्कार पिताश्री से मिले।

श्री भैरूंदानजी ने सर्वप्रथम कलकत्ता मे स्लेट का व्यवसाय प्रारम्भ किया और तदनन्तर आन्ध्र प्रदेश के मारकापुर कस्बे में विस्तार कर स्लेट बनाने का कारखाना स्थापित किया। साथ ही हासन तथा चिकमंगलूर में लकड़ी का कारखाना भी खोला। आपने दिन-ब-दिन सफलता के सोपान तय किये और कुछ वर्षो में अपनी प्रामाणिकता व ईमानदारी में अपना पृथक् स्थान वना लिया। आपकी धार्मिक/ सामाजिक प्रवृत्तियों में भी विशिष्ट रुचि रही। आप आजीवन समाज उन्नयन हेतु सजग, सचेष्ट व तत्पर रहे।

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी ज्येष्ठ पुत्र हैं, जिनका जन्म वि. सं. 1985 मिगसर सुदी 15 को उदयरामसर में हुआ। आपका पाणिग्रहण गंगाशहर निवासी स्व श्री चांदमलजी डागा की सुपुत्री अ.सौ. जेठी देवी के साथ हुआ।

विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी

आपने अपनी धर्मनिष्ठा से वडे-वडे आचार्यो, संतो, ... नेताओं और साहित्यकारों में वहत आदर प्राप्त

केया है। आप दिल से साफ और स्पष्ट है, न्याय नीति पर वलकर आपने कई प्रतिष्ठान स्थापित किये है। आप मानवीय सद्गुणो, दया, करूणा, मैत्री, धैर्य, क्षमा, समता और विवेक के कीर्ति पुरूष है।

जिसका जीवन गौरवशाली है, जो धर्मनिष्ठ है, सौजन्यमूर्ति है, उसके व्यक्तित्व का निर्माण आचार्य श्री जवाहरलालजी म, आचार्य श्री गणेशीलालजी म., आचार्य श्री नानालालजी म. और अब आचार्य श्री रामलालजी म. की भाव वंदना के सर्वागीण उपादानो से हुआ है। ऐसे नवरत्न को पाकर माता - पिता और चतुर्विध सघ धन्य है।

श्री सिपानीजी सरल आत्मा और नम्र स्वभाव के है। स्नेह का जीता-जागता चलचित्र है। समता का अनुपम करिश्मा है, मैत्री की महक है, विवेक की आत्मा है, शाति का अनुपम सितारा है। एक छोटे से गॉव उदयरामसर के इस चमकते सितारे ने समस्त जैन जगत को प्रभावित कर जगाया है।

आचार्य नानेश के प्रतिनिष्ठा

जबसे ज्योतिर्धर महान क्रांतिकारी क्रातद्रष्टा युगपुरूष जैनाचार्य श्री जवाहर, शात क्राति के जन्मदाता सरलता की सजीव मूर्ति आचार्य श्री गणेश, युग-पुरूष है समता विभूति जिन शासन प्रद्योतक धर्मपाल प्रतिबोधक समीक्षण ध्यान योगी श्री आचार्य नानेश के प्रति आपकी निष्ठा जमी है, तबसे आप खूब फले-फूले है, सम्पन्नता मे खूब बढे है, उदारता मे खूब आगे आये है। हर व्यक्ति अपने मगल प्रसग पर आपकी उपस्थिति पर अपने को धन्य समझता है। जिस पर धर्म की, धर्म गुरूओ की, लक्ष्मी की, सरस्वती की कृपा है। वहां गगा, यमुना, सरस्वती व कावेरी एक साथ आचार्य जवाहर, आचार्य गणेश, आचार्य नानेश एवम् आचार्य रामेश की वाणी का विजय घोष करती है, वहॉ यही विजयघोष श्री सिपानीजी के कानो मे गूंजता रहता है।

आप मे भामाशाह की चमक है, इसी चमक से आपके मानस मे धर्म सस्कार बढे है, धर्म का यह स्नेही अपने ही पराक्रम से बढता हुआ व्रत नियमो मे चढता जा रहा है। खेतो, खलिहानो, नदियो, झरनो और पक्षियो के कलरव की पवित्रता ऐसे आगमज्ञ, तरूण तपस्वी, बालब्रह्मचारी, प्रशांत मना,आचार्य श्री रामेश के दिल मे उमड-उमडकर अनंत भाव धाराओ मे फूटकर श्री सिपानीजी के मानस को आन्दोलित कर रही है।

आप जब भी प्रार्थना करते हैं, तब इतने भाव विभोर हो जाते हैं कि भक्ति धारा मे आप डूब जाते है। जहॉ मीरा का कथन कितना सत्य लगता है कि - **मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई,** कितु सभी धर्मो और सभी सत आत्माओ के प्रति आपके पुज्यनीय विचार है। आप अपने विचारो से उतग शिखर पर पहुच गये है।

जीवन मंगलमय बनाया है

श्री सोहनलालजी सिपानी का नाम लेते ही, गत वर्षो का धर्म इतिहास बोलने लगता है इतिहास के इस प्रवाह मे कही रूकावट नही, इसीलिए आप में सरलता, समता, सौम्यता, सहृदयता व धैर्य पूरी सहिष्णुता के साथ उमड रही है। आप में, जैन सस्कृति का प्रभाव, गौतम गणधर का पराक्रम, तीर्थकरो की महिमा और उदारता की यशस्वी वीणा गूज रही है। तभी गुलाब खिलने लगते है, अशोक, नारियल, सुपारी के पेड अंगडाइयें लेते है, चम्पा, चमेली और गेदा एक साथ महक उठते है। धन्य है इस धर्म वीर को। धर्म धीर को। और शांत प्रकृति के प्रतीक को। जिसने अनेकों का जीवन बनाकर बढाया है, उनका मार्गप्रशस्त कर कीर्ति कलश चढाया है।

चूकि आपको व्यावसायिक कुशलता व धर्मपरायणता के संस्कार पूर्वजों से मिले थे आपने व्यवसाय मे प्रविष्ट होते ही उद्योगों का उल्लेखनीय विस्तार किया। बेगलोर मे सम्पूर्ण व्यवसाय सिपानी ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के नाम से सुख्यात है।

व्यवसाय संचालन के साथ आप अनेक सामाजिक/धार्मिक/शैक्षणिक/सांस्कृतिक संस्थानों से सम्बद्ध रहकर अनुपम सेवा कार्य कर रहे है। सम्प्रति आप मुख्यत निम्नाकित सस्थानों के पदाधिकारी है-

- श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ, वीकानेर के ट्रस्टी।
- श्री साधुमार्गी जैन संघ, वेगलोर-अध्यक्ष

* एस.एम. जैन श्रावक संघ विल्सनगार्डन, बेंगलोर-अध्यक्ष
* आगम अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर-अध्यक्ष
* श्री सुरेन्द्र कुमार सांड शिक्षा सोसायटी, नोखा-अध्यक्ष
* श्री जैन शिक्षा समिति, बेंगलोर-अध्यक्ष
* बीकानेरी समुदाय, बेंगलोर-अध्यक्ष

आप संघ के सर्वतोमुखी विकास हेतु सदैव प्रयासरत रहे व हैं। सामाजिक/धार्मिक कार्यों हेतु आप उदारता पूर्वक तहेदिल से सहयोग प्रदान करते हैं। आपने बेंगलोर में सिपानी भवन का निर्माण भी कराया है। जिसमें फ्री आयुर्वेदिक औषधालय चल रहा है। जनकल्याण के कार्यो हेतु भी आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। अपनी जन्म भूमि के विकासार्थ आप अनवरत सहयोग प्रदान करते हैं। उदयरामसर के अभावग्रस्त छात्रों की पढाई-लिखाई व रोगग्रस्त व्यक्तियों की चिकित्सा हेतु सहयोग के लिये आप सदैव तत्पर रहते हैं।

आपके चार पुत्र सर्व श्री सुन्दरलालजी, राजकुमारजी, कमलचन्दजी व विमलचन्दजी हैं एवं पुत्री-श्रीमती सरला देवी बेताला है। सभी सुशील, विनयवान एवं संघनिष्ठ है। आपके हर कार्य में उनका सहयोग/योगदान रहता है।

अमरत्व की ओर

श्री सोहनलाल सिपानी एवं श्रीमती जेठीबाई सिपानी ने २८-६-९० गुरूवार के दिन समता विभूति चारित्र चूडामणी बाल ब्रह्मचारी विश्व शांति के मसीहा आचार्य श्री नानेश की आज्ञानुवर्तिनी शासन प्रभाविका मरूधर सिंहनी महासती श्री नानुकवरजी म.सा. की सुशिष्या विदुषी मधुर व्याख्यानी महासती श्री अनोखा कंवरजी म.सा. के मुखारविंद से जैन स्थानक अलसूर, बेंगलोर में आपने आजीवन (चतुर्थव्रत) ब्रह्मचर्य व्रत का अंगीकार किया। जो एक तलवार की धार पर चलने के समान है। ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाले को देवी-देवता भी वंदन नमस्कार करते हैं।

वीणा के तार टूट जाय

भले ही वीणा के तार टूट जाय, भले ही बांसुरी फट जाय, भले ही सितार के स्वर समाप्त हो जाय, भले ही नगाढे बंद हो जाय। मगर आपको वीतराग धर्म, जिनेश्वर देव और आ... श्री के प्रति निष्ठा में कोई अंतर नहीं आता। आपकी आ... अनहद की संगीत लहरियों से तरंगित रहती है, आपके मन... पटल में महावीर की क्षमा, तथागत की करूणा, गांधी की सत्यनिष्ठा और अरविंद की मानवीयता समता के साथ आ... में समायी हुई है। यशस्वी जीवन जीनेवाले, मानवीय गुणों से विभूषित और दिव्य भावनाओं में रमने वाले प्रतापी पुरुष है।

आप सतर्क पराक्रमी पुरूष है

आप सतर्क पराक्रमी पुरूष है। सोते-जागते-उठते-बैठते-चलते-फिरते और विचार व्यवहार करते आचार्य श्रीजी की भक्ति मंदाकिनी में डूबे रहते हैं। मगर सभी धर्मो के प्रति आपकी वही श्रद्धा भक्ति है। दया-दान में आप आगे है। समाज के हित चिंतन से आपका व्यक्तित्व खूब बढा है। आप धर्म, कर्म, ज्ञान, श्रद्धा और भक्तियों में खूब आगे बढे चढे हैं। आप एकता के, समता के, शांति के उपासक है। गंभीर मानस के निष्ठावान अणुव्रती हैं।

श्वेत परिधान, गौरवर्ण, गोल आकृति, समतल बोलते नयन, फडकते नथुने, मुस्कराती दृष्टि, धीमीगति, मितभाषी, सामायिक, धार्मिक, व्रत-पच्छखाण करने वाले सुश्रावक आदर्श पुरूष हैं।

नेक इन्सान हैं

श्री सोहनलालजी सिपानीजी को न पद की, न प्रतिष्ठा की, न प्रशंसा की इच्छा है। आप जो है, जैसे हैं, बस वैसे ही आप नेक इन्सान हैं। धर्म और समाज की उन्नति के लिए भी सिपानीजी के दिल में एक दर्द, एक पीडा और एक टीस है। इसलिए मीरा कहती है कि हरि मैं तो दरद दिवाणी, मेरा दरद न जाणे कोय कितना सत्य है। आप दान देकर भी नाम और प्रशंसा नहीं चाहते हैं। तभी तो आप कहते हैं कि-

देनेवाला कोई और है, देता है दिन रैन।
लोग भरम हमपे करें, ताते नीच नैन ॥

आप दीर्घायु हो, सुख और आनंद से जीवन व्यतीत करते हुए चतुर्विध संघ और आचार्य श्री रामेश के पाट का गौरव बढाते रहे यही मंगल कामना है।

जन-जन के उद्धारक

धर्मपाल प्रतिबोधक आचार्य नानेश

युवाचार्य पद की चादर प्रदान करने का समारोह उदयपुर राजप्रसाद के सूर्य गोखडे के सामने वाले मैदान में आयोजित किया गया था। वह दिवस था वि सं. २०१९ की आश्विन शुक्ला २, दि ३०-९-१९६२ ई०। मैदान मे करीबन ४० हजार की मानव-मेदिनी श्रद्धा पूर्ण भावना के साथ इस पावन समारोह की साक्षी थी। उपस्थित जनसमूह में दिगम्बर, मदिरमार्गी तेरापंथी आदि सम्पूर्ण स्थानीय जैन समाज के अतिरिक्त हिन्दु, मुस्लिम, बोहरा समाज आदि के हजारों जैनेतर बन्धु भी थे। आचार्यश्री के पाटे के सामने ही मेवाड के महाराणा श्री भगवतसिंहजी बैठ हुए थे। उनके साथ कई राज्याधिकारी एवं गणमान्य सज्जन भी उपस्थित थे।

शातक्राति के अग्रदूत, शास्त्र मर्यादा के आगम पुरुष आचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा. का स्वास्थ्य अनुकूल नही था। अत वे डोली मे पधार कर जब पाट पर विराजे तो जनता ने जय-जयकार के नारों से आकाश गुजा दिया। मगलाचरण एवं स्वाध्याय के बाद तपस्वी श्री केशवनलाल जी म सा. ने श्वेत स्वच्छ सादगी के प्रतिरुप खादी की चादर आचार्यश्री को ओढाई और वही चादर आचार्यश्री ने युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित करते हुए आपश्री (नानालालजी)को ओढाई। विराजित मुनिमण्डल ने ओढाते समय चादर के हाथ लगाकर अपना समर्थन प्रकट किया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने अपने संक्षिप्त प्रवचन में चादर की महत्ता बताते हुए युवाचार्यश्री को आज्ञाएं शिरोधार्य करने का निर्देश दिया।

इस समारोह के साथ एक हृदयस्पर्शी घटना भी जुड गई। अपने सपूत का समारोह देखने आपश्री (मुनि श्री नानालालजी म.) की मातुश्री श्रीमती श्रृंगारबाई भी दांता से पधारी थी। वह जब आचार्यश्री को वन्दन करके सुखसाता पूछ रही थी तो आचार्यश्री ने मधुरता के साथ पूछा - कई मांजी, बेटा महाराज का दर्शन कर लीए ? **अबे ई नाना नाना नी रिया, घणा मोटा वेड्ग्या है।** भद्रिक मां श्रीमती श्रृंगारबाई ने मां की ममता भरा उत्तर दिया-अन्दाता, **ई घणां भोला टाबर है, यां पे अतरो बोझो मती नाको।** फिर मां ने अपनी स्नेहिल दृष्टि से युवाचार्यश्री की ओर गहराई से देखा, मानो कह रही हो-**म्हारा धोरा दूध री अणी चादर में कालो दाग मत लगाइजो।**

भविष्यवाणी दिव्य सिद्धि की ओर

पूज्यश्री हुक्मीचन्दजी म.के पचम पट्टधर पूज्यश्री श्रीलालजी म. ने एक बार सहज भाव से फरमाया था कि भविष्य मे अष्टम पट्टधर आचार्य इतने अधिक पुण्यशाली होंगे कि जिनके आचार्यत्व काल मे धर्म की महत्ती प्रभावना होगी एवं यह पाट परम्परा अत्यन्त दीपेगी। यह भविष्यवाणी, जिस दिन हमारे चरित्र नायक आचार्य पद प्रतिष्ठित किये गये उससे कोई ५० वर्ष पूर्व की गई थी, जबकि आपश्री का जन्म भी नहीं हुआ था। यह भविष्यवाणी न केवल सत्य सिद्ध हुई है अपितु यह कहने मे कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि आचार्यश्री श्रीलालजी म. के शुभ वचन दिव्य सिद्धि की दिशा में गतिमान बने।

धर्मपाल प्रवृत्ति की सफलता ने आचार्यश्री को आचार्य श्रीमद् रत्नप्रभ सुरीश्वरजी के समकक्ष रख दिया है, जिन्होंने उस काल में जैन धर्म की अमित प्रभावना करते हुए ओसवाल समाज का निर्माण किया। इतिहास का इसे स्वर्णिम पृष्ठ ही कहेंगे कि आचार्यश्री के क्रांतिकारी व्यक्तित्व ने हजारो मानव हृदयो मे जीवन विकास की सुन्दर अभिलाषा जागृत कर दी, आचार्यश्री नागदा से गुराडिया ग्राम पधारे जहां से यह मानिये कि इस सामाजिक नव - जन क्रांति अथवा जन कल्याण के यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। वहां के सभी ४०-५० घर दुर्व्यसनो से मुक्त होने के लिये तत्पर हो उठे। उन्हीं दिनो मे पास के गांव में एक विवाह के निमित्त से ७० गावों के गुजराती बलाई वहां एकत्रित होने वाले थे, तव सीतारामजी के निवेदन पर आचार्यश्री वनवना गांव पधारे जहां आपश्री

के मार्मिक उपदेशों से जादू का सा प्रभाव पडा। और ७० गांवों की पंचायतों से आये हुए ५३ परिवारों के सदस्यों के साथ अन्य २०० व्यक्तियों ने भी शराब, मांस, शिकार आदि दुर्व्यसनों का त्याग कर आपश्री के सान्निध्य में सम्यक्त्व ग्रहण करते हुए जैन धर्म अंगीकार किया। उस समय सीतारामजी ने ही निवेदन किया-गुरुदेव, मुझे विश्वास है कि आपका यह संस्कार-शुद्धि एवं जीवन-विकास का अभियान अवश्यमेव सफल होगा, किन्तु क्या तब भी हमारे नामों के साथ घृणा-बोधक शब्द बलाई ही लगा रहेगा ?

आचार्यश्री ने उनकी भावना को समझकर इस जाति का गुण सम्पन्न नाम रख दिया धर्मपाल। इस प्रकार वह छोटा सा गांव गुराडिया धर्मपालों की उद्भव भूमि होने के कारण एक तीर्थ धाम-सा हो गया। फिर तो आचार्यश्री गुजराती बलाइयों के छोटे-छोटे गांवों में पधारे और एक ही व्यापक भ्रमण में करीब १५०० परिवारों के १० हजार व्यक्ति नवजीवन निर्माण के पथ पर चल पडे। आपश्री के चातुर्मास हेतु इन्दौर पधार जाने के बाद भी यह शुभ अभियान चलता रहा। अभी तक पूरी सफलता के साथ चल रहा है जिसके कारण करीब-करीब यह पूरी जाति धर्मपालों के रुप में परिवर्तित हो गई है। जिन धर्मपालों की सख्या आज करीबन 2 लाख तक बताई जाती है। हृदय परिवर्तन करके सामूहिक रुप से जीवन सुधारने का यह अद्वितीय उदाहरण है।

जन साधारण के जीवन सुधार के नियम

१. मौसर या स्वामी वात्सल्य आदि किसी भी नाम से किये जाने वाले मृत्यु भोज में न जीमने जायेगे और न ऐसे मृत्यु भोज करेगे।

२. विवाह में तिलक या लेन-देन की सौदेवाजी नहीं करेगे

३. सगाई (सम्वन्ध) होने के बाद उसे कोई पक्ष नही छोडेगा

४. मृत्यु के वाद एक मास से अधिक शोक नही रखेंगे।

५. धर्म स्थान पर सादी वेशभूषा में जायेंगे और प्रवचन में मौन रखेंगे।

६. स्वयं यथाशक्ति धार्मिक-शिक्षण लेंगे व वालक-वालिकाओं को दिलायेंगे।

७. धर्म स्थान पर अथवा सामूहिक स्थान पर प्रति... सामूहिक प्रार्थना करेंगे।

८. विवाह आदि समारोहों पर गदे गीत गाने पर ... लगवायेंगे।

९. जाति व धार्मिक रीति रिवाजों में व्यर्थ खर्च नहीं करें...

१०. प्रात. उठते समय व साय सोते समय ११ नवका... मन्त्र का जाप करेगे।

११. दीक्षार्थी भाई बहनों की दीक्षा भावना मे बाधक नहीं बनेंगे बल्कि सहयोग देंगे और सादगी से सम्पन्न करावेंगे।

१२. कोई भी भाई-बहिन त्यौहारों के दिनों मे शोक व... के यहां रोने व रुलाने के लिये नहीं जावेगे।

१३. विवाह आदि अवसरों पर बैंड बाजो मे अनावश्यक खर्च नही करेंगे।

१४. प्रति दिन एक या माह मे ३० सामायिक पूरी करेंगे।

१५. जाति सम्बन्धी व व्यक्तिगत झगडों को धर्म मे नहीं डालेंगे।

१६. अनमेल विवाह नहीं करेगे।

१७. आध्यात्मिक आहार हेतु धार्मिक पुस्तकों का यथाशक्ति पठन-पठन करेंगे।

१८. संत-सतियों के यहां जहां भी दर्शनार्थी जायेंगे वहा सादा भोजन करेंगे।

१९. नैतिक व चारित्रिक बल बढाने तथा असहायों की सहायता करने हेतु यथा शक्ति उदारता करेगे।

धर्मनगरी रत्नपुरी रतलाम में २५ धर्मरत्नों ने अध्यात्म क्षेत्र के अद्... रत्न आचार्य श्री के चरण सेवा में रत्न-त्रय के साधना पथ पर च... बढाये अर्थात् २५ दीक्षाएं एक साथ सम्पन्न हुई।

रतलाम नगर में यह शोभा यात्रा दि. ३-३-१९८८ को प्रात: ८.३० वजे जैन विद्यालय से प्रारम्भ हुई जो लकडपीठा, चांदनीचौक, तोपखाना, वजाजखाना, नोलाईपुरा, धान वाजार, माणकचौक, धानमण्डी, न्यूरोड होते हुए नेहरू स्टेडियम पहुंची।

शोभा यात्रा से पहले दिन मूर्ति पूजक जैन खतरगच्छ समाज की ओर से विदुषी महासती श्री चन्द्रप्रभाजी के सान्निध्य मे मुमुक्षु आत्माओ का भव्य अभिनन्दन किया गया जो जैन समाज की एकता को प्रेरणा देने वाला था। इसी समाज ने इस दिन सब की शोभा यात्रा भी निकाली। इस शुभावसर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त अनेक शुभ सदेश पढे गये। जिनमे आचार्यश्री चम्पकमुनिजी म सा. की ओर से प्राप्त सदेश अतीव प्रेरणास्पद था।

दिनाक ४ मार्च १९८४ का दिन जैन समाज के इतिहास मे स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा, जिस दिन आचार्य प्रवर के सान्निध्य मे एक साथ २५ मुमुक्षु आत्माए भोग से योग की ओर, राग से विराग की ओर एव आगार से अणगार की ओर मुडी। दीक्षा महोत्सव स्थानीय कालिकामाता के विशाल मैदान मे आयोजित था, जिसमें भी उपस्थित जन समुदाय समा नही रहा था। मगलाचरण से लेकर दीक्षा दान तक के कार्यक्रम आचार्यश्री प्रवर की पुण्यशाली छत्रछाया मे अपूर्व शान्ति एव शालीनता से सम्पन्न हुए। उस समय आप श्री के आज्ञानुवर्ती ३० मुनिराज तथा १२६ महासतियाजी विराजमान थे। इन दीक्षाओ को मिलाकर तब तक आपश्री की नेश्राय मे कुल ३८० दीक्षाएं सम्पन्न हो गई। दीक्षा प्रसंग पर उपस्थिति लगभग दो लाख तक आकी गई। २५ दीक्षा मिलाकर १८१ सत-सतियों का एक स्थान पर एकीकरण का उल्लेख नही मिलता।

आनादिकाल से भव-भवान्तर मे भ्रमण करते हुए इस आत्मा ने अनेक बार द्रव्य सयम का पालन किया होगा। परन्तु उससे आत्मा का कल्याण हो गया होता तो इस पचकाल मे जन्म लेना नही पडता। एक बार भी आन्तरिक शुद्धतम भावों से इस निर्ग्रन्थ अवस्था की परिपूर्ण आराधना हो जाय तो निश्चित रुप से यह जीव शाश्वत सुखों को प्राप्त करे ही।

वर्तमान समय मे श्रमण साधना की आराधना मे नये जमाने के नाम पर परिवर्तन करने के लिये अनेक प्रकार के प्रयत्न हो रहे है। उनसे बच पाना अनेक जीवों के लिये बहुत कठिन हो गया है। ऐसे प्रसग मे श्रमण भगवान महावीर के शासन के प्रति वफादार रहकर निर्मल सयमी जीवन को आराधना के लिये आचरित कई सूचनाएं सयमी जीवन की सुरक्षा मे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी-ऐसा (आचार्य श्री नानेश और आचार्य श्री चम्पकलालजी म सा) हम दोनो का मतव्य है।

१ एक सवत्सरी के लिये-सपूर्ण जैन समाज अथवा श्वेताम्बर जैन समाज अथवा स्थानकवासी जैन समाज एक मत होकर जो निर्णय करे उसे स्वीकार करने के लिये हमे तैयार रहना चाहिये।

२. ध्वनिवर्धक यत्र (माइक) सम्बन्धी-पहले बहुत चर्चाएं हुई है। पावर हाउस, जेनरेटर, बैट्री या अन्य किसी भी प्रकार से उत्पन्न विद्युत पावर तेजस्काय के अन्तर्गत सचित्त है। अत उसका उपयोग श्रमण मर्यादा में बिल्कुल योग्य नही है।

३. किसी भी सस्था-चाहे वह स्वय के नाम के साथ अथवा अपने गुरुजनो के नाम के साथ सम्बन्धित हो, के लिये किसी प्रकार के फड या चदे मे नही पडना चाहिये। इसी प्रकार दीक्षा आदि के प्रसग पर किसी भी प्रकार की पैसो की उछामणी नही होने देनी चाहिये।

४. उपाश्रय भवन, वाडी वगैरह किसी भी प्रकार के मकान के निर्माण सम्बन्धी, उपदेश नही देना चाहिये और उसी प्रकार उसके लिये किसी प्रकार के फड या चंदे मे भी नहीं पडना चाहिये।

५ धातु, प्लास्टिक अथवा चीनी मिट्टी के बने हुए बर्तन (तसल्ली, बाल्टी, प्लेट वगैरह) काम मे नही लेने चाहिये।

६. वायुकाय के जीवो की रक्षा के लिये डोरी पर कपडो को लटकाकर नही सुखाना चाहिये।

७. किसी भी प्रकार का सर्फ, साबुन तथा वाशिंग पाउडर का उपयोग नही करना चाहिये।

८. रात्रि में न तो पानी रखना चाहिये और न रात मे रहे हुए पानी को लेना चाहिये।

९. लाइट, पंखे वगैरह जहा चलते हों वैसे स्थान मे नही उतरना चाहिये।

१० नित्य-पिड (उसी घर से दूसरे दिन) आहार पानी उपयोगी में नही लाना चाहिये।

११. विहार में गृहस्थियों द्वारा अपने साथ लाए गए टिफिन से तथा विहार में दर्शनार्थ आए हुए बाहर के दर्शनार्थियो के पास से आहार-पानी नहीं लेना चाहिये।

१२. सचित मेवा-पूरी बादाम, दाख वगैरह नहीं लेना चाहिये।

१३. सूर्योदय से पहले विहार नहीं करना चाहिये क्योंकि उसमे अनेक प्रकार के स्पर्श सम्बन्धी विराधना होती है। जैसे-जिस स्थान में उतरे हुए हो वहां रात्रि में छोटे-मोटे जीवों का प्रतिलेखन किये बिना उपकरणो के साथ आना हो सकता है। परिणाम स्वरुप उनकी हिंसा अथवा स्थानान्तर होने की सम्भावना रहती है। और रात्रि में विहार में ईर्या समिति का पालन भी नहीं हो सकता है अत सूर्योदय के पहले और सूर्योदय के बाद विहार नही करना चाहिये।

सूर्यास्त होने के बाद सूर्योदय न हो तब तक नारी वर्ग को श्रमण वर्ग के उपाश्रय में तथा पुरुष को श्रमणी-वर्ग के उपाश्रय मे प्रवेश नही करने दिया जाना चाहिये।

१४. साधु-साध्वी की तपस्या के निमित्त से पत्रिका अथवा क्षमापना पत्रिका, दीपावली के आशीर्वाद वगैरह की पत्रिकाएं अपने हाथ से गृहस्थ को लिखनी नहीं चाहिये, छपवानी नही चाहिये। गृहस्थों को दर्शन करने के लिये आमंत्रित नहीं करना चाहिये। ये कार्य यदि गृहस्थ करते हो तो उन्हें भी रोकना चाहिये।

१५. फोटो खिंचवाना नहीं चाहिये, पाट, गाडी, पगलिया, समाधि आदि की जड मान्यता भी नही करनी चाहिये, न करवानी चाहिये। समाधि, पगलिया अथवा गुरुओ के फोटो पर धूप-दीप चढाने को अथवा नमस्कार करने को उपदेश देकर रोकना चाहिये।

इनके सिवाय अन्य बहुत सारी बातें हैं जिनका उल्लेख नहीं किया गया है परन्तु उनके लिये भी सजग रहना और रखना आवश्यक है।

यों तो साधु जीवन की साधना मे पांच महाव्रत एवं उनकी समाचारी का पूर्ण उल्लेख शास्त्रों में है ही, फिर भी वर्तमान काल मे किन्ही साधु-साध्वियों में किन्ही विषयों को लेकर विकृतिया प्रवेश कर चुकी है अथवा फैल रहीं हैं। शुद्ध संयम के पालन हेतु चतुर्विध सघ के प्रत्येक सदस्य के लिये इन बातो में सजग रहना आवश्यक है।

बढती हुई इन विकृतियो को यदि रोकने का प्रयास नहीं किया जायेगा तो यह स्थिति कहां तक पहुंचेगी और निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थ श्रमण संस्कृ ति का क्या होगा ? यह एक गंभीर विचारणीय विषय हो गया है।

शास्त्रोक्त साधु-समाचारी के अनुसार सभी शुद्ध और निर्दोष संयम की आराधना करके अपनी तथा शासन की शोभा बढ़ायें यही हमारी शुभकामना है।

ज्ञान की बातें

-चम्पालाल सुराणा, पाली

1 विपत्ति के समय का एक साथी है - साहस।

2. भोजन का एक उचित समय है - जब पेट में भूख हो

3. काम करने का एक उचित समय है - जब मन मे उत्साह हो

4. शांति का एक ही मार्ग हैं - सतोष

5. जन-प्रिय बनने का एक सरल नुस्खा है - मीठा व्यवहार।

6. कार्यकर्ता के लिए एक महान् दोष है - चरित्र की दुर्बलता।

7. मानवता का एक महान् दोष है - भूख मरी।

8. संसार में एक अमृत है - मधुर वाणी।

9. एक चीज सागर से भी गहरी है - महापुरुष का हृदय।

10. एक सर्व श्रेष्ठ विजय है - आत्म विजय।

3. एक ऐसी वस्तु है जो देने से मिलती है - सम्मान।

12. एक काम कभी पूरा नहीं होता - कल पर रहने वाला।

13 ससार में एक जीवित स्वर्ग है - प्रसन्न/सुखी परिवार।

14. एक व्यक्ति कभी नहीं उलझता - जो सदा स्पष्ट रहता है।

15. मनुष्य को शुली और सिंहासन दिलाने वाला एक ही है - आत्मा।

16. वाणी का एक भूषण है - सत्य।

गृहस्थ धर्म की पृष्ठभूमि

- युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.

व्यावहारिक बातों से हम इस निष्कर्ष पर आते है कि वस्तु को धारण करने के लिए तदनुकूल योग्यता भी प्राप्त करनी चाहिए। तो प्रश्न होता है कि धर्म को धारण करने के लिए फिर कैसी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए ? मनुष्य धर्म का अधिकारी (पात्र)कब और कैसे बन सकता है ?

आज से लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व भगवान महावीर के समक्ष एक बार यही प्रश्न उपस्थित हुआ था। इसके उत्तर मे कहा गया -

'धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ'

-धर्म शुद्ध हृदय में ठहरता है। इस छोटे से पद मे जो बात कही गई है, उसका विस्तार लाखो पदो मे हो सकता है। मै तो समझता हूँ सपूर्ण जिनप्रवचन का सार इस एक पद मे समाविष्ट हो गया है -

"पवित्र हृदय ही धर्म का आधार है।"

जब तक हृदय पवित्र नही होता, तब तक जीवन मे पवित्रता कैसे आयेगी ? और जब तक जीवन मे पवित्रता नही आई, तब तक धर्म का आचरण कैसा ? मलिन एव अपवित्र हृदय से किये गये हजारो क्रिया-काण्ड, लाखो सामायिक एव प्रार्थनाएँ, जप-तप सभी बेकार है -

भस्मनि हुतं

-अर्थात् राख मे घी डालने जैसा है। घर के एक कौने मे यदि गन्दगी का ढेर पडा सड रहा है, तो वहाँ चाहे जितनी अगरबत्तियाँ जला दीजिए, सुगन्ध महक नही सकती, बदबू ढक नही सकती। यही स्थिति हमारे जीवन की है, यदि मन मे, पवित्रता नही है तो धर्म जीवन को स्पर्श कर ही नही सकता। और यदि कोई धर्म का दिखावा करने का प्रयत्न भी करे तो उस जीवन मे धर्म का तेज तो प्रकट ही नही हो सकता। मन की अपवित्रता धर्म की तेजस्विता को दबा देती है, धर्म की असलियत को छुपा देती है।

हॉ, तो मै आपसे कह रहा था कि आचार्य हेमचन्द्रजी ने गृहस्थ जीवन के जिन सद्‌गुणो का वर्णन किया है, वे वस्तुत जीवन-भूमि को धर्म के योग्य बनाने वाले सद्‌गुण है। उने सद्‌गुणो के आचरण से मन और जीवन पवित्र एव विशुद्ध बन सकता है, मन का बर्तन मॉजकर उज्जवल हो सकता है, जीवन की चादर धुलकर पवित्र हो सकती है। वे ऐसे सर्व-सामान्य गुण है कि उनके अभाव मे धर्म नही टिक सकता। उनका विकास हुए बिना धर्म का विकास नही हो सकता। वे गुण जीवन की भूमि को तैयार करने वाले है, यदि भूमि तैयार हो गई तो फिर धर्म की फुलवारी खिलने मे कोई कठिनाई नही होगी। अणुव्रत और महाव्रत रूप धर्म की पृष्ठभूमि इन्हीं सद्‌गुणो के आधार पर तैयार हो सकती है। इसलिए मै चाहता हूँ कि चतुर किसान की भॉति आप अपने जीवन की भूमि को धर्म की खेती के योग्य बना ले, तो धर्म के बीज अपने आप इस खेती मे पल्लवित-पुष्पित होने लग जायेगे।

आत्मा की श्रेणियाँ

हमारे धर्मशास्त्र एव आचारशास्त्र के समस्त चितन का आधार आत्मा है, इसलिए अच्छा हो कि आत्मा के सम्वन्ध मे भी कुछ आवश्यक बाते समझ ली जायॅ। फिर धर्म की चर्चा करने मे सुविधा होगी।

चैतन्य सत्ता को 'आत्मा' कहा गया है, वह ज्ञानमय है। जब तक वह अशुद्ध दशा मे वर्तता है, विभाव स्थिति मे रहता है, वह 'आत्मा' या ससारी आत्मा कहलाता है, और जव परम शुद्ध दशा को प्राप्त कर स्वभाव मे स्थित हो जाता है तो वह चैतन्य सत्ता 'परमात्मा' कहलाती है। परमात्मा, सिद्ध, ईश्वर सभी पर्यायवाची नाम है। परमात्म-दशा का स्वरूप यद्यपि युक्ति-युक्त है, पर तर्कगम्य नही है, चूँकि वह एक

अनुभवगम्य दशा है। आत्मा की परम विशुद्ध, सर्वथा निरपेक्ष स्थिति है, जिसका वर्णन तर्क, शब्द एवं युक्तियों से नहीं किया जा सकता। सर्वज्ञ स्वयं उस दशा का अनुभव करते हुए भी शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं कर सके और इसीलिए कहना पडा -

"तक्का जत्थ न विज्जई, मई तत्थ न गाहिया"

तर्क उस दशा का वर्णन नहीं कर सकता, मति उसका अनुभव ग्रहण नही कर सकती। उपनिषद् में आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी लम्बी-चौडी चर्चा के बाद आखिर यही कहा गया-

'नैषा तर्केण मतिरापनेया'

तर्क के द्वारा बुद्धि की समझ में आने का यह विषय नही है। हॉ, तो जब बुद्धि से अगम्य विषय है, तो इसलिए हम परमात्मा के सम्बन्ध में अधिक चर्चा न करके आत्मा के सम्बन्ध में ही चर्चा करेंगे। आत्मा को ही परमात्मा बनना है, इसलिए आत्मा से परमात्मा तक पहुँचने के मार्ग की जानकारी हमारे लिए वाच्छनीय है।

आत्मा की विभिन्न दशाओं को समझने के लिए शास्त्र में पॉच श्रेणियॉ बताई गई हैं।

1. प्रसुप्त आत्मा
2. सुप्त आत्मा
3. जागृत आत्मा
4 उत्थित आत्मा
5. समुत्थित आत्मा

1. प्रसुप्त आत्मा- वह आत्मा है जो गाढ निद्रा में सोया हुआ है। उसकी नींद कभी टूटती नहीं, मोहनिद्रा के वश निरतर संसार में परिभ्रमण करता रहता है। इसके कर्मो का उपशम तथा क्षयोपशम तो हो सकता है, किंतु क्षय कभी नहीं हो सकता। कर्मो का क्षय हुए बिना बंधन-मुक्ति नहीं हो सकती और बन्धन-मुक्ति हुए बिना कभी निर्वाण नही हो सकता। आत्मा में निर्वाण की योग्यता होते हुए भी उसकी मोहनिद्रा इतनी प्रगाढ होती है कि उस योग्यता को विकसित करने का अवसर कभी प्राप्त नही हो सकता। प्रसुप्त आत्मा की इस स्थिति को व्यवहार भाषा में -'अभव्यदशा' कहा जाता है। अभव्य आत्मा-कठोर से कठोर आचार ... करके ऊँची से ग्रहस्थधर्म की पृष्ठभूमि से ऊँची पुण्य ... को भोग सकता है, देवलोक में भी जा सकता है, किन्तु ... मोह के कारण उसका धार्मिक विश्वास कभी भी सुस्थिर ... पवित्र नही हो सकता, इसी कारण वह कभी मोक्ष प्राप्त न... कर सकता।

2. सुप्त आत्मा- मोहनिद्रा का गाढ आवरण इस पर न... होता, फिर भी एक प्रकार की तन्द्रा, सुषुप्ति जैसी स्थिति ... यह आत्मा रहता है। उसके ज्ञानचक्षु खुल नही पाते और ... सत्य का दर्शन भी नहीं कर पाता। आत्मा की यह प्रथ... गुणस्थान की स्थिति है। इस स्थिति मे तत्त्व के प्रति जिज्ञासा, सत्य को समझने की भावना जागृति हो सकती है, किन्तु सम्यक्बोध और यथार्थ दृष्टि के अभाव में वह सत्य के स्वरू... पर आस्था नहीं कर सकता।

3. जागृत आत्मा-आत्मा की यह तीसरी दशा हे। जब सत्य का सवेरा होता है, ज्ञान का सूर्य उदय होता है, तब आत्मा अपने स्वरूप का बोध प्राप्त करके जाग उठता है। अनन्त-अनन्त काल से चढी हुई मिथ्यात्व की परतें टूट जाती हैं, संशय एवं अज्ञान की ग्रंथियॉ खुल जाती हैं, एक अभूतपूर्व प्रकाश जगमगा उठता है, जीवन में सत्य की ज्योति फैल जाती है। जैन परिभाषा मे इस स्थिति को चुतर्थ गुणस्थान-दशा कही जा सकती है, जब आत्मा ग्रन्थि भेद करके अपूर्वकरण का अनुभव करता है। उपनिषद् मे इस स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है -

भिद्यते हृदय-ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥

आत्म देव का दर्शन होने पर हृदय की सब ग्रन्थियॉ नष्ट हो जाती हैं, और सब संशय समूल क्षीण हो जाते है। आत्मानुभव के साथ अपूर्व प्रसन्नता उमड पडती है।

जागृत अवस्था की यह दशा जितनी आनन्ददायी है, उतनी ही सावधानी से आगे वढने की अपेक्षा भी रखती है। जो आत्मा आज तक अंधकार में भटकता रहा, अज्ञान की ठोकरें खाता रहा, वह जब आत्म-ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करता है,

सम्यक्त्व का अधिकारी बनता है तो उसे आगे पुरुषार्थ एव पराक्रम करने की अपेक्षा रहती है, ताकि उसका वह सम्यक्त्व सूर्य पुन मिथ्यात्व के बादलों की ओट में नही छुप सके।

चन्द्रमा को देखने वाला कछुआ

बहुत बार ऐसा भी होता है कि मनुष्य जाता है, किन्तु आलस नही टूटता, और वह पुन सो जागता है। अंधकार मे भटकता हुआ प्रकाश के किनारे तक पहुँचता है, अपूर्व प्रकाश का दर्शन करके मचल उठता है, किन्तु जो इस विषय को बहुत स्पष्टता से समझा सकती है।

एक बहुत बडा तालाब था। तालाब के पानी पर चारो ओर बहुत घनी काई छाई हुई थी। काई की परते इतनी घनी थी कि उस जल के भीतर रहने वाले हजारो जीव जन्तुओ ने कभी तालाब के बाहर का किनारा भी नही देखा। उनके लिए ससार उतना ही बडा था जितने मे वे रहते थे।

एक बार कोई एक कछुआ तालाब मे भम्रण करता हुआ एक ओर पहुँचा जहॉ हवा के झोको से काई मे एक छिद्र हो गया था। छिद्र में से प्रकाश छनकर आ रहा था, कछुए ने आश्चर्य के साथ छेद मे से बाहर गर्दन निकाल कर देखा तो उसे एक नई दुनिया दिखाई पडी। पूर्णिमा की रात, नीले आकाश मे चन्द्रमा विहँस रहा है, शीतल चॉदनी छितरा रही है, सामने वृक्षो की सुन्दर कतारे खडी है जिन पर चन्द्रमा की श्वेत किरणे छिटक रही है। रात इतनी सुहावनी लग रही थी कि कछुआ देखता ही रहा गया। उसने सोचा-"जीवन मे आज पहली बार इतनी सुन्दर दुनिया के दर्शन किये है ? हमारी दुनिया तो बहुत छोटी है, उसमे कहॉ इतनी सुन्दरता! कहॉ इतना सुहावना प्रकाश! क्यो न मै अपने बन्धुजनो को लाकर इस अपूर्व दुनिया का दर्शन कराऊँ! ऐसा न हो कि मैं अकेला ही आनन्द ले लूँ, और परिवार वाले सब वचित रह जाएँ।"

कछुआ अपने मित्रो और बन्धुओं के पास आया। बोला-"तुम किस छोटी-सी दुनिया में बैठे हुए हो ? आज मैने इतनी सुन्दर और इतनी विशाल दुनिया के दर्शन किये कि बस क्या कहना! तुम लोग चलो, मै तुम्हे नई दुनिया दिखाऊँ।"

बहुत से बूढे कछुए इस नौजवान कछुए की बात पर हँसे। बोले -"कहॉ की गप्प मार रहा है, हमने आज तक इस दुनिया से अच्छी और कोई दुनिया नही देखी, फिर तू कहॉ से देख आया ? कही भटका देगा सबको।"

कछुए ने उन्हें बहुत तरह से समझाया-आखिर उसके कुछ साथी कुतूहल वश उसके साथ हुए और बोले-"चल, दिखला तेरी नई दुनिया कहॉ है ?"

इधर काई मे जो छिद्र हुआ था वह हवा के झोंके से पुन ढक गया था, अब कछुआ अपने बन्धु एव साथियो को साथ लिए इधर-उधर भटकने लगा, पर कही भी वह छिद्र दिखाई नही दिया। उसके साथी हँस रहे थे - "कहॉ चली गई तेरी दुनिया ? हम पहले ही कहते थे - अपनी दुनिया से अच्छी और कोई दुनिया है ही नही। तूने कोई स्वप्न देखा होगा और भटक गया उसमे ?"

कछुआ हैरान था, अभी-अभी उसने इतना मधुर, शीतल, शात प्रकाश देखा था। सुहावनी वृक्षावली एवं सुरम्य वनराशि देखी थी। अब वे सब कहॉ चली गई ? बार-बार पछताने पर भी उसे पुन वह प्रकाश दिखाई नही दिया और वह उसी ॲंधेरी दुनिया मे खो गया।

भगवान महावीर ने इस रूपक के माध्यम से जागृत आत्मा की स्थिति का निदर्शन दिया है। कुछ आत्मा जो एक बार, पहली बार अपूर्व प्रकाश के दर्शन पाकर आनन्द-विह्वल हो उठती है, वे अपने पूर्व-परिचितो, मित्रो एवं स्वजनो के स्नेहानुबन्धन के कारण उन्हे भी इस प्रकाश का दर्शन कराने को उतावली हो जाती है। उनकी भावना बुरी नही है, किन्तु स्वय उनकी स्थिति इतनी सुदृढ नही है कि वे अन्धकार से लौटकर पुन अन्धकार में ही भटक जाती है। इसलिए कहा है -जागृत हो गये हो, तो पुन सोओ मत, सुस्ता के मत बैठो, खडे हो जाओ! मजिल पाने के लिए आगे चल पडो! ऐतरेय ब्राह्मण मे एक जगह कहा गया है -

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः
उत्तिष्ठंस्त्रोता भवति कृतं संपद्यते चरन् ॥

सोने वाले का भाग्य भी सोया रहता है, वह कलि के

समान है, नीद त्याग कर जो जाग गया है लेकिन जंभाई लेता हुआ बैठा है, उसका भाग्य भी बैठा रहता है, वह द्वापर के तुल्य है। जो उठकर खडा हो गया है, समझ लो उसका भाग्य भी खडा हो गया है, उसके लिए त्रेता युग आ गया है और जो चल पडा है, उसका सौभाग्य भी उसके आगे-आगे चलता रहता है, उसके लिए सर्वत्र ही सतयुग है।

हम जिस जागृत आत्मा की बात कर रहे हैं, वह तो प्रगति की प्रथम सोपान है, क्योंकि जागे बिना आगे गति नहीं हो सकती, अत जागना तो सबसे पहले आवश्यक है। आचार्य संघदासगणी ने जागृति का संदेश देते हुए कहा है-

जागह ! णरा णिच्चं जागरमाणस्स वड्ढते बुद्धी ।

मनुष्यो !जागो !निद्रा का त्याग करो ! जो जागता है उसकी बुद्धि भी जागती है, उसके विकास की अनन्त सम्भावनाएँ सामने खडी रहती हैं। अपने राजस्थानी में भी कहा जाता है - सो, जागै सो पावै। तो आत्मा की यह तृतीय दशा है - जागृत आत्मा।

4. उत्थित आत्मा - जागने के बाद का यही संदेश है, उठो ! आलस्य त्यागो ! प्रमाद छोडो ! -

उट्ठिए नो पमायए ।

जिस अपूर्व प्रकाश का दर्शन मिला है, जिस दुर्लभ सम्यक्त्व का स्पर्श पाया है, उसे अब आत्मसात् करलो, पुरुषार्थ करके उस मार्ग पर डट जाओ ! उत्थित आत्मा की यह स्थिति पॉचवें गुणस्थान की स्थिति है। इस स्थिति मे आत्मा जगृत होने के बाद धर्माचरण की ओर बढ जाता है। धर्म की ओर उसकी यह गति, यह पराक्रम ही श्रावक धर्म या गृहस्थ धर्म कहलाता है। इस दृष्टि से श्रावक को 'उत्थित आत्मा' कहा जाता है।

5. समुत्थित आत्मा - आत्मा की यह पॉचवी श्रेणी है समुत्थित का भावार्थ है - सम्यक् प्रकार से खडा होकर चल पडना। जागृत आत्मा अपने लक्ष्य का निर्णय करके उस ओर चल पडने का संकल्प करता है, मार्ग पर कदम बढाने की तैयारी करता है, और फिर अपने आपको साधकर वज्र संकल्प के साथ उस महापथ पर चल पडता है। यह छठे गुणस्थान की भूमिका है। उस भूमिका पर साधक जब पहुँचता है उसका विश्वास अत्यन्त दृढ होता है ; लक्ष्य, दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट और स्थिर होती है, उसके संकल्पो में वज्र से भी अधिक कठोरता, मेरु से भी अधिक निश्चलता रहती है। इस प्रकार की समुत्थित आत्मा को जो अपने महापथ पर चल पडी है - वीर कहा गया है -

'पणया वीरा महावीहिं' । उपदेश किसके लिए ?

आत्मा की इन पॉच श्रेणियों को समझने के बाद आप यह जान पायेगे कि हमारा उपदेश का उपक्रम किस आत्मा के लिए है। समुत्थित आत्मा के लिए तो उपदेश की कोई आवश्यकता नही, वह इस भूमिका से आगे बढ गया है। चलते हुए को 'चल-चल' कहना कोई अर्थ नही रखता। प्रसुप्त और सुप्त आत्मा के लिए भी यह उपक्रम नहीं है। चूँकि जो अभी सोया है, उसे चलने का रास्ता बताना निरर्थक है। जो जाग के बैठा है, उसे भी रास्ता बताने से पूर्व चलने के लिए तैयार करने की आवश्यकता है। मार्ग पर चलने का संकल्प यदि उसमें जाग जाता है, वह यात्रा के लिए प्रस्तुत - उत्थित हो जाता है तब उसे मार्ग दिखाया जायेगा। अत तीसरी श्रेणी के लिए भी इस उपक्रम की उपयोगिता नहीं है। अत यह माना गया कि यह सब उपदेश, गृहस्थधर्म की शिक्षा, नियम व विधान, उत्थित आत्मा के लिए है। जो गृहस्थ है, श्रावक है उसके लिए ही आचार्य ने इन सद्गुणों का उपदेश किया है, उसके जीवन को आदर्श एव दिव्य बनाने के लिए इन विशेष गुणों पर बल दिया है। अब अधिक विस्तार में नही जाकर हमें गृहस्थधर्म पर ही विशेष चर्चा करनी है।

गृहस्थ बनाम सद्गृहस्थ

मै समझता हूँ गृहस्थ की परिभाषा बताने की कोई आवश्यकता आज नही है। सामान्यत गृहस्थ का अर्थ है घर में रहने वाला। गहराई में जाएँ तो 'गृह' की भी अनेक परिभाषाएँ मिलेगी। केवल ईट, पत्थर व चुने के ढेर को ही घर नहीं कहा जाता है,

न गृह गृहमित्याहुर्गृ हिणीं गृहमुच्यते

- जिसमे गृहिणी, पुत्र आदि परिवार बसता हो, वही ...

गृह है। अस्तु, सामान्य बात यह है कि घर मे रहने वाला व्यक्ति गृहस्थ कहलाता है, वह कैसा ही आचार-व्यवहार रखता हो, किसी भी प्रकार जीवन-यापन करता हो वह गृहस्थ जरूर है। किन्तु यह जरूरी नही कि घर मे रहने वाला 'गृहस्थ' सद्गृहस्थ ही हो। गृहस्थ होना एक स्थिति है, सद्गृहस्थ बनना एक गुण है। गृहस्थ जीवन में जब विशेष सद्गुणो का विकास होता है, उदात्त भावनाएँ और उच्च सकल्प जागृत होते है तब गृहस्थ 'सद्गृहस्थ' की कोटि मे आता है। हमारा यह धर्म, आचारशास्त्र, विधि-नियम, गृहस्थ को सद्गृहस्थ बनाने की एक योजना है, एक प्रक्रिया है।

धर्म क्या है ?

प्रश्न होता है, फिर वह धर्म क्या है, जिसके आचरण से गृहस्थ सद्गृहस्थ बन सके ? जो केवल नाम का श्रावक अर्थात् धर्म को सुनने वाला है वह सच्चा श्रावक अर्थात् धर्म का अधिकारी बन सके।

धर्म के दो रूप है - निश्चय और व्यवहार। निश्चय दृष्टि से आत्मा का स्वभाव धर्म है। स्वरूप परिणति धर्म है।

'वत्थु सहावो धम्मो'

वस्तु का स्वभाव धर्म है, यह सूत्र हमारे यहॉ बहुत प्रचलित है। जल का स्वभाव शीतल है, यह उसका धर्म है, अग्नि का स्वभाव उष्ण है, यह अग्नि का धर्म है। आत्मा का स्वभाव ज्ञानमय है, आनन्दमय है, राग-द्वेष से रहित वीतराग दशा है, यह आत्मा का धर्म है। कनिस्च य दृष्टि से धर्म का स्वरूप बहुत गहरा और बहुत ऊँचा है। उस ऊँचाई तक पहुँचने के लिए व्यवहार धर्म के सोपानों का सहारा लेना होगा। महल मे पहुँचने के लिए व्यवहार धर्म के सोपानो का सहारा लेना होगा। महल मे पहुँचने के लिए सीढियो की आवश्यकता होती है, किनारे तक पहुँचने के लिए नाव की अपेक्षा रहती है, भले ही महल मे पहुँचने के बाद आप सीढी को छोड देते है, किनारे पर पहुँचने के बाद नाव को भी छोड देते है, किन्तु सीढी का और नाव का महत्त्व किसी प्रकार कम नही है।

सुखवादी मनोवृत्ति

इसी प्रकार निश्चयधर्म की स्थिति को प्राप्त करने के लिए व्यवहार धर्म का अपना महत्त्व है। जिस साधना मे केवल निश्चयधर्म का महत्त्व है, वह साधना एकागी है, बिना सीढी का महल है। जैनधर्म अनेकातवादी धर्म है, निश्चय और व्यवहार दोनो को समान महत्त्व देने वाला है। अत उसने निश्चयधर्म की व्याख्या के साथ-साथ व्यवहारधर्म की भी व्याख्या की है, और उसकी साधना पर भी बहुत महत्त्व दिया है। आचार्यो ने यहॉ तक कहा है कि व्यवहार के बिना निश्चयधर्म की साधना हो ही नही सकती, बिना व्यवहार के धर्म का ही उच्छेद हो जाता है।

आजकल एक सुखवादी मनोवृति पनप रही है, जिसका मूल भोग-प्रधान जीवन है। लोग आजकल यह सोचने लगे है और कहने लगे है कि ये धर्म के क्रियाकाण्ड निरर्थक है, विधि-विधान व्यर्थ है। बस, आत्म-स्वरूप को समझ लो, सत्य का बोध प्राप्त करलो और आत्मानन्द मे डूब जाओ! न कुछ त्याग करने की जरूरत, न तपस्या और साधना की ही जरूरत! मै समझता हूँ यह उन लोगो की भोग प्रधान मनोवृत्ति है, जो अपने को अध्यात्मवादी कहने का अह या लोभ भी नही छोड सकते और प्राप्त सुख-सुविधाओ का त्याग करने का साहस भी नही रखते। यह एक प्रकार की दुर्बल धार्मिक-भावना है, जो व्यवहार धर्म की उपेक्षा करके निश्चय धर्म का सहारा लेती है। इससे जीवन मे धार्मिकता का तेज नहीं निखर सकता। जीवन आदर्श और दिव्य नही बन सकता।

बन्धुओ! आपको यदि जीवन मे दिव्यता, तेजस्विता और सच्ची धार्मिकता प्राप्त करनी है, तो व्यवहारधर्म के इन नियमों, इन आदर्शो पर आचरण करना ही होगा।

हॉ तो, व्यवहार धर्म का वर्णन करते हुए आचार्यो ने चार भावनाएँ बताई है-मैत्री, प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ-

सत्वेषु मैत्री, गुणिषु प्रमोदं
क्लिष्टेषु जीवेषु कुपापरत्वम्।
माध्यस्थयभावं विपरीवत्तौ
सदा ममात्मा विदधातु देव।

प्रवचन-प्रार्थना के प्रारम्भ मे आप इसे सुनते ही आये हैं। यह हमारे जीवन की वहुत वडी निधि है। जो चार भावनाएँ

इसमें व्यक्त की गई हैं वे धर्म रूप प्रासाद के चार स्तम्भ हैं। इन भावनाओं के आधार पर ही धर्म का समस्त विस्तार किया है, अतः यहाँ पर संक्षेप, में ही इन पर विचार कर लेते हैं।

1. मैत्री - मैत्री भावना में आत्मा समस्त संसार के संसार के प्रति मित्रता का संकल्प करता है। मनुष्य शत्रु को पराया और मित्र को अपना मानता आया है। इसलिए मित्र से कभी उसे भय नहीं होता, क्लेश नहीं होता। कोई व्यक्ति आपसे कहे कि मैं आपका मित्र हूँ, तो यह सुनकर आपको प्रसन्नता होगी, उसके प्रति स्नेह और प्रेम उमडेगा। और कोई कहे - मैं तुम्हारा शत्रु हूँ, तो झट से आप चौंक उठेंगे, कुछ सहम जायेंगे और मन भय से भर जायेगा। इसका अर्थ है मैत्री अभय देने वाली है। इसलिए भारतीय संस्कृति ने एक स्वर से मैत्री का संकल्प किया है। भगवान महावीर ने अपने प्रवचनों में बार-बार इस बात को दुहराया है -

''मेत्ति मे सव्व भुएसु। मेत्ति भूएसु कप्पए।

वेद एवं उपनिषद् में भी यह मैत्री संकल्प स्थान-स्थान पर व्यक्त हुआ है -

''मित्रस्य चक्षु षा समीक्षामहे''

हम सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखें। सब हमारे मित्र हैं, हम सब के मित्र हों। बात यह है कि जो गृहस्थ जीवन में मैत्रीभावना का संकल्प लेकर चलता है, प्राणिमात्र के साथ मित्र दृष्टि रखता है, वह जीवन में सदा आनन्द, अभय और आह्लाद प्राप्त करता है।

2. प्रमोद - प्रमोद का अर्थ है प्रसन्नता। संसार में जहाँ कहीं भी कोई अच्छाई, कोई सद्गुण दिखाई दे तो उसे देखकर प्रसन्न होना, हृदय में आह्लादित होना अच्छाई का स्वागत करना- यह प्रमोद भावना है।

प्रमोद भावना की आज जीवन में बहुत बड़ी कमी हो रही है। किसी को आगे बढ़ते देखकर, अच्छी प्रतिष्ठा या सम्पत्ति प्राप्त करते देखकर, दान देते देखकर, तपस्या या साधना करते देखकर मनुष्य एक अज्ञात मनोवृत्ति से ग्रसित हो जाता है।

यदि कोई गरीबों को दान करता है, किसी सामाजिक [illegible]र्य में बहुत बडी रकम लिखता है तो लोग कहते हैं -ब्लेक का पैसा है, काला धन है, देंगे नही तो क्या करेगे।

कोई कठोर तपस्या करता है, त्याग-प्रयाख्यान करता है तो लोग कहते हैं-ढोंगी है, वाह -वाही लूटने के लिए भू[illegible] मर रहा है।

इस प्रकार किसी भी व्यक्ति के गुण को देखकर उस[illegible] प्रशंसा के बजाय लोग निन्दा करते है, प्रसन्न होने के स्थान प[illegible] जलते हैं। आपको मालूम होना चाहिए - किसी के गुणों से जलने पर उसका कुछ अहित नहीं होने वाला है, लेकिन आपकी आत्मा का जरूर पतन हो जाता है, आप अप[illegible] सद्वत्तियों से गिर जाते हैं, अपना महान चरित्र (मौरल) [illegible] बैठते हैं।

हमारे जीवन में इस भावना का विकास अवश्य होना चाहि[illegible] कि हम सद्गुण को देखकर हर्ष और आनन्द का अनुभव करें, उसे बढ़ावा दें। जो व्यक्ति सद्गुणों की प्रशंसा करता है, उसके जीवन में भी सद्गुण धीरे-धीरे प्रवेश करते जाते है और वह किसी भी परिस्थिति में हमेशा प्रसन्नता का अनुभव करता है।

3. करुणा- करुणा भावना का सीधा-सा अर्थ है, दया. अनुकंपा का क्षेत्र बहुत व्यापक है, इसका अर्थ असीम है। जो व्यक्ति व प्राणी ज्ञान में, आत्म -विकास में हमारे से हीन हैं, नीचे स्तर पर हैं, दु.ख एवं पीडा से घिरे हुए हैं, उन[illegible] पीड़ा और दु.ख देखकर हृदय में जो एक सहज कपन पैद[illegible] होता है, उनका दु·ख दूर करने की भावना पैदा होती है-व[illegible] अनुकंपा है।

मैंने बताया आपको कि-दया, करुणा का क्षेत्र बहुत विशाल है। अहिंसा को भी दया कहा गया है। इसलिए दया, करुणा, अहिंसा में जीवन की वे समस्त गतिविधियाँ आ जाती है जो हमारे जीवन में प्रतिदिन चलती रहती हैं। हमारी कि[illegible] भी प्रवृत्ति से किसी प्राणी को कष्ट न हो, पीडा न हो, [illegible] में, व्यापार मे, परिवार, समाज एवं राष्ट्रीय जीवन में हमारे [illegible] ऐसी कोई प्रवृत्ति न हो कि जिससे शांति भंग होती है, अव्यवस्था पैदा होती हो और जीवन मे पीडा की अनुभू[illegible] जागृत होती हो, इसीलिए अहिसा की साधना का [illegible]

यन्त्र है -

'आत्मनः प्रतिकूलनि परेषां न समाचरेत् '

जो आपको अपने मन के प्रतिकूल-बुरा लगता हो, आप जिसे नही चाहते हों, उसे दूसरो के लिए भी मत चाहिए। जैनाचार्यो की भाषा मे कहूँ तो -

जं इच्छसि अप्पणतो जंचन इच्छसि अप्पणतो।
तं इच्छ परस्स वि एत्तियगं जिणसासणयं॥

बस यही जिनधर्म है, और यही निजधर्म अर्थात् आत्मधर्म है। यही अहिसा है, यही करुणा है, यही दया है। जिस आत्मा के अन्दर करुणा भावना जागृत होती है, उसमे उस प्रकार की शुभ भावनाएँ अवश्य ही उद्‌बुद्ध होगी।

4. मध्यस्थ भावना-

मध्यस्थ का अर्थ है दो किनारो के बीच ठहरना। जीवन में ऐसे बहुत से प्रसग आते है जब हमे दोनो मार्गो को छोडकर किसी बीच के, मध्य मार्ग का अनुसरण करना पडता है। कल्पना कीजिए एक व्यक्ति आपके समक्ष आपके धर्म, गुरु या आपके किसी प्रिय व्यक्ति की निन्दा कर रहा है। वह क्रोध या अहकार इस प्रकार विफरा हुआ है कि समझाने से शान्त होने की जगह और अधिक भडक उठता है। उस समय आप क्या करेगे ? तरीका सज्जनोचित नही है। फिर आप क्या करेंगे ? समझाने से तो आग मे घी का काम हो रहा है, लातों के देव बातो से मान नही रहे हैं, और लातो से आप उसकी पूजा कर नही सकते। उस समय आपको मध्यम मार्ग अपनाना होगा, मध्यस्थ वृत्ति ही उस समय आपके मन को शान्ति दे सकती है। आप सोचेगे - ''यह अज्ञानी है, क्रोध आदि कषायो के वशीभूत होकर यह निन्दा कर रहा है, यह नही जानता कि इससे इसकी आत्मा का कितना पतन हो रहा है। ऐसा व्यक्ति क्रोध का नही, दया का पात्र है। यह अज्ञानवश अपनी ही जड काट रहा है। इसलिए इस पर क्रोध नही करना चाहिए।'' इस प्रकार की मध्यस्थ वृत्ति जागृत होने से व्यावहारिक जीवन की सैकडों उलझने, समस्याएँ अपने आप सुलझ जायेंगी, जीवन में कलह, विग्रह एव विवाद के प्रसग कम हो जायेगे और शान्तिमय जीवन का आनन्द प्राप्त हो सकेगा।

आदर्श जीवन

इस प्रकार मैत्री, प्रमोद, करुणा एव मध्यस्थ भावना के द्वारा जीवन मे धर्म की पृष्ठभूमि तैयार होती है। मैंने प्रारम्भ मे बताया कि जब तक चतुर किसान भूमि को खेती के योग्य नही बना लेता तब तक उसमे बीज नही बोता, उसी प्रकार जीवन मे गुणो को अकुरित करने से पहले मनोभूमि को तैयार करता है। मन की भूमिका जब सद्‌भावो से, मैत्री आदि भावनाओं से धर्म के योग्य बन जाती है तो उसमें व्रत, नियम, त्याग आदि के बीज बडी सरलता व शीघ्रता से अंकुरित हो सकते है।

आप जानते है, गृहस्थ जीवन बहुत बडा उत्तरदायित्वो का जीवन है। साधु जीवन एक निश्चित दिशा की यात्रा है, उसके उत्तरदायित्व, कर्तव्य एव विधि-नियम सब निश्चित है। गृहस्थ जीवन मे ऐसा नही है। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है, इसके उत्तरदायित्व असीम है, विभिन्न परिस्थितियों मे उसके विभिन्न कर्त्तव्य होते है। परिवार, समाज, धर्म एव राष्ट्र के अनेक दायित्व उसके कधो पर होते है और उन सबको सफलतापूर्वक शानदार ढग से निभाते जाना इसी मे गृहस्थधर्म की कुशलता है। यदि गृहस्थ अपने कर्त्तव्यो एवं धार्मिक कृत्यो को सही ढग से निभाता है, तो उसका जीवन साधु जीवन का भी आधार बन सकता है। आगमो मे ऐसे सद्‌गृहस्थों को साधुओ के माता-पिता के तुल्य कहा है और धर्म का आधार बताया है। ऐसे कर्त्तव्य परायण गृहस्थ का जीवन धन होने या न होने पर भी सुखी एव आनन्दमय रह सकता है।

पाप से घृणा करो
पापी से नहीं
-भगवान महावीर स्वामी

चेतन ! अपने घर आओ !

श्री सुविधि जिनेश्वर वदिये हो, वदत पाप पुलाय ॥
काकन्दी नगरी भली हो, श्री सुग्रीव नृपाल ।
रामा तस पटरानी हो, तस सुत परम कृपाल ॥
प्रभुता त्यागी राजनी हो, लीधो सयम भार ।
निज आतम अनुभव थकी हो, पाम्या पद अविकार ।
अप्ट कर्म नो राजवी हो, मोह प्रथम क्षय कीन ।
सुध समकित चारित्र नो हो परम क्षायक गुण लीन ॥
ज्ञानावरण दर्शनावरण हो, अन्तराय कियो अन्त ।
ज्ञानदर्शन बल ये तिहु हो प्रकट्या अनन्तानन्त ॥
सुविधि जिनेश्वर वदिये हो

प्रभु सुविधिनाथ के चरणो मे प्रार्थना की कडियो के माध्यम से वन्दन करने के लिए कवि प्रेरणा दे रहा है । प्रभु को वन्दन करने की प्रेरणा देते हुए कवि कहता है कि वदत पाप पुलाय । प्रभु को वन्दन करने से पाप के पुज नष्ट हो जाते है । क्षीण हो जाते है । यह सही है कि प्रभु का वन्दन पापो को नष्ट करने वाला है लेकिन यह इतना सस्ता सौदा नही है । केवल हाथ जोड लिये या मस्तक नमा लिया, इतने मात्र से प्रभु का वन्दन नही हो जाता । न इतना कर लेने मात्र से पाप के पुज नष्ट होते हैं । जब सुविधिनाथ परमात्मा और उनकी बताई हुई सुविधि (सन्मार्ग) मन की गहराई में उतरती है, तब सहज रूप से परमात्मा के प्रति जो समर्पण भाव पैदा होता है, वही वास्तविक वन्दन है और ऐसा वन्दन ही पाप पुज को नष्ट करने मे समर्थ होता है ।



आत्मा अपने मूल रूप मे स्फटिक मणि के समान निर्मल है परन्तु वाह्य उपाधियो को लेकर वह विकारी भावो से मलिन हो रही है । उस पर अनादि काल मे कर्मो की परते चढी हुई है । इनके कारण वह आत्मा संसार की विविध विडम्बनाओ का अनुभव करती हुई विभिन्न दशाओ को प्राप्त होती रहती है । विकारी भावो के कारण आत्मा की पवित्रता कलंकित हुई, उसका चैतन्य अवरुद्ध हुआ, मोह माया के बन्धनो में वह ... । मोह की प्रगाढ निद्रा ने उस पर अपना आधिपत्य जमाया ।

मोह की मदिरा :

... भावो ने ... आत्मा की ज्ञान-ज्योति को मोह की काली घटाओ ने आवृत्त कर लिया, मोह की प्रगाढ निद्रा ने उसके सहज ... को विलुप्त कर दिया और मोह की मदिरा ने उसे उस स्थिति मे ला ... जहा वह अपना घर छोडकर दूसरे के घर को अपना मानने लगी, ... तत्व को छोड परतत्व मे रमण करने लगी । वह अपने चैतन्य स्वरूप ... छोडकर जड पुद्गलो की परिणति को अपना मानने लगी । यह शरीर ... है, यह भौतिक साधन-सामग्री मेरी है, मकान मेरा है, आभूषण और ... मेरे हैं । मोह की इस मादक मदिरा ने आत्मा को केवल बेभान ही ... बनाया वरन् उसे इतना सम्मोहित कर लिया कि उसे जड पुद्गल ही अ... लगने लगे, वह उनमे ही रमण करने लगी, पुद्गल ही पुद्गल उसकी दृ... मे चढने लगे, वह अपने स्वरूप को तो ... भूल ही गई । कितनी मादक हे, यह मोह की मदिरा । बडी दुर्दशा की हे इसने आत्मा की । अपना घर छोडकर जो दूसरे के घर ... जाता है, उसकी कैसी दुर्दशा होती है, ... आप सब समझते ही है ।

आत्मा की इस दुर्दशा से मुक्ति तभी ... सकती है जब मोह की मदिरा ... को समझने लगेगी, जब उसका पुद्गल ... प्रति सम्मोहन हटेगा, जब उसकी दृष्टि सही को समझने लगेगी, जब उसे ... मूलस्वरूप का ध्यान आएगा, ... पुन अपने घर लोटेगी, तब वह दुर्दशा से छूट सकेगी । यदि आत्मा को इस दुर्दशा ... छुटकारा पाना हे तो उसे अपने घर ... पडेगा, पुद्गलो के सम्मोहन को भगाना पडेगा, मोह की प्रगाढ निद्रा को छोडना होगा ओर अपने मौलिक स्वरुप को पहचानना ... पौद्गलिक सम्मोहन केविरुद्ध सतत जागृति रखनी होगी ... इस जागृति का संदेश देते हुए कहा हे -

जागरह ! णरा णिच्चं
जागरमाणस्स वड्ढते बुद्धि -बृहत् कल्पभाष्य

मनुष्यो ! जागो ! निद्रा को छोडो । जो जागता है, उसकी ... जागती है । उसके विकास की अनन्त सम्भावनाएं सामने ...

प्रभु सुविधिनाथ ने मोह की प्रगाढ निद्रा को भग करने और आत्मा को जागृत करने के लिए सुविधि बताई है। न केवल उन्होने सुविधि ही बताई परन्तु उस विधि पर स्वय चलकर जगत् के जीवो के सम्मुख आदर्श उपस्थित किया। वे आत्मानुभव से निर्विकार स्वरूप को प्राप्त हुए।

प्रभु सुविधिनाथ ने आत्मा के यथातथ्य स्वरूप को समझा और पौद्गलिक पदार्थो की चुम्बकीय आकर्षण शक्ति को आत्मानुभूति से निष्फल कर दिया। वे राज्य का परित्याग कर स्व-स्वरूप की साधना मे लगे। सत्ता और सम्पत्ति मे अजीब मादक शक्ति हुआ करती है। यही मधु के विन्दु है, जिनमे ससारी प्राणी ललचा रहे है। सत्ता और सम्पत्ति का नशा मानव को मदहोश बना देता है, वह अपने आप पर नियन्त्रण खो देता है, उसकी विवेक-दृष्टि विलुप्त हो जाती है, उसके अन्तर-नेत्र बन्द हो जाते है, आध्यात्मिक दृष्टि से वह अधा वन जाता है। सत्ता और सम्पत्ति से आसक्ति हटे बिना मानव को सही रास्ता नही दिखाई देता। इस तथ्य को सुविधिनाथ परमात्मा ने समझा और दुनिया के लोगो को यह तथ्य समझाने के लिए उन्होने राज्य का परित्याग कर दिया।

न केवल सुविधिनाथ प्रभु ने पर सभी तीर्थकरो ने इस पद्धति को अपनाया है। उन तीर्थकरो के द्वारा उपदिष्ट मार्ग पर चलने की इच्छा वाले व उनके अनुशासन मे रहने वाले अनेको महा-पुरूष इस मार्ग पर अग्रसर हुए है। आचाराग मे कहा गया है -

पणया वीरा महावीहि ।

वीर पुरूप इस मार्ग पर-इस महापथ पर चले है, चलते है और चलते रहेगे। जो इस महापथ पर बढते है, वे सुविधिनाथ परमात्मा की तरह निर्विकार पद को प्राप्त करते है। इसीलिए कहा है -

प्रभुता त्यागी राज नी हो, लीधो संजम भार।
निज आतम अनुभव थकी हो, पाम्या पद अविकार।
श्री सुविधि जिनेश्वर वंदिये हो, वन्दत पाप पुलाय।

कवि जिनको वन्दन करने की प्रेरणा दे रहा है, वे सुविधिनाथ, राजसिहासन पर आसीन सुविधिनाथ नही है अपितु जिन्होने राजसिहासन को छिटकाया और जिन्होंने अपने आत्मानुभव के आधार पर निर्विकार स्वरूप प्राप्त किया, उन सिद्ध स्वरूप भगवान् को वन्दन करने के लिए प्रेरणा दे रहा है। वन्दन करने वाले भक्तजन परमात्मा के इस स्वरूप को अपने सामने रखते है और अपनी आत्मा के स्वरूप को भी वैसा ही जानते है, वे कर्मो के आवरणो से मुक्त हो सकते है।

अष्ट कर्मो का राजा · मोह

अनन्त ज्ञानी सर्वज्ञ सर्वदर्शी परमात्मा ने आत्मा के प्रबल विरोध व प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी ८ कर्मो का निरूपण किया है। आत्मा की अनन्त शक्ति को प्रतिहत करने वाले ये कर्म बडे प्रबल है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गौत्र और अन्तराय-ये ८ कर्म आत्मा को अपने घेरे मे कैद किये हुए है। स्वतन्त्र और सार्वभौम चेतनराज, पराये घर जाकर-पर परिणति मे पडकर-कर्मो के चगुल मे फस गया है। उसकी स्वतन्त्रता, सार्वभौमता और अनन्त शक्ति-सम्पन्नता छीन ली गई है। कर्म लुटेरो ने उसके वैभव को लूट लिया है। वह अभी दीन-हीन-अवस्था मे कर्मो की कैद मे पराधीन दशा भोग रहा है। इन कर्म-लुटेरो का सरदार मोह बडा दुर्दान्त है। वह ८ कर्मो का राजा है। ससार मे इस मोहराज का बडा वर्चस्व है। चारो तरफ इसका प्रभाव फैला हुआ है। गजब की मोहनी शक्ति है इस मे! इसके बन्धनो को तोडना आसान नही, बहुत टेढी खीर है। दृढ फौलाद व लोहे की जजीरो को तोडना आसान है पर मोह के कच्चे धागे को तोडना बहुत कठिन है! कैसी मोहनी शक्ति है मोह की! अपने पराक्रम से धरातल को कपा देने वाले बडे-बडे शूर-वीर इस धरातल पर आये है, दुनिया मे उन्होने तहलका मचाया है परन्तु वे भी मोह की मोहनी शक्ति के सामने श्वान की तरह दुम हिलाते रहे है।

मोह की प्रबल शक्ति का रहस्य उसका विकराल स्वरुप नही, अपितु उसकी सम्मोहनी शक्ति है, मोह के विविध मायावी स्वरुप है। इन मायावी लुभावने विविध रुपो से वह जगत् के जीवो की-चेतन की-मति को भ्रान्त करता है। मति के भ्रान्त होते ही सब मिथ्या प्रतीति होने लगती है, वस्तु का स्वरूप भ्रान्त दिखाई देने लगता है- चेतन मिथ्यादृष्टि बन जाता है। उसकी निर्णायिका शक्ति लुप्त हो जाती है। वह सम्यक्-असम्यक् का निर्णय नही कर पाता, कर्तव्य और अकर्तव्य का विवेक नही हो पाता। अतएव उसके सारे प्रयत्न विपरीत दिशा मे होते रहते हैं। अपने मूल स्वरूप के प्रति वह असावधान रहता है और पर-पदार्थो को प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है। यह मिथ्या दृष्टि ही उसे अनन्तकाल तक ससार चक्र मे परिभ्रमण कराती है। यह सव मोह की ही माया है। अतएव उसे सब कर्मो का राजा और ससार का मूल कहा जाता है।

सुविधिनाथ प्रभु ने इस मोह को सर्वप्रथम क्षय किया। इसी वात का कवि ने प्रार्थना मे सकेत देते हुए कहा -

अष्टकर्म नो राजवी हो मोह प्रथम क्षय कीन।
सुध समकित चारित्र नो हो परम क्षायक गुण लीन ॥

प्रभु सुविधिनाथ ने अष्टकर्मो के राजा मोहनीय कर्म का पहले क्षय किया और इसके फलस्वरूप उन्हे क्षायिक सम्यक्तत्व और क्षायिक

चारित्र की प्राप्ति हुई।

जिस प्रकार राजा के परास्त हो जाने पर सेना बिखर जाती है, उसी तरह मोहनीय कर्म के नष्ट हो जाने पर अन्य कर्म भी शिथिल बन जाते हैं। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय कर्म रूप शेष बचे हुए घाती कर्म अन्तर्मुहूर्त मात्र समय में नष्ट हो जाते है और आत्मा मे अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन और अनन्तशक्ति प्रकट हो जाती है। यही बात कवि ने इन पंक्तियों में कही हैं -

ज्ञानावरण, दर्शनावरण हो, अन्तराय कियो अन्त।
ज्ञान दर्शन बल में तिहुं हो, प्रगट्या अनन्तानन्त।
श्री सुविधि जिनेश्वर वंदिये हो.......

यह अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति ही आत्मा का अपने घर में लौट आना है। अपनी स्वाभाविक स्थिति को पा लेना है। यही सब ससारी आत्माओं का लक्ष्य और साध्य है।

भ्रान्त धारणा

कई व्यक्तियों की यह अभिलाषा रहती है कि माल भी खाना और मोक्ष में भी जाना। वे दोनों हाथ लड्डू रखना चाहते हैं परन्तु ऐसा सम्भव नहीं हैं। कई अधूरे-अधकचरे विचारकों ने यह सस्ता नुस्खा भोले जीवो को भ्रमित करने के लिए पकडा दिया है। ऊपर-ऊपर से यह नुस्खा बडा मोहक और लुभावना लगता है। हर कोई ऐसा सीधा-सरल तरीका अपनाना चाहता है। परन्तु बन्धुओ! याद रखना चाहिए कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती। पदार्थों का मोह भी बना रहे और मोक्ष भी मिल जाय-ऐसा कभी न हुआ है और न होगा। यदि ऐसा सीधा रास्ता होता तो अतीत काल के तीर्थंकर व महापुरुष राज्य और वैभव-विलास के परित्याग और वनों में रहकर कठोर तप व साधना करने का कठिन मार्ग न अपनाते।

भोग-विलास और ऐश्वर्य के वातावरण में रहकर केवल भावना के वल पर मोक्ष की साधना की वात जितनी सरल है,उसका आचरण उतना ही कठिन है। सत्ता और सम्पति को, चाहे वह व्यक्तिगत हो या राष्ट्रीय हो, अपने अधीन रखने वाला व्यक्ति अपनी भावना को सात्विक रख सके, यह अत्यन्त ही कठिन और दु:शक्य है। यदि भावना की शुद्धि से ही आत्मा को ऐसी परम उपलब्धि हो जाती होती तो सुविधिनाथ भगवान या अन्य तीर्थंकर और दूसरे हजारों महापुरुष राज्य वेभव को न छोडते और तपश्चर्या के कठोर मार्ग का अवलम्बन न लेते और न ऐसा करने का उपदेश ही देते। अत इस मिथ्याधारणा को दिमाग से हटा देना चाहिए। इस सस्ते नुस्खे के जाल मे नहीं आना चाहिए। यदि इस [illegible] [illegible] [illegible] लिया जाएगा तो यह आत्मवंचना होगी।

आत्मा की वर्तमान विडम्बनापूर्ण स्थिति पर-पदार्थो के संसर्ग के कारण ही तो है। इस संसर्ग को हटाये बिना आत्मा का उद्धार कैसे हो सकता है? पदार्थो की ममता-मूर्छा ही तो आत्मा को मलिन करती है। यदि हम आत्मा रूपी दर्पण को स्वच्छ करना चाहते है तो इस ममता के मैल को धोना ही पडेगा। अतएव बाह्य पदार्थो की ममता का परित्याग करके ही साधना के मार्ग में आगे बढा जा सकता है। अनेक महापुरुषो ने यही अपनाया है और इसी से आत्मा को कर्मो की कैद से मुक्त किया है। अन्तगड सूत्र के माध्यम से ऐसे ही महापुरुषो के चरित्र श्रवण कर रहे है।

गजसुकुमार मुनि

त्रिखण्डाधिपति वासुदेव महाराज के भव्य भवन मे जिनका जन्म हुआ, राजसी वैभव के बीच जिनका लालन-पालन हुआ, उस आत्मा ने अरिष्टनेमि भगवान् का एक ही उपदेश सुना और उससे ही उसके जीवन ने नया मोड ले लिया।

प्रभु अरिष्टनेमि ने ऐसा क्या उपदेश सुनाया होगा? गजसुकुमार को कोई अनोखा ही उपदेश दिया हो, ऐसी बात नही हैं। उपदेश तो वही होता है जो आमतौर पर दिया जाता है, तीर्थंकर उपदेश देने मे कोई भेदभाव नहीं रखते। आचारग में कहा गया है :-

जहा पुण्णस्स कत्थइ तहा तुच्छस्स कत्थइ।
जहा तुच्छस्स कत्थइ तहा पुण्णस्स कत्थइ। -आचारांग

तीर्थंकर सब जीवों को समान रूप से उपदेश प्रदान करते है, पुण्यवान और श्रीमन्त को जिस भाव से उपदेश देते है, उसी भाव से सामान्य व्यक्ति को भी उपदेश देते हैं। सामान्य व्यक्ति को जिस भाव से [illegible] देते हैं, उसी भाव से अभिजात्य - श्रेष्ठ वर्ग को भी उपदेश देते हैं।

भगवान नेमिनाथ की देशना सब जीवों के लिए समान रूप से [illegible]। गजसुकुमार के लिए कोई विशेष प्रकार का उपदेश नहीं दिया गया था। पात्र के अनुसार उपदेश का प्रभाव हुआ करता है। गजसुकुमार सुयोग्य पात्र था। उसकी आत्मा सुसंस्कारित और निर्मल थी। [illegible] हृदय पर उपदेश का प्रभाव विशेषतया अंकित होता है। जिसका हृदय स्वच्छ नहीं होता, जिसके मन मे सरलता नहीं होती, उस पर [illegible] उपदेशो का भी कोई असर नहीं होता। गजसुकुमार की आत्मा [illegible] संस्कारों से सम्पन्न थी, उसका हृदय स्फटिक के समान निर्मल [illegible] अतएव प्रभु की वाणी उसके अन्तर-तल में उतर गई। [illegible] मे प्रतिबुद्ध हो गया। प्रभु का उपदेश सीधा-सादा था-

वहु पुण्य केरा पुंज थी नर देह मानव नो मल्यो।
तो पण अरे भव चक्र नो एके नहि आंटो टल्यो॥

भाइयो ! बहुत पुण्य के पुज एकत्रित होते है तब मानव का शरीर प्राप्त होता है। यह अत्यन्त दुर्लभ उपलब्धि है। ऐसे सुन्दर सुअवसर को प्राप्त करके यदि भव चक्र को मिटाने का प्रयास नही किया। आत्मा की वही स्थिति बनी रही, भवचक्र का एक भी चक्र कम नही हुआ तो बहुत पुण्य से प्राप्त मानव भव अकारथ ही चला जायेगा। चिन्तामणि रत्न पाकर कौए को उडाने मे यदि उसे फैक दिया तो चिन्तामणि का पाना न पाना एकसा ही हो जाता है। मानव-भव चिन्तामणि रत्न के समान है। इसका सदुपयोग आत्मा के कल्याण के लिए कर लेना चाहिए।

प्रभु की इस आशय की देशना गजसुकुमार के कानो में ही नही, हृदय मे उतर गई। उसे तीन खण्ड का आधिपत्य भी तुच्छ प्रतीत होने लगा। उन्होने प्रभु के पास सयम अगीकार करने का सकल्प कर लिया।

घर आकर गजसुकुमार ने माता-पिता और परिजनो के समक्ष अपना सकल्प प्रस्तुत किया और संयम अगीकार करने हेतु अनुमति चाही। गजसुकुमार की प्राप्ति जिन परिस्थितियो मे हुई उनको दृष्टि मे रखते हुए माता-पिता का विशेष अनुराग उनके प्रति होना स्वाभाविक था। देवकी महारानी, महाराज वसुदेव तथा त्रिखण्ड के अधिपति कृष्ण वासुदेव ने गजसुकुमार को अपनी-अपनी पद्धति से समझाने का प्रयास किया। उन्होंने उन्हे त्रिखण्ड का स्वामी बनाने की अभिलाषा व्यक्त की और उनको सिहासन पर अभिषिक्त भी कर दिया।

गजसुकुमार का वैराग्य कच्चा नही था, जो सिंहासन पाकर उतर जाय। वैराग्य उनके अन्त करण मे जागृत हुआ था। राज्य वैभव को उन्होंने तृण के समान तुच्छ समझा। अन्ततोगत्वा उन्होने समग्र राज्य वैभव और विलास की साधन- सामग्री को नासिका के मैल की तरह छिटका दिया। उन्हें यह भी ज्ञात था कि उनके विवाह सम्बध हेतु अनेक कन्याए कन्याओ के अन्त पुर मे एकत्रित थी। उन सबको छोडकर और कुटुम्ब के मोह बन्धनो को तोड कर वे उमगपूर्वक भगवान् अरिष्टनेमि के चरणो मे पहुच गये। वे सयम पथ के पथिक बन गये।

अन्तिम आराधना

गजसुकुमार अपने साथ पूर्वभव की कुछ विशिष्ट योग्यताओ व उपलब्धियो को लेकर आये थे। वे चरम शरीरी आत्मा थे। उनकी आत्मा की गहराई मे कोई अनोखे ही बीज रहे हुए थे, जिन्हे अनन्त ज्ञानी नेमिनाथ प्रभु ही जानते थे। उनकी आत्मा मे रहे हुए उन अदृष्ट सस्कारो के कारण दीक्षा ग्रहण करने के प्रथम दिन ही उन्हें अन्त प्रेरणा हुई कि मै शीघ्र से शीघ्र, जिस प्रयोजन को लेकर दीक्षित हुआ हू, उसे पूर्ण कर लू। मै इसी जन्म मे जन्म-मरण का रोग मिटा डालू। सम्पूर्ण वासनाओ और शरीर तक के मोह का निवारण शीघ्र से शीघ्र कर डालू। यह भावना लेकर वे प्रभु अरिष्टनेमि के पास पहुचे और उनसे विनयपूर्वक निवेदन करने लगे कि भते ! मुझे ऐसा मार्ग बताइये जिससे मै शीघ्रताशीघ्र अन्तिम उपलब्धि को प्राप्त कर सकू। मै परम पद को प्राप्त करने हेतु लालायित हूँ। विलम्ब मुझे सह्य नही है। मै शीघ्र ही साध्य को प्राप्त करना चाहता हूँ।

भाइयो ! कितनी तीव्र व उदात्त भावना है गजसुकुमार मुनि की ! बात करना सहज है, कथा कह देना सरल है लेकिन जीवन मे मुक्ति के प्रति इतनी उत्कट अभिलाषा, इतनी तीव्र उमग हो, यह बडा कठिन कार्य है। आत्मसाधना के प्रति इतनी उत्कृष्ट लगन होना एक अभूतपूर्व घटना है। गज के तालवे के समान सुकोमल और सुकुमार शरीर होते हुए भी उसके प्रति तत्पर हो जाना, क्या कम विस्मयजनक है ? सचमुच गजसुकुमार मुनि का चारित्र गजब की प्रेरणा देने वाला आदर्श है !

भाईयो ! यदि आपकी ही भलाई के लिए आपसे कहा जाय कि आप अपने इस दुर्व्यसन को छोड दीजिए तो आप झट कह देगे, महाराज ! एकदम तो नही, थोडा-थोडा करके छोडने का प्रयास करेगे। यदि यो थोडा-थोडा करने मे ही रह गये और अगले जन्म का आयुष्य बध गया तो जीवन की स्थिति कुछ और ही हो जायेगी। इसलिए जो करना हो सो शीघ्रता से कर लो। प्रभु महावीर ने कहा -

समयं गोयम ! मा पमायए -उत्तराध्ययन सूत्र

गौतम! समय मात्र का भी प्रमाद न करो ! जीवन का कोई ठिकाना नही ! एक श्वास के बाद दूसरा श्वास आएगा भी या नही, यह नही कहा जा सकता। ऐसी स्थिति मे आज का काम कल पर डालना मूर्खता है। कल कल करते जीवन का प्रवाह बहता चला जाता है और न जाने किस क्षण यह रूक जाय? क्या भरोसा है जीवन का ? अतएव धर्म-साधना मे तनिक भी प्रमाद नही करना चाहिए।

अरिष्टनेमि भगवान् सर्वज्ञ थे। उन्होंने गजसुकुमार मुनि के भवितव्य को अपने ज्ञान द्वारा जान लिया था। उन्हे ज्ञात था कि यह असाधारण आत्मा असाधारण रीति से असाधारण पराक्रम द्वारा अपने लक्ष्य को अविलम्ब प्राप्त करेगा। इसलिए उन्होंने कहा -मुनिवर ! अति शीघ्र मुक्ति-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भिक्षु की बारहवी प्रतिमा का आराधन करना पडता है।

गजसुकुमार-भते ! मुझे इस प्रतिमा का स्वरूप समझाइये। मै इसका आराधन करूगा।

प्रभु बोले- देवानुप्रिय ! इस प्रतिमा का श्मशान में आराधन किया जाता है। वहा अकेले ध्यान-मग्न रहना होता है। साथ मे दूसरा कोई

नही रहता। एक रात्रि का उसका कालमान है। इस स्थिति मे देव-दानव-मानव-पशु सम्बन्धी कोई भी उपसर्ग आवे तो उससे भयभीत न होते हुए, उसे समभाव से सहन करना होता है। यदि इस प्रतिमा को यथारीति से साध लिया जाता है तो अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान अथवा केवलज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। यदि कोई साधक साधना से विचलित हो जाय तो वह पागल हो जाता है, दिमाग का नियत्रण खो देता है और जीवन का रूपक बदल जाता है। ऐसी विकट है यह साधना।

गजसुकुमार मुनि- भते! मुझे आज्ञा दीजिये। मै महाकाल श्मशान मे जाकर बारहवी भिक्षु प्रतिमा का आराधन करूगा।

प्रभु सर्वज्ञ सर्वदर्शी अरिष्टनेमि भावि-भाव के ज्ञाता थे। त्रिकाल की बात उनके ज्ञान में झलकती थी। उन्होंने आज्ञा प्रदान कर दी। शास्त्रीय दृष्टि से श्मशान में वही साधना कर सकता है जिसकी 29 वर्ष की अवस्था हो और 20 वर्ष की दीक्षा पर्याय हो। गजसुकुमार मुनि मे ये दोनो बातें नहीं थी वे तो उसी दिन के दीक्षित थे। परन्तु केवलज्ञानी प्रभु अपने ज्ञान में समस्त भावी घटना चक्र को देख रहे थे। विशेष योग्यता, विशेष परिस्थिति, विशेष द्रव्य, क्षेत्र काल भाव की परिणति को लक्ष्य मे रखकर उन्होंने इस प्रतिमा को साधने की अनुमति दी।

गजसुकुमार मुनि प्रतिमा आराधन हेतु उस रात्रि में श्मशान मे जाकर ध्यानस्थ खडे हो गये। सूर्यास्त के समय सोमिल नामक ब्राह्मण उधर से होकर निकला। मुनि को देखकर उसके मन में वैर की भावना जागृत हुई। पूर्व-जन्म के कर्मो का सम्बन्ध अनेक जन्मो तक साथ मे रहता है। पूर्व-वैर की तीव्र भावना ने सोमिल को पागल बना दिया। पागल भी अनेक प्रकार के होते हे। आवेश मे भी पागलपन होता है। क्रोध जब उबलता है तो इन्सान बेभान और पागल बन जाता है। पूर्व वैर ने सोमिल को पागल ओर अन्धा बना दिया। उसने सोचा-यह राजकुमार जिसके लिए मेरी कन्या की याचना की गई थी-साधु बन कर श्मशान मे खडा हो गया। यह अकारण मेरी कन्या को मझधार मे छोड आया है। अब मैं इसे मजा चखाता हू। यह सोचकर अपने पास मे पडी हुई गीली मिट्टी से गजसुकुमार के मस्तक पर पाल बाधी ओर चिता में से खैर के दहकते अगारे ठीकरी मे भर कर उस दुष्ट ने उनके मस्तक पर उडेल दिये। कितनी भयकर क्रूरता, कितनी नृशसता ओर कितनी नीचतम दुष्टता! इनसे बढ कर दुष्टता ओर क्या हो सकती है? पाप की कितनी पराकाष्ठा, प्रतिशोध की कितनी भयकरता! इन्सान का कैसा दानवी रूप!

[illegible]! कितना रोमाचक प्रसग है। सुनते ही रोगटे खडे हो जाते [illegible] हो जाता है। कोई अगारा का अन्त नहीं है!! मस्तक पर अगारे धधक रहे हैं, परन्तु मुनिराज का चित्त एकदम शान्त! न राग है, न द्वेष है, न आकुलता है, न व्याकुलता। वे अडोल ध्यानमुद्रा में अवस्थित है! धन्य हैं, गजसुकुमार की यह अद्भुत सहनशीलता! कितना अद्भुत है यह पौरूष! कितनी उत्कट है यह निर्मोह-दशा!

निर्मोह की पराकाष्ठा

मस्तक पर अगारे धधक रहे है। उधर मुनि के शान्त हृदय म चिन्तन की अजस्र धारा बह रही है। वे सोच रहे है - जो जल रहा है वह मै नही हू। जो मै हू वह जल नही सकता! यह शरीर तो एक दिन जलने वाला है, आज नही तो कल, कल नही तो कालान्तर मे, इसकी अन्तिम परिणति इसी रूप मे होनी है। यदि वह आज ही इस स्थिति में पहुच रहा है तो दु ख किस बात का? पुद्गल पुद्गल मे मिल रहा है! मेरा चेतन तो शाश्वत है, वह अजर - अमर है। वह जल नहीं सकता, वह तो इस आग मे पडकर स्वर्ण के समान निखर रहा है! बडा उपकार है सोमिल जो मेरी आत्मा को इस पुद्गल पिड से सदा के लिए मुक्त करने में सहायक बना है! उस यह सासारिक सम्बन्ध से मेरा भावी श्वसुर होता। उस नाते पाग बधवाता। वह पगडी सासारिक स्थिति को बढाने वाली बनती! पर आज यह मुझे ऐसी पगडी पहना रहा है जिसे पहन कर मै मुक्ति का वरण करने जा रहा हू, बडा उपकार है सोमिल का।

कितनी उत्कट है निर्मोह दशा! कितनी उज्ज्वल है चिन्तन की धारा! कितना गहरा है आत्मा ओर शरीर के भेद-विज्ञान का [illegible] साक्षात् अनुभव! कितनी उदात्त है यह जीवन्मुक्त अवस्था! शरीर जल रहा है, आत्मा निखर रही है! समभाव की साधना चल रही है! न [illegible] के प्रति मोह है न सोमिल के प्रति द्वेष! साधना की यह सर्वोच्च स्थिति है। गजसुकुमार मुनि समभाव की पराकाष्ठा पर पहुच गये [illegible] केवलज्ञान-दर्शन प्राप्त कर मुक्त हो गये, सिद्ध हो गये। उन्होंने [illegible] का जो लक्ष्य निर्धारित किया था उस ओर अद्वितीय पौरुष से [illegible] चले ओर असाधारण शीघ्रता से मंजिल पर पहुच गये। वे [illegible] हो गये और ज्योति मे ज्योति की तरह परमात्मास्वरूप मे लीन हो [illegible]।

बन्धुओ! कितना प्रेरक, कितना बोधदायक ओर [illegible] चरित्र है गजसुकुमार मुनि का! हम प्रति वर्ष उनके इस [illegible] को सुनते-सुनते चले आ रहे है लेकिन इससे शिक्षा प्राप्त [illegible] प्रयत्न नहीं करते! महापुरुषों के चरित्र इसीलिए [illegible] उनसे हम भी बोध प्राप्त करें और उनके जीवन [illegible] जीवन मे भी प्रकाश करें।

गजसुकुमार मुनि का जीवन सहनशीलता, दृढता और समता का ज्वलत आदर्श है। उस आदर्श तक हम और आप भले ही एकदम न पहुच पाए परन्तु उस लक्ष्य को, आदर्श को सामने रखकर जीवन मे सहनशीलता, दृढता और समता का अभ्यास किया जाना चाहिए। जीवन मे यह प्रयत्नसाध्य है। असम्भव नही। इस काल मे भी ऐसे उदाहरण सामने आते है, जिनमे आत्मिक दृढता और शारीरिक कष्टो के बीच सहिष्णुता की अद्भुत क्षमता का परिचय मिलता है।

सहिष्णुता की क्षमता

सन् 1915 की घटना है। काशी-नरेश के पेट का ऑपरेशन किया जाना था। ऑपरेशन के पूर्व आमतौर पर रोगी को बेहोश किया जाता है। काशी नरेश ने कहा -डॉक्टर, मुझे बेहोश मत करिये। मै होश-हवास मे ऑपरेशन करवाना चाहता हूँ। डॉक्टर ने कहा-बडा ऑपरेशन है, दो घटे लगेगे। इतने समय तक वेदना सहन नही की जा सकती। पेट चीरना है, मामूली काम नही है। इतनी वेदना इन्सान नही सह सकता। वह छटपटाने लगेगा, हिलेगा-डुलेगा ही नही, उछलने लगेगा, जीवन खतरे मे पडेगा और डॉक्टर का पटिया गोल हो जाएगा। मै यह खतरा लेने को कतई तैयार नही हूँ।

काशी नरेश ने कहा, मै दो घटे चू तक नही करूगा। आप ऑपरेशन करके देखिये। मै बेहोश होना नही चाहता।

डॉक्टर को विश्वास नही हुआ। उसने नरेश की कसौटी के लिए प्रयोग करना चाहा। नरेश ने कहा-प्रयोग करके देख लो। प्रयोग शुरू हुआ। नरेश ने ध्यान लगा लिया। होश-हवास की स्थिति मे उनके हाथ पर चाकू का प्रयोग किया गया, खून बहा। नरेश बिल्कुल शान्त थे। २ घटो तक उन्होने चू तक नही की। डॉक्टर हैरान था! दो घटे के बाद डॉक्टर ने पूछा, वेदना हो रही है ?

उत्तर मिला, इतनी देर तक तो नही किन्तु अब वेदना का अनुभव हो रहा है। पहले मेरी दृष्टि अन्यत्र थी, मेरी वृत्ति अन्यत्र लगी हुई थी, मेरा ध्यान अन्यत्र केन्द्रित था!

डॉक्टर आश्चर्यचकित था! आखिर काशी नरेश की इच्छानुसार विना बेहोश किये उनके पेट का ऑपरेशन किया गया। वे असाधारण रूप से शान्त रहे। दो घटे तक बिल्कुल चुपचाप, बिना हिले-डुले शान्तभाव मे स्थिर रहे। यह अपने ढग का पहला उदाहरण है। यह एक ऐतिहासिक प्रसग है। कालान्तर मे उन्होने राज्य त्याग कर आध्यात्मिक साधना मे अपना जीवन लगाया।

स्व. श्री जवाहराचार्य जी की सहिष्णुता

स्व आचार्य श्री जवाहरलाल जी म के जीवन की घटना का मुझे स्मरण आ रहा है। आचार्य श्री जब जलगाव मे विराजमान थे, तब उनके हाथ मे विषैला फोडा हो गया था। डॉक्टर मुलगावकर ने ऑपरेशन को अनिवार्य बताया। ऑपरेशन निश्चित हुआ। डॉक्टर ने उन्हे बेहोश करना चाहा। पूज्यश्री ने दृढता से कहा, बेहोश करने की आवश्यकता नही है आप मेरी होश हवास की स्थिति मे भी ऑपरेशन कर सकते है। डॉक्टर हैरान था! उसने पुन आग्रह और निवेदन किया परन्तु आचार्य श्री अपनी बात पर दृढ रहे। उन्होने अपना हाथ लम्बा कर दिया। ऑपरेशन किया गया और वे उसे इस रीति से देखते रहे मानो कोई अन्य व्यक्ति देख रहा हो! चू तक उनके मुख से न निकली! कितनी दृढता और सहिष्णुता है यह! यह तो अभी-अभी कुछ वर्षो पूर्व की घटना है। आपमे से कइयो को उस महान् विभूति के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा।

उनके जीवन का एक और ऐसा ही प्रसग मेरी स्मृति मे उभर रहा है। बीकानेर मे आचार्य श्री के अदीठ फोडा हो गया था! वे स्वय उठ नही पाते थे। सत सहारा देकर उठाते थे। एक बार सत उन्हे उठा रहे थे कि असावधानी से अगुली फोडे पर लग गई और खून निकल आया। सत घबरा गये। उस समय आचार्य श्री ने कहा, कोई बात नही। क्यो घबरा रहे हो ? जान-बूझ कर तुमने ऐसा नही किया है। तुम्हारी कोई गलती नही है। सब ठीक हो जाएगा। उन्होने यह भी नहीं कहा कि कितने असावधान हो! जरा भी ध्यान नही रखते! अविवेक से काम करते हो। तनिक भी उपालभ उन्होने नही दिया। उन महापुरुष की ऐसी अद्भुत सहिष्णुता थी। आज तो जरा-सा काटा चुभ जाता है तो हाय! हाय! करते है। स्वर्गीय आचार्य श्री के चरित्र से भी दृढता और सहिष्णुता की सीख लेनी चाहिए।

स्वामी रामतीर्थ का एक प्रसंग

स्वामी रामतीर्थ जब अमेरिका गये थे, तब वहा के लोग उनके जीवन को देखकर आश्चर्य करते थे। वे अपने लिए उत्तम पुरुष का प्रयोग नही करते थे। उनसे पूछा जाता कि आपको भूख लगी है तो उनका उत्तर होता - राम को भूख लगी है। आपको भूख लगती है या नहीं, यह पूछे जाने पर वे कहते- राम को भूख लगती है। लोग उनसे पूछते कि राम का तात्पर्य क्या है ? आप ऐसा क्यो कहते हैं ? यह राम कौन है ? वे कहते, इस शरीर का नाम राम है। शरीर को भूख लगती है, मेरी आत्मा को नही लगती! मै अपने शरीर से परे हू। शरीर का ट्रस्टी होकर इसकी देख- रेख करता हूँ। इस प्रकार स्वामी रामतीर्थ शरीर और आत्मा के भेद को व्यवहार मे उतार कर वताते थे।

स्थितप्रज्ञाता

ये घटनाए तो अभी की कतिपय वर्ष पूर्व की है। मानव यदि प्रयत्न करे तो अपने जीवन में ऐसे भेद- विज्ञान को लेकर चल सकते हैं। यदि मानव आत्मा और शरीर के इस भेद को समझता रहे तो जीवन में दृढता आ सकती है और मोह का आवरण हल्का हो सकता है। मानव ऐसी साधना के बल से मृत्युजय बन सकता है। मृत्युजय बनने का तात्पर्य यह है कि वह मृत्यु के भय से ऊपर उठ जाता है। मृत्यु उसे डरा नहीं सकती, कर्तव्य-मार्ग से उसे विचलित नही कर सकती। शरीर का मोह उसे भ्रमित नही कर सकता। ऐसी स्थिति आने पर आत्मा स्थित-प्रज्ञ हो जाता है। क्रमश साधना के पथ पर आगे बढ़ता हुआ वह अनन्त चतुष्टय का स्वामी बन जाता है। वह अपनी अनन्त शक्ति-सम्पन्नता को प्राप्त कर लेता है।

कृष्ण का प्रश्न और भगवान का समाधान

गजसुकुमार मुनि ने उत्कृष्ट साधना के द्वारा एक ही दिन मे अनादिकाल से चली आ रही भव-परम्परा की परिसमाप्ति कर दी और सोमिल ने उत्कृष्ट वैर भाव के कारण जन्म-मरण की परम्परा मे असख्य भावों की वृद्धि कर ली। सुदीर्घ काल तक वह ससार चक्र में भटकता रहेगा। उसका भव-भ्रमण का चक्र लम्बे समय तक चक्कर लगाता रहेगा। गजसुकुमार मुनि ने अनन्त सुख को प्राप्त कर लिया; सोमिल भव-भवान्तर में रूलता रहेगा एक ने अनन्त प्रकाश पा लिया, दूसरा घने अन्धकार में भटक गया।

इधर त्रिखण्डाधिपति कृष्ण वासुदेव प्रात· काल होने पर अपने लघुभ्राता के संयमी जीवन को देखने की आकाक्षा से प्रभु अरिष्टनेमि के दर्शन और वन्दन हेतु आये। वन्दना करने के पश्चात् कृष्ण ने प्रश्न किया- भते! गजसुकुमार मुनि दृष्टिगोचर नही हो रहे हैं, वे कहाँ है ?

भगवान् ने समाधान करते हुए फरमाया- उन्होने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया। जिस प्रयोजन को लेकर वे दीक्षित हुए, वह उन्होंने अत्यल्प काल में ही परिपूर्ण कर लिया। उन्हें एक व्यक्ति का सहयोग मिल गया, जिससे उनका आवागमन का चक्र सदा के लिए बन्द हो गया। वे सिद्ध-बुद्ध हो गये, सब बन्धनों से मुक्त हो गये! उन्होंने स्व लक्ष्य प्राप्त लिया। वे कृतार्थ और सिद्धार्थ हो गये।

हे कृष्ण! मेरे दर्शन हेतु आते समय जैसे तुमने उस वृद्ध, जर्जर और [illegible] व्यक्ति को ईट उठाकर सहयोग दिया और उनके हजारों [illegible] को मिटा दिया, इस प्रकार तुम उसके सहायक बने हो। ठीक [illegible] दर्शन गजसुकुमार मुनि के आवागमन को मिटाने मे [illegible] है। [illegible] तुम अन्यथा भाव न लाना!

यह समाधान सुनकर कृष्ण के हृदय में एक विचित्र सी भाव[illegible] हुई। हर्ष और शोक की मिली-जुली अनुभूति से वे विभोर और [illegible] हो गये।

कृष्ण का ईंट उठाना

त्रिखंडाधिपति कृष्ण वासुदेव अपनी चतुरंगिणी सेना के [illegible] अरिष्टनेमि को वन्दन करने के लिए जब आ रहे थे, तब एक दृश्य की ओर उनका ध्यान गया। उन्होने देखा कि एक पुरूष जो जरा (बुढापा) से [illegible] है, जिसका शरीर जीर्ण-शीर्ण है, गर्दन डगमग हिल रही है, मुह से [illegible] टपक रही है, ऑखो मे गीड आ रहा है, वह बडी कठिनाई से धीरे-[illegible] रहा है। मकान के बाहर ईटो का एक विशाल ढेर पडा है। वह उस [illegible] एक-एक ईट उठाकर घर मे रख रहा है। ढेर मे से ईट उठाता है, धीरे-[illegible] चलता हुआ उसे घर मे रखता है, फिर बाहर आकर ईट उठाता है और [illegible] मे रखता है। वृद्ध की यह स्थिति देखकर कृष्ण के दिल मे करूणा [illegible] । उसके प्रति आत्मीय भावना जागृत हुई और उन्होने हाथी पर बैठे-[illegible] के उस विशाल ढेर में से एक ईट उठाई और उस बूढे के घर मे डाल दी। [illegible] महाराज के इस व्यवहार का साथ मे रह हुए अनुचरो, सैनिको और अन्य लोगों ने अनुकरण किया और देखते-देखते वे सारी ईटे वृद्ध के घर मे [illegible] दी गई। वृद्ध का कार्य आसानी से शीघ्रता से पूरा हो गया। इस प्रकार कृष्ण ने एक ईट उठाकर उस वृद्ध पुरूष के पहाड जैसे मुश्किल कार्य को [illegible] दिया। कृष्ण के सहयोग से वृद्ध का भार हल्का हो गया। कितनी अनु[illegible] कृष्ण की करुणा, कैसी अनूठी है निर्बलो को - कमजोरो को-सह[illegible] की उनकी कोमल भावना! यदि ऐसी भावना समाज के सम्पन्न और [illegible] वर्ग में उत्पन्न हो जाय तो समाज का सारा नक्शा, सारा चित्र ही बदल [illegible] है।

कृष्ण के इस प्रसग से यह प्रेरणा भी मिलती है कि हुकूमत [illegible] अपेक्षा स्वय काम करने का उदाहरण पेश किया जाय तो [illegible] प्रभावोत्पादक होता हे। कृष्ण महाराज चाहते तो सेवको को, [illegible] को, सेना को आदेश देकर काम करवा सकते थे, परन्तु उन्होंने [illegible] नहीं किया और स्वय ने ईंट उठा कर रख दी। इसका [illegible] परिणाम निकला। दूसरे सब लोगों ने स्वयंमेव उनका अनु[illegible] लिया। बडे व्यक्ति जो काम करने लगते है, दूसरे भी उसका [illegible] अनुसरण करते है। अतएव यदि समाज मे आप अच्छी [illegible] करना चाहते हैं, बुराइयो को हटाना चाहते है तो उसका [illegible] बडे घरो से- प्रतिष्ठित समझे जाने वाले घरों से किया [illegible] ही समाज मे प्रचलित हो जाता है। इस दृष्टि से समाज के [illegible] व्यक्तियो की बहुत बडी जिम्मेदारी होती है। [illegible] आदर्श से अवश्य ही प्रेरणा लेनी चाहिए।

आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा.

जीवन तथ्य

जन्मस्थान		टोडा रामसिह (राजस्थान)
पिता	.	श्री रतनचदजी चपलोत
माता		श्रीमती मोतिया देवी
दीक्षास्थल	:	बूदी (राजस्थान)
दीक्षा तिथि		मार्गशीर्ष अष्टमी वि स 1879
गुरूजी		पूज्यश्री लालचदजी म सा
स्वर्गवास स्थान		जावद (मध्य प्रदेश)
स्वर्गवास तिथि		वैशाख शुक्ला पचमी वि स 1917

* सयमीय साधना की गहराईयो मे उतग्कर आत्म-कल्याण के साथ परात्म कल्याण के लिये जिन्होने ज्ञान सम्मत विशिष्ट क्रिया का शखनाद किया था।
* तत्कालीन युग मे निर्ग्रन्थ सस्कृति मे व्याप्त सयम शैथिल्य की उपेक्षा कर आत्म-शक्ति जागृत करने के लिये जिन्होने सयमीय क्रियाओ का विशिष्टता के साथ अनुपालन कर साधु समाज के समक्ष एक आदर्श उपस्थित किया था।
* भयकर से भयकर शीत ऋतु मे भी एक ही चादर को ओढकर जो आत्म-साधना मे तल्लीन रहते थे।
* 21 वर्ष तक जिन्होने बेले-बेले की तप साधना की थी। जिन्होने 13 द्रव्यो से अधिक द्रव्य का, मिष्टान्न एव तली चीजो का यावत्-जीवन परित्याग कर दिया था।
* प्रतिदिन दो हजार शक्रस्तव एव दो हजार गाथाओ का परावर्तन जिनके जीवन का अग था।
* जिनका जीवन अनेकानेक चमत्कारिक घटनाओ से सम्बद्ध था।
* ऐसे थे ज्ञान सम्मत क्रियोद्धारक साधु मार्गी परपरा के आसन्न उपकारी -

आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा.

आचार्य श्री शिवलालजी म.सा.

जीवन-तथ्य

जन्म स्थान	:	धामनिया (मध्य प्रदेश)
दीक्षा स्थान	:	बूंदी (राजस्थान)
दीक्षा तिथि	:	वि.सं. 1891 पौष शुक्ला पष्ठी
युवाचार्य पद स्थान	.	बीकानेर
युवाचार्य पद तिथि	:	वि. सं. 1907
आचार्य पद स्थान	:	जावद (मध्य प्रदेश)
आचार्य पद तिथि	:	वि. सं. 1917
स्वर्गवास स्थान	:	जावद (मध्य प्रदेश)
स्वर्गवास तिथि	:	वि. सं. 1933 पौष शुक्ला पष्ठी

- संसार की असारता एवं मुक्ति के अक्षय सुख के स्वरूप को समझकर जिन्होने उत्कृष्ट भावों के साथ संयमीय साधना में प्रवेश किया था।
- अपनी प्रखर प्रतिभा के बल पर जिन्होंने विद्वत् समाज में जोरदार प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।
- जिज्ञासुओं की जिज्ञासा का सटीक समाधान देकर उन्हें संतुष्ट करने में जो समर्थ थे।
- जिनका भक्तिरस के परिपूर्ण जीवन स्पर्शी उपदेश जन-जन की आत्मा को झंकृत करने वाला था।
- 35 वर्ष तक निरंतर एकांतर की तपस्या करके जिन्होने विद्वत्ता के साथ ही तपस्या मे भी एक कीर्तिमान स्थापित किया था।
- जिनकी स्वाध्याय के प्रति गहरी रूचि, आचार एवं विचार के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं जिनवाणी पर अगाध श्रद्धा थी।
- ऐसे थे प्रखर प्रतिभा सम्पन्न प्रकाण्ड विद्वान परम तपस्वी महान शिवपथानुयायी।

आचार्य श्री शिवलालजी म.सा.

आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा.

जीवन-तथ्य

जन्म थल	:	जोधपुर (राजस्थान)
जन्म तिथि	·	विक्रम सवत् 1876 पौष मास
पिता	:	श्री नथमलजी खिवेसरा
माता	:	श्रीमती जीबू देवी
दीक्षा स्थान	·	बूंदी (राजस्थान)
दीक्षा तिथि	:	वि.सं. 1918 चैत्र शुक्ला एकादशी
आचार्य पद		जावद (मध्य प्रदेश)
आचार्य पद तिथि	·	वि सं 1933 पोष
स्वर्गवास स्थान	:	रतलाम (मध्य प्रदेश)
स्वर्गवास तिथि	:	वि.सं. 1954 माघ शुक्ला दशमी

* भोग से योग की ओर मुडकर अर्थात् शादी से सन्याय की ओर मुडकर जिन्होने जनता के समक्ष एक विशिष्ट आदर्श उपस्थित किया था।
* सयमी साधना के साथ ही जिन्होने सम्यक् ज्ञान के क्षेत्र में भी विशिष्ट योग्यता प्राप्त की थी।
* शासन का सचालन जिन्होंने विशिष्ट योग्यता के साथ सम्पन्न किया था।
* आचार्य पद के विशिष्ट गरिमामय पद पर रहकर भी जिनमे विनम्रता शालीनता आदि के विशिष्ट गुण थे।
* जिनकी उत्कृष्ट सयम साधना से उनका शिष्य वर्ग भी तदनुरूप आराधना मे गतिशील रहा।
* जिनशासन नभ मे उदित होकर जिन्होने अज्ञान तिमिर का विनिवारण किया था।
* ऐसे थे विचक्षण प्रतिभा के धनी वादीमान मर्दक, विरक्तो के आदर्श विलक्षण

आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा.

आचार्य श्री चौथमलजी म.सा.

जीवन-तथ्य

जन्म स्थान	·	पाली (राजस्थान)
दीक्षा स्थान	:	बूंदी (राजस्थान)
दीक्षा तिथि	.	वि स. 1909 चैत्र शुक्ला द्वादशी
युवाचार्य पद तिथि	:	वि. सं. 1954 मार्गशीर्ष शुक्ला त्रयोदशी
आचार्य पद स्थान	·	रतलाम (मध्य प्रदेश)
आचार्य पद तिथि	·	वि स. 1954 माघ शुक्ला दशमी
स्वर्गवास स्थान	:	रतलाम (मध्यप्रदेश)
स्वर्गवास तिथि	:	वि.स. 1957 कार्तिक शुक्ला नवम

- ससार से उद्विग्न होकर शाश्वत सुख की पिपासा को शांत करने के लिये जिन्होने जैनेश्वरी दीक्षा स्वीकार की थी।
- सम्यक् ज्ञान के साथ सयमीय आचरण मे जो विशेष रूप से सतर्क थे।
- सयम शैथिल्य मे जो वज्रादपि कठोराणि वज्र से भी कठोर थे तो संयम साधना मे मृदुनि कुसुमादपि फूल से भी कोमल थे जिनके सम्यक् आचरण का प्रत्येक चरण साधना के लिये प्रेरणा स्त्रोत रहा है।
- ऐसे थे महान क्रियावान् सागर सम गंभीर संयम के सशक्त पालक, शांत-दांत निरहकारी निर्ग्रन्थ शिरोमणी

आचार्य श्री चौथमलजी म.सा.

आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा.

जीवन-तथ्य

जन्म स्थान	टौक (राजस्थान)
जन्म तिथि	वि स 1926 मार्गशीर्ष द्वादशी
पिता	श्री चुन्नीलालजी बम्ब
माता	श्रीमती चादकुवर बाई
दीक्षा स्थान	बनेडा (राजस्थान)
दीक्षा तिथि	वि स 1944 पौष कृष्ण सप्तमी
युवाचार्यपद तिथि	वि स 1957 कार्तिकशुक्ला द्वितीया
आचार्य पद स्थान	रतलाम (मध्य प्रदेश)
आचार्य पद तिथि	वि स 1957 कार्तिक शुक्ला नवमी
स्वर्गवास स्थान	जैतारण (राजस्थान)
स्वर्गवास तिथि	वि स 1977 आषाढ शुक्ला तृतीया

✻ प्रत्येक चातुर्मास मे धर्मोपदेश देकर नवीन इतिहास की रचना की।

✻ जन्मभूमि मे चातुर्मास कर याददास्त बनाई।

✻ मरूभूमि, मेवाड एव मालवा की धन्य धरा पर धर्मानद की लहर फैलायी।

✻ जगह-जगह राजाओ व जागीदारो की भक्ति से जीवदया आदोलन को सफल बनाया।

✻ सौराष्ट्र के दीर्घ प्रवास मे अपूर्व त्याग, तप व परोपकार का इतिहास रचा।

✻ सप्रदाय की सुव्यवस्था एव आत्म शक्ति का सफल प्रयोग किया।

✻ थली प्रात की जलती रेत पर भी आपने महावीर वाणी की अमृत वर्षा की।

✻ जयपुर चातुर्मास मे राज घरानो के सपर्क आने से अहिसा प्रचार कर जीवन दया का महान उपकार किया।

जैन-अजैन जनता मे जीयो और जीने दो का शखनाद फूककर भाई चारे का बिगुल बजाया। ऐसे थे सुरासुरेन्द्रदुर्जय कामविजेता अद्भुत स्मृति के धारक - जीवदया के प्राण -

आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा

आचार्यश्री जवाहरलालजी म.सा.

जीवन - तथ्य

जन्म स्थान	:	थांदला (मध्यप्रदेश)
जन्म तिथि	:	वि.स. 1932 कार्तिक शुक्ला चतुर्थी
पिता	:	श्री जीवराजजी कवाड
माता	:	श्रीमती नाथीबाई
दीक्षा स्थान	:	लिमड़ी (म.प्र.)
दीक्षा तिथि	:	वि.सं. 1948 माघ शुक्ला द्वितीया
युवाचार्य पद स्थान	:	रतलाम (मध्यप्रदेश)
युवाचार्य पद तिथि	:	वि.सं 1976 चैत्र कृष्णा नवमी
आचार्य पद स्थान	:	जैतारण (राजस्थान)
आचार्य पद तिथि	:	वि.सं. 1976 आषाढ शुक्ला तृतीया
स्वर्गवास स्थान	:	भीनासर (राजस्थान)
स्वर्गवास तिथि	:	वि सं. 2000 आषाढ शुक्ला अष्टमी

❊ विपत्तियों की तमिस्र गुफाओं को पार जिसने संयम साधना का राजमार्ग स्वीकार किया था।

❊ ज्ञानार्जन की अतृप्त लालसा ने जिनके भीतर ज्ञान का अभिनव आलोक निरंतर अभिवर्द्धित किया।

❊ संयमीय साधना के साथ वैचारिक क्रांति का शंखनाद वजाकर जिसने भू-मण्डल को चमत्कृत कर दिया।

❊ उत्सूत्र सिद्धांतों का उन्मूलन करने, आगम सम्मत सिद्धांतो की प्रतिष्ठापना करने के लिये जिसने वाद-विवाद में विजयश्री प्राप्त की।

❊ परतंत्र भारत को स्वतंत्र वनाने के लिये जिसने गांव-गाव, नगर-नगर पाद विहार कर अपने तेजस्वी प्रवचनों द्वारा जन-जन के मन को जागृत किया।

❊ शुद्ध खादी के परिवेश में खादी अभियान चला कर जिसने जन-मानस में खादी धारण करने की भावना उत्पन्न कर दी।

❊ अल्पारंभ-महारंभ जैसी अनेकों पेचीदी समस्याओ का जिसने अपनी प्रखर प्रतिभा द्वारा आगम सम्मत सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया।

❊ स्थानकवासी समाज के लिये जिसने अजमेर सम्मेलन मे गहरे चिंतन मनन के साथ प्रभावशाली योजना प्रस्तुत की।

❊ महात्मा गांधी, विनोबा भावे, लोकमान्य तिलक, सरदार वल्लभ भाई पटेल, प. श्री जवाहरलाल नेहरू आदि राष्ट्रीय नेताओ ने जिनके सचोट प्रवचनों का समय-समय पर लाभ उठाया।

❊ जैन एव जैनेतर समाज जिसे श्रद्धा से अपना पूजनीय स्वीकार करती थी।

❊ सत्य सिद्धांतो की सुरक्षा के लिये जो निडरता एव निर्भीकता के साथ भू-मंडल पर विचरण करते थे।

वे है ज्योतिर्धर, महान क्रांतिकारी, क्रान्तद्रष्टा, युगपुरुष

आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.

आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा.

जीवन तथ्य

जन्म स्थान	:	उदयपुर (राजस्थान)
जन्म तिथि		वि.स 1947 श्रावण कृष्णा तृतीया
पिता	:	श्री साहबलालजी मारू
माता	:	श्रीमती इन्द्रादेवी
दीक्षा स्थान		उदयपुर (राजस्थान)
दीक्षा तिथि		वि स 1962 मार्ग शीर्ष कृष्णा एकम्
युवाचार्य पद स्थान		जावद (मध्य प्रदेश)
युवाचार्य पद तिथि	.	वि स 1990 फाल्गुन शुक्ला तृतीया
आचार्य पद स्थान		भीनासर (राजस्थान)
आचार्य पद तिथि		वि.स. 2000 आषाढ शुक्ला अष्टमी
स्वर्गवास स्थान		उदयपुर (राजस्थान)
स्वर्गवास तिथि		वि स. 2019 माघ कृष्णा द्वितीय

✻ विनय-विवेक-विनम्रता जिनके रग-रग में समाहित थी।

✻ जिनको समूह नहीं, संयम प्रिय था।

✻ सयमी साधना से अनुस्यूत जो, सिंहो के समक्ष भी निर्भय निर्द्वन्द विचरण करते थे।

✻ जिनकी कुशल वाग्मिता जन-जन के मन को प्रभावित किये बिना नही रहती।

✻ प्राय स्थानकवासी समाज के जो एक मात्र सर्वसत्ता सपन्न अनुशास्ता बनाए गये थे।

✻ जिन्होने अपनी सयमीय आन-बान और शान की रक्षा के लिये बहुत बडे पद की कुर्बानी दे दी।

✻ केसर जैसी भयकर बीमारी मे भी जिसने, उफ तक नही किया था।

✻ बडे-बडे साधु सम्मेलनों का भी जिन्होने कुशलता के साथ सचालन किया।

✻ अपने नाम के अनुसार ही जो एक गण से दो गणो के, दो गणो से बहुत गणो के ईशस्वामी बने थे।

✻ पूर्ण सजगता की स्थिति मे सलेखन्ना सथारा कर जिन्होने समाधि पूर्वक देहोत्सर्ग किया था।

ऐसे थे, हुक्म गच्छ के सप्तम पट्टधर शांत क्राति के जन्म-दाता, सरलता की सजीव मूर्ति

-आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा.

आचार्य श्री नानालालजी म.सा. जीवन-तथ्य

जन्म स्थान	:	दाता जिला चित्तौडगढ (राजस्थान)
जन्म तिथि	:	वि सं 1977 ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया
पिता	:	श्री मोडीलालजी पोखरना
माता		श्रीमती श्रृंगारबाई
दीक्षा तिथि	:	वि स 1996 पौष शुक्ला अष्टमी
दीक्षा स्थान	·	कपासन (राजस्थान)
युवाचार्य पद स्थान		उदयपुर (राजस्थान)
युवाचार्य पद तिथि	:	वि.स 2019 आश्विन शुक्ला द्वितीया
आचार्य पद स्थान	:	उदयपुर (राजस्थान)
आचार्य पद तिथि	:	वि सं 2019 माघ कृष्णा द्वितीया
स्वर्गवास	·	वि स 2056 कार्तिक कृष्णा तृतीया, उदयपुर (राज)

- साधना की पगडडी पर जो अविचल रूप से निर्भयता के साथ चलते रहे।
- श्रमण सस्कृति की अक्षुण्ण सुरक्षा के लिये जो अनेक तूफानो एव झझावातो के बीच भी हिमानी की तरह अडिग बने रहे।
- गुरु चरणो मे सर्वतोभावेन समर्पित होकर जो आत्मिक -मशाल को निरतर प्रज्वलित करते रहे।
- चितन की गहराइयो से निसृत समता सुधा द्वारा जो. विषमता मे विषाक्त विश्व को आप्लावित कर रहे है।
- दलित-पतित शोषित-उत्पीडित निम्न समझे जाने वाले जनसमूह को जिसने अपने पावन पूत जीवन मे संस्कारित कर धर्मपाल की सज्ञा से अभिव्यजित किया है।
- जैन समाज को भावनात्मक एकता के लिये जो अपने महत्वपूर्ण चिंतन के साथ सदा तत्पर है।
- मानवो के मानसिक तनाव की उपशाति के साथ आत्मिक शाति जागृत करने के लिये जिसने आगम-सम्मत 'समीक्षण ध्यान साधना' का अभिनव प्रयोग जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है।
- जटिल से जटिल प्रश्नो का समाधान, जो अपनी प्रखर-प्रतिभा से सहजता के साथ आगमिक [illegible], तार्किक एव व्यवहारिक तरीके से पूर्ण सतोष पद प्रस्तुत करते है।
- जिनके प्रवचन आगमिक विवेचना के साथ ही विश्व की तात्कालीन समस्याओ का सचोट समाधान प्रस्तुत करते है।
- एक साथ 25 दीक्षाए देकर जिसने 500 वर्ष पूर्व के इतिहास को पुन. तरोताजा कर दिया है।
- जिनके जीवन का नैसर्गिक चमत्कारिक प्रभाव आधि-व्याधि और उपाधि से सतप्त जीवन मे शांति का [illegible]
- भारत के कोने-कोने मे विस्तृत इस विशाल सघ का जो कुशल सचालन कर रहे है।
- पचमाचार्य श्री श्रीलालजी म.सा की भविष्य भाषणा, वर्तमान के परिप्रेक्ष्य म सत्यता [illegible] जिनके जीवन मे [illegible] ऐसे युग-पुरुष है, समता विभूति, [illegible]

[illegible], समीक्षण ध्यान योगी, [illegible]

आचार्य श्री नानालालजी म.सा

आचार्य श्री रामलालजी म.सा.

जन्म स्थान		देशनोक जिला बीकानेर (राजस्थान)
जन्म तिथि	:	वि.स. 2009 चैत्र शुक्ला 14, बुधवार, 16.4.52
पिता	:	श्री नेमीचदजी भूरा
माता	.	श्रीमती गवराबाई
दीक्षा तिथि	·	वि.स. 2031 माघ शुक्ला 12, रविवार 23.2.75
दीक्षा स्थान	:	देशनोक राजस्थान
मुनिवर पद स्थान		चितौडगढ (राजस्थान)
मुनिवर पद तिथि	:	सं. 2047 आसोज शुक्ला 12, शनिवार 22.9 90
युवाचार्य पद स्थान	:	बीकानेर (राजस्थान)
युवाचार्य पद तिथि	.	वि स 2048 फाल्गुण शुक्ला 3, शनिवार 7.3 92
आचार्य पद	:	वि स 2056 कार्तिक कृष्णा तृतीया
आचार्य पद स्थान		उदयपुर (राज.)

* एक गुरु की नेश्राय मे शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित, आहार-विहार के हिमायती
* व्यसनमुक्ति एवं शाकाहार आदोलन के प्रबल प्रेरक
* प्रवचन एव व्याख्यान में अद्भुत छटा बिखेरने वाले
* प्रत्येक विषय पर विवेचनयुक्त आगम के आधार पर सचौट प्रमाण प्रस्तुत करने वाले
* आगम के आधार पर एवं सूत्र की मर्यादा मे रहकर संयम का पालन करने वाले
* श्रावको के बीच ही आगम सूत्र के जरिये प्रत्येक प्रश्नो का एव शकाओ का समाधान करने वाले
* साध्वियो, श्राविकाओ एवं महिलाओ से प्रार्थना व प्रवचन के समय ही मर्यादित वार्तालाप करने वाले
* ऐसे आगमज्ञ, तरूण तपस्वी, तपोमूर्ति, उग्रविहारी, सिरीवाल प्रतिबोधक, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, बालब्रह्मचारी, प्रशात मना,

आचार्य प्रवर श्री रामलालजी म.सा.

महारथी - ब्रह्मर्षि श्री नानेश

प्रेषक **प्रेमबाई मुरड़िया,** बेगलोर

श्रेय को प्रेय बनाने वाले, अमंगल को मंगल करने वाले, हानि को लाभ मे, अधर्म को धर्म में, पाप को पुण्य में, पतन को उत्थान में, विषमता को समता मे और पराजय को विजय मे बदलने वाले महापराक्रमी, महाप्रतापी, महारथी, ब्रह्मर्षि, कर्मयोगी, कर्मवीर, धर्मवीर समता के धनी, पूर्ण आस्थावान, सत-चित-आनन्द के मंगल स्तोत्र, खेतो, खलिहानों, भूखण्डों, ब्रिजो भवनो भवन खण्डो और भीमकाय पाषाणो को भगवान बनाने वाले, उनमे दया-करूणा और समता की जान फूंकने वाले गुलाब-चम्पा-चमेली-केवडा-मोगरा और गेंदा मे प्रतिपल ध्वनित होने वाले, सतरंगी इन्द्रधनुष-धर्म-परमाणुओ को लोक-जीवन में लुटाने वाले, लोक जीवन में महक भरने वाले, लोक जीवन का मार्ग प्रशस्त करने वाले लोक जीवन को कष्टो, दुखों, चिन्ताओ और तनाव का परिहार करने वाले, धीर-वीर-गंभीर अपनी आन-बान और शान के धनी, सैकडो हिंसक प्राणियो मे अहिसा की सौरभ भरने वाले, ज्ञानी-ध्यानी-मौनी आचार्य श्री नानेश राष्ट्र के उन गौरवशाली सन्ताचार्यो मे एक है जिन पर आज राष्ट्र को गर्व है, धर्म को नाज है, यह चलता-फिरता मसीहा था, जो कई वर्षो से जीवन संघर्षो से जूझ रहा, शान्ति और गांभीर्य से अपनी मर्यादा निभाया हुआ सभी को निहार रहा था ।

कोई ध्वस करता है, यह निर्माण करता है । कोई उड़ाता है, यह स्थिर करता है । कोई बिखेरता है, यह जोडता है, पिरोता है, एक करता है, रूप-रस और गंध भरता है । इसके मानस में दया-करूणा-प्रेम और समता छलकती रही है । हजारो का जीवन निर्माण करने वाला, हजारो को मुक्ति पथ दिखाने वाला, यह कर्मयोगी-सन्यासी अपनी मर्यादा में रहकर देश-काल को जगाता रहा है, सतर्क कर उनमे मधुरस भरता रहा है । दो हजार पांच सौ वर्षो में दीक्षा संबंधी जो कार्य कोई नहीं कर सका, इसने चतुर्विध संघ के सम्मुख कर दिखाया । अपने सिद्धान्तो और लक्ष्यो को लेकर यह चलता रहा । अनेक संकट बाधाओं को पार कर सूर्य-चन्द्र और नक्षत्रों की साक्षी से वीर शासन को यशस्वी बनाता रहा । इसके पास इसकी अटूट सयम साधना थी, विश्वास था, निश्छल स्नेह पूर्ण भावनाएं थी ।

इसके पास न कोई तोप थी, न बन्दूक थी, न तलवार थी, न अणुबम । इसके पास तो अपना स्वयं का आत्मबल और साहस ही था और जनजीवन के दिलो को जीतने की कला । यह जीवनदर्शी था, गहरी निष्ठा और आस्था थी, श्रद्धा और भक्ति थी, तत्वदर्शन था, मौलिकता थी। उसी के बल पर यह मनमाने अस्त्र-शस्त्रो को फीका करता रहा ।

यह कभी ढकोसलों मे नही पडा, कभी बाह्य-प्रदर्शनो में नहीं फंसा, आडम्बरों का कभी साथ नही दिया और निरन्तर अंध विश्वासो को मिटाता रहा, चमत्कारो को समाज और धर्म को पतनोन्मुख करने वाली शक्तियो का गोभी और प्याज को पत्तो की तरह परत खोलता गया, उन पर जमी धूल उडाता गया और नवनीत निकाल-निकाल कर देता रहा । यह साहित्यकार समीक्षक कथाकार, आगमज्ञ, कलाकार और धर्मनिष्ठ था।

इसकी वाणी मे जादू था, इसके व्यक्तित्व मे दृढता थी। इसके गांभीर्य मे एक तेज था, इसकी चाल में एक चमक थी, इसकी दृष्टि मे एक आत्मा थी, इसकी समता मे दिल की धडकन थी, इसकी मौन साधना मे इडा, पिगला-सुपुम्ना के स्वर गूंजा करते रहे, सहस्त्र दल कमल इसके पूरे तन मे समाया हुआ था - जहॉ से समरसता देनेवाले स्वर फूटते है और समता का विस्तार करते ।

इसे कभी किसी प्रकार की कोई लालसा नहीं थी । यह किसी विवाद में नहीं पडता, यह किसी से तर्क -वितर्क नहीं करता, यह तो जन जीवन के माया-मोह के पर्दे तोडता रहा । इसे देख भक्ति की महक आती रही।

इसकी कामना थी - ''सभी सुखी रहे, कोई किसी को न सतावे, कोई किसी से प्रतिशोध न ले, लडाई-झगडा, मार-

विवाद से दूर रहकर सभी आत्म चितन करे ।"

सत्य-अहिसा, प्रेम-सद्भाव, विवेक और प्रेम से मनुष्य, मनुष्य का दिल जीत सकता है । तोप-तलवार से हिसा होती है, मानवता तडफती है । मगर प्रेम युक्त भावनाओं से मानव-मानव मे विश्वास पैदा किया जा सकता है ।

"गौतमी के पास भगवान बुद्ध आये और अपनी झोली फैलाकर कुछ मांगने लगे । इतने मे गौतमी ने सोचा स्वय मेरे प्राणनाथ आये मुझसे भिक्षा मांग रहे है ।" मेरे पास उन्हे देने को कुछ भी नहीं है । वह उन्हे कोई बहुमूल्य रत्न देना चाहती थी इसलिए बडी प्रसन्नता के साथ अपने बेटे राहुल को बुद्ध की झोली मे डाल दिया । धरा धन्य हो गई, देव दुदुभियां बज उठी, वीणा के तार झनझनाने लगे ।"

आचार्य नानेश भी गहरी संवेदना के साथ चतुर्विध सघ से कुछ माग कर रहे हैं - आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति को संघ-समाज-लोक कल्याण मे लगाओ, गरीबो, असहायो, पीडितो, लगडे-लुलो, अंधो, कोढियो, व्याधि ग्रस्त व्यक्तियो विधवाओ और वृद्धो के जीवन को समुन्नत बनाने के लिए विसर्जन करो, ममता तोडो, मोह छोडो । उनका जीवन हरा-भरा हो जायेगा । तभी जाकर छाये हुए अकाल के बादल हट सकेगे । तब गुलाब महकने लगेगा, चमली बोलने लगेगी । समाज और धर्म महक उठेगा । जीवन का कायाकल्प हो जायेगा ।

खेतो मे अनाज अच्छा पकेगा, धरती माता फूलो-फलो मे मधुरस भर देगी । पक्षी गुंजार करने लगेगे । कलाए चमक उठेगी, सभ्यता सस्कृति छा जायगी । बादल गरजने लगेगे, बिजलियॉ चमकने लगेगी । नदी-नाले-पेड पौधे सभी एक स्वर मे आचार्य नानेश की पुण्य स्मृति मे आचार्य नानेश समता पुरस्कार पर कामना करने लगे कि आप का शासन प्रतिपल आगे बढता रहे ।

और चारो ओर फूल बरसने लगेगे । और कहने लगे आचार्य रामेश आप अब किसी प्रकार की चिन्ता न करे यह सघ हमेशा आपके इशारो पर चलता रहेगा और कामना करे कि -

"सुखी रहे सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावे ।,
वैर पाप अभिमान छोड, नित्य नये मंगल गावें ।"

श्री चौबीस जिन छंद

श्री आदि जिनद, समरस कद, अजित जिनंदं भज प्राणी।
सभव जगत्राता, शिवमग राता, दो सुख साता हित आणी।
अभिनदन देवा, सुमति सुसेवा, करो नित मेवा रिपु घाता।
चौबीस जिनराया, मन वच काया, प्रणमू पाया द्यो साता
॥टेर॥१॥

श्री पद्म सुपास, ससिगुणरास, सुविधि सुवास, हितकारी।
श्री शीतल स्वामी, अन्तरजामी, शिवगति गामी, उपकारी।
श्रेयास दयाला, परम कृपाला, भविजन व्हाला, जगत्राता
॥चौ. ॥२॥

वासुपूज्य सुकत, विमल अनत, धर्म श्री सतं, सतकारी।
कुंथु अरनाथं, तज जग साथ, मल्लि सुआथ, समधारी।
मुनिसुव्रत सुनमी, आत्मा ने दमी, दुर्गति ने वमी तपराता
॥ चौ. ॥३॥

रिष्टनेमी बडाई, नार न ब्याही, तोरण जाई छिटकाई।
नाग नागिन ताई, दिया बचाई, पारस साई सुखदाई
जय जय वर्द्धमान, गुण निधि खानं, त्रिजगद्भान शुद्ध आता ॥
चौबीस जिनराया. . .... ॥४॥

ससार का फदा, दूर निकंदा, धर्म का छदा, जिन लीना।
प्रभु केवल पाया, धर्म सुनाया, भवि समझाया मुनि कीना।
कहे रिख तिलोक सदा तस धोक द्यो सुख थोक चित्त चाता ॥
चौबीस जिनराया, मन वच काया, प्रणमू पाया द्यो साता ॥५॥

प्रभु प्रार्थना मोक्ष मार्ग की प्रथम सीढ़ी है

सफल जीवन के मंत्र

- आचार्य श्री रामलालजी म.सा.

जीवन सफल बनाना, बनाना प्रभु वीर जनिराज जी ।
मन मंदिर में घुप्प अंधेरा, ज्ञान की ज्योति जगाना जी ॥

हम प्रभु से जीवन सफल बनाने की मनो कामना करते है और स्वीकार करते है कि हमारे मन में घोर अंधकार अर्थात् अज्ञान है । जब मन में घोर अंधकार है तो जीवन सफल कैसे बन सकता है ? और जीवन सफल बनाने के लिए प्रतीक्षा भी कब तक की जा सकती है क्योंकि समय तो अबाध-गति बहा चला जा रहा है तो वह न रूकता है, न उसे कोई रोक सकता है, जीवन सफल नहीं बन पा रहा है तो वह रूकेगा थोडे ही । तब फिर जीवन सफल बनाने के लिए बिना अधिक समय खोये तुरन्त ही प्रत्यनशील हो जाना चाहिए इस हेतु प्रभु की कृपा तब फलदायी होती है, जब प्रयास किये जायें, पुरूषार्थ किया जाये क्योंकि सोते हुए सिंह के मुँह में हिरन स्वयं तो घुस नही जाता । सामने परोसे गये व्यंजन भी प्रदान करते है, जब उन्हे हाथ से उठा कर मुँह मे रखने का उपक्रम किया जाय ।

जीवन की सफलता अथवा फल की प्राप्ति के लिए भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र मे एक सूत्र दिया है -

'असंख्यं जीवन मा पमायए'।

वे कहते है कि प्रमाद मत करो क्योकि तुम्हारा जीवन असंस्कारित है । संसार मे महिमा केवल संस्कारित की है । असंस्कारित धान यदि पेट में चला जाये तो वह शरीर को पुष्ट करने की अपेक्षा रोग उत्पन्न कर देता है । स्वर्ण जैसी मूल्यवान धातु का मान, मूल्य और सौंदर्य तभी बढते हैं जब वह आग मे तपा कर संस्कारित किया जाता है।इस हेतु उसे तप, छेद व कस, इन ३ अवस्थाओं से गुजरना पडता है ।

संस्कार जब इतने महत्वपूर्ण हैं तब देखे कि हमारा जीवन [illegible] है, हम कैसे संस्कारो मे जी रहे हैं, क्या हम स्वयं संस्कारित होने की दिशा मे प्रयत्नशील हैं और क्या हमें संस्कारित बनने की चिन्ता भी है ?

हम स्वयं को सभ्य नागरिक समझते है और ग्रामो या जगत में निवास करने वालों को असभ्य या असस्कारित कह देते है। आखिर ऐसा हम क्यों कह देते हैं ? केवल बाहर से उन्हे देखकर । उनमें शिक्षा नही है । वे अंधविश्वासी हे, उनकी रूचियां और आदते परिष्कृत नही है और वे शिष्ट व मिष्ट भाषा का प्रयोग करना नही जानते, जैसा मन मे आता है बोल देते है। तो ये सब तो उनको असंस्कृत कह देने का आधार नहीं है क्योंकि इस दृष्टि से नगरो में रहने वाले तथाकथित प्रगतिशील लोग कहीं अधिक असंस्कारित हैं। हम देखे कि उनमें विद्या के साथ विनय आती हैं ? क्या नया वैज्ञानिक चिन्तन उन्हे मानवतावादी बनाता है, क्या अच्छी, सुन्दर, उपयोगी व मूल्यवान वस्तुएं रख कर वे व्यवहार में भी वैसे ही सुन्दर, दयालु और संवेदनशील बन पाते हैं ? ऐसा तो कही नही है कि -''स्वर्ण की जंजीर पहने श्वान फिर भी श्वान है''। कही शिष्ट व मिष्ट भाषा के पीछे उनके मन की रूचि, स्वार्थपरता, छल और चालाकी तो नहीं झांक रही है ? ये सब सोचने की बाते हैं क्योंकि पाखण्ड कभी संस्कृति नहीं बनता। सरलता एवं सहजता सदा संस्कारहीनता के चिन्ह नहीं होते ।

एक छोटे से उदाहरण द्वारा इस स्थित को स्पष्ट किया जा सकता है। आप टी.वी. के कार्यक्रम देख रहे है, क्या आप का आपके बच्चे या आपके बुजुर्ग या घर की स्त्रिया इस बात की चिन्ता करता है कि कैसे कार्यक्रम वे सभी एक साथ बैठकर देख रहे है ? कार्यक्रम चाहे फूहड हों, चाहे अश्लील, चाहे दम्भ, पाखण्ड, हिंसा और व्यसनों को प्रदर्शित करने वाले हो, [illegible]

साथ बैठ कर देखते है । क्या ऑखो की लज्जा, उचित-अनुचित का विवेक और मन का सकोच, उनमे से किसी को कचोटता है कि वैसे कार्यक्रम या विज्ञापन साथ मे बैठ कर देखना उचित नहीं हुआ । क्या हम बच्चो पर पडने वाले दुष्प्रभाव और नारियो के शील को प्रभावित करने वाली स्थितियो को रोक सकते है ? फिर यदि अपराध, व्यसन, निर्लज्जता और अशिष्टता का समाज मे प्रसार हो तो उसके लिये दोषी कौन हुआ ? प्रचार -प्रसार माध्यमो को अत्यत संस्कारित होना चाहिये, परन्तु जब उनके द्वारा परोसी गई असकारित समाग्री का समाज उपभोग करेगा तब उसका स्वास्थ्य चौपट हो तो आश्चर्य कैसा ? समाज मे बढते अपराध, व्यसन, असुरक्षा-भाव, अनैतिकता, अशाति और असतोष अस्वस्थकर सामग्री को बिना विचारे उदरस्थ कर जाने का ही परिणाम है ।

हमे अपने सस्कारो की ओर देखना है । एक पिता बडी-बडी अभिलाषाएँ संजोता है - मेरा पुत्र बडा होकर शिक्षित, विद्वान, उदार, त्यागी बने या अफसर, व्यापारी, नेता बने, परन्तु क्या वह यह देखता है कि उसकी स्वय की मानसिकता अथवा चरित्र कैसा है ? व्यसनी, अपराधी अथवा भ्रष्ट पिता अपने पुत्र मे कभी अच्छे सस्कार डाल ही नही सकता । बालक मे अनुकरण की प्रवृत्ति तो होती है, अपने आस-पास का वातावरण भी उसे गभीरता से प्रभावित करता है । इसलिए यदि हम चाहते है कि उनका ''जीवन सफल'' बने, संस्कारित बने, तो पहले हमे भी अपना जीवन सस्कारित करना होगा ।

आज एक आम प्रवृत्ति बन गई है-परिस्थितियो को दोष देने की । हम कह देते है कि हम क्या करे, कुँए मे ही भॉग पडी हुई है, सारा वातावरण ही दूषित है । परन्तु यह न समस्या का समाधान है न हमारी सदस्यता की सीमा । यदि एक-एक व्यक्ति यह विचार कर ले कि मुझे गलत काम नही करना है, व्यसनो के निकट नही जाना है, अपनी आदते नही बिगाडनी है, तो निश्चित हे कि इसका प्रभाव हमारे आस-पास भी पडेगा । यह याद रखने की बात है कि सद्वृत्तियाँ भी संक्रामक होती है । और चूकि मनुष्य के पास हृदय होता है, जिसमे भावनाएँ पनपती है, आत्मा होती है, जिसमे कचोट होती है, जो सद्-असद् का विवेक करने की शक्ति देती है और चूकि वह सवेदनहीन पशु नही होता इसलिए वह सद्वृत्तियों को अपनाना चाहता है, यह दूसरी बात है कि अनेक कारणो से वह भटक जाता हो । पर इस भटकन का इलाज है - प्रेरणा मनुष्य की वृत्तियो मे आमूलचल परिवर्तन ला सकती है ।

इस दृष्टि से परिवार मे पिता अथवा मुखिया का बहुत बडा दायित्व होता है । उसके लिए आवश्यक है कि वह स्वय न भटके, अपनी वृत्तियो को सस्कारित करे और अन्य सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बने । बडो मे धार्मिक आस्था प्राथमिक आवश्यकता है । वे स्वय स्वाध्याय करे और ज्ञान-सम्पन्न हो । परिवार के अन्य जन स्वत ही उनका अनुकरण एव अनुसरण करेगे । हमारे समाज मे स्वाध्याय की परम्परा लुप्त होती जा रही है, उसे पुनर्जीवित करना आवश्यक है । सत्-साहित्य चल पडा है वह सुरुचि उत्पन्न करने वाला नही होता । व्यापक प्रचार के लिए उसे हल्का, बनाया जाता है । इस प्रकार मनोरजन के स्तर मे भी गिरावट आई है । इस स्थिति के प्रति भी सर्तक रहने की आवश्यकता है ।

तो बात जीवन को सफल बनाने की थी जिसके लिये प्रभु के आशीर्वाद व उसकी कृपा की आवश्यकता भी बताई गई थी। प्रभु तो परम दयालु है ही, उसकी कृपा तो सदा, सर्वदा, सभी पर रहती है, परन्तु उस पर सच्ची श्रद्धा भी तो होनी चाहिए क्योकि कहते है-

''श्रद्धावान लभने ज्ञान विश्वास फलदायक''

श्रद्धावान को ज्ञान प्राप्त होता है और विश्वास का फल प्राप्त होता है । परतु श्रद्धा और विश्वास के लिए मन का निर्मल होना अत्यावश्यक है। मन निर्मल होता है, सुसस्कारो से, सद्विचारो से और सद्-अभिभावको से। इन ३ का ध्यान रखे तो प्रभु की कृपा तो स्वत प्रवाहित होगी ही। ज्ञान भी मिलेगा जो कल-मदिर मे व्याप्त घुप्प अधकार को दूर करेगा। और जब प्रकाश अबाध गति से जीवन मे प्रवाहित होने लगेगा तब जीवन निश्चय ही सफल बन जायेगा। यही तो हमारी कामना है।

राम गुरु का यह संदेश
व्यसन मुक्त हो सारा देश



समता साधना को जीवन में उतारें : रिद्धकरण सिपानी

समता का सीधा सा अर्थ हो गया है, आचार्य श्री नानेश, समता आचार्य श्री नानेश का पर्यायवाची बन गया है । समता समाज, समता दर्शन, समता भवन, समता पुरुष ।

देश भर में फैलता हुआ समता भवनों का नेटवर्क इस ओर संकेत करता है कि इन समता भवनों में श्रावक अपने आराध्य देव आचार्य श्री नानेश द्वारा बताए हुए समता स्वाध्याय, समता तपस्या और समता साधना के लक्ष्य को लेकर अपने जीवन का परिर्माजन कर रहे है । ताकि समता समाज की संरचना की जा सकें । इसका बीडा उठाया है श्री हरिसिंहजी रांका ने । अति शीघ्र ही वे समता समाज की रचना की रुप रेखा को अंतिम रुप दे रहे है ।

समता भवन आजकल बडे-बडे शहरो-नगरों में ही नहीं अपितु छोटे-छोटे गाँवों-कस्बों में भी बन गये है । धर्मपाल और सिरीवाल क्षेत्रों मे भी समता भवन बने है, बन रहे है तथा आगे भविष्य में बनते जाएंगे । उनमें साधना करने वालों को आज समता समाज की आवश्यकता हैं, जिससे वे समता दर्शन, समता भाव व समता सेवा के रुप मे अपने जीवन को आगे बढा सके । जिसका माध्यम बना है समता प्रचार संघ स्वाध्याय के लिए और सेवा के लिए समता जन कल्याण प्रन्यास ।

प्रत्यक्ष रुप में दो नाम तो सामने आ ही गये है। जयपुर निवासी त्यागमूर्ति श्रीमान् गुमानमलजी सा चौरडिया और बेगलोर निवासी श्रावक रत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी । अब इनके पीछे असंख्य नाम छीपे पडे है । जो अपनी मौनवृत्ति से साधना रत हैं ।

आचार्य श्री नानेश के पद चिन्हों पर चलते हुए आचार्य श्री राम ने दृढ संकल्प कर लिया है कि प्रत्येक मानव के जीवन में समता किसी न किसी रुप में आवे ही । इसलिए वे चाहते है कि समता समाज की अतिशीघ्र रचना हो ।

आचार्य श्री राम का स्वाध्याय, सेवा, कथनी और करनी की एक रुपता, त्याग, प्रत्याख्यान की ओर विशेष ध्यान रहता है। वे अनुयायियों को धीरे-धीरे इस ओर आकर्षित कर रहे हैं।

मैं भी आज से दो वर्ष पूर्व तक एक उद्यमी और व्यापारी था दिन-रात उसी दौड मे दौडा करता था । परन्तु मेरे जीवन पर मेरे आराध्य देव और संत-सतियांजी म. सा. का एक अनूठा प्रभाव पड़ा, जिससे मैंने इस ओर कदम बढाया ।

मेरे अग्रज भाईजी श्री सोहनलालजी सिपानी बचपन से ही सरल स्वभावी और धीमी प्रवृति के शांत स्वभावी रहे हैं । त्याग, प्रत्याख्यान, मौन और समाज सेवा का लक्ष्य बनाए हुए है । दक्षिण भारत में आपने सभी श्रावकों को आपस मे जोडा । संत-सतियांजी म. सा. के विचरण में सहयोग प्रदान करते हुए अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं । जो संग्रह किया है वे उसे वितरण कर रहे है । साथ ही सभी के दिलो-दिमाग मे सम्मान प्राप्त किया है । अत. अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने उनको आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित किया है। यह हमारे परिवार के लिए गौरव की बात है ।

मेरे अग्रज भाईजी श्री गोकूलचंदजी सिपानी भी रोटरी के माध्यम से चिकमंगलूर में पीडीत समाज की सेवा कर रहे हैं। सभी पर परम् पूज्य पिताजी श्रीमान् भैरुदानजी सिपानी और माताजी श्रीमती धन्नीदेवी के संस्कार हैं । मैं और पूरा परिवार समता साधना करता हुआ आगे बढते रहे, यही कामना है...

जय महावीर, जय गुरु नाना, जय गुरु राम

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष



धर्म और समाज के गौरव, श्रद्धाशील, श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी

ले. **मोहनलाल चौपड़ा**, बेगलोर

धर्म और समाज के गौरव, श्रद्धाशील, विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी, समता को अपनी जीवन शैली मे उतारते हुए जन-जन का कल्याण हेतु सदैव समर्पित विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी सारे भारतवर्ष मे जन-जन के श्रद्धा केद्र है।

हरपल सघ एवम् जन-जन का हित चाहने वाले श्रीमान् सिपानीजी आदर्श व्यक्तित्व के धनी है। मधुर मुस्कान के साथ सरलता से हर जन का स्नेह पा सकने वाले सज्जन पुरुष है। आपके मानस मे पवित्र, दिल की स्वच्छाता एवं विचारो मे दृढता है। सामायिक स्वाध्याय एवम् व्रत नियमो का पालन आपकी दैनिक वृति है।

आपका आत्मबल एवम् उत्साह सराहनीय है। आपने सदैव बिखरी कडिये जोडकर एक बनाने का ही प्रयास किया।

आचार्य श्री नानेश की समता तरंगों मे पूर्ण रुप से समर्पित होते हुए सदैव समता समाज की रचना मे अपना अमुल्य समय लगाया। वर्तमान आचार्य प्रवर पूज्य श्री रामलालजी म. सा. के प्रति पूर्ण सर्मपणा रखते हुए व्यसन मुक्ति के सिद्धात को जन-जन के जीवन के व्यवहार मे उतारने का महत्वपूर्ण कार्य करने मे सदैव रत है।

चतुर्विध सघ मे आपका सम्माननीय स्थान है। हर संप्रदाय के आचार्यो एव प्रबुद्ध संतो एव सतियो के साथ इनका समाज हित हेतु चिन्तन चलता रहता है। गुरु एक एवं सेवा अनेक के सिद्धान्त तन-मन-धन से चरितार्थ करते है। आपका मनोबल इतना दृढ है कि आप अपनी शाररीक स्वास्थ की भी परवाह किये बगैर इन कार्यो को पूरा करते है।

बेगलोर का सम्पूर्ण समाज एव विशेष श्री साधुमार्गी जैन सघ आपके नेतृत्व एवं मार्ग दर्शन से सारे भारत मे एक विशेष पहचान बना पाया है। बेगलोर मे अनेक जन उपयोगी कार्यक्रम जैसे, स्कूल, बोर्डिग, कालेज, धार्मिक पाठशालों, अस्पताल, जीवदया, सधर्मी सहयोग आदि अनेक कार्यो मे तन-मन-धन से सहयोग देते हुये अपने सुझाव और अनुभवपूर्ण मार्गदर्शन से समाज और धर्म को गौरवान्वित करते रहे है।

जनहित के इन उत्तम कार्यो मे आपको अपनी धर्मपत्नी, भाई, चारो पुत्र-पुत्रवधु, एक पुत्री-जंवाई, पोते-पोतिये, दोहिते-दोहिती एवं मित्रजनो का हर क्षैत्र मे सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ है।

हम श्रीमान् सिपानीजी के लिए वीर-प्रभु एव शासनदेव से यही कामना करते है कि इन्हे स्वस्थ स्वास्थ्य, धन-वैभव, यश कीर्ति, धैर्य, दृढ चिन्तन शक्ति एव आत्मबल प्रदान करे जिससे उनके मन मस्तिष्क मे समता समाज रचना का जो सपना है वह साकर हो सके।

इस वर्ष का आचार्य नानेश समता पुरस्कार प्राप्ति पर श्री सोहनलालजी सा सिपानी को हार्दिक शुभकामनाएं।

सम्मान व्यक्ति का नहीं परंतु व्यक्ति के गुण का होता है



एक अनूठे व्यक्तित्व के धनी श्री सोहनलालजी सिपानी जिसको मैंने नजदीक से देखा



ले. **नवरतनमल नन्दावत** एम.ए.
अध्यक्ष मेवाड ओसवाल साजनान संघ (कर्नाटक) बेगलोर

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए सेवानिष्ठ समता मनीषी श्री सोहनलालजी सिपानी के चयन पर स्वागत, स्वागत हैं । ७५ साल के मन-मोहक, सुन्दर व्यक्तित्व को ता. २३ सितम्बर २००३ को मध्य प्रदेश की औद्योगिक नगरी इंदौर में महामहिम उपराष्ट्रपति श्रीमान् भैंरुसिहजी शेखावत द्वारा नानेश समता एवार्ड से नवाजा जा रहा है । वास्तव मे बडा हर्ष का दिन होगा २३-९-२००३ । श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का व्यक्तित्व इस अवार्ड से भी दो कदम आगे है । यह कहूँ तो भी कोई अतिशयोक्ति नही होगी । क्योंकि व्यक्ति की पहचान होती है उसके व्यक्तित्व से ।

स्वेट मार्टिन ने व्यक्तित्व के कुछ आवश्यक बिन्दु बताये है .

स्वस्थ शरीर, बौद्धिक शक्ति, मानसिक दृढता, हृदय की उदारता, भावात्मक उज्वलता, व्यावहारिक दक्षता, समयोचित व्यवहार ।

उपरोक्त सारे गुण श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी में कूट-कूट कर भरे हुए है ।

सभा मे वचन की चतुरता, कभी हताश नहीं होना, विपदा मे धैर्य, ऐश्वर्य मे सहिष्णुता, विकास के समय पर नियंत्रण तथा सुयश के कार्यो में रुचि आपके व्यक्तित्व को चार चाँद लगाते है ।

स्वाध्याय के प्रति रुचि आपके व्यक्तित्व को निखारता है । जिसको प्रत्यक्ष रुप से सिपानी भवन मे देखा जा सकता है ।

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी के उपरोक्त गुण उनके महान व्यक्तित्व के परिचायक है । ऐसे महापुरुष को आचार्य नानेश समता अवार्ड से नवाजा जाना कोई बडी बात नही हैं । आपका वास्तव मे भारत भूषण एवं भारत रत्न के योग्य का व्यक्तित्व हैं, किंतु हमारे जैन समाज का दुर्भाग्य है कि हमारी जनसंख्या कम होने से ऐसे नर-रत्नों की आभा भारत सरकार के आंखो तक नही पहुँचती हैं । आप जब से दक्षिण भारत की धरती पर पधारे है आपने श्री साधुमार्गी संघ का ही नहीं सम्पूर्ण जैन समाज का नाम उच्चता के महान शिखर पर पहुँचाने मे तन-मन धन से सहयोग दिया हे । आपमें अनेक गुण है जिसकी व्याख्या मै अपने शब्दो मे नहीं कर सकता, किंतु फिर भी सूर्य को दीपक दिखाने की चेष्ठा जरुर करुंगा ।

आदर्श व्यक्तित्व :-

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी अपने परिवार से एव सुख सुविधाओ से परिपूर्ण होते हुए भी हमेशा साधर्मी लोगो के प्रति सद् विचार, सदाचार तथा समय अनुकूल सद् व्यवहार करके प्रत्येक व्यक्ति के हृदय मे भावनात्मक आदर की जगह बना चुके है ।

शिष्ट आचरण :-

शिष्ट आचरण आपका मुख्य गुण है । साहित्यकारो ने कहा है कि शिष्ट आचरण सज्जनों का आभूषण होता हे । श्री सोहनलालजी सिपानी अपने परम्परागत समता सांस्कृतिक मूल्य के अनुसार बडे-बुर्जगों को तथा गुरु नानेश एव गुरु राम के हमेशा चरणवंदन तथा भाव वंदना के पहले मुँह में पानी भी नहीं डालते है । आपके मन में सम-वयस्कों के प्रति हमेशा आत्मीय भाव तथा छोटो के प्रति स्नेह सौहार्द भाव बना रहता हे । तथा हर व्यक्ति को आदर भाव पूर्वक आयु के अनुसार उच्च सम्बोधन

देना तथा उनके प्रति अवसरानुसार उचित हावभाव प्रदर्शित करना आपके व्यक्तित्व का विशेष गुण है। आप जहाँ भी जाते है अपनी मधुरता की अमिट छाप छोडते है।

दानशीलता :-

आप मे दानशीलता कूट-कूट कर भरी है । आपने अपने धन का सदुपयोग हमेशा अच्छे कामो मे किया है। दक्षिण भारत तथा विशेषकर बेगलोर के हॉस्पिटल मे दान देकर वार्ड का निर्माण कराया।

शिक्षा सस्थाओ, धार्मिक संस्थाओ, सामाजिक सस्थाओ मे दिल खोलकर धन का सदुपयोग किया। राजनैतिक पार्टियां भी आपके सहयोग से अछूती नही रही।

उत्तेजना से बचना :-

उत्तेजना से बचना आपका महान गुण है । हमेशा देखने मे आता है कि व्यक्ति छोटी-छोटी बातो से उत्तेजित हो जाता है तथा उत्तेजना मे आकर अट-संट कुछ का कुछ बोल जाता है उससे उस व्यक्ति का मधुर संवाद समाज मे नही रहता। लोग उससे बात करने से भी डरते है, सोचते है कि कुछ वापस सुनना पडेगा यह बात श्री सोहनलालजी सिपानी मे नही है। उनका व्यक्तित्व शांत, सौम्य, सहज, सरल, निरभिमानी है। सामने वाले व्यक्ति की उग्रताओ मे भी आप अपनी सहजता- सौम्यता को नही छोडते है। आपका हमेशा हंसता-मुस्करता चेहरा हमारे जैसे युवको के अशात उत्तेजित उद्वेलित मन को सोचने के लिए मजबूर कर देता है कि आप जैसा बनना कितना मुश्किल है।

मितव्यय भाषा :-

आप कभी भी लम्बे भाषणो मे विश्वास नही करते । आप व्यर्थ की बातो और अनर्गल विवादो से मुक्त रहकर मौन रहने मे विश्वास करते है । उचित आवश्यक नपे-तुले शब्दो मे सार्थक वार्तालाप कर अपनी बात को दूसरो तक पहूँचा देते है। आप अपनी बातो से किसी के हृदय को ठेस नही पहुँचाते है तथा आपका व्यक्तित्व इतना महान कि आग्रही बनकर अपनी बात मनवाने का दुराग्रह भी नही करते है । बोलने के साथ आप दूसरो की सुनने मे तत्पर रहते है। अक्सर देखा गया है कि हमारे जैसे व्यक्ति अपनी बात कहने मे तत्पर रहते है । पर वे दूसरो की बात जरा भी सुनने को तैयार नही रहते । किंतु सिपानीजी का व्यक्तित्व इतना अनूठा है कि वह हमेशा दूसरो को सुनने के लिए तत्पर रहते है तथा अगले व्यक्ति की बात मे कोई सच्चाई व अच्छाई हे तो उसका खुले दिलो दिमाग से अनुमोदन करते है तथा उसकी प्रशसा करने मे भी पीछे नही हरते । इसीलिए सिपानीजी छोटे-बडे हर व्यक्ति के हृदय सम्राट बने हुए है । उपरोक्त गुण उनके बच्चो मे भी देखने मे मिल सकते है जिसका उदाहरण श्री कमल सिपानी को ले सकते है।

सकारात्मक सोच :-

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का व्यक्तित्व हमेशा सकारात्मक सोच का रहा है। श्री सिपानीजी बुराई मे भी अच्छाई का पुट ढुढते है। आपके व्यक्तित्व आशावादी तथा आदर्शवादी है, इस विचार से ही आपको निराशा मे भी आशा, निरुत्साह मे भी उत्साह, दीनता-हीनता मे भी उच्चता श्रेष्ठता का अनुभव होता है, आप लाखो का दान करते है किंतु साधारण व्यक्ति को अपने सामर्थ्य अनुसार दान देने के लिए प्रोत्साहित करते है तथा उसकी भूरी-भूरी प्रशसा करके उसके मनोबल को बढाते है । यही कारण है कि आप अपनी इस उम्र मे भी सारी गतिविधियो मे युवको को भी पीछे रख रहे है। आपके इसी सोच ने आपको भय, चिता, कुठा व निराशा से मुक्ति दिला रखी है। आपका मन हमेशा खिलते हुए गुलाब के समान महकता रहता तथा यह सोच आपके आत्म विश्वास को विकसित करता रहता है। आपने हमेशा अवसर की या यू कहे कि समय को पहचानते हुए कार्य को पूर्ण करने कि कोशिश की है।

आत्म प्रशंसक नहीं :-

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का व्यक्तित्व कभी भी आत्म प्रशसक नही रहा है। जैसा कि आए दिन देखने को मिलता है कि बडे लोग जो अपने आपको पैसे वाले समझते है अपनी अच्छाइया अपने मुँह से कहने लग जाते है। वे करते थोडा है और बताते अधिक है। सिपानीजी ऐसे दुर्गुणो से हमेशा दूर ही रहते है। सिपानी जी हमेशा औरो की प्रशसा करके खुश रहते है साथ ही अपनी प्रशसा सुनकर लघुता का अनुभव करना उनके

श्री सोहनलालजी सिपानी का व्यक्तित्व



ले. किरणसिंह नन्दावत बेगलोर

श्री सोहनलालजी सिपानी गुरु निष्ठा, धर्म परायणता, शासन समर्पणा व समाज सेवा में बेजोड है। आप पर बीकानेर, श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन सघ ही नहीं, समग्र जैन समाज गौरवावित है।

श्री सोहनलालजी सिपानी के पिता श्री भैरूदानजी सिपानी मूलत बीकानेर जिलान्तर्गत उदयरामसर ग्राम के निवासी थे। आप स्कूली शिक्षा अधिक प्राप्त नही कर सके परन्तु क्षमनिष्ठा, लगन, अनुपम प्रतिभा एव व्यवसायिक कुशलता से आपने अर्थोपार्जन तो किया ही, धार्मिक/सामाजिक कार्यो में अग्रणी रहकर मुक्त हस्त से दान भी दिया। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती धन्नीदेवी सिपानी की कुक्षि से पुत्र-त्रय श्री सोहनलालजी, श्री गोकलचंदजी एवं श्री रिधकरणजी व पुत्री-द्वय श्रीमती छगनीदेवी दस्सानी व श्रीमती मोहनदेवी लूणिया का जन्म हुआ, जिन्हे धर्मनिष्ठा, सेवा के संस्कार मातुश्री, शासननिष्ठा तथा जनकल्याण के संस्कार पितृश्री से विरासत मे मिले।

श्री भैरुंदानजी सिपानी ने सर्वप्रथम कलकता मे स्लेट का व्यवसाय प्रारम्भ किया और तदनन्तर आंध्रप्रदेश के मारकापुर कस्वे मे इसका विस्तार कर स्लेट बनाने का कारखाना स्थापित किया। साथ ही हासन तथा चिकमंगलूर मे लकडी का कारखाना भी खोला। आपने निरन्तर साफल्य के सौपन तय किये और कुछ वर्षो मे अपनी प्रामाणिकता व ईमानदारी में अपना पृथक् स्थान वना लिया। आपकी धार्मिक/सामाजिक प्रवृत्तियो में भी विशिष्ट रुचि रही। आप आजीवन समाज उन्नयन हेतु सजग, सचेष्ट व तत्पर रहे।

श्री सोहनलालजी सिपानी आपके ज्येष्ठ पुत्र है, जिनका जन्म वि.सं. १९५२ मिगसर सुदी ५ को उदयराममर में हुआ। आपका पाणिग्रहण गंगाशहर निवासी स्व. श्री चादमलजी डागा की सुपुत्री श्रीमती जेठीदेवी के साथ हुआ।

चूंकि आपको व्यवसायिक कुशलता व धर्मपरायणता के संस्कार अपने पूर्वजो से मिले थे आपने व्यवसाय मे प्रविष्ठ होते ही उद्योगों का उल्लेखनीय विस्तार किया। वेगलोर मे वर्तमान मे एच.पी.डी. की चार फैक्ट्रिया व एक प्लास्टिक की बोतल बनाने तथा लकडी का कारखाना कार्यरत है। सम्पूर्ण व्यवसाय सिपानी ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज के नाम से सुख्यात है।

व्यवसाय संचालन के साथ आप अनेक सामाजिक/धार्मिक /शैक्षणिक/सांस्कृतिक संस्थानो से सम्वद्ध रहकर अनुपम सेवा कार्य कर रहे है।

आप श्री अ भा. साधुमार्गी जैन सघ के सर्वतोमुखी विकास हेतु सदैव प्रयासरत रहे व रहते है तथा उपाध्यक्ष रह चुके है। सामाजिक/धार्मिक कार्यो हेतु सदैव आप उदारता पूर्वक तहेदिल से सहयोग प्रदान करते है। आप ने बेगलोर मे सिपानी भवन का निर्मण भी कराया है, जहां नियमित रुप से रविवार को सामूहिक सामायिक/ स्वाध्याय के कार्यक्रम होते है। जन कल्याण के कार्यो हेतु भी आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। उदयरामसर के अभावग्रस्त छात्रो की पढाई लिखाई व रोगग्रस्त व्यक्तियो की चिकित्सा हेतु सहयोग के लिये आप सदैव तत्पर रहते हैं।

आपके चार पुत्र श्री सुन्दरलालजी, श्री राजकुमारजी, श्री कमलचन्दजी, श्री विमलचन्दजी हैं एवं पुत्री-श्रमती सरलाजी वेताला हे। सभी सुशील, विनयवान एवं सर्यानिष्ठ हैं। आपके हर कार्य में उनका सहयोग / योगदान रहता हैं।



समाज भूषण, शासननिष्ठ, दृढ़धर्मी, दानवीर सुश्रावकरत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी

ले **लालचंद छिंगावत**, बेगलोर

मानवता अति दुर्लभ है :-

मनुष्य भव प्राप्त होने पर मानवता अवरण अति दुर्लभ है। सभ्य समाज मे मानव अपने दायित्वो का पूर्ण निर्वहन करते हुए स्वार्थ और परमार्थ दोनो को साधते हुए श्रावकवृत्ति मे रत रहता है। सच्चे अर्थो मे वही मानव है। उसी श्रावकवृत्ति की कडी मे श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का स्थान है।

एक भव्य प्राणी का अवतरण :-

सेठ स्व श्री भेरुदानजी सिपानी भार्या श्रीमती धन्नी देवी की कुक्षि से वि स १९८५ मिगसर सुदी १५, उदयरामसर वीकानेर की पावन धरा पर आपश्री का जन्म हुआ। धन्य हुई वो धरती और एव धन्य हुए माता-पिता, जिन्होने एक महान व्यक्तित्व के धनी जिनशासन के लाडले रत्न को जन्म दिया। आपश्री के माता-पिता ने अपने जीवनकाल मे आचार्य श्री नानेश के समता सिद्धान्त को आत्मसात् किया एव वहीं सस्कार अपनी सतानो को दिया।

मेधावी प्रतिभा के धनी :-

आप बाल्यकाल से ही अत्यन्त मेधावी थे। अपने पिता के सस्कारो को अपने जीवन मे उतारे। पिता की आज्ञा का अक्षरश पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अग था। धार्मिकता का वीज मातुश्री ने कूट-कूट के भर रखा था। आचार्य श्री नानेश के सिद्धान्तो के प्रति आप गहरा अनुराग एव आत्मीयता से ओत-प्रोत थे। व्यावहारिक शिक्षा से ज्यादा आप धार्मिक शिक्षा की ओर ध्यान देते थे।

यौवन की दहलीज :-

युवा अवस्था मे आपने सौम्यता,सहजता और गभीरता झलकती थी। युवावस्था मे आपका पाणिग्रहण सस्कार गगाशहर निवासी स्व श्री चादमलजी डागा की सुपुत्री श्रीमती जेठी देवी के साथ हुआ। धर्मपत्नी शब्द सार्थक करते हुए आपकी भार्या आपके ही अनुरुप धार्मिक सस्कारो से युक्त है।धर्म मे हमेशा आपकी सहायक और आपके चरणो की अनुगामी है।

व्यापार में प्रामाणिकता :-

पिता के कारोबार मे आपने अपनी बुद्धि कौशल के बल से उल्लेखनीय वृद्धि की। व्यवसाय मे प्रामाणिकता आपका मूलमत्र है। इसी सिद्धान्त के चलते बेगलोर मे अपने व्यवसाय को आगे बढाते हुए बुलदियो को छुआ है। वर्तमान मे एचडीपीई की चार फैक्ट्रिया (प्लास्टिक बोतल बनाने की, लकडी का कारखाना आदि व्यवसाय) प्रगति पथ पर गतिमान है। आपका व्यवसाय सिपानी ग्रुप ऑफ इडस्ट्रीज के नाम से सुविख्यात है।

सिपानी वटवृक्ष के आधार स्तम्भ :-

व्यवसाय मे प्रगति करते हुए आपने अपने पारिवारिक दायित्वो का भी वहन किया है। आपके भ्राता श्री गोकलचन्दजी एवं रिद्धकरणजी बहन श्रीमती छगनी देवी दस्सानी एव मोहिनी देवी लूणिया हैं।

आपके सुपुत्रो मे श्री सुन्दरलालजी,श्री राजकुमारजी, श्री कमलचन्दजी, श्री विमलचन्दजी हैं। पुत्री श्रीमती सरला वेताला है। आपका पूरा परिवार धार्मिक सस्कारो से युक्त है। पौत्र, पौत्रियो से हरा-भरा लहलाता आपका परिवार है। अपने से बडो का आदर करना प्रत्येक परिवार जन अपना कर्तव्य मानते है।

समता सेवक :-

आचार्य श्री नानेश के समता सिद्धान्त को आपने वास्तव मे आत्मसात् किया । गुरु के सिद्धान्तो को आपने अपने जीवन का

अभिन्न अंग बना लिया। आचार्य श्री नानेश के परम भक्त एवं उनके प्रति अटूट आस्था है। हर समय साधु संतो की सेवा में आप तत्पर रहते है। दक्षिण भारत में साधु संतों के विहार का आप पूर्ण ध्यान रखते है। उनके साथ विहार मे भी आप हरदम साथ रहते हैं। दक्षिण भारत मे साधु संत किस समय कहाँ विहार हुआ आदि पल-पल की खबर आप रखते हैं।

संघ के प्राण :-

जिनशासन की सेवा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए भी आप तत्पर रहते हैं। संघ की उन्नति के लिए आप हमेशा सदा प्रयत्नशील रहते है। संघ मे एकता बनाए रखने के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहते है। सघ एकता के लिए आप पद का मोह भी नही रखते हैं। आप तो दिन-रात यही भावना भाते रहते है कि हुक्मगच्छ जिनशासन की सेवा मे रहते हुए धर्म की प्रभावना, संघ समाज में एकता की भूमिका निभाने मे अग्रणी रहे।

सादा जीवन उच्च विचार :-

सादगी आपके जीवन के प्रत्येक कार्य मे झलकती है। प्रतिदिन आप कम से कम ५ सामायिक करते है। सुबह ९ बजे तक प्रतिदिन आपके मौनव्रत रहता है। दिन मे सिर्फ पाँच बार ही खाने की छूट है। चाहे कैसी भी परिस्थिति हो आप नियमो की श्रृंखला को कभी नहीं तोडते है। दैनिक नियम आपके जीवन के अभिन्न अग है। आप हमेशा कहा करते है कि नियम मेरे जीवन की अनमोल पूँजी है । नियम और सिद्धान्तो के खातिर आप दृढ रहते है। जीवन की उच्च आदर्शो को छूते हुए आप आज सपूर्ण देश और समाज के लिए आदर्श स्वरुप जिन्होने सादा जीवन उच्च विचार को चरितार्थ किया है।

दानवीर भामाशाह :-

आपके सहयोग से भारत मे कई संस्थाएँ पोपित हो रही है । उदार हृदय से दान देना आपकी सहज प्रकृति है। घर आए किसी भी व्यक्ति को खाली नहीं भेजते है। गुप्तदान आप सवसे ज्यादा देते है। कहा भी है दाता वही है जो दे खुशी, और ना कहे किसी से। आप अपने अधीनस्थ कर्मचारियों का एवं उनके परिवार जनो का भी पूर्णध्यान रखते है और यथासभव उन्हें गुप्त सहायता करके अपने को धन्य मानते है। आप अक्सर कहा करते हैं कि लेने वाला लेकर के मेरे ऊपर उपकार ही करता है क्योंकि वह मेरे पुण्य बंध मे सहायक बन रहा है। ऐसे विचार वाले दाता विरले ही इस कलयुग मे होते है।

संघ संस्थाओं के पोषक :-

वर्तमान मे आप कई संस्थाओं के पदो पर आसीन हैं और पद पर आसीन होते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा एव लगन से कर रहे है। निम्न संस्थाओ के पदों पर आप आसीन है।

श्री अ. भा साधुमार्गी संघ, बीकानेर-प्रन्यासी
श्री साधुमार्गी जैन संघ- अध्यक्ष
श्री एस. एस. जैन श्रावक संघ विल्सन गार्डे न बेगलोर-अध्यक्ष
- श्री जैन ज्ञान सेवा संघ-संरक्षक
- श्री सुरेन्द्र कुमार सांड शिक्षा सोसायटी नोखा- अध्यक्ष
श्री बीकानेर जैन समुदाय बेंगलोर - अध्यक्ष

ऐसी और अनेक संस्थाओ के प्रतिष्ठित पदो पर आप आसीन हैं. आपको कभी पद की आकाक्षा नही रही । आपका बस एक ही ध्येय है कि काम होना चाहिए। संप्रदाय की भावना से ऊपर उठ कर आप हमेशा जिनशासन की प्रभावना मे रत सघ सस्थाओ में मुक्त हस्त से दान देते है।

कर्मयोगी :-

आप हमेशा कार्य करने में ही विश्वास रखते है। आप हमेशा सभी से यही कहा करते है कि बाते कम करो और काम ज्यादा करो क्योकि बाते करने से कुछ हासिल होने वाला नहीं है। व्यक्ति की पहचान उसके कार्य से होती है। गीता मे कहा है- कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन कार्य करते रहो फल की इच्छा मत करो।

समता पुरस्कार के चयन पर बधाई :-

आपश्री को इस वर्ष २००३-०४ का आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए चयन हुआ है। वास्तव मे आपश्री का चुनाव सही हुआ है। क्योकि आपने समता को जीवन मे उतारा है। आपके सामाजिक और धार्मिक कार्यो मे उल्लेखनीय योगदान के लिए आपश्री को समता पुरस्कार के लिए बधाई हो । आचार्य नानेश के पट्टधर आचार्य रामेश के सिद्धान्तों को आप जन-जन मे व्यापक प्रचार हेतु सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। आप आचार्य रामेश के श्रावकों में सबसे अग्रणी और परम अनुयायी हैं। धर्म और समाज की उन्नति मे आप हमेशा प्रयत्नशील रहते है। मैं मेरी ओर से आपश्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को शत-शत नमन करता हूँ और आशा करता हूँ आप इसी तरह दिन दुगनी रात चौगुनी जिनशासन की प्रभावना में अभिवृद्धि करते रहें। आपके दीर्घायु होने की मगल कामना करता हूँ।

जय नानेश जय जिनेश जय रामेश

समता-रत्न पुरस्कार के वास्तविक अधिकर्ता



आदरणीय उदारमना समाजसेवी, बेगलोर श्री सघ के प्राण चितनशील धर्मनिष्ठ श्रावक श्रेष्ठ सुश्रावक रत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी, सादर जय जिनेन्द्र !

इस वर्ष के समता रत्न पुरस्कार से आपको पुरस्कृत किया जा रहा है। एतदर्थ मै अपनी और सेआपको हार्दिक-हार्दिक कोटिश वधाई अनत-अनंत शुभकामनाएँ कर रही हूँ।

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा द्वारा ज्युं ही कर्ण गौचर हुआ समता रत्न पुरस्कार का उद्घोष आपके लिए हुआ है। श्रवण कर मन अत्यत प्रमुदित एव आल्हादित हुआ कि यर्थाथता के परिप्रेक्ष्य मे आपको यह पुरस्कार शतश सिद्ध होता है क्योकि मै अनेको बार आपके सम्पर्क मे आ चुकी हूँ। प्रत्यक्ष वार्तालाप तो नही किया लेकिन आपके कार्यक्लापों को समय-समय पर दृष्टिगोचर किया । जब से दक्षिण मे मधुर व्याख्यानी विदुषी महासतीजी श्री ललितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के आगमन के पश्चात कई बार उनके सान्निध्य एव सेवा मे रहकर पूज्य महासतियाजी के मुखारबिंदु से मैने यह सुना है कि सिपानी सा. तो सचमुच देवता है कभी भी ऊँचे नही बोलते चाहे कैसी भी परिस्थिति सामने आये।

कहा जाता है जैसे गुरु वैसे शिष्य, समता विभूति स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश की आपने भरपूर सेवा करके शुभाशीर्वाद लिया है और आज भी वैसे ही एक-निष्ठ-श्रद्धानिष्ठ होकर साधुमार्गी स्वस्थ परपरा के वर्तमान शासनेश अलौकिक प्रज्ञावतार अद्वितीय महापुरुष परम पूज्य आचार्य देव पूज्य श्री रामलालजी म सा.के पुनीत शासन मे आपने इस समता-रत्न पुरस्कार को प्राप्त करने का जो गौरव हासिल किया है, मुझे भी नाज है कि आप साधुमार्गी श्री सघ के प्राण बनकर जो उदार हृदय से मात्र से जुडकर स्वय का जो सुयोगदान दे रहे है। वास्तव मे सराहनीय एव अनुकरणीय है।

मै आपके सकुशल नेतृत्व मे रहकर हमारा साधुमार्गी समाज एव सम्पूर्ण कर्नाटक जैन श्री संघ निरन्तर उन्नति कर रहा है, अत मै यह शुभकामना करती हूँ कि आप युगो-युगो तक इसी तरह से उदार हृदय से प्राणीमात्र को सात्वना पहुँचाने का पुरुषार्थ करे एव जन मानस के प्रेरणा पुज बने।

इन्ही मंगल मनीषा के साथ -

रीना मुथा एवं मुथा परिवार, मड्या

नानेश कहो रामेश कहो

नानेश कहो रामेश कहो, दोनो ही मगलकारी है
एक अष्टम पट के धारी थे, एक नवम पट अधिकारी है
नानेश कहो . ..... ॥ टेर ॥

एक श्रृगारा के जाये है, एक माँ गवरा के प्यारे है
एक दाता गाव जन्म लियो, एक देशनोक अवतारी है
नानेश कहो .... ॥ १ ॥

एक धर्मपाल प्रतिबोधक है, एक व्यसन मुक्ति के द्योतक है
एक ध्यान समीक्षण दाता है, एक गुरु आज्ञा के धारी है
नानेश कहो .... ॥ २ ॥

एक मोडीनन्द कहलाते हैं, एक नेमि सुत कहलाते है
एक शास्त्रों के भण्डारी थे, एक कठिन क्रिया के धारी है
नानेश कहो .... ॥ ३ ॥

एक बीसवी सदी के दाता थे, एक इक्कीसवी के भ्राता है
दोनो सदिया ही तीर गई, हम सव तेरे वलीहारी है
नानेश कहो, रामेश कहो .... ॥ ४ ॥

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

बीकानेर

रजत जयंती समारोह
अभिनन्दन पत्र

1963-1987

विगत अनेक वर्षों से कार्य समिति सदस्य के रुप में
निरंतर कार्यरत रहने तथा
श्रमणोपासक के विशेषांक में
दक्षिण क्षेत्र में सर्वाधिक
विज्ञापन संग्रहीत करने के उपलक्ष में
सरल स्वभावी, मृदु भाषी, समाजसेवी, धर्मप्रेमी,
संघ उपाध्यक्ष, श्रावक रत्न

श्री सोहनलालजी सिपानी' बेंगलोर

का

अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
की ओर से समर्पित यह अभिनन्दन पत्र

रजत जयंती अधिवेशन, इन्दौर, २४ सितम्बर १९८७

मंत्री — *धनराज बेताला*

अध्यक्ष — *चुन्नीलाल मेहता*

जय जिनेश   श्री महावीराय नमः   जय नानेश

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

बीकानेर

अभिनन्दन पत्र

संघ की प्रवृत्तियो को आत्म निर्भर,

सुदृढ एवम् सगठनात्मक

जन हितैषी स्वरुप प्रदान करने हेतु

कर्मनिष्ठ, सेवाभावी, सरल, शासननिष्ठ, उदारमना,

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी, बेगलोर

को विन्रमता पूर्वक सादर समर्पित

सुदीर्घ आयुष्य हेतु मगलकामना

बीकानेर

26 सितम्बर, 1995

धनराज बेताला
महामत्री

रिद्धकरण सिपानी
अध्यक्ष

श्रीयुक्त देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक अमर रिषभवीर
बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

मुझे जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी पर अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन करने जा रहे है इसके लिए आपको बहुत-२ धन्यवाद एवं शुभकामनाए।

श्रेष्ठीर्वय श्री सोहनलालजी सिपानी जैन समाज के एक ऐसे बिरले एवं वरिष्ठ सुश्रावक है जिनकी दृढ़श्रध्दा, दृढ़ निष्ठा और दृढ़ धार्मिता सभी के लिए प्रेरणादायी है, उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में एक रूपता है ऐसे समता निष्ठ व्यक्तित्व को मैं नमन करता हूँ। अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतू आपका चयन आपके प्रति आभार प्रदर्शन है। ऐसे समता मनीषी से प्रेरणा लेकर हम कुछ कर सके तो वह स्वंय के लिए व समाज के लिए बहुत मूल्य योगदान होगा।

समता पुरस्कार से चयनीत श्रुयत सोहनलालजी सिपानी सा. का हार्दिक अभिनन्दन एवं आरोग्यमय शतायु जीवन की मंगल कामना।

श्री उमराव सिंह ओस्तवाल
अध्यक्ष
श्री अ भा. साधुमार्गी जैन संघ



राजमल चोरडिया
न. 1631, सेथली वालो
का रस्ता, चौड़ा रस्ता
जयपुर-302 003
फोन : 2620587, 2620915
2567136, 2568117

समता मनीषी, सेवानिष्ठ,

आदरणीय श्री सोहनलालजी सिपानी

को अ भा साधुमार्गी जैन सघ
द्वारा राष्ट्रीय स्तर के

"आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार"

से सम्मानित करने के उपलक्ष मे

हार्दिक बधाई

समता मनीषी, सेवानिष्ठ, धार्मिक विचारो से ओत-प्रोत बेगलोर निवासी आदरणीय श्री सोहनलालजी सिपानी को अ भा साधुमार्गी जैन सघ द्वारा राष्ट्रीय स्तर के "आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार" देने की घोषणा की गई है । आपका जीवन सादगी-मधुरता-मानवसेवा के कार्यो से ओत-प्रोत है । आपने जीवन मे समता को आत्म सात् किया, समाज मे इन्ही कारणो मे आपका प्रमुख स्थान है । आप प्रमुख संस्थाओ से जुड़े हुए है । आपके जीवन मे नाम मात्र का भी अहकार नही है ।

आपके इस सम्मान पर बहुत-बहुत बधाई ।

आपका विनम्र
राजमल चोरडिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अ भा. साधुमार्गी जैन संघ

जय नानेश श्री महावीराय नम जय रामेश

निर्मला चोरड़िया

न. 2, भैरव पथ,
गणेश कॉलोनी,
जवाहर लाल नेहरु,
जयपुर-302 004
फोन · 262 05 87
262 09 15



श्रद्धेय श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी को राष्टीय स्तर पर "आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार" प्रदान किया जा रहा है । आपका सादा जीवन उच्च विचार व आपके जीवन मे समता देखते ही बनती हैं। आपने जिस तरह से व्यवसाय मे सफलता प्राप्त की, उसी तरह सेवा करते हुए सामाजिक क्षेत्रो मे भी उच्च स्थान बनाया । आप मे सहृदयता सेवा की भावना-मधुरवाणी के साथ-साथ धार्मिक कार्यो के प्रति भी पूर्ण समर्पणा है । आप सयम साधना, तप मे भी अग्रणी रहते हैं । आपका पूरा परिवार भी धार्मिक सस्कारो से ओत-प्रोत है । आप तन मन धन से सघ की सेवा मे तत्पर रहते है । आपकी गुरु भक्ति भी अनुकरणीय हैं ।

वास्तव में समता पुरस्कार के लिए ऐसे मनीषी का बहुत ही उपयुक्त है । इसके लिए मै बहुत-बहुत बधाई देती हूँ और आप दीर्घायु हो व सघ समाज की ज्यादा से ज्यादा सेवा करे । इसी भावना के साथ ।

आपकी विनम्र
निर्मला चोरडिया
पूर्व अध्यक्ष
अ भा साधुमार्गी जैन महिला समिति

बधाई संदेश

समता पुरस्कार के लिए मनोनीत किये जाने पर श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी को हार्दिक बधाई।

आदरणीय सिपानी साहेब बेंगलोर के एक प्रतिष्ठित व्यवसायी रहे है। आपका पूरा परिवार धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत है। आपने अपने जीवन काल में धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में कीर्तिमान स्थापित किए है। आपने बेंगलोर को सिपानी भवन व दाता गाव में नानेश चिकित्सालय आदि अनेक सौगातें दी हैं। तथा नानेश-वाणी पुस्तक के प्रकाशन में भी आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संघ और समाज की सेवा में आप अनावृत लगे रहते है। शात, सरल व समतामय जीवन व्यतीत करने वाले श्री सोहनलाल जी सा. सिपानी का जीवन मंगलमय हो एवं धर्म व समाज की सेवा निरंतर करते रहे। यही मंगल कामना है।

मदनलाल कटारिया
महामंत्री
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
बीकानेर, राजस्थान

जय गुरु नाना  ॥ श्री महावीराय नम ॥  जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन संघ, म.प्र. इकाई

अतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर

अध्यक्ष
जम्बूकुमार आंचलिया
२२, साठा बाजार, इन्दौर
Ph 0731 - 2533628, 2433607, 2433608



महा मत्री
मणिलाल घोटा
४२, घास बाजार, रतलाम
Ph 07412 - 231684, 238480



दि २८-०८-२००३

श्रीयुक्त देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक अमर रिषभवीर
बेगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

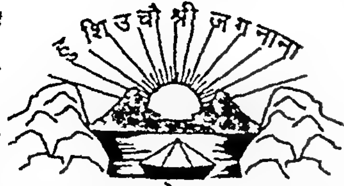
मुझे जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी पर अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन करने जा रहेहै। इसके लिए आपको बहुत-२ धन्यवाद एव शुभकामनाए।

श्रेष्ठीर्वय श्री सोहनलालजी सिपानी जैन समाज के एक ऐसे विरले एवं वरिष्ठ सुश्रावक है । जिनकी दृढश्रद्धा, दृढनिष्ठा और दृढधर्मिता सभी के लिए प्रेरणादायी है, उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व मे एक रूपता है । ऐसे समता निष्ठ व्यक्तित्व को मै नमन करता हूॅ। अ भा साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतु आपका चयन आपके प्रति आभार प्रर्दशन है। ऐसे समता मनीषी से प्रेरणा लेकर हम कुछ कर सके तो वह स्वय के लिए व समाज के लिए बहुमूल्य योगदान होगा।

समता पुरस्कार से चयनीत श्रीयुत सोहनलालजी सिपानी सा का हार्दिक अभिनन्दन एव आरोग्यमय शतायु जीवन की मगल कामना।

जम्बूकुमार आंचलिया
अध्यक्ष

JAI GURU NANA JAI MAHAVEER JAI GURU RAM



SHREE SADHUMARGI JAIN SANGH

Atkinson Palace, 2nd Floor,
No 4, Atkinson Road, Vepery, Chennai - 600 007

दि ०४-०९-२००३

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
सादर जय जिनेन्द्र !

श्रीमान् सिपानीजी के जीवन के दो शब्द

श्री अ.भा.व. साधुमार्गी जैन संघ में एक चिरपरीचित व्यक्तिव है श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी संघ मे आपका छोटा बडा सभी सदस्यो के लिए एक सा स्नेह रहता है। आप सदैव संघ हित मे कार्य करने को तत्पर रहते है आपकी कार्य शैली इतनी कुशल है कि जो भी आपके सम्पर्क में आता है प्रभावित हुए बिना नही रह सकता। दक्षिण भारत में विचरण करने वाले श्री साधुमार्गी जैन सघ के सत एव सतियाजी की सेवा मे आप अग्रणी रहते है। आप सेवा इतनी करते है कि मेरे शब्द कोष मे शब्द ही नहीं है हैदराबाद से लेकर बेंगलोर व इधर चैन्नई तक भी सभालने रहते है आप का स्वास्थ्य प्रतिकुल रहता है लेकिन खुद के स्वास्थ्य का ध्यान न रखते हुए भी आप संत-सतियो की सेवा मे जुडे रहते है।

१. आप अ.भा व. साधुमार्गी जैन संघ के विश्वस्त मंडल के सदस्य, २. श्री साधुमार्गी जैन संघ बेंगलोर के अध्यक्ष, ३. श्री एस.एस. जैन श्रावक सघ, विल्सन गार्डन, बेंगलोर के अध्यक्ष, ४. आगम, अहिसा समता एवं प्राकृत संस्थान उदयपुर के अध्यक्ष, ५. श्री सुरेन्द्रकुमार साण्ड सोसायटी के अध्यक्ष, ६ बीकानेर समुदाय बेगलोर के अध्यक्ष

इतने सभी अध्यक्ष पद मे रहते हुए भी आपकी विनय भावना अनुकरणीय है। और आज आपको समता पुरस्कार से सम्मानित कर सघ अपने आपकी गोरवान्वित महसूस कर रहा है आप सामाजिक धार्मिक कार्यो मे हमेशा तन-मन-धन से सहयोग देने को अग्रणीय रहते है आपकी साहित्य मे भी विशेष रुचि है आपने बेगलोर सिपानी भवन मे सिपानी ग्रन्थालय भी खोल रखा है जिससे श्रावक-श्राविका व संत सतिगम भी होते है। धन्य है सेठ भेरोदानजी के इस लाल को जिसने इस धराताल पर अपनी पहचान दानवीर, समाजसेवी, साहित्य प्रेमी, स्वाध्याय प्रेमी, चिकत्सा सेवा के रुप में बनाई। धन्य है आप व आपका परिवार जो सदैव आपके कार्यो मे सहयोग देता रहता है।

आपकी धर्म भावना सरलता, सादगी, गुरु भक्ति एवं विनम्रता की में मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूँ। मैं आपके यशस्वी एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना करता हूँ इन्हीं शुभ भावना के साथ ही

जय नानेश

जय महावीर

रतनलाल रांका

JAI GURU NANA JAI MAHAVEER JAI GURU RAM



SHREE SADHUMARGI JAIN SANGH

Atkinson Palace, 2nd Floor,
No 4, Atkinson Road, Vepery, Chennai - 600 007

President :
KESHRICHAND SETHIA
Flat No 2A, 4, Atkinson Road,
Vepery, Chennai - 600 007
Ph 25611740, 25611087

Vice-Presidents
MOHANLAL SURANA
Ph 2341266

UGAMRAJ MUTHA
Ph 2341729, 2341897

MANAKCHAND CHANDALIYA
Ph 5955006

UTTAMCHAND GALADA
Ph 4345152

Secretary
RATANLAL RANKA
No 64, K H Road, Korukkupet,
Chennai - 600 021
Ph (O) 5920505, (R) 5963030

Asst Secretary :
MANGILAL CHHALANI
Ph 5205593, 5950998

SUMATIKUMAR KANKARIA
Ph 5297123, 5291375

Treasurer
AMRITLAL DHARIWAL
Ph 4850570, 4851339



शुभ संदेश

युग पुरुष आचार्य श्री नानेश इस सदी के एक महान चितक, दार्शनिक धर्म गुरु थे। स्व-कल्याण के साथ-साथ मानव कल्याण के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया था।

आज के इस आपा-धापी, दौड़-धूप, चकाचौध के जीवन मे व्यक्ति धन, यश, कीर्ति के पीछे बेहिसाब दौड रहा है। तनाव (टेन्शन) से उबरना चाहता है।

विश्व शान्ति, तनाव मुक्ति के लिए आचार्य प्रवर ने समता दर्शन सिद्धात को आचार, विचार और व्यवहार मे लाने का दिव्य सदेश दिया।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर ने स्व आचार्य श्री की पावन पुण्य स्मृति मे आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार की घोषणा की। इससे अधिक उपयुक्त और क्या हो सकता था।

प्रथम वर्ष का पुरस्कार त्यागमूर्ति श्रीमान् गुमानमलजी सा चौरडिया, जयपुर निवासी को प्रदान किया। जिनका जीवन जप-तप और समता - समन्वय की भावना से ओत - प्रोत है।

इस वर्ष का समता पुरस्कार बेगलोर निवासी श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी को दिया गया है। श्री सिपानीजी धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर एव सेवा की प्रतिमूर्ति है।

समन्वय, संगठन, शासन के प्रति निष्ठा दृढधर्मी ही नहीं अपितु जिनकी रग - रग मे समता रस समाया हुआ है।

आपके दीर्घायु की शुभ मगल कामना करते है। इसी तरह आप सघ समाज की सेवा करते रहें। समता की जोत जगाते रहे।

केशरीचद सेठिया
अध्यक्ष, श्री साधुमार्गी जैन सघ, चैन्नई।

राम गुरु का क्या संदेश व्यसन मुक्त हो सारा देश

श्री महावीराय नम

जय नानेश जय रामेश



सही व्यक्ति का सही चुनाव

श्रीमान्

सोहनलालजी सिपानी

का

समता पुरुष के चयन पर

हार्दिक बधाई

आप संघ एवं समाज की

सेवा मे अग्रणी,

पूज्य संत-सतियाजी म. सा.

की सेवा-सुश्रुषा मे समर्पित,

धर्मपरायण, दानी,

कर्तव्यनिष्ठ,

मिलनसार एवं

निराभिमानी

प्रकृति के हैं।

– एम. रिखबचन्द छल्लाणी
आर. प्रकाशचन्द छल्लाणी
वुलन सेल्स, मैसूर



॥ श्री महावीराय नम ॥

जय गुरु नाना जय गुरु राम

आदरणीय देवीलालजी सा

सादर जय जिनेन्द्र ।

शुभ संदेश प्रकाशित करावे ।

स्वागत में सिपानी जी आपके,
नाचे मन के मोर हमारे ।
कई गुणों से मंडित हो के,
चमको जिन शासन के सितारे॥

परम सम्माननीय, समाज गौरव, सौम्य सरल स्वभाव के धनी उदार हृदयी, परम श्रद्धालु, अनन्य गुरुभक्त, सेवा की साकार मूर्ति, निस्पृह समाजसेवी, प्रेरणाश्रोत श्रद्धेय श्री सोहनलालजी सिपानी को समता अवार्ड से सम्पूर्ण संघ समाज व हम सब गौरवान्वित व सम्मानित हुए हैं।

श्री सिपानी जी उस पीढ़ी के लोग हैं जिन्होंने पूर्वाचार्यो की सेवा की है और आज भी संघ की सेवा मे अग्रणी हैं।

सदैव साधुमार्गी संघ को संरक्षण दिया है। पर कभी पद मे नहीं रहे और उदारता के साथ सहयोग करते रहे और कर रहे हैं। सम्पूर्ण परिवार भी संस्कारित व अनुशासित हैं।

धार्मिक संस्कार शिविरों, स्वाध्याय कार्यों व कई विभिन्न धार्मिक, सामाजिक सेवा कार्यों मे आपका सान्निध्य



मार्गदर्शन सहयोग जो प्राप्त हुआ है वह अविस्मरणीय है। पूज्य आचार्य भगवन्त व साधु संतों महासतियों की आपकी सेवा सराहनीय है यशस्वी, दीर्घायु हो

जैसे आकाश में चांद सितारों में एक है।
सिपानीजी लाखों में एक हैं।

– [illegible]

[illegible]

[illegible]



कान्ता वोरा
पूर्व अध्यक्ष
अ.भा. साधुमार्गी जैन
महिला समिति
(वीकानेर)
यशवंत निवास रोड,
इन्दौर
फोन 430726 / 531779

आदरणीय श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
सादर जय जिनेन्द्र !

आशा है आप सपरिवार प्रसन्न एव स्वस्थ होगे।

मुझे ऐसा ज्ञात हुआ है कि वेगलोर से एक पत्रिका प्रकाशित हो रहीं है। अत मै भी श्रीमान् सोहनलालजी सा सिपानी के प्रति शुभ भावना कुछ शव्दो मे लिखकर भेज रही हू । पूर्ण विश्वास है कि आप पत्रिका मे अवश्य प्रकाशित करायेगे।

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी
का व्यक्तित्व सरलता, सहजता, विनम्रता,
त्याग एव सेवा भावना से ओत - प्रोत है।
आपने समता विभूति आचार्य श्री नानेश
की सेवा ही नही अपितु आचार्य श्रीजी
की महान देन समता को अपने जीवन मे
आत्मसात किया है।
आपका जीवन आदर्श सुश्रावको में अग्रणी
पक्ति मे रखने योग्य है।
आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को
निखारते हुये समता पुरस्कार चयन समिति
ने आपका चयन पुरस्कार हेतु किया है ।
अत समिति भी धन्यवाद की पात्र है।
आपका चयन वास्तव मे समता पुरस्कार के
चयन हेतु खरा है। मे आपको अपनी ओर से
शुभकामनाओ सहित अनेकानेक वधाईया देती हूँ।

कान्ता वोरा
दि २६-८-२००३
इन्दौर

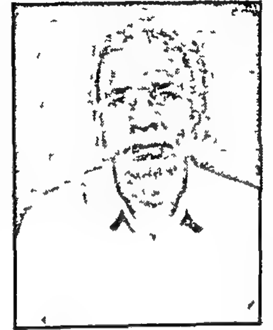
卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

जय गुरु नाना ॥ श्री महावीराय नम ॥ जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन समता संघ

१२/१, मोहनपुरा, जवाहर मार्ग, इदौर-४५२००२ (म प्र)

दि २९-८-२००३



आदरणीय
श्री देवीलालजी सुखलेचा
वेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

बहुत प्रसन्नता एव गौरव की बात है कि आप सेवानिष्ठ समता मनीषी श्रीमान् श्री सोहनलालजी सिपानी को (समता) नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित कर रहे है, उसका अभिनन्दन पुस्तिका प्रकाशित कर रहे है । इसके लिए आपको साधुवाद है। क्योंकि अच्छे व्यक्तियो एव समाज सेवक, धर्मनिष्ठ, दानवीर श्रावको का सम्मान एव प्रशसा होनी चाहिये इससे बहुत से लोगों को प्रेरणा मिलती है।

श्री सिपानी सा ने अपने जीवन को समतामय बनाया एव समाज को सात्विक संस्कार युक्त जीवन की दिशा देने हेतु स्वय को सर्व भावेन समर्पित किया तभी उनका चयन हुआ। मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामना एवम् इन्दौर सघ उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

रतनलाल खिन्दावत
अध्यक्ष
श्री साधुमार्गी जैन समता संघ
२७/१, रेस कोर्स रोड,
सिल्वर पार्क कॉलोनी, इदौर-४५२००१

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐



॥ श्री महावीराय नम ॥

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ

परस्परोग्रह जीवानाम्

"सिपानी भवन", नं. 448, 8 वां मेन रोड़, चौथा ब्लॉक, कोरमंगला,
बेंगलोर - 560 034. फोन · 553 4414, 5537878

क्रमांक .

दिनांक .01-09-2003



श्री देवीलालजी सुखलेचा
अमर रिषभ वीर, हिन्दी साप्ताहिक
बेगलोर

यह जानकर बडा ही हर्ष और आनन्द हुआ कि अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर की ओर से प्रसिद्ध समाजसेवी, शासननिष्ठ, सघ के प्राण **श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी** को **आचार्य नानेश समता पुरस्कार** भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैंरोसिंहजी शेखावत के कर कमलो से मध्य प्रदेश की औधोगिक नगरी इन्दौर में प्रदान किया जायेगा।

श्री सोहनलालजी सिपानी संपूर्ण स्थानकवासी जैन समाज के एक महान प्रकाश स्तम्भ है। जिनके अध्यक्षीय काल मे बेगलोर का साधुमार्गी जैन संघ चहुमुंखी प्रगति कर रहा है। लोकप्रियता आपको सहज भाव से ही उपलब्ध होती रहती है।

पुन. आपको प्राप्त आदर्श सम्मान समता पुरस्कार के लिए मेरी तरफ से अनेकानेक बधाई व मंगलमनीषा



धनराज डागा
अध्यक्ष
श्री एस एस जैन श्रावक संघ,
कोरमंगला, बेंगलोर

गौतम पारख
बी ई.

फैक्ट्री :- पारस रबर एण्ड दाल इण्डस्ट्रीज
36/27, औधौगिक संस्थान
राजनादगाव (छ.ग) 491 441
निवास - गौतम भवन, गंज लाईन, राजनांदगांव
STD Code 07744 - O 281696, R 224397, 281697

दि 5-9-03

वात्सल्यमूर्ति सोहनलालजी सिपानी

उदारता, सहजता एवं सरलता की प्रतिमूर्ति का ही दूसरा नाम हैं सोहनलालजी सिपानी। उनका नाम उन श्रावकों में हैं जिनकी शीतल छाया के नीचे हमारा यह साधुमार्गी संघ सदैव पुष्पित एवं पल्लवित हुआ हैं। आपश्री सदैव संघ एवं शासन के चहुंमुखी विकास में अग्रणी रहे है। संघ को आगे बढाने मे आपकी सहभागिता एवं उदात्त सहयोग हमेशा बना रहता हैं।

आपके रगों में पूर्वाचार्यों के प्रति असीम स्नेह, श्रद्धा, एवं भक्ति के भाव भरे हुए हैं। स्व. आचार्य श्री नानेश के हृदय में स्थान बनाने वाले श्रावकों में आपका नाम प्रमुख है। वर्तमान शासन नायक श्रद्धेय आचार्य श्री रामेश के प्रति भी वही समर्पण, वही श्रद्धा भाव आपके मन मानस मे है।

आपश्री से काफी लम्बे समय से मेरा संपर्क रहा है। मै आपमें सदैव अपने दादाश्री की झलक देखता हूँ। मुझे आपका स्नेह, मार्गदर्शन एवं आशीष सदैव मिलता रहा हैं। कुछ वर्ष पूर्व जब मैं समता युवा संघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया और पूरे साधुमार्गी संघ के साथ प्रवास में बेंगलोर गया तो आपके एवं आपके परिवार द्वारा पूरे संघ का जो आतिथ्य-सत्कार किया गया उसे देख कर मैं अभिभूत हो गया।

आपका सकल परिवार धार्मिक भावना से ओतप्रोत हैं। आपके घर के सभी सदस्यों में धर्म के प्रति, प्रभु के प्रति, गुरु के प्रति एवं संघ के प्रति अप्रतिम धारणा अनुकरणीय हैं। प्रति रविवार आपके पूरे परिवार में सामूहिक प्रार्थना सिपानी भवन में आयोजित होती हैं, मुझे उसमें भी शामिल होने का सौभाग्य मिला था तब प्रभु एवं गुरुभक्ति की प्रार्थना जो हृदय के तारों को सीधे जोड देती है, आपके मुख से सुन कर मैं आह्लादित हो गया।

वैसे उदयरामसर में स्व. आचार्यश्री के चातुर्मास में आपका स्नेह एवं प्रेरणास्पद साथ अभी भी मेरे मानस पटल पर जीवंत है। अभी जून २००३ में जब मैं अपने सुपुत्र गौरव को बेंगलोर में अध्ययन कराने हेतु लेकर गया था तब आप मेरे पुत्र से कहने लगे - हम तुम्हें क्या सम्हालेगे अब तो हमारी अवस्था परिपक्व हो गई हैं, अब तो तुम्हें ही आकर मुझे सम्हालना होगा। ये वाक्य आज भी मेरे स्मृति पटल मे अंकित हैं। मैं सोचता हूँ कि इस वाक्य में कितनी आत्मीयता भरी हुई हैं।

मैं आपकी दीर्घायु, उत्तम एवं सफलतम जीवन की मंगल कामना करता हूँ एवं वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ आपकी सुखद छाया इस संघ को सदैव मिलती रहे।

-गौतम पारख
संरक्षक
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ, रतलाम

जय नानेश श्री महावीराय नम जय रामेश



राम चमकते भानु समाना

दिलीपकुमार मारु

बडीसादडी (राज.)

दिनांक २१-०८-२००३

परम श्रद्धेय श्रीयुत् सोहनलालजी सा. सिपानी
कोटिश: वन्दन-अभिनन्दन !

प्रशान्तमना, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी व्यसन मुक्ति के प्रणेता श्रीवाल प्रतिबोधक आचार्य श्री १००८ श्री रामलालजी म. सा. सभी संत-सती वृन्दों सहित सुखसाता पूर्वक बिराज रहे है।

ज्ञान-ध्यान एवं त्याग-तपस्या का अपूर्व ठाठ लग रहा है।

यह समाचार सुनकर अत्यन्त खुशी हुई कि आपश्री को आचार्य नानेश समता पुरुस्कार देने की घोषणा हुई है। सही अर्थो में आपने समता दर्शन को पूर्णरुपेण आत्मसात कर लिया है।

आपश्री ने त्याग, सेवा, दानशीलता की जो मिसाल कायम की है वो समाज के लिए अनुकरणीय है। आपश्री एक कुशल नेतृत्व प्रदान करने वाले, संघ के आधार स्तम्भ एवं समता मनीषी है। आपकी सेवा भावना त्याग, निष्ठा एवं पूर्ण समर्पण समता के पर्याय बन गये है। आपके आदर्श एवं सामाजिक मूल्य जीवन में उतार सकें यही आर्शीवाद चाहते है।

आपश्री को समता युवा संघ की ओर से हार्दिक बधाई एवं निरन्तर उज्ज्वल समतामय जीवन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ एवं आशा करता हूँ आप हमें आशीर्वाद प्रदान करेंगे।

आपका



दिलीपकुमार मारु
समता युवा संघ,
बडी सादडी (राज.)

श्री महावीराय नम

Kishanlal Betala

No 55, Erullapan Street,
Sowcarpet, CHENNAI - 600 079

आदरणीय
श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
संपादक अमर रिषभ वीर, बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र।

जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा कि वर्ष २००३-०४ का समता पुरस्कार के लिए शासननिष्ठ, संघ के प्राण, समता- योगी श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का चयन हुआ है। वास्तव में यह देखा जाये तो श्री सिपानीजी ने समता को आत्म सात किया है। समत्व साधना में रत रहते हुए प्राणी अपने मंजिल की ओर अभिमुख होता है। कहा भी है कि समता मे ही सार है समता ही धर्म का प्राण है।

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी समाज की नई चेतना के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग के उत्थान के लिये सदैव प्रयत्नशील रहते हैं आपने जीवन की कैसी भी विकट परिस्थिति हो हमेशा समभाव में रमण किया है। ऐसे श्री सोहनलालजी सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए मै मेरी ओर और मेरे परिवार की ओर से बधाई देता हूँ और आपके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ।

किशनलाल बेताला
चैन्नई



RAJASTHAN YOUTH ASSOCIATION

Regd. Office: 105, Katurba Road, Bangalore - 560 001.

Ref. No.

Date : 05-09-2003

श्री देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक . अमर रिषभवीर
बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

आप द्वारा प्रकाशित सोहनलालजी सिपानी अभिनन्दन ग्रथ मे निम्न शुभकामना सदेश प्रकाशित करावे।

शुभकामना संदेश

चरम तीर्थकर, शासनपति श्रमण भगवान महावीर स्वामी की पाट परम्परा के अधिनायक श्री सुधर्मास्वामी के पट्टधर हुक्मगच्छ के जैनाचार्य श्री जवाहरलालजी म सा शात क्राति के जन्मदाता आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा समता दर्शन के प्रेणता आचार्य श्री नानालालजी म.सा. तथा आगम रहस्य के परम ज्ञाता आचार्य श्री रामलालजी म.सा. एव अनेक आचार्यो, उपाध्यायो तथा साधु-साध्वीवृंद की सेवा करने वाले शासन निष्ठ श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी को **आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार** प्रदान करना एक आदर्श है।

इस आपके नाम की घोषणा करने वाले ९ सदस्यो की खण्डपीठ को संघ की और से धन्यवाद अर्पित करता हूँ। ये सम्मान श्रीमान् सोहनलालजी सा. का सम्मान नहीं परन्तु जिनशासन का सम्मान है। पुन· श्री अ.भा साधुमार्गी जैन सघ को चयन पर धन्यवाद। हमारी अनेक मंगलकामना है कि श्रीमान् सोहनलालजी सा सिपानी सदा स्वस्थ रहे एवं दीर्घायु हो.

शान्तिलाल कांकरिया
अध्यक्ष

राजेन्द्र राखेचा
मंत्री

प्रख्यात पत्रकार
श्रीमान् देवीलालजी
अध्यक्ष अ.भा. जैन पत्रकार संघ
सादर प्रणाम !

आपश्री के पत्र के माध्यम से ज्ञात हुआ कि
समाज के चिंतामणि

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी

के गुणदान हेतु

अभिनन्दन ग्रंथ

का प्रकाशन किया जा रहा है।

वास्तव में श्री सिपानीजी
समता पुरस्कार के लिये श्रेष्ठ व्यक्ति हैं
आपने सामाजिक कार्यो में
विशेष उल्लेखनीय योगदान दिया हैं,
आपने कभी नाम की अपेक्षा
के लिए कार्य नहीं किया।
कर्मण्य वा धिकारस्ते,
मा चरितार्थ कदाचन।
इसी उक्ति को आने चारितार्थ किया।

इस हेतु मेरी और मेरे परिवार की ओर से
हार्दिक शुभकामनाएं एवं
दीर्घ आयुष्य के लिये मंगल मनीषा।

भवदीय
लालचंद डागा
कडूर (कर्नाटका)

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक, अमर रिषभ वीर, बेगलोर, सादर जय जिनेन्द्र

समता-रत्न पुरस्कार के हकिकत से हकदार

आदरणीय दक्षिण भारत के प्रसिद्ध समाजसेवी, श्रावक रत्न श्री संघ के कर्णधार, समता रत्न पुरस्कार के हकिकत मे हकदार, निष्काम, उदारमना श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी।

हमारे परम आदरणीय मासोसा ! आपको हम समस्त सुराणा परिवार की ओर से प्रणाम करते हुए वहुत-वहुत बधाईयाँ देते हुए शुभकामनाएँ करते है।

आपने अपने परिवार, समाज ही नहीं पूरे भारतवर्ष मे ख्याति प्राप्त कर रखी है। आपके हदय की उदारता, गभीरता एवं सहनशीलता मे तो आप साक्षात समताधारी है। हमने कइयो बार आपके पास पहुँचकर निकट से अनुभव किया हे चाहे किसी से भी बडी से बडी गलती भी क्यो न हो हमे भय लगता है कि अब मासोसा की मन स्थिति कैसी होगी? लेकिन परिणाम विल्कूल विपरीत देखकर लगता कि देखो हम क्या-क्या सोच रहे थे। जिससे तो ये बिल्कूल अलग निकले।

प्रति रविवार को हमे सिपानी भवन मे प्रार्थना स्वाध्याय करने हेतु आग्रह करते है लेकिन उस आग्रह मे भी एक सात्विक स्नेह अनुराग एवं सरलता की झलक पेश करते है अपनी बाल-भावना दर्शा रहा है। अस्तु .. ...

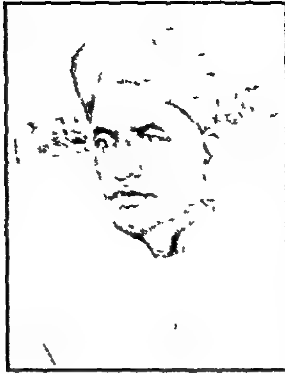
लम्बे समय से आप कर्नाटक साधुमार्गी श्री सघ के अध्यक्ष पद को गौरवान्वित कर रहे है आपने अपने कार्यकाल मे ऐसी-ऐसी कार्यकृतियॉ की है जिससे आज वेगलोर श्री सघ नही सपूर्ण कर्नाटक श्री संघ का मस्तक गोरव से ऊँचा होता है।

किसी भी पद पर रहकर उसे पूर्णतया सारी जिम्मेदारियों के साथ निभाना वडा कठिन काम हे फिर भी आपने तन-मन-धन की परवाह न करते हुए, तीनों का सहयोग देकर जेन समाज को आश्चर्य मे डाल दिया हे। हमे सर्वाधिक गोरव इस वात का हे कि, मासोसा! आज समता पुरस्कार के हकिकत मे हकदार हो।

हम आपसे यही शुभकामना करते हे कि आपका यह समतामय जीवन हर प्राणी के लिए आदर्श सूचक बने।

इन्हीं मंगल मनीषा के साथ
अशोककुमार सुराणा एवं समस्त सुराणा परिवार
बेंगलोर

फतेचंद डागा
बीकानेर (राज)



श्रीयुक्त देवीलालजी सा. सुखलेचा

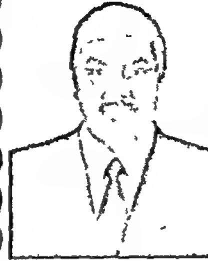
अध्यक्ष समता युवा संघ, बेंगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

ज्ञात हुआ कि शासन निष्ठ सुश्रावक श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी को समता पुरस्कार के लिये मनोनीत किया है। सघ एवं समाज के लिए यह गौरव का विषय है कि श्री सिपानीजी ने अपने जीवन काल मे अनेक सामाजिक सस्थाओ मे अपना पूरा सहयोग प्रदान किया है । निर्धन व्यक्तियों को सहायतार्थ अपने अर्थ का सदुपयोग किया है, कर रहे है । धार्मिक कार्यो के लिए आप हमेशा तैयार रहते है । आप अनेक कार्यो के लिये सर्व परिचित एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियो के सबसे अग्रणी है। समता पुरस्कार हेतु सिपानीजी को हार्दिक बधाई एवं मगल जीवन की कामना करता हूँ।

आपका :
फतेचंद डागा
बीकानेर (राज.)

श्री महावीराय नम



श्रीमान् देवीलालजी
सुखलेचा
संपादक,
अमर रिषभ वीर, बेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

विशेष यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि
बेगलोर से प्रसिद्ध समाजसेवी

श्री सोहनलालजी सिपानी

का चयन
अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ
बीकानेर द्वारा

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

के लिये हुआ है।

वास्तव मे यह आपकी निस्वार्थ रूप से
प्रदान की गई समाज सेवा एवं
सामाजिक क्षेत्रो में किये गये
उल्लेखनीय योगदान का ही प्रतिपल हैं।

सौम्य पूर्ण व्यवहार, उदार चिन्तन
स्पष्टवादिता और समाज को कुछ देने की
ललक इन सद्गुणो से ही
आपका संपूर्ण जैन समाज मे एक विशिष्ट
स्थान एवम् गौरव है।

पुन आपके इस पुरस्कार के लिए
हार्दिक-हार्दिक बधाई एवं स्वास्थ
की कामना के साथ

रमेशचंद नाहर
नागौर जिला जैन परिषद,
गांधीनगर, बेंगलोर

जय नानेश

श्री महावीराय नमः

जय रमेश



लच्छीराम सुखलेचा

सुखलेचा मार्केट,
देवगढ़ मदारिया, जिला राजसमंद

हार्दिक बधाई

प्रसिद्ध समाजसेवी दानवीर श्री सोहनलालजी सा. सिपानी

सादर जय जिनेन्द्र !

आशा है आप सपरिवार स्वस्थ एव प्रसन्न होगे। विशेष मेरे पुत्र देवीलाल के माध्यम से यह समाचार जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर की ओर से राष्ट्रीय समता पुरस्कार के लिये आपका नाम चयनित किया गया है। आपके इस आदर्शसम्मान से समग्र जैन समाज अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। आपको इसके लिए मै मेरी तरफ से तथा मेरे परिवार की तरफ से अनेकानेक वधाईया।

वास्तव मे यह पुरस्कार आपके धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रो मे, संघ एवं समाज हित के कार्यो मे किये गये उल्लेखनीय योगदान की परम देन है।

आगे भी आप इस तरह राष्ट्र हित में सामाजिक, धार्मिक एवं व्यवसाय के क्षेत्र मे अपनी सुझबूझ से, बहुमूल्य दूरदर्शिता पूर्ण विचारो से सादगीमय जीवन शैली से कार्य के सफल क्रियान्वय मे अपनी बौद्धिक विशिष्टता से देश एवं संघ-समाज का गौरव बढाते रहेंगे। मानवता की सेवा मे तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग प्रदान कर अपने अनुभवों से सक्रिय सहयोग प्रदान कर अपने अनुभवों से सभी को लाभान्वित करते रहेंगे एवं संपूर्ण जेन समाज को विश्व स्तर पर सफलता के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित कर समाज मे विकास की नई चेतना की रोशनी बिखेरेंगे और जैन धर्म-दर्शन की सम्यक प्रभावना करते रहेगे यही मेरी अन्तर की शुभ-मगल अभिलाषा आपके प्रति है।

पुन आपके दीघार्यु, चिरायु और यशस्वी जीवन की मंगल कामना करते हुए आपको प्राप्त हुए आदर्श सम्मान के लिए बहुत-बहुत हार्दिक वधाई-शुभकामनाएँ

लच्छीराम सुखलेचा
पूर्व अध्यक्ष
साधुमार्गी जैन संघ, देवगढ

P.G. Foils Pvt. Ltd.

Pipaliya Kalana, Dist. Pali, (Rajasthan)
Ph: 02937-220202, 287151-56

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
सपादक, अमर रिषभ वीर, बेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

हार्दिक बधाई आप द्वारा प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ में शुभ कामना दिरावें।

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी

को

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के चयन पर बधाई

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी के मधुर व्यवहार, मिलन सारिता, सम्पर्क, उदारमना प्रवृति के कारण बेगलोर जैन समाज में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश में स्थान प्राप्त किया और सभी के चेहते बन गये।

समता भाव से ओत-प्रोत, मधुर आवाज में बोलना, शासन निष्ठ और गुरु भक्ति के कारण इस वर्ष का आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतु आपका चयन किया गया है।

ऐसे समता पुरस्कार से अलंकरित, शासन निष्ठ, श्रावकवर्य श्री सोहनलालजी सिपानीजी को मेरा और बोहरा परिवार का नमन प्रणाम

श्रीमती नीलादेवी बोहरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति

जय गुरु नाना　　　　जय महावीर　　　　जय गुरु राम



आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से अलंकरित : श्रावक रत्न श्री सोहनलालजी सिपानी : जैसा मैंने देखा, समझा व पाया

-चम्पालाल डागा

फुफाजी श्री सोहनलालजी सिपानी को मै पिछले ५० वर्षो से निकट सान्निध्य मे हूॅ इतने लम्बे समय मे मैने उनका धैर्य, गम्भीरता, धर्म परायणता, बन्धुत्व और हसमुख चेहरा ही देखा । बचपन आपका उदयरामसर गॉव मे व्यतीत हुआ तो व्यापार क्षेत्र आपका मारकापुर (आन्ध्र प्रदेश) रहा । विगत वर्षो मे बेगलोर आने के बाद तथा विशेषतः आदर्श त्यागी श्री धर्मेशमुनिजी म सा आदि ठाणा-३ के दक्षिण विचरण के समय आप संघ के नजदीक से जुडे । सम्पर्क मे आये, धर्म भावना जाग्रत हुई और कर्नाटक प्रात मे मुनिजीश्री के विचरण व्यवस्था मे सहयोगी रहे । फिर निरतर सघ के नजदीक आते गये । स्वनाम धन्य सेठ श्री छगनलालजी मुथा, बेगलोर के स्वर्गवास के बाद दक्षिण की कमान आपने सम्भाली आज तक आप उसे भाईचारा और अपनत्व के साथ निभा रहे है ।

आपने मधुर व्यवहार, मिलन सारिता, सम्पर्क, उदारमना प्रवृति के कारण बेगलोर जैन समाज मे स्थान प्राप्त किया और सभी के चेहते बन गये ।

क्रोध आपको आता नही, छल कपट से कोसो दूर, धीमी और मधुर आवाज मे बोलना, शासन निष्ठा और गुरु भक्ति के कारण आदर्श जीवन मूल्य, सस्कार युक्त, समतामय जीवन के कारण इस वर्ष का आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतु आपका चयन किया गया है । चयन समिति का मै भी एक सदस्य होने के नाते, मुझे हर्ष है । गौरव है । ऐसे समता पुरस्कार से अलकरित, श्रावकवर्य मेरे फुफाजी को मेरा और डागा परिवार का नमन प्रणाम

चम्पालाल डागा

सम्पादक, श्रमणोपासक, बीकानेर

कैम्प : चैन्नई , दि २६-८-२००३

॥ श्री महावीराय नम ॥



शान्तिलाल खिवेंसरा
श्रीरामपुरम्, बेगलोर
दिनांक ८-०९-२००३

श्रीयुत् सोहनलालजी सा. सिपानी
जय जिनेन्द्र।

यह समाचार सुनकर अत्यन्त खुशी हुई कि आपश्री को आचार्य नानेश समता पुरस्कार देने की घोषणा हुई है। सही अर्थो मे आपने समता दर्शन को पूर्णरुपेण आत्मसात कर लिया है।

आपश्री ने त्याग, सेवा, उदारता की जो मिसाल कायम की है वो समाज के लिए अनुकरणीय है। आपश्री एक कुशल नेतृत्व प्रदान करने वाले, सघ के आधार स्तम्भ है। आपकी सेवा भावना, त्याग, निष्ठा एव पूर्ण समर्पण समता के पर्याय बन गये है। आपके आदर्श एवं सामाजिक मूल्य जीवन में उतार सके यही आर्शीवाद चाहते हैं।

आपश्री को हमारे सघ की ओर से हार्दिक बधाई एव निरन्तर उज्वल समतामय जीवन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करते है।

आपका
शान्तिलाल खिवेंसरा
टस्ट्री
श्री विमलनाथ जैन श्वेताम्बर मुर्तिपुजक सघ
लक्ष्मीनारायणपुरम्, बेगलोर-२१

॥ श्री महावीराय नम ॥

श्रीयुक्त देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक अमर रिषभवीर
बेगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

मुझे जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी पर अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन करने जा रहे है इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रेष्ठीवर्य श्री सोहनलालजी सिपानी जैन समाज के एक ऐसे वरिष्ठ सुश्रावक है जिनकी दृढश्रध्दा, धार्मिता सभी के लिए अनुकरणीय है।

आपके व्यक्तित्व एव कृतित्व में एक रूपता है ऐसे समता निष्ठ व्यक्तित्व को प्रणाम। अ.भा साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतू आपके चयन पर हार्दिक शुभकामना।

मोहनलाल मुथा
अध्यक्ष
श्री अ भा जैन क्रान्फेन्स
(कर्नाटक शाखा)
बेगलोर



श्री महावीराय नमः

जय नानेश　　　　　　　　जय रामेश



अत्यन्त प्रमोद का विषय है कि श्रीमान् सोहनलालजी साहिब सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार दिनांक २३.०९.२००३ को भारत के उपराष्ट्रपति श्रीमान् भैरुसिहजी शेखावत द्वारा प्रदत्त किया जावेगा। वस्तुतः आप इस पद के योग्य है। आपको जीवन समता से सरोवार है। सन्त सत्तियों के प्रति आपकी श्रद्धा निष्टा समर्पणा देखते ही बनती है, धन्य है आप।

गुमानमल चोरडिया
पूर्व अध्यक्ष
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ
बीकानेर

॥ श्री महावीराय नम ॥



परस्परोपग्रह जीवानाम्

आदरणीय सम्पादक महोदय
श्री देवीलालजी सुखलेचा
अमर रिषभवीर, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

आप द्वारा हमारे श्री एस.एस. जैन संघ. विल्सन गार्डन. बेंगलोर के अध्यक्ष. शासननिष्ठ. दानवीर. सुश्रावक रत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का समता पुरस्कार से सम्मानित होने के बारे मे अभिनन्दन विशेषांक निकाला जा रहा है।

हमारे संघ और मेरी और से सद्भावना व शुभकामना स्वीकार करे।

शासनेश प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आप चिरायु और दीर्घायु हो।

विनीतः
देवीचंद बोहरा
मंत्री
श्री एस.एस. जैन संघ
विल्सन गार्डन, बेंगलोर

॥ श्री वीतरागाय नम ॥



धर्मनिष्ठ सम्पादक

श्री देवीलालजी सुखलेचा

अमर रिषभवीर, बेगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

आप श्री द्वारा बेंगलोर के एक ऐसे धर्मनिष्ठ, दानवीर सुश्रावक रत्न परम गुरु भक्त श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का अभिनन्दन ग्रन्थ निकाला जा रहा है, जिनको आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार का राष्ट्रीय सम्मान होने जा रहा है, हमारी हार्दिक शुभ कामना स्वीकार करें ।

हार्दिक शुभाकांक्षी :

बी. राजमल ओस्तवाल

वरिष्ठतम स्वाध्यायी और कवि

ओस्तवाल कुज,

दाधिचनगर, महामंदिर

जोधपुर (राज.)

॥ श्री महावीराय नम ॥



आदरणीय सम्पादक महोदय

श्री देवीलालजी सुखलेचा

अमर रिषभवीर, बेगलोर

सादर जय जिनेन्द्र ।

आप श्री द्वारा बेंगलोर के एक ऐसे शासननिष्ठ, धर्मप्रेमी, शिक्षा, चिकित्सा, साहित्य आदि अनेक समाज सुधारक कार्य में मुक्तहस्त से दान देने वाले दानवीर सुश्रावक रत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित होने पर हार्दिक हार्दिक अभिनन्दन।

मेरी और संघ की सद्भावना व शुभकामना स्वीकार करें।

विनीत--

हरीसिंह रांका

ट्रस्टी

श्री समता जन कल्याण प्रन्यास

दांता (राज.)

॥ श्री वीतरागाय नम ॥

स्वधर्म स्नेही श्री देवीलालजी सुखलेचा

प्रधान सम्पादक

अमर रिषभवीर, बेगलोर (कर्नाटक)

सादर जय जिनेन्द्र !



आचार्य श्री नानेश
समता पुरस्कार का
राष्ट्रीय सम्मान धर्मनिष्ठ, दानवीर
सुश्रावक रत्न परम गुरु भक्त
श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी
को प्रदान किया जा रहा है।
इस उपलक्ष में आप द्वारा
प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ के
लिए हमारी कोटिश सद्भावना
व बधाई स्वीकार करें।

हार्दिक शुभेच्छुक :

अखिल भारतवर्षीय श्री जैन रत्न

नवयुवक सेवा संघ

भोपालगट, जोधपुर (राज.)९२

श्री महावीराय नमः

जय नानेश — जय रामेश



श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
अमर रिषभ वीर, हिन्दी साप्ताहिक
बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

शुभकामना संदेश

विशेष आचार्य नानेश समता पुरस्कार के लिए श्री सोहनलालजी सिपानी का चयन गया है।

आप प्रकृति से सरल, मिलनसार और उदारमना हैं। ७५ वर्ष की आयु होने पर भी आपके चेहरे पर चमक-दमक है। सामाजिक धार्मिक अनेक संस्थाओं में आपका योगदान अनुकरणीय है।

मैं आपको इस महान पुरस्कार के लिए मेरी तरफ से और मेरी श्री मेवाड़ ओसवाल साजनान संघ की ओर से हार्दिक मंगल बधाई अर्पित करता हूँ।

शुभेच्छुकः-

नवरतनमल नंदावत एम.ए.

अध्यक्ष

श्री मेवाड़ ओसवाल साजनान संघ, कर्नाटक

॥ पढमं णाणं तओ दया ॥



अखिल भारतवर्षीय जैन पत्रकार महासंघ

बेंगलोर (कर्नाटक)

SRI AKHIL BHARTIYA JAIN PATRAKAR MAHASANGH

न. 241/1, 2रा मेन रोड, रामचद्रपुरम्, बेंगलोर - 560 021. फोन 313 3224, 312 2457, 332 8512

बधाई संदेश

आदर्श श्रावक रत्न श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी, बेंगलोर को समता पुरस्कार चयन के लिए हार्दिक बधाई !

आप एक अनुभवी सुश्रावक, श्रीमंत/सज्जन एवं प्रज्ञावान सदगृहस्थ गुरुभक्त है।

आपके जीवन मे आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य निष्ठा भक्ति है।

ऐसे श्रावक रत्न को अ.भा.जैन पत्रकार महासघ की तरफ से

कोटिशः बधाई व शतशः शुभकामना।

शुभेच्छुक -

देवीलाल सुखलेचा
(अमर रिषभवीर)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

गौतमचंद ओस्तवाल
(मोक्ष द्वार)
राष्ट्रीय महामंत्री

जय नानेश श्री महावीराय नमः जय रामेश



श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा

सपादक,अमर रिषभ वीर, बेगलोर

सादर जय जिनेन्द्र !

हार्दिक बधाई आप द्वारा प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ मे दिरावें।

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के चयन पर बधाई

श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी के मधुर व्यवहार, उदारमना प्रवृति के कारण बेंगलोर जैन समाज मे ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश में अग्र स्थान प्राप्त किया हैं।

क्रोध आपको आता नहीं, छल कपट से कोसों दूर, धीमी और मधुर आवाज में बोलना, शासन निष्ठा और गुरु भक्ति के कारण आदर्श जीवन मूल्य, संस्कार युक्त, समतामय जीवन के कारण इस वर्ष का आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतु आपका चयन किया गया हैं । ऐसे समता पुरस्कार से अलंकरित, श्रावकरत्न, संघ के अध्यक्ष श्री सिपानीजी को मेरा और संघ परिवार का नमन प्रणाम

सम्पतराज कटारिया

मंत्री

श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलोर

अ : आचारवान्
चा : चारित्रवान्
र् : रक्षक
य : यतनावान्

श्री : श्रीमंतवान्

ना : नामवरी से दूर
ने : नेहावान्
श : शतायुवान्

स : सरलमना
म : मद् मत्सररहित
ता : तारतम्य भाववाले

पु : पुरुषार्थी
र : रचनाकार
स् : स्नेह की प्रतिमूर्ति
का : कारवां चलाने वाले
र : रहम दिल

से : सेवानिष्ठ

स : सहनशीलता की मूर्ति
म् : ममकार रहित
मा : माया रहित
नि : निष्ठावान्
त : तपस्वीरत्न

श्री : श्री से युक्त

सो : सोहनपुरुष
ह : हर्षितमना
न : नम्र पुरुष
ला : लाभ के धनी
ल : लक्ष्मीपुत्र
जी : जीवन दर्शी

सि : सिरमौर
पा : पारखी
नी : नीतिवान



समता धारी बने उपकारी

आज जरुरत है कि सभी के विचारों मे विकास हो ।
नई पीढी का पवित्र पावन परम्परा में विश्वास हो ॥
बुर्जुग पुरुषो की बातें हकीकत मे अनुभवों से युक्त है-
वे चाहते है हर युवाओ को समता का आभास हो ॥

सज्जन पुरुष तो हर पल सबको धर्म की बात बताते है ।
महामानव तो नित्य प्रति हमको कर्म की बात बताते है ॥
सुन लो भाई ! गंगा के तीर से कोई प्यासा जाता नही -
समतामय जीवन जीने वाले सदैव मर्म की बात बताते है॥

समता-क्षमा-शांति-सरलता का फल सदैव मीठा होता है ।
समता का आचरण अशुभ कर्मो का कलिमल धोता है ॥
सभी धर्म ग्रंथो मे बस एकमात्र यही बात लिखी मिलेगी-
समता जन-जन के जीवन मे सद् धर्म का बीज बोता है ॥

अगर हाथ तुम ना थामते तो कौन जाने हम किधर जाते ।
हम घडे थे कच्ची मीट्टी के टूट कर इधर-उधर बिखर जाते
आपने हिम्मत दी धैर्य दिलाया रोशनी दी अधेरे में -
विचार सुनकर आपके यहा वहा डूबते भी उभर जाते ॥

जीवन की बगिया मे समता के सुमन खिलाये है ।
वाणी की वीणा से मधुर-मधुर अमृत बरसाये है ।
समता धारण कर जीवन मे रोशन कर दिया नाम -
हे समता धारी सोहन! देव भी नमन कर हरसाये है ॥

जीवन में समता के नये आयाम चलते रहने चाहिए ।
अंधकार जग मे समता के दीप जलते रहने चाहिए ॥
सब के मन उपवन मे खुशबू बरकरार रखने के लिए-
हर टहनी पर समता के देवपुष्प खिलते रहने चाहिए ॥

सज्जनो का सत्संग सदैव सुखकारी होता है ।
जीवन मे हर पल इनका परोपकारी होता है ॥
सज्जन तो स्वरुप है, एकमात्र समताधारी का,
भाइयो ! युग सदैव ही उनका आभारी है ॥

विषमता का स्वर विश्व को हर दम रूलायेगा ।
बारुद का हर कण कही भी आग ही लगायेगा ॥
मानव ! जरुरत है आज समता को समझने की-
समझ लो समता धर्म ही इस जग को बचायेगा ॥

जीवन मे समता है स्नेह है तो दीप जलता रहेगा ।
घोर अधेरी रातो को भी उजाला मिलता रहेगा ॥
समता समन्वय का सम्बन्ध कायम है जब तक-
पथरीली जमी मे भी हमेशा कुसुम खिलता रहेगा ॥

उदार व्यक्तित्व के धनी, समता मनीषी मानव आप है।
दु ख दर्द सुनके आप, मिटाते सबका यथाशक्ति संताप है ॥
समता का मर्म आपने स्वयं अपने जीवन मे उतारा है-
तभी तो देव सर झुक जाता चरणों मे अपने आप है ॥

-देवीलाल सुखलेचा

॥ श्री वीतरागाय नम ॥



सम्माननीय भाईसाहब
अमर रिषभवीर, बेगलोर
जय वीर !

धर्मनिष्ठ, दानवीर सुश्रावक रत्न परम गुरु भक्त श्री सोहनलालजी सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से राष्ट्रीय सम्मान दिया जा रहा हैं, एतदर्थ हमारी शतश. हार्दिक शुभ कामना स्वीकारें।

वीर प्रभु से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हो और आपका स्वास्थ मंगलमय रहें।

शुभाकांक्षी :
रि. विंग कमांडर
डॉ. पुखराज सुखलेचा एम.डी
आचार्य नानेश चिकित्सालय
उदयपुर (राज.)

श्री महावीराय नम

Balchand Sethiya
Sethiya Mohalla, Binasaher, Bikaner (Raj)
Ph · 271479



श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
संपादक . अमर रिषभ वीर, बेगलोर

सादर जय जिनेन्द्र ।

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा कि इस वर्ष का समता पुरस्कार के लिए शासननिष्ठ, समता मनीषी श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी का चयन हुआ हैं। वास्तव में यह देखा जाये तो श्री सिपानीजी ने समता को आत्म सात किया हैं। समत्व साधना मे रत रहते हुए प्राणी अपने मंजिल की ओर अभिमुख होता है।

ऐसे श्री सोहनलालजी सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के लिए मैं मेरी ओर से और मेरे परिवार की ओर से बधाई देता हूँ और आपके दीर्घायु होने की कामना करता हूँ।

बालचंद सेठिया



श्री करणी गौशाला

अध्यक्ष

शान्तिलाल ...

दूरभाष (030) 2235726

उपाध्यक्ष

श्रीचन्द कास्टट

दूरभाष - (0141) 382519

झँवरलाल आँचलिया

दूरभाष (033) 2485146

मंत्री

अम्बादान बारठ

दूरभाष (0151) 825495

उपमंत्री

गौरीशकर खत्री

दूरभाष (0151) 825347 p p

प्रचार मंत्री

सुरेन्द्रकुमार मरोटी

दूरभाष (0151) 825312

कोषाध्यक्ष

ओमप्रकाश मूँधडा, C A.

दूरभाष (0151) 825410



... रामलालजी म. सा. एवं सभी ... कमलो मे कोटि-कोटि वंदन।

अमर रिषभ वीर द्वारा यह समाचार सुनकर ... आचार्य नानेश समता पुरस्कार देने के ... रहा है।

आपने सही अर्थो मे समता दर्शन को पूर्णरूपेण आत्मसात कर लिया है।

आपश्री ने त्याग, सेवा, दानशीलता की जो ... लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। आपश्री एक कुशल नेतृत्व ... सघ के आधार स्तम्भ, शासन निष्ठ एवं समता ... त्याग, निष्ठा एवं पूर्ण समर्पण समता के प्रतीक बन गये है।

आपश्री को मैं मेरी ओर से और मेरे परिवार की ओर से ...

आपके उज्ज्वल समतामय जीवन के लिए मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

श्री महावीराय नम

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ

५० फीट रोड़, हनुमंतनगर, बेंगलोर

शुभकामना संदेश

आदरणीय

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा

सादर जय जिनेन्द्र !

श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलोर के आदरणीय अध्यक्ष, श्री अखिल भारवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के ट्रस्टी, संघ के प्राण, समाज सेवी श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी की सेवा में आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार भेंट करने का संघ की समिति ने निर्णय लिया है, वह निर्णय सही हैं, हमारी और से धन्यवाद।

वयोवृद्ध शासननिष्ठ श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी ही इस समता पुरस्कार के लिये उपयुक्त व्यक्ति हैं। सही निर्णय एवं चयन के लिये श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ बधाई का पात्र है।

वीतराग प्रभु से प्रार्थना करते है कि श्रीमान् सिपानीजी को लम्बा आयुष्य प्रदान करें, जिससे श्रीमान् सिपानीजी जिन शासन की अधिक से अधिक सेवा कर सकें

कुन्दनमलभण्डारी	पारसमल वाफना	घेवरचंद सिंघवी
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मंत्री

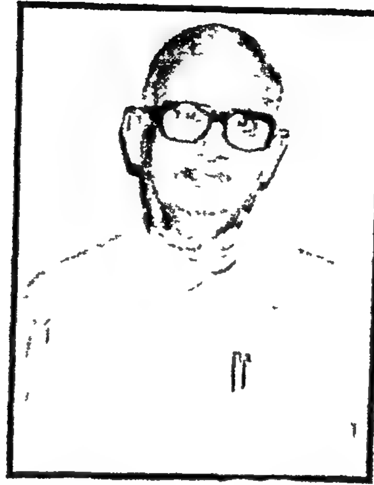
श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ

५० फीट रोड, हनुमंतनगर, बेंगलोर

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम



सेवा परायण, संघ एकता के प्राण, संघ संरक्षक,

नाम-पद-यश कीर्ति से कोसों दूर, बेंगलोर संघ के अध्यक्ष

शासननिष्ठ, सुश्रावक, समता मनीषी

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी

को

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा

आचार्य नानेश समता पुरस्कार

से अलंकृत करने पर

हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई

इसी प्रकार आपका वरद हस्त समाज एवं संघ कार्यों के लिए बना रहें

सम्पतराज कटारिया मंत्री

एवं समस्त सदस्यगण

श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलोर

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

उदारमना, त्याग-तपस्या, व्रत प्रत्याख्यान के धारी,
प्रतिदिन सामायिक एवं प्रतिक्रमण करने वाले हलुकर्मी,
शासन के प्रति समर्पित, संघ सेवा के लिए
तन-मन-धन से समर्पित आदर्श श्रावक रत्न



श्री सोहनलालजी सिपानी

को

आचार्य नानेश समता पुरस्कार

से सम्मानित होने पर

हार्दिक बधाई, शुभकामनाएं

आपका चिंतन-मनन एवं ध्यान आगे भी संघ विकास पर बना रहें

जेठीदेवी सिपानी
अध्यक्ष

सुरेखा साण्ड
मंत्री

श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति

बेंगलोर

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम



देव गुरु धर्म के प्रति समर्पित, व्रत-प्रत्याख्यान के धारी,

समता मनीषी वात्सल्यमूर्ति श्रावकरत्न

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी

को

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा

आचार्य नानेश समता पुरस्कार

के चयन करने पर

आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन,

संघ पर आपका वरद हस्त बना रहें।

आप दीर्घायु हो शतायु हो इन्हीं मंगल मनीषा के साथ

अध्यक्ष

देवीलाल सुखलेचा

मंत्री

महावीर मेहता

एवं समस्त सदस्यगण

समता युवा संघ, बेंगलोर

॥ श्री महावीराय नमः ॥

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
अमर रिषभ वीर, हिन्दी साप्ताहिक
सादर जय जिनेन्द्र !



शुभकामना संदेश

श्री सोहनलालजी सा. सिपानी प्रकृति से सरल, मिलनसार और उदारमना व्यक्तित्व के धनी हैं। ७५ वर्ष की आयु होने पर भी आपके चेहरे पर चमक-दमक बनी हुई हैं। सामाजिक धार्मिक एवं अनेक संस्थाओं में आपका योगदान अनुकरणीय हैं।

मैं आपको आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के इस राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए मैं मेरी तरफ से और मेरे परिवार की ओर से हार्दिक मंगलकामना अर्पित करता हूँ और वीर प्रभु से कामना करता हूँ कि आप जीओ हजारों साल, साल के दिन हो दस हजार।

शुभेच्छु :-
भरतप्रकाश चोपरा

जय नानेश श्री महावीराय नम जय रामेश

श्री देवीलालजी सुखलेचा
संपादक, अमर रिषभ वीर, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !



हार्दिक बधाइ आप द्वारा प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ में दिरावे

श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के चयन पर हार्दिक बधाई

धर्मप्रेमी, सुश्रावक रत्न, श्रद्धेय श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी के मधुर व्यवहार, उदारमना प्रवृति के कारण बेंगलोर जैन समाज में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश में अग्र स्थान प्राप्त किया हैं।

शासन निष्ठा और गुरु भक्ति के कारण आदर्श जीवन मूल्य, संस्कार युक्त, समतामय जीवन के कारण इस वर्ष का आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतु आपका चयन किया गया हैं। ऐसे समता पुरस्कार से अलंकृत, श्रावकरत्न, श्री सिपानीजी को मेरा व मेरे परिवार का नमन -

शान्तिलाल सांखला
मुम्बई

॥ श्री महावीराय नम ॥

॥ जय नानेश ॥ ॥ जय रामेश ॥



परस्परोपग्रह जीवानाम्

श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक, अमर रिषभ वीर,
बेगलोर,

सादर जय जिनेन्द्र

समता पुरस्कार के असली हकदार

दक्षिण भारत के प्रसिद्ध समाजसेवी, श्रावक रत्न श्री सघ के कर्णधार, समता रत्न पुरस्कार के हकिकत मे हकदार, निष्काम, उदारमना श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी।

हमारे परम स्नेही आपको मेरी ओर से प्रणाम एव बहुत-बहुत बधाईयॉ।

आपने अपने परिवार, समाज ही नही पूरे भारतवर्ष मे ख्याति प्राप्त कर रखी है। आपके हृदय की उदारता, गभीरता एव सहनशीलता मे तो आप साक्षात समताधारी है।

लम्बे समय से आप कर्नाटक साधुमार्गी श्री सघ के अध्यक्ष पद को गौरवान्वित कर रहे है आपने अपने कार्यकाल मे ऐसी-ऐसी कार्यकृतियॉ की है जिससे आज बेगलोर श्री सघ नही सपूर्ण कर्नाटक श्री सघ का मस्तक गौरव से ऊँचा होता है।

किसी भी पद पर रहकर उसे पूर्णतया सारी जिम्मेदारियो के साथ निभाना बडा कठिन काम है फिर भी आपने तन-मन-धन की परवाह न करते हुए, तीनो का सहयोग देकर जैन समाज को आश्चर्य मे डाल दिया है। हमे सर्वाधिक गौरव इस बात का है कि, हमारे परम स्नेही श्री सिपानी सा को समता पुरस्कार से नवाजा गया है।

हम आपसे यही शुभकामना करते है कि आपका यह समतामय जीवन हर प्राणी के लिए आदर्श सूचक बने।

इन्हीं मगल मनीषा के साथ

मानवमुनि
विर्सजन आश्रम,
विनोबा चौक, नवलखा, इन्दौर



॥ श्री वीतरागाय नम ॥

स्वधर्म स्नेही

श्री देवीलालजी सुखलेचा
प्रधान सम्पादक, अमर रिषभवीर,
बेगलोर (कर्नाटक)



सादर जय जिनेन्द्र !

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार का राष्ट्रीय सम्मान धर्मनिष्ठ, दानवीर सेवाभावी, समता मनीषी, सुश्रावक रत्न परम गुरु भक्त

श्री सोहनलालजी सिपानी

को प्रदान किया जा रहा है। इस उपलक्ष में आप द्वारा प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए हमारी कोटिश सद्भावना व बधाई स्वीकार करें।

-: हार्दिक शुभेच्छुक :-

कान्तिलाल रामपुरिया
वीकानेर

जय नानेश श्री महावीराय नम. जय रामेश

श्री देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक · अमर रिषभवीर, बेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र ।

आप द्वारा प्रकाशित सोहनलालजी सिपानी अभिनन्दन ग्रथ मे निम्न शुभकामना सदेश प्रकाशित करावें।



शुभकामना संदेश

चरम तीर्थकर श्रमण भगवान महावीर स्वामी की पाट परम्परा के अधिनायक श्री सुधर्मास्वामी के पट्टधर हुक्मगच्छ के जैनाचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. शांत क्राति के जन्मदाता आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा समता दर्शन के प्रेणता आचार्य श्री नानालालजी म सा. तथा आगम रहस्य के परम ज्ञाता आचार्य श्री रामलालजी म सा एव अनेक आचार्यो, उपाध्यायो तथा साधु-साध्वीवृंद की सेवा करने वाले शासन निष्ठ श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी को आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार प्रदान करना एक आदर्श हे ।

ये सम्मान श्रीमान् सोहनलालजी सा का सम्मान नहीं परन्तु जिनशासन का सम्मान है। पुन श्री अ भा. साधुमार्गी जैन सघ को चयन पर धन्यवाद। हमारी अनेक मगलकामना है कि श्रीमान् सोहनलालजी सा सिपानी सदा स्वस्थ रहे एवं दीर्घायु हो

इन्ही मंगल अभिलाषा के साथ

मनोहरलाल गाँधी
[illegible]

॥ श्री महावीराय नम ॥

श्रीयुक्त देवीलालजी सुखलेचा
सम्पादक अमर रिषभवीर
बेगलोर

सादर जय जिनेन्द्र ।



मुझे जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आप आदरणीय श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी पर अभिनन्दन ग्रथ का प्रकाशन करने जा रहे हैं इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्रेष्ठीवर्य, जिनशासन के अनमोल मोती श्री सोहनलालजी सिपानी जैन समाज के एक [illegible] वरिष्ठ सुश्रावक है जिनकी दृढ़श्रद्धा, धार्मिकता हम सभी के लिए अनुकरणीय है।

आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को एक [illegible] ऐसे समता निष्ठ, [illegible] [illegible] को प्रणाम ।

अ.भा. साधुमार्गी जैन सघ द्वारा आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार हेतु आपके चयन पर हार्दिक शुभकामना ।

[illegible]

॥ जय गुरु राम ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु नाना ॥



सुभाष कोटडीया

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा सघ, रतलाम

कर्मठ व्यक्तित्व के धनी आदरणीय श्री देवीलाल सा. सुखलेचा
सपादक महोदय अमर ऋषभवीर रचना, बेगलोर

सादर जय जिनेन्द्र।
समाचार आपके प्राप्त हुए, धन्यवाद।



आप जैसे समाज हितेषी का हार्दिक अभिनंदन

शासन समर्पित श्रावक रत्न, कर्मठता की अद्भूत मुर्ति, उदारमना, युग भामाशाह पद से अलकृत, समाज चितामणी, परम गुरु भक्त आदरणीय पूज्य श्री सोहनलालजी सा. सिपानी जिन्हें इस वर्ष आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से नवाजा गया है, यह परम हर्ष का विषय है, उनका जितना भी अभिनदन करे उतना कम है। आप जैसे श्रावक रत्नों से ही यह संघ गौरवान्वित है। आपकी सघ सेवा सदा प्रेरणादायी रही है। आपने तन मन धन एवम् अनूठी आस्था, निष्ठा से सेवा कर एक आदर्श उपस्थित किया है, निश्चित रूप से आपका गौरवमय जीवन कार्यक्रताओं को सदमार्ग दिखाता रहेगा। संघ सेवा मे आप ही नहीं बल्कि आपका पूरा परिवार सलग्न है। विशेष रूप से आदरणीय श्री रिद्धकरणजी सा. सिपानी जो आपके अनुज है एवम् आपके सुपुत्र श्री कमलजी सिपानी की सेवाएं भी अनुकरणीय है।

पुनश्च एक बार आदरणीय श्री सिपानी साहब का हार्दिक अभिनदन करते हुए,उनके कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए मगल जीवन की कामना करता हूँ।

धन्यवाद

आपका
सुभाष कोटडीया

द्वारा : श्रीराम औषधालय, दोंडाईचा रोड, शहादा, जिला: नंदुरवार - ४२५४०९
फोन: ०२५६५-२३६१८, फैक्स : ०२५६५ - २७२६८

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार से सम्मानित, धर्मपरायण व्यक्तित्व, शासननिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, उदार हृदयशील **श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी**

कर्म प्रसग से जनित जन्म-मरण का संवंध नियन्ता तथा प्रारब्ध के शुभ अवसरों का फलन है। जो नियति से नियमित होकर आस्था एवं विश्वास के अंकुरित पुष्प एवं फल की मधुरिमा की सुखद अनुभूति से आत्माओं में प्लावित व प्रवाहित होता है।

श्रमण संस्कृति के ठोस धरातल पर समतामय विचारों व भावनाओं का लहराता प्रवाह स्वंय का स्वंय से संवंध स्थापित करता हैं। जो आस्था एवं विश्वास के अंकुरित पुष्प व फल से जीवात्मा में विभिन्न प्रसंगों का मार्ग प्रशस्त करता है।

जीवात्मा की मंजुल मंजूषा सृजन के उर्ध्वगामी प्रयत्नों में सतत् उदात्त भाव से आपका यशस्वी एवं गौरवशाली जीवन अभिप्रेरित होता रहे। यही मंगलकामना मैं जिनेश्वर देव से करता हूँ।

जीव व जगत की अनन्य सेवामें आपकी ऊर्जा-ऊर्जावान हो तथा संवेदनाओं, भावनाओ व विचारों का लहराता प्रवाह-चेतना के अप्रतिम भाव से पुलकित होता रहे, यही कामना मैं जिनेश्वर देव से करता हूँ।

आपकी जिन-वचनों एवं आचार्यश्री रामेश के प्रति श्रद्धा मे निरंतर वृद्धि होती रहे, आपकी सम्यक-श्रद्धा आपकी आत्मा को चरम लक्ष्य की ओर ले जाने वाली बने, इन्हीं भित्राक्षरों के साथ स्नेहाभिसिक्त राशि-राशि शुभकामनाएं।

इन्हीं भावना की विपुल शक्ति मित्र हृदय समर्पित करता है।

संदीप जैन 'मित्र'
राष्ट्रीय संयोजक
[illegible]

॥ जय महावीर ॥

श्रद्धेय श्रीमान् देवीलालजी सुखलेचा
सादर जय जिनेन्द्र !

श्रद्धेय, शासननिष्ठ, उदारमना, समाज शिरोमणी, समता मनीषी ०आदरणीय



श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी

यह जानकर वडी प्रसन्नता हुई कि आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार आपको समाज द्वारा सम्मान समर्पित किया जा रहा है। इसके लिये हमारी मंगल कामना है तथा आपके उज्ज्वल भविष्य और दीर्घायु के लिये वीर प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

देश की अनेक धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं को आप समय-समय पर उदारतापूर्वक राशि प्रदान करते रहे हैं। ऐसे समता मनीषी, उदारमना व्यक्तित्व को पाकर संघ-समाज अपने आपको गौरवान्वित का अनुभव कर रहा है।

एकबार पुनश्च आपके प्रति मंगलकामना...

अमृतलाल बाहर
संरक्षक
[illegible]
[illegible]



इन्दरचन्द बैंद

सम्पादक समता सौरभ
१०१, क्वीन पैलेस, गोकूल रा हाउस
पारले पोइंट, सूरत

शुभ संदेश



आदरणीय श्री देवीलालजी सुखलेचा
सादर जय जिनेन्द्र।

आपके आदेशानुसार सम्मानीय श्री सोहनलालजी सिपानी के व्यक्तित्व पर प्रकाशित पुस्तक के लिए अपने विचार प्रेषित कर रहा हूँ।

मूर्धन्य श्रावक :-

श्री सोहनलालजी सिपानी जैन धर्म के मूर्धन्य श्रावको की श्रृखला मे अग्रण्य है। आप धीर, गभीर, शांत, सरल प्रकृति एव समदर्शी है। श्रद्धाशील सिपानीजी सिर्फ बेगलोर सघ के ही नही अपितु श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ के आधार स्तम्भ है।

आप धर्म मे, नीति मे, त्याग मे, तप मे, मानव मर्यादा मे सदा स्थिर रहकर वर्तमान विषमता तथा मूल्यविहीन परिस्थितियों मे भी मानवतावादी, सस्कारयुक्त दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे है जो समाज के लिए दीप स्तम्भ का कार्य है।

सेवाभावी सस्थाओ एव धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन मे अर्थ सहयोग प्रदान कर दान की मान्यता को बहुआयामी रूप देकर आप लोकोपकारी कार्य कर रहे हैं।

सिपानीजी के आचार-विचार भी स्वच्छता के परिचायक है। आपके आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र मे चहुमुखी योगदान से सघ, समाज चिर कृतज्ञ रहेगा।

मै वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप शतायु हो, सक्रिय रहकर सघ समाज की सेवा करते रहे।

-इन्दरचन्द वैद

|| णमो जिणाणं जियभयाणं || || जय भारत || || जय महावीर ||

ACHARYA ANAND PARMARTHIC SEVA SAMASTHAN TRUST (Regd.)

No 773, Ganesha Saw Mill Road, T.D asarahalli, Bangalore - 560 057, Ph: 28392306

परम स्नेहीवर श्री देवीलालजी सुखलेचा
सादर जय जिनेन्द्र !

हार्दिक बधाई

सम्मानीय श्री सोहनलालजी सिपानी के व्यक्तित्व एवम् कृतित्व पर प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए मैं अपने विचार प्रेषित कर रहा हूँ। आशा है आप सपरिवार आन्नदमय होगे हैं।

साधु-साध्वियो की सेवा मे रत रहने वाले, संघ-समाज के लिए चिंतन करने वाले, सभी को साथ लेकर चलने वाले, जिन शासन की प्रभावना के लिए हर पल आगे रहने वाले, उदारहृदयी



श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी

को अ. भा. साधुमार्गी जैन द्वारा
घोषित राष्ट्रीय पुरस्कार के चयन पर बधाई ।

आचार्य श्री नानेश पुरस्कार से सम्मानित करने पर हार्दिक शुभकामना और बधाई....

आपका शुभेच्छु
केवलचंद बोहरा

|| श्री महावीराय नम ||

श्रीमान् पवनजी,
सम्पादक,
अमर रिषभ वीर, बेगलोर
सादर जय जिनेन्द्र ।



जैनत्व के प्रचार-प्रसार मे अपने अर्थ का सदुपयोग करने वाले, आचार्य श्री नानेश के आदर्शों पर चलने वाले, देश के विभिन्न संघो, संगठनो, सस्थाओ मे उदार भाव से दान करने वाले, व्रत-प्रत्याख्यान के साथ जीवन यापन करने वाले, समता मनीषी, शासननिष्ठ **श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी** का आचार्य श्री नानेश पुरस्कार के लिए चयन करना उनके गुणों का, उनके व्यवहार का और उनके आदर्श कार्य का सम्मान है।

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार के सही अर्थो में श्रीमान् सोहनलालजी सिपानी हकदार है।

आप जैसे समता मनीषी के शुभ हाथो मे जाकर ये पुरस्कार धन्य हो गया ।

मेरी ओर से एवम् हमारे परिषद की तरफ से हार्दिक बधाई स्वीकार करावें,

-रायचन्द खांटेड़
अध्यक्ष
ओसवाल परिषद
बेंगलोर

जय नानेश जय महावीर जय रामेश



卐 राम चमकते भानु समाना 卐

शुभकामना

दक्षिण भारत में फूलो और कम्प्यूटर की नगरी बेगलोर शहर के उदारमना सरल ह्दयी, समता मनीषी उद्योगपति वयोवृद्ध श्रावकरत्न श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी को राष्ट्रीय स्तर पर आचार्य श्री नानेश पुरस्कार से सम्मानित करना यह उनके गुणों का सही मूल्याकन है।

आपका पूरा परिवार धर्ममय, साधनामय और त्यागमय जीवन जीने वाला है। आपने देश की अनेक सामाजिक एवम् धार्मिक संस्थाओ में मुक्त हस्त से दान दिया है। आप इस युग के भामाशाह है। आप दानवीर के साथ - साथ धर्मवीर भी है।

गत २० वर्षो से प्रति रविवार सिपानी भवन मे सामुहिक प्रार्थना का कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहा है।

शासनपति प्रभु से यही कामना करते है कि आप अपने अतिम समय तक संघ एवम् समाज की सेवा करते रहे।

आपका शुभेछु

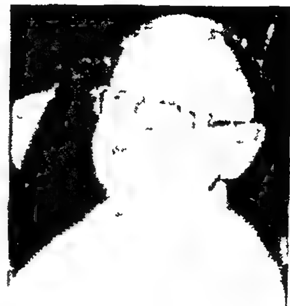
प्यारेलाल भण्डारी

अध्यक्ष श्री साधुमार्गी जैन सघ (महाराष्ट्रा)

मेसर्स . प्यारेलाल एण्ड को.,
दिलराज बिल्डिंग,
अलीबाग
जिला रायगढ (महाराष्ट्रा)

॥ श्री महावीराय नम ॥

॥ जय नानेश ॥ ॥ जय रामेश ॥



आत्मीय शुभ कामना

मुझे यह जानकर अपार हर्ष का अनुभव हुआ कि वर्ष २००३-२००४ का आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा गठित नव सदस्यो की खण्डपीठ ने बेगलोर शहर के वयोवृद्ध शासननिष्ठ श्रावकरत्न श्रीमान् सोहनलालजी सा. सिपानी का राष्ट्रीय स्तर पर चयन किया है।

आप वास्तव मे इस पुरस्कार के सही हकदार है क्योकि आपने अपने जीवन के अनमोल क्षण साधु-साध्वियो की सेवा, संघ और समाज को जागृत बनाने मे लगाया। आपने अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग संघ और समाज के लिए किया है।

जिनेश्वर देव से प्रार्थना करते है कि आप का स्वास्थ्य अच्छा रहे, आगे भी आप सघ और समाज की अविरल सेवा करते हुए मार्ग दर्शन देते रहे।

आपका अपना हितेषी

रिखबचंद जैन

टी. टी. लिमिटेड
मास्टर पृथ्वीराज मार्ग
करोल बाग,
नई दिल्ली

॥ जय आत्म-आनन्द-देवेन्द्र-शिव ॥ 卐 श्री महावीराय नमः 卐 ॥ जय मरुधर केशरी-रूप-सुकन॥

★ श्रमण संघ सदा जयवन्त रहे ★



अशोककुमार गादिया जैन

राष्ट्रीय युवा मंत्री एवं प्रान्तीय युवा अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स
कर्नाटक (बेंगलौर)

हार्दिक शुभाकांक्षा

आदरणीय श्रीमान् देवीलालजी सा. सुखलेचा
सम्पादक, अमर ऋषभ वीर, बेंगलोर
सादर जय जिनेन्द्र !

हमें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि बेंगलोर निवासी कर्मठ समाजसेवी, सेवानिष्ठ, उदारमना, वयोवृद्ध, श्रावकरत्न, श्रीयुत् सोहनलालजी सा. सिपानी को उदयपुर में आचार्य श्री नानेश पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है।

श्रीयुत् सिपानी सा. बेंगलोर के प्रमुख उद्योगपतियों में से एक है। आपका जीवन अत्यन्त सादगीयुक्त, सरल और उदार है। आप धर्मनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ एवम् सेवानिष्ठ श्रावकरत्न है। पूर्व पुण्य से प्राप्त लक्ष्मी का आपने अत्यन्त उदार हृदय से सम्पूर्ण भारत की विभिन्न समाजसेवी और धार्मिक संस्थाओं में सदुपयोग किया है एवम् कर रहे हैं। आपकी आचार्य श्री नानेश और उनके समुदायवर्ती साधु-साध्वियों के प्रति विशेष श्रद्धा और भक्ति अनुकरणीय है।

ऐसे सरल - सादगीमय और समतायुक्त व्यक्तित्व का आचार्य नानेश समता पुरस्कार के लिए चयन किसी व्यक्ति विशेष का नहीं वरन् उसके गुणों का अभिनन्दन है, जो निश्चित रूप से स्तुत्य है। समाज के इस विरल व्यक्ति को हम अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन क्रॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक युवा शाखा की ओर से उनकी इस विशिष्ठ उपलब्धि के लिए अंतर की उर्मियों से हार्दिक बधाई देते हुए परम पिता परमेश्वर से कामना करते है कि श्रीयुत् सिपानीजी दीर्घायु हो एवं भविष्य में जैन समाज को अपने अनुभवों एवं मार्गदर्शन से नई दशा एवं दिशा प्रदान करने में सक्षम बनें।

एक बार पुनः आपश्री के प्रति सद्भावना व्यक्त करते हुए सधन्यवाद।

भवदीय
अशोककुमार गादिया जैन
प्रान्तीय युवा अध्यक्ष

- *National Youth Secretary* - All India Shwetamber Stanakwasi Jain Conference , New Delhi
- *Karnataka State Youth President* - All India Shwetamber Stanakwasi Jain Conference, Karnataka-B'lore
- *Joint Secretary* - Sri Marudhar Kesari Sahitya Prakashan Samiti, Beawar
- *Joint Secretary* - Sri Marudhar Kesari Jain Guru Seva Samiti, Bangalore
- *Managing Committee Member* - Crusade For Animal Rights
- *Working Committee Member* - Sri Vardhaman Sthanakwasi Jain Shravak Sangh, Chickpet, Bangalore
- *Diploma in Jainology*

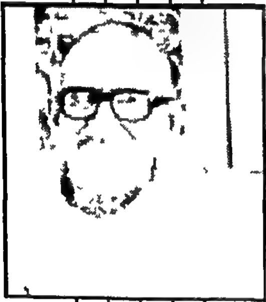
Office :
ASHOK FINANCE CORPORATION
No 96/1,Jumma Masjid Road, Bangalore-560 002
Phone : (0) 22217550 , 22214774 (M) 98451-84043

Residence:
No. 2, A N. Subbarao Road, 5th Cross,
3rd Main, Hanumanthnagar
Bangalore - 560 019 . Phone : 26676358

सार निभाना चाहिये

जग में जीवन मिला तो, उसका सार निभाना चाहिये ।
अहंकार मक्कार है, इससे ध्यान हटाना चाहिये ।।
सद्चरित्र सद्भाव मेल से, मेल मिलाना चाहिये ।
मानवता की चादर में नहीं दाग लगाना चाहिये ।।

जप तप त्याग तपस्या में रत, ईश्वर गति पहचानी ।
कर्मवीर करूणामय बनकर बन जाते लासानी ।।
जिनकी रग-रग में देखा है, दया दृष्टि का पानी ।
ऐसे हैं श्रीमान् सुशोभित, **सोहनलाल सिपानी** ।।



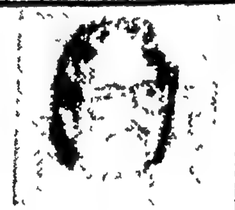
यह अथाह संसार सारमय, सब कुछ बतलाता है ।
पाप पुण्य की राह पृथक कर, चिन्तन चितलाता है ।।
सद् चरित्र सद्भाव का रिश्ता, जिनके उर भाता है ।
वह मनुष्य जग के झगड़े झंझट से तर जाता है।।

श्रम सेवा की मेवा चख जो, होते औघड दानी ।
दीन दुःखी दलितों की पीडा, की गति जिसने पहचानी।।
पुण्य शील करूणामय जीवन, जीने की हठ ठानी।
ऐसे हैं श्रीमान् सुशोभित, सोहनलाल सिपानी ।।

समता मनीषी
सोहनलाल सिपानी
वेगलोर (कर्नाटक)

जग में महापुरुष बतलाते, निज जीवन क्या जीना।
बिन पुरूषार्थ कियें क्यों करते अपना चौड़ा सीना॥
यह मानव का चोला जैसे, मुदरी बीच नगीना।
सबको अमृत पिला सीख, लिया स्वयं जहर को पीना॥

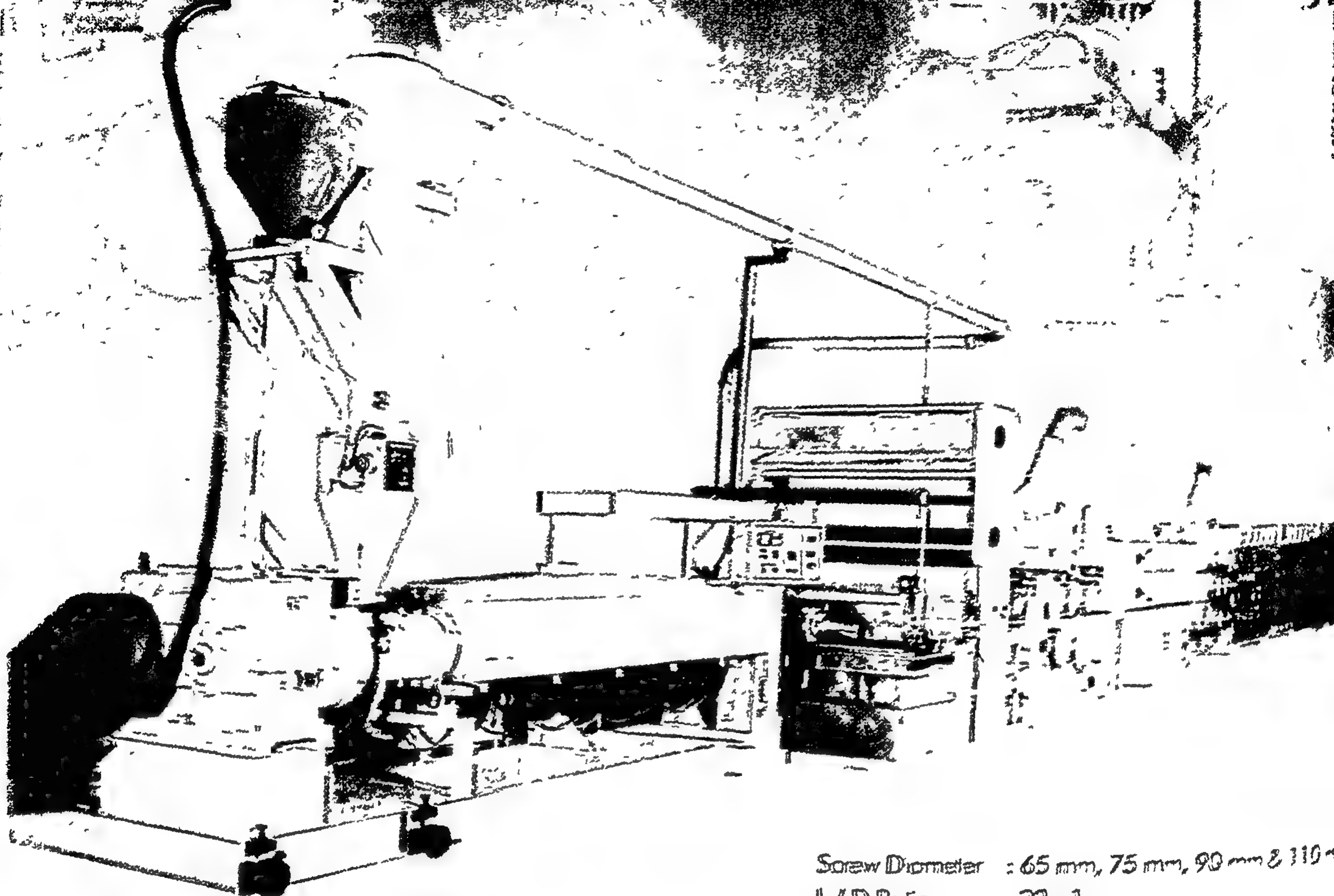
त्याग तपस्या की आभा बन, जो गड़ते नई कहानी।
समता धर्म का ध्वज लहराकर छोड़े प्यार की निशानी॥
हर स्थिति में इनको अपनी, समता राह अपनानी।
ऐसे हैं श्रीमान् सुशोभित, **सोहनलाल सिपानी** ॥



आचार्य नानेश समता पुरस्कार से मन में हर्ष सवाया ।
परम पिता परमेश्वर की है, कैसी अद्भुत माया॥
अपने सागर की गागर में सारा विश्व समाया।
मोहमयी काया माया से, जिसने मन विसराया॥

-जनकवि हीरालाल सुमन

जो पर पीडा से पीड़ित और पर पीड़ा पहचानी।
सबको एक दिन मरना है, क्या राजा क्या रानी ॥
सुमन सुगन्धित रस बरसे, जब पाये समता निशानी।
सबसे प्यारे - न्यारे हैं, श्री **सोहनलाल सिपानी** ॥



Tradition of Customer Support
Kabratec PP / HDPE Tape Stretching Lines

We are closely associated with Sipani Family for more than three decades

WISH YOU ALL SUCCESS

With best compliments from :

Mr. & Mrs. Harish Kamat
Mr. & Mrs. Girish Kamat



GCL INDIA (P) LIMITED

Manufacturers of :

- *Circular Weaving Machines*
- *Automatic Cutting Machines*
- *Automatic Cutting & Sewing Machines*
- *Jumbo Bag Cutting Machines*
- *Extrusion Plants*
- *Raschel Knitting Machines and*
- *Web Cutting Machines*

Head Office :
A-419/420, 10th Main, 2nd Stage, Peenya Industrial Estate, Bangalore - 560 058
Tel 28362500 Fax 91-80-28362525 E-mail gclindia@vsnl com Website gclindia com

Ahmedabad :
3/12, Sangam Apartments, Near Ramdev Nagar,
Char Rasta, Opp Rajsuya Bunglow, Satellite Road,
Ahmedabad - 380 015
Tel 079-8214219 Telefax 079-6925219
E-mail akjha@gclindia com

Mumbai :
Santosh B Kulkarni - Mob 9820639931
Sanjay A Kadam - Mob . 9820449552
E-Mail gclbom@vsnl com

New Delhi :
403, Meghdoot Building, 94, Nehru Place,
New Delhi - 110 019
Tel 011-51618217 / 26462827 Telefax 011-51618508
E-mail gcldelhi@vsnl in

Kolkata :
GC-171, Secto-3, Salt Lake City,
Kolkata - 700 016
Tel - 033-23377426 / 23217558
E-mail . gclcal@vsnl com

जय गुरु नाना — जय महावीर — जय गुरु राम



साधुमार्गी जैन संघ के प्राण,
समता मनीषी, शासन निष्ठ,
जैन समाज के गौरव,
श्रावक रत्न,
परम् श्रद्धेय

श्री सोहनलालजी सा. सिपानी

को

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

से अलंकृत करने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं-

शुभेच्छुक :

- सम्पतबाई कर्नावट
- शांतिलाल कर्नावट
- किशोर - नन्दा कर्नावट
- कपिल - मंजू कर्नावट
- सुजानमल - गुणमाला कर्नावट
- वीरेन्द्र - कुसुम कर्नावट
- दीपक - रेखा कर्नावट
- तरूण
- संकेत
- सहज
- सरल कर्नावट

सुजानमल किशोरकुमार कर्नावट
340, कर्नावट निवास, 14वां मैन, पहला ब्लॉक, चौथा स्टेज,
बसवेश्वर नगर, बेंगलोर - 560 079, फोन · 2322 1712

वीरेन्द्रकुमार कर्नावट
शिवम् काम्पलेक्स, 204, बीयावानी,
इन्दौर (मध्य प्रदेश) फोन : 2343580

SRI PARSHWANATH INDUSTRIES
No. 54, IInd, Main Road,
Ramachandrapuram,
BANGALORE - 560 021.
Ph. Off. 2312 0032
Fac : 2312 0097

श्री साधुमार्गी जैन संघ प्रतिपल प्रगति पथ पर बढ़ता रहे

॥ जय महावीर ॥

देव गुरु धर्म के प्रति समर्पित जैन समाज के गौरव,

दानवीर, श्रावक रत्न, परम् श्रद्धेय



श्री सोहनलालजी सा. सिपानी

को

राष्ट्रीय पुरस्कार

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

से अलंकृत करने पर

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं-

अनिल कानूंगा

हरीष कानूंगा

बेंगलोर

जय गुरू नाना | जय महावीर | जय गुरू राम







आदरणीय पूज्य पिताजी
स्व. श्री चम्पालालजी सांड
जन्म : 14-03-1916 ✓ स्वर्ग : 12-11-1982

ममतामयी मातेश्वरी
स्व. श्रीमती सूंटी देवी सांड
जन्म : 14-04-1916 ✓ स्वर्ग : 10-11-1989

आपकी स्वर्गस्थ आत्मा को चिर शांति प्राप्त हो, आपके द्वारा बताए आदर्शों पर प्रतिपल चलने का संकल्प ग्रहण करते है!

शान्तिलाल-विमला देवी, संजय-सुरेखा, अजय-ज्योति,
भावना, तुषार, रितिका, प्रजय एवं समस्त सांड परिवार

चम्पालाल शान्तिलाल सांड

सेठ चम्पालाल सांड मार्ग
देशनोक - 334 801, बीकानेर (राज.) फोन: 0151-2825309, 2825310
Bikaner - Ph: (0151) 2549128 (PP 2521718)
"Shanti Niwas" No.50, 7th Cross, Wilson Garden, Bangalore - 560 027.

B R A N C H E S

JAIPUR (0141)	KOLKATTA (033)	MUMBAI (022)	VIJAYAWADA (0866)	COCHIN (0484)	PUNE (020)
PH 2202955	PH 22213158	PH 23443339	PH· 2569668	PH· 2774544	PH 4465032
FAX· 2202214	FAX 22610563	FAX 23443339	FAX· 2569612 PP	FAX 1212121	FAX· 4028256

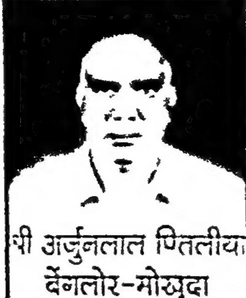
With Best Compliments from :	Phone ·	Fax :
DIAMOND PIPES & TUBES PVT LTD	080 - 7832048	080 - 7833778
PIPE PRODUCTS OF INDIA	080 - 22221506	- - - - -
SHAND PIPE INDUSTRIES PVT LTD	080 - 7834818	- - - - -
POONAM INTERNATIONAL	080 - 25732433	080 - 25732615
B D S INDUSTRIES - DAMAN (U T)	0260 - 2220078	0260 - 2220691

Regd. Off: No.50, 7th Cross, Wilson Garden, Bangalore - 560 027.
Ph : 22235726, 22225734 Fax · 080-22234779 E-mail · ajay@blr.vsnl net.in

रिषभवीर रत्न


श्री केसरीमल बुरड
बेगलोर - देवगढ


श्री बाबुलाल खिवेसरा
बेंगलोर-बोपारी


श्री अर्जुनलाल पितलीया
बेंगलोर-मोखुंदा


श्री सुरजमल पितलीया
बेंगलोर-वडी


श्री सोहनलाल माडोत
बेंगलोर-ताल


श्री सपतराज कटारिया
बेंगलोर - राणावास


श्री अशोक सुराणा
बेंगलोर-गगाशहर


श्री गेगरीलाल माडोत
बेंगलोर-ताल


श्री रमेश श्रीमाल
चामराजनगर-देवगढ


श्री तेजप्रकाश मल्लारा
बेंगलोर-कानोड


श्री भवरलाल कोठारी
सिकन्दराबाद-देवगढ


श्री नाथूलाल छिंगावत
खजुरीपंथ (म प्र)

स्तम्भ श्री छोगालाल दलाल (ताल) महासंरक्षक श्री भवरलाल सकलेचा, राजेन्द्रप्रसाद कोठारी (बेंगलोर) श्री मीठालाल बम्बकी (लसानी) संरक्षक सर्वश्री मोहनलाल मुथा, शान्तिलाल दक, राजमल दलाल, महावीरचद सेठिया, हस्तीमल सिसोदिया, सज्जनराज आँचलिया, जेठमल चोरड़िया, मूलचंद बरलोटा, नथमल कटारिया, रामलाल मेहता (बेंगलोर), बाबूलाल देसरला, मनोहरलाल गाँधी, बाबूलाल मेहता (देवगढ़), चंपालाल मकाणा (दोड्डबालापुर), बाबुलाल दक, लक्ष्मीलाल दक, नाथूलाल कटारिया (ईशरमड), हीरालाल कोठारी (अहमदाबाद), गोविंदराम मेहर (थाणा)